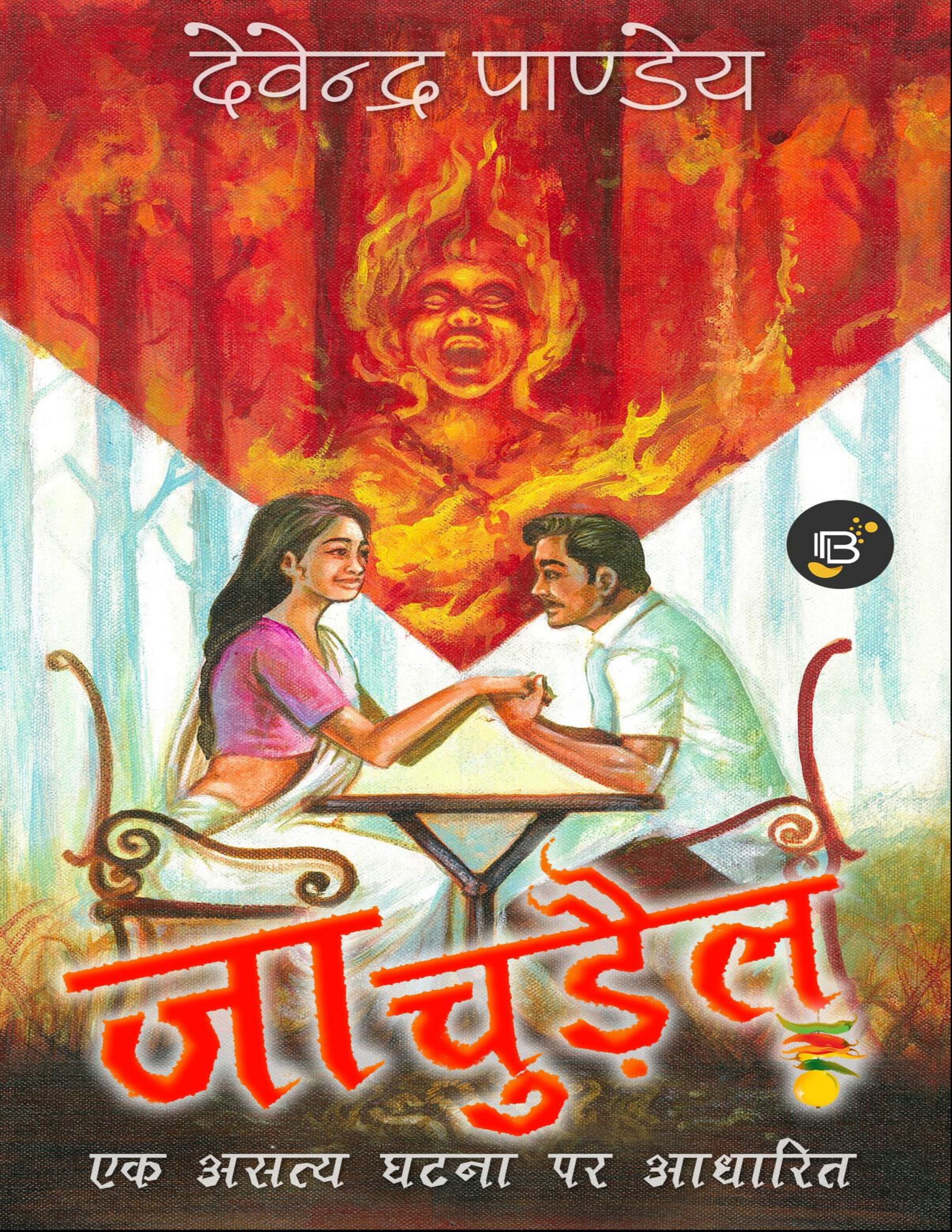

देवेन्द्र पाण्डेय
जा चुड़ैल
एक असत्य घटना पर आधारित

JA CHUDAIL

Devendra Pandey

Bookemist

सामग्रियाँ

जादुई चुड़ैल

देवेन्द्र पाण्डेय

Bookemist

लेखकीय

सभी पाठक मित्रों को नमस्कार,

अपनी छठी पुस्तक आपके समक्ष प्रस्तुत करते समय भी वही बेचैनी महसूस कर रहा हूँ जो प्रथम उपन्यास के समय थी । ऐसा स्वाभाविक भी है, क्योंकि मेरा हर उपन्यास अपने पिछले उपन्यासों से एकदम अलग विषय पर रहता है, जिस कारण पाठकों के मूड का अंदाजा मुझे नहीं लग पाता और हर बार पुस्तक पाठकों के हाथों में जाने के बाद उसकी प्रथम प्रतिक्रिया आने तक घबराहट, बेचैनी महसूस करता हूँ कि क्या पता इस बार चुना हुआ विषय उन्हें पसंद आयेगा या नहीं । हालाँकि मैं पसंद नापसंद अथवा किसी विशेष पाठक वर्ग को ध्यान में रख कर जानबूझकर विषयों का चुनाव नहीं करता ।

दरअसल मुझे अभी तक स्वयं ही नहीं पता कि मैं किसी जेनर में स्वयं को सहज पाता हूँ, किस विषय में मेरी पकड़ है । लेखक मित्र मिथिलेश गुप्ता जी से अक्सर हंसी मजाक में जब रोमांस लेखन की चर्चा होती है तो मैं अपने हाथ खड़े करके इस जेनर में खुद की असमर्थता जता देता हूँ । तब मिथिलेश मुझे इश्क बकलोल और रोड ट्रिप के विषय में बताते है कि कैसे रोमांस लेखन में हाथ तंग होने का बहाना करके लेखक महोदय रोमांस पर रोमांस लिखे जा रहे है । इश्क बकलोल में जहाँ प्रत्युषा और किशन का अनूठा अनकहा संबंध था जो भाषा और प्रांतवाद की सीमा को पार कर के मित्रता एवं प्रेम के मध्य का एक नया ही आयाम खड़ा करता है । तो दूसरी तरफ रोड ट्रिप में एक नहीं, दो नहीं बल्कि तीन भिन्न प्रकार की प्रेम कथाएं लिखकर लेखक महोदय कहते फिर रहे है कि रोमांस मेरे बस का नहीं है । मिथिलेश की कही बातों से ही मेरा ध्यान कथानकों को नए दृष्टिकोण से देखने लगा । इश्क बकलोल रोमांटिक कहानी के तौर पर नहीं लिखी गयी थी, वह तो प्रांतवाद, बेरोजगारी, मित्रता और सामाजिक समस्या पर लिखा गया कथानक था । यही हुआ रोड ट्रिप के साथ, तीन अलग कहानियाँ जो आम जीवन की समस्याओं से जूझ रही थी । जिन्हें एक यात्रा से एकसूत्र में बाँधा गया था । जहाँ मानव एक बेपरवाह युवक था जो एक अनचाहे रिश्ते के पीछे भाग रहा था जिसका कोई भविष्य नहीं था, मानव जो इस कदर साधारण और आम आदमी था जो मुंबई में एक अदद घर लेने में भी नाकाम था, अपनी नाकामियों के कारण वह खुद से नाराज था, जिस कारण उसकी शादी शुदा जिन्दगी बिखराव पर थी । दूसरी तरफ अनिकेत जो अपनी पत्नी की मृत्यु के पश्चात कोमल से

अपने निश्छल संबंध को ही नहीं समझ पा रहा था । मिथिलेश के कहने पर ही मेरा ध्यान इस ओर गया कि ये तीनों कहानियाँ देखा जाए तो प्रेम कथाएं ही तो थी, बस यह कहानियां किसी काल्पनिक स्वप्नीली और यथार्थ से कोसो दूर की दुनिया नहीं थी । वह वास्तविक धरातल पर आधारित वास्तविक समस्याओं के मध्य शेष बचे प्रेम के संघर्ष और मानवी भावनाओं की जटिलता की कथा थी । किन्तु इसके बावजूद मैं कहता हूँ कि मैं रोमांस लेखन में कमजोर हूँ, मेरी कोई भी पुस्तक उठा लीजिये, प्रेम तो है किन्तु वे पूर्णतया प्रेम पर केन्द्रित नहीं है । मुझे पता है मिथिलेश इस उपन्यास को लेकर भी यही बात पुन: दोहराने वाले है । क्यों ? तो उसका कारण आपको पुस्तक पढ़ने के पश्चात ही ज्ञात होगा ।

बात करते है ‘जा चुड़ैल’ की । सदैव की भांति संयोग से यह पुस्तक भी एकदम अलग विषय पर है । इस बार प्रेम कथा तो है किन्तु इसमें हॉरर का तड़का भी है । और दोस्ती तो है ही । मुझे उम्मीद है पाठकों को केशव और प्रीतम नाम के पात्र अवश्य पसंद आएंगे । प्रीतम जो एक साधारण से भी साधारण युवक है, उसकी साधारण और नीरस जिन्दगी तब बदल जाती है जब उसमें एक लड़की का प्रवेश होता है, नहीं यह कोई सुहावना या रूमानी बदलाव नहीं था । यह ऐसा बदलाव था जिसने उसकी विचारधारा और विश्वास को बदल कर रख दिया । केशव नाम का विचित्र प्राणी भी उसका मित्र था, जो प्रीतम की बची खुची जिन्दगी को भी अपनी सनक और जुनून के चलते और मुश्किल बनाये जा रहा था । गाँव है, गाँव के सुनसान बस अड्डे पर आधी रात को बीड़ी मांगते चाचा जी हैं तो कहीं बांस के जंगलों में भटकती एक डरावनी कहानी भी । कहीं किसी तालाब में डूबे हुए डरावने किस्से तो कहीं कोई गाँव जो पीढ़ियों से शापित है । मतलब यह कि प्रीतम की जिन्दगी लड़की के आने के बाद से पहले जैसी तो बिल्कुल भी नहीं रही थी । यह सभी चीजें अब उसकी जिन्दगी का हिस्सा बन चुकी थी । फिर क्या होता है ? इसके लिए आपको अगले पृष्ठों की तरफ बढ़ना होगा । अब मेरा यह प्रयास पाठकों को कितना पसंद आता है यह पाठक स्वयं तय करेंगे ।

और जाते-जाते बताता चलूँ कि अगला उपन्यास भी प्रकाशन में सौंपा जा चुका है । जो फिर से एक बार अलग विषय पर है, पाठकों को अब तक पता चल ही चुका होगा कि अगला उपन्यास एक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित गाथा है । एक अनसुनी सी कहानी जो वीरता के उच्च शिखर पर पहुँचती है । एक कहानी जिसने बदल दिया इतिहास । इस विषय पर हम उस पुस्तक के लेखकीय में विस्तार से चर्चा करेंगे । अपनी बेबाक और निष्पक्ष समीक्षाओं एवं प्रतिक्रियाओं को अवश्य प्रेषित करें जिससे लेखन प्रेरणा एवं मार्गदर्शन दोनों बना रहे । अपना प्रेम सदैव इसी प्रकार बनाए रखे । ज्यादा कुछ न कहते हुए अब यही विदा लेता हूँ और प्रीतम को अपनी कहानी कहने का अवसर देता हूँ । वह कबसे कुछ बताने के लिए बेचैन है, तो उसकी बेचैनी का मजा लीजिये ।

प्रस्तावना

रामजस अपनी पूरी शक्ति से साइकिल चला रहा था, दिसम्बर की कुंहासे भरी ठंड के बावजूद उसके माथे से पसीना बह रहा था ।

आधी रात का समय था किंतु घड़ी न होने के कारण समय पता नहीं चल रहा था, उसे बस इतना ही याद था कि आज वह दुकान साढ़े ग्यारह बजे बंद करके निकला था, और अभी भी घर बारह किलोमीटर दूर था । बाजार स्थित दुकान से घर का अंतर लगभग सोलह किलोमीटर था जिसे साइकिल द्वारा पार करने में आमतौर पर सवा से डेढ़ घण्टे लग जाते थे ।

वह बार-बार अपने दाहिने हाथ से माथे पर उभर आये पसीने को पोंछ रहा था, आज चंद्रमा भी मानो छुट्टी पर था जिस कारण मार्ग में अंधेरे का साम्राज्य था ।

बाजार से गांव को जोड़ने वाली सड़क पतली सी थी, जिसके दोनों ओर जंगल, झाड़ियां, सरपत और मिट्टी के टीलों का साम्राज्य था । ठंड से गलन बढ़ गई थी, साइकिल चलाने में उसने अपनी पूरी शक्ति झोंक रखी थी मानो बारह किलोमीटर बारह मिनटों में पार कर लेगा । बीच-बीच में रह-रह कर सड़क किनारे सरपतों में सरसराहट सी होती जिससे वह चिहुँक जाता, किन्तु साहस न होता कि एक नजर उस ओर देख भी ले, वह नाक की सीध में साइकिल दौड़ाए जा रहा था । आगे जाकर सड़क ऊबड़-खाबड़ सी हो गई, वह गड्ढों से बचाने का भरपूर प्रयास कर रहा था, साइकिल के पुर्जे यूं खड़खड़ा रहे थे मानो एक ठोकर में हर हिस्सा बिखर जाएगा ।

अचानक से पैडल एकदम ढीले हो गए, उसकी सांस अटक गई । साइकिल की चेन उतर गई थी, घबराहट उसके चेहरे पर स्पष्ट दिखाई देने लगी थी । वह यहां रुकना नहीं चाहता था, उसने फौरन पैडल उल्टी दिशा में घुमाए और चेन दोबारा चढ़ गई । उसकी अटकी हुई सांस संयत हुई । आगे एक किलोमीटर का मार्ग दोनों ओर से बांस के घने पेड़ों से घिरा हुआ था, बंसवाड़ा इतना घना था कि दिन में उस मार्ग पर सूर्य की किरणें नहीं पहुंच पाती थी और इस समय तो अंधेरी रात थी ।

वह मन ही मन कुछ याद करने का प्रयास करता रहा किन्तु घबराहट के मारे कुछ भी याद नहीं आ रहा था, अब वह गुफानुमा उस मार्ग में प्रवेश कर चुका था, उसने दुगुनी शक्ति से साइकिल को खींचना आरम्भ कर दिया, वह जल्द से जल्द इस

बंसवाड़े से दूर निकल जाना चाहता था ।

धीमी हवायें बांस के जंगलों के मध्य से गुजरती तो बड़ी भयानक सी आवाज आती । बांस आपस में रगड़ खाकर किसी के दांत पीसने और किटकिटाने का वहम पैदा कर रहे थे । कभी-कभी तो यूं प्रतीत होता मानो कोई दांत चिढ़ाकर हंसने का प्रयास कर रहा हो ।

घबराए रामजस की हड्डियों में झुरझुरी सी दौड़ गई । अचानक ही सर्दी एकदम बढ़ गई, उसे अपने कान ठंड के मारे सुन्न होते से प्रतीत हुए । उसने इस बंसवाड़े से सम्बंधित अनेकों कहानियां सुन रखी थी और इस समय उसके न चाहते हुए भी उसे सारी कहानियां याद आ रही थी ।

‘अम्मा कहती हैं इस बंसवाड़े झुमरी नाइन मरी थी । पति से झगड़ा होने पर मायके जाने के लिए जब कोई गाड़ी नहीं मिली तो वह जेठ की दोपहरी में पैदल ही निकल ली, झगड़े के कारण उसने रात से कुछ खाया भी नहीं था, दोपहरी में चलते इसी बंसवाड़े के समीप लू लगने से वह जो गिरी तो दोबारा उठी ही नहीं । कहते हैं आज भी झुमरी इस बंसवाड़े में भटकती है और रात में हर आने जाने वाले वाहन में अपने मायके पहुंचने की उम्मीद में जाकर बैठ जाती है, लेकिन वह आज तक मायके पहुंची ही नहीं लेकिन जिसके वाहन में बैठती वह जरूर परलोक पहुंच जाता ।’

अपनी अम्मा की सुनाई हुई कहानी न चाहते हुए भी उसके दिमाग में दौड़ने लगी, उसे इस समय यह सब नहीं सोचना था ।

बांस के मध्य गूंजती आवाजों से वह पहले ही भयाक्रान्त हो रहा था, उसने अपना ध्यान दूसरी तरफ केंद्रित करने का प्रयास किया ।

“ऐसा भला होता है क्या ? बूढ़े खूसट पुरनिया लोगों की मनगढ़ंत कहानियां, बैठे-बैठे कौनो काम धंधा तो है ही नहीं, बस झूठी मूठी कहानियां गढ़ते रहते है । झुमरी तो भूतनी है, भला उसे कही जाने से कौन रोक पाएगा ? वह उड़ते हुए मायके ना चली जायेगी ? गाड़ी के लिए खड़ी रहेगी क्या ?” रामजस बड़बड़ाया और हंस दिया ।

“मुझे मेरे मायके तक छोड़ देना बाबू ।”

रामजस की हड्डियों में सिहरन दौड़ गई । यह आवाज उसके कान के एकदम समीप सुनाई दी थी, उसने होंठों की गरमाहट को स्पष्ट महसूस किया था । उसकी साइकिल भी भारी हो गई थी, उसने साइकिल की कैरियर पर किसी व्यक्ति का भार स्पष्ट महसूस किया । रामजस के रोंगटे खड़े हो गए, एक पल को उसके दिल ने मानो धड़कना ही बंद कर दिया था । जुबान तालू से जा चिपकी, उसकी हिम्मत नहीं हो रही थी कि वह गर्दन घुमा कर पीछे देख भी ले ।

"मुझे मेरे मायके तक छोड़ देना ।" रामजस के कानों के पास पुन: वह स्वर गूंजा, स्पष्ट था कि पीछे जो कोई भी था वह रामजस के एकदम निकट था । उसकी घिग्घी बंध गई थी, वह भय की अधिकता से थरथरा रहा था । हवा अपने जोर पर थी । बंसवाड़ी के मध्य से अब भी विचित्र सी किटकिटाने की आवाजें आ रही थीं । यह कहना अधिक सही था कि वह आवाजें अब अधिक स्पष्ट होती महसूस हो रही थीं । जैसे-जैसे रामजस की साइकिल आगे बढ़ती जा रही थी, वैसे-वैसे वह स्वर उसके और समीप आते महसूस हो रहे थे, मानो पूरा बंसवाड़ा ही उसके पीछे-पीछे चला आ रहा था । अब तक तो बंसवाड़ी पार हो जानी चाहिए थी । किन्तु ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो वह एक ही स्थान पर साइकिल चला रहा था ।

उसके पीछे खिलखिलाने की आवाज गूंजी । यह हंसी उसी स्त्री की थी, इस हंसी को सुनकर अच्छे अच्छों के होश फाख्ता हो जाते । उसका हृदय असामान्य गति से धड़कनें लगा था, दिल का दौरा नहीं पड़ा था यही गनीमत थी । अपनी जान के भय से रामजस पूर्ण शक्ति से पैडल मारता रहा, किन्तु साइकिल मानो हर पैडल के साथ और भारी होती जा रही थी, वह हांफने लगा । अपने पीछे कैरियर पर बैठी स्त्री को वह अब भी महसूस कर सकता था । उसके प्राण सूखते जा रहे थे वह बस किसी तरह इस क्षेत्र से निकलना चाहता था ।

अचानक उस स्त्री ने खिलखिलाना बंद कर दिया, उसकी चूड़ियों की खनक रामजस स्पष्ट रूप से सुन सकता था । अब रामजस अपने कन्धों पर उसके हाथ महसूस कर रहा था ।

"हमको जवाब नहीं दिए बाबू ! मायके ले जाओगे ना ?" महिला का दांत पीसता हुआ स्वर सुनकर रामजस असामान्य रूप से कांपने लगा, वह हनुमान चालीसा याद करने का प्रयास करने लगा किन्तु घबराहट के कारण उसे कुछ भी याद नहीं आ रहा था । उस स्त्री के हाथ उसके गले तक पहुँच चुके थे, बर्फ से ठंडे हाथों के स्पर्श को पाकर उसके शरीर में झुरझुरी दौड़ गई और अपनी मृत्यु को देखकर चीख उठा ।

“छोड़ दे मुझे चुड़ैल ! जाने दे मुझे ।” वह पूर्ण शक्ति से चीखा । इसी पल उसके सामने एक तीव्र प्रकाश उत्पन्न हुआ, रामजस की आँखें उस प्रकाश के कारण चुंधिया गई । प्रकाश उसके समीप आता जा रहा था, वह चेतनाशून्य हो चूका था, उसके सोचने समझने की शक्ति एकदम लुप्त हो चुकी थी । अचानक हॉर्न के कर्कश स्वर से मानो वह नींद से जागा, और फुर्ती से साइकिल प्रकाश के सामने से हटा के सड़क के किनारे की ओर मोड़ दी । वह एक प्राइवेट बस थी जो अपनी पूर्ण शक्ति से सड़क पर भागे जा रही थी । ड्राइवर ने गाड़ी बढ़ाते हुए ही खिड़की से मुंह करके रामजस को भद्दी गलियां दीं । रामजस ने स्वयं को किसी प्रकार से सड़क के किनारे स्थित नहर में गिरने से बचाया । उसने साइकिल पुन: पक्की सड़क पर डाल दी ।

वह बस के नीचे आने से बाल-बाल बचा था । उसने पीछे देखने तक की जहमत नहीं उठाई और नाक की सीध में अंधाधुंध साइकिल दौड़ाता चला गया । वह बंसवाड़ी क्षेत्र से निकल चुका था और उसकी साइकिल भी हल्की प्रतीत हो रही थी । जाहिर सी बात थी अब उसके पीछे वह महिला नहीं थी । उसकी जान में जान आई किन्तु रास्ता अभी समाप्त नहीं हुआ था । यह सम्पूर्ण मार्ग ही अजीबोगरीब कहानियों के लिए प्रसिद्ध था । दूर कहीं खेतों से आगे कुछ गाँव दिखाई दे रहे थे । मार्ग अब भी सुनसान था किन्तु छोटे मोटे घरों की परछाइयाँ दिखाई दे रही थी । डूबते को तिनके का सहारा वाली कहावत चरितार्थ हो रही थी । रामजस को दूर से दिखाई देते गाँवों को देखकर ही थोड़ी राहत मिली कि कम से कम अब उसे मानव बस्तियां तो दिखाई दे रही है । आगे एक पुराना बस स्टैंड बना हुआ था, जो देखभाल की अभाव में टूटा फूटा सा था । वहां पहुँचते ही साइकिल की चेन ने पुन: जवाब दे दिया, और इस बार पैडल पीछे घुमाने की तरकीब भी काम नहीं आ रही थी ।

उसे साइकिल से उतरना ही था । उसके पास अन्य कोई मार्ग ही नहीं था । वह उतरा, इसी बीच सड़क किनारे से सटी झाड़ियों एवं गन्ने के ऊँचे खेतों में से सियारों के झुण्ड ने रोना शुरू कर दिया । रामजस को काटो तो खून नहीं, ऐसे माहौल में बस इसी की कमी थी ।

वह नीचे उतरा और बिना एक क्षण भी गंवाए चैन चढ़ाने का प्रयास करने लगा । उसने कांपते हाथों से चेन चढ़ाने का प्रयास किया । उस बस स्टैंड को देखकर उसे कंपकंपी छूट रही थी, वह इतना घबराया हुआ था कि झाड़ियों एवं पेड़ों की परछाइयों तक से उसे किसी के खड़े होने का भ्रम हो रहा था । अचानक उसे प्रतीत हुआ मानो बस स्टैंड पर कोई व्यक्ति बैठा हुआ है । उसके कान से होते हुए पसीना कमीज के भीतर तक प्रवेश कर गया । साइकिल की चेन चढ़ चुकी थी । बिना एक क्षण भी गंवाए वह लगभग छलांग मारते हुए

उसपर सवार हुआ और वहां से भाग निकला । वहां कोई था या यह केवल उसका भ्रम था यह समझने की शक्ति रामजस में शेष नहीं थी । वह सोचने समझने की क्षमता लगभग खो चुका था ।

"बीड़ी है भाई ?" एक खरखराती सी आवाज ने रामजस की तंद्रा भंग की ।

रामजस ने आवाज की दिशा में देखा, एक व्यक्ति उसके दाहिनी ओर खड़ा था, उसने पगड़ी पहन रखी थी और मैला सा सफ़ेद कुर्ता जो अनेक स्थान से फटा हुआ था । रामजस उसे ही देखता रहा ।

"भैय्या कुछ पूछे रहे हम ! बीड़ी है का ?" उस व्यक्ति की आवाज मानो किसी अंधे कुएं की गहराई से आती प्रतीत हो रही थी ।

अचानक रामजस को प्रतीत हुआ कि उसकी साइकिल तो हवा से बातें करते हुए भाग रही है । किन्तु यह व्यक्ति उसके साथ ही कैसे चल रहा है, उसने घबराते हुए उस व्यक्ति के पैरों की ओर देखा, उसके पैर जमीन पर थे ही नहीं, वह हवा में एक फीट ऊपर तैर रहे थे ।

रामजस की सांस अटक गई और उसने साइकिल से नियंत्रण खो दिया, साइकिल सड़क के दाहिनी छोर स्थित कच्ची पगडंडी में उतर गई उसे वह संभाल पाता तब तक साइकिल कई फीट नीचे स्थित ईंट भट्टी की ओर गिरते चली गई । वह साइकिल के साथ ही लुढ़कते हुए ईंट भट्टी की ओर गुलाटियां खाने लगा । साइकिल एक तरफ वह दूसरी तरफ जा गिरा ।

"नहीं है तो बोल देते नहीं है भाई !" वह घरघराती आवाज घायल रामजस के समीप गूंजी । उसने उस ओर देखा, वह व्यक्ति अब भी हवा में लहराता हुआ उसके समीप खड़ा था ।

रामजस ने जोर की हिचकी ली और उसकी आँखें बंद हो गई ।

जा चुड़ैल

मुम्बई, बरसात और 'वो'

वह मेरी जिन्दगी का सबसे खूबसूरत दिन होने वाला था, मेरे जीवन का कभी ना भूल पाने वाला दिन। हालांकि बाकी मुम्बई वासीयों के लिए भी वह दिन यादगार रहने वाला था किन्तु उसकी वजह अलग थी। २६ जुलाई ऐसा दिन है जिसे शायद कोई मुंबई वासी कभी याद करना चाहेगा। लेकिन मैं मात्र अपवाद कहलाऊंगा इस मामले में। मैं कौन ? मेरा नाम है प्रीतम, प्रीतम शुक्ला। और यह मेरी कहानी है, अब आप सोचेंगे भला मेरी कहानी में ऐसा क्या है जो कोई सुनना चाहेगा ? मैं जवान था, उम्र ही क्या थी मेरी, मतलब जवान तो अब भी हूँ बस भूतकाल में कहने के कारण 'था' लिखना पड़ा। थोड़ा बहुत स्मार्ट हूँ ऐसा कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी, लेकिन भीड़ में अलग से पहचाना जाए ऐसा व्यक्तित्व भी नहीं है। वह कहते है ना अंधों में काना राजा, बस उसी तरह का काम चलाऊ स्मार्ट, पढ़ा लिखा, अच्छी खासी डिग्री और सबसे बढ़िया बात इनकम टैक्स देने लायक सैलरी वाली नौकरी।

और जैसा कि आजकल होता है, जवान हो, स्मार्ट हो (कामचलाऊ), पैसा हो, दस से छह की कार्पोरेट जॉब हो, शनिवार रविवार छुट्टी हो तो युवा वर्ग को चाहिए ही क्या ? यही तो हर युवा चाहता है, वीकेंड में किसी डिस्को, थियेटर या रिसोर्ट में छुट्टियाँ । मॉडर्न और फ्रेंक फ्रेंड सर्कल जिसमें लड़का लड़की का कोई भेद नहीं हो, हर कोई एक दूसरे माता-बहन को याद करता हो, ऐसी कोई चीज नहीं बची जिसका प्रयोग नशे में नहीं किया हो। हर दूसरे तीसरे महीने नया पार्टनर, कभी-कभार वन नाइट स्टैंड के नाम पर थोड़ी ज्यादा आजादी। ना कोई कमिटमेंट ना कोई गंभीरता, खाओ पीओ सोओ (अकेले नहीं बाबा) ऐश करो। ना कल की चिंता ना आज की फिक्र, बस जिन्दगी के मजे लूटो, भले झन्ड हुई पड़ी हो। यही तो मतलब है आजकल का युवा होने का। लेकिन अफ़सोस मैं इस केटेगरी का युवा था ही नहीं।

मैं इन बेवकूफियों में पड़ने के लिए नहीं बना था । मैं थोड़ा टेढ़ा किस्म का व्यक्ति हूँ, कह सकते है की थोड़ा हिला हुआ हूँ । एक लाइन में कहूँ तो मेरी जिन्दगी यदि नॉर्मल चल रही है तो मुझे बेचैनी होने लगती है की सब कुछ नॉर्मल क्यों है ? कुछ ना कुछ गड़बड़ तो होनी चाहिए, कोई ना कोई परेशानी तो होनी ही चाहिए ।

तो बस, यहीं से शुरू होती है कहानी । बचपन, बैकग्राउंड, माँ-पापा सबका इतिहास बताने की कोई आवश्यकता नहीं है, उन्होंने कोई झंडे नहीं गाड़े थे और ना ही यह कोई फैमिली ड्रामा है जो मैं सुनाता फिरूं, आगे यदि योग बना तो खुद ब खुद उनसे भी परिचय हो जायेगा ।

उस दिन बरसात बड़े जोर की हो रही थी, लगातार कई दिनों से बारिश हो रही थी । सुबह से हाई टाइड की सूचना मिल रही थी । यहाँ हाई टाइड का ऐसा है कि चार दोस्त मिल कर मूत भी दे तो भी हाई टाइड का अलर्ट घोषित हो जाता है । मेरी बदकिस्मती ही थी कि मैं ऑफिस में सबसे देर से निकलने वाला व्यक्ति था । जब तक निकला तब सारा मुंबई पानी-पानी हो चुका था । हालांकि सुबह से खबरें आ रही थीं, अपडेट्स मिल रहे थे, लेकिन यहाँ कौन ध्यान देता है भाई ? मुंबई आपको लापरवाह बना ही देती है । यहाँ किसी भी सूचना को गंभीरता से नहीं लिया जाता, तब तक नहीं जब तक आफत आपके गले तक ना आ जाये । बरसात अब भी अपने पूरे उफान पर थी, सड़क पर यातायात ठप्प सा हो गया था । मुझे नहीं पता कि बाकी कर्मचारी घर पहुंचे भी या रास्ते में ही कहीं अटके पड़े है । बिल्डिंग से बाहर आने के पहले ही मैंने अपना छाता निकाल लिया था । लेकिन बाहर की बारिश देखकर ही पता चल गया कि छाते की इसके सामने कोई औकात नहीं ।

हमेशा व्यस्त रहने वाली वह सड़क आज एकदम सुनसान थी, बारिश यूँ हो रही थी मानो किसी बड़ी सी टंकी से सीधी धार गिर रही हो । आसपास की ऊँची-ऊँची कार्पोरेट इमारतें धुंधली सी दिखाई दे रही थी । हमेशा व्यस्त रहने वाला यह कार्पोरेट एरिया आज पूर्णतया सुनसान था । शायद बाकी कम्पनी के बॉस मेरे बॉस जितने खडूस नहीं रहे होंगे । शाम के साढ़े छह बज रहे थे लेकिन काफी अँधेरा हो आया था । स्ट्रीट लाइट्स किसी प्रकार इस बरसात में टिमटिमा रहे थे, अब ऑफिस में रुकूँ या निकलूं इसका निर्णय नहीं ले पा रहा था । कुछ देर सोचने के पश्चात यह तय हो गया कि निकलने में ही भलाई है, बरसात के अभी रुकने के कोई आसार नजर नहीं आ रहे थे, यहाँ रुकने का भी कोई मतलब नहीं था । सड़कों पर पब्लिक ट्रांसपोर्ट नदारद था, लेकिन स्टेशन आधे घंटे की पैदल दूरी पर था । तो चल कर जाने में कोई हर्ज भी नहीं था, यही सोचकर मैंने अपने कदम बाहर रख दिए । पहले ही कदम में मेरे जूते पानी में पूर्णतया डूब गए लेकिन और कोई रास्ता भी नहीं था । जूतों के लिए परेशान होने का समय नहीं था । छपाक-छपाक करते हुए, पैरों से पानी को काटते हुए मैं सड़क पर पहुंचा । एक बार मुड़कर मैंने ऑफिस की इमारत को देखा ।

इमारत के ऊपर ही भयंकर रूप से बिजली कड़की, जिसकी रोशनी में सम्पूर्ण इमारत नहा गई ।

ऑफिस की इमारत वैसे भी दुनिया की सबसे डरावनी जगह होती है, लेकिन इस दृश्य ने उसकी मनहूसियत में चार चाँद लगा दिए थे । वह किसी अंग्रेजी भूतिया फिल्म की इमारत प्रतीत हो रही थी, मैंने अपनी नजरें वहां से हटाई, क्योंकि मुझे आगे बढ़ना था । सड़क पर घुटनों तक मटमैला पानी बह रहा था । एक बारगी मुझे लगा भी कि मैंने बाहर निकलने का निर्णय लेकर गलती तो नहीं कर दी, वापस ऑफिस में लौट जाना चाहिए और मौसम सामान्य होने तक की प्रतीक्षा करनी चाहिए । मैंने एक नजर इमारत को देखा, पुन: बिजली कौंधी, मेरी दुबारा उसे देखने की हिम्मत नहीं हुई और आगे बढ़ने का फैसला ही उचित प्रतीत हुआ ।

□□□

शहर का दृश्य देखकर मुझे हॉलीवुड की डिजास्टर फिल्मों की याद आ गई, जिसमें किसी ना किसी कारण से सम्पूर्ण विश्व पानी अथवा बाढ़ के मध्य डूब जाता है और सम्पूर्ण विश्व नष्ट होने की कगार पर खड़ा नजर आता है । ऐसे में गिने चुने लोग ही बचे होते है, जिनमें से एक हीरो होता है और एकाध हिरोइन, दुनिया बचाते-बचाते वे एक दूसरे के करीब आ जाते है । लेकिन अफ़सोस यह हॉलीवुड का कोई शहर नहीं बल्कि मुंबई था, मुंबई में चाहे प्रलय ही क्यों ना आ जाए और इस प्रलय में भले ही मैं इकलौता मर्द जीवित बचा रहूँ, इसके बावजूद मजाल जो आखिरी बची लड़की भी मेरी तरफ देख ले । खैर अब छाता किसी काम का नहीं था, किसी प्रकार वह अपनी शक्ति का हर एक कतरा जुटा कर भयंकर बरसात और तेज हवाओं से टक्कर ले रहा था, लेकिन कब तक ? आखिरकार एक तेज झोंके ने उसके अंजर-पंजर तितर-बितर कर दिए । छाते की तीलियां अलग और उसका कपड़ा अलग, लेकिन बरसात इतने पर भी नहीं मानी, उसे छाते का केवल गुरूर ही नहीं तोड़ना था, बल्कि वह उसे उसकी असली औकात दिखाने की ठान चुकी थी । आखिरकार छाते का एकमात्र बचा हुआ अवशेष उसकी डंडी भी बुरी तरह मुड़ गई । बड़े दुखी मन से मैंने उसे अलविदा कहा और बहते पानी के हवाले कर दिया ।

बिजली निरंतर कड़क रही थी, कई इलाकों की बिजली ठप्प हो चुकी थी । अँधेरा और घना होता जा रहा था, वह बरसात मुंबई की अब तक की सबसे भयंकर बरसात थी जिसका पता मुझे बाद में चला । स्टेशन तक पहुँचने के सारे मार्ग बंद हो चुके थे, हर ओर पानी ही पानी था । स्टेशन जाकर भी कुछ हासिल नहीं होने वाला था, क्योंकि इतनी बरसात में लोकल भी बंद हो चुकी होंगी, लेकिन अब वापस जाना भी संभव नहीं था । ऑफिस के रास्ते में पड़ने वाला नाला अब सड़क पर बह रहा था । उसका प्रवाह इतना तीव्र था कि वह एक ट्रक तक को आसानी बहा ले जाता । वही एक बंद पड़ी शॉप के पास

पानी के तेज बहाव में एक युवती अपनी स्कूटी पूरी ताकत से धकेल रही थी । युवती पानी में पूरी तरह तरबतर हो चुकी थी । उसकी स्कूटी आधी पानी में डूब चुकी थी, स्कूटी का इंजन भी अब बंद हो गया था, किन्तु वह हार मानने को तैयार नहीं थी । उसने फिर प्रयास किया किन्तु असफल रही । मैं उससे कुछ ही मीटर की दूरी पर था, पानी के बहाव के मध्य बिजलियाँ कड़क रही थी । लड़की सड़क के दूसरी लेन पर थी, और उसी लेन से होते हुए वह बड़ा नाला गुजरता था जो मीठी नदी में जाकर मिलता था । चूँकि मीठी नदी पूर्णतया ब्लॉक हो चुकी थी तो नाला भी अपने सम्पूर्ण उफान पर था, सड़क की उस लेन पर पानी किसी नदी की भांतिभांति बहने लगा था ।

“ओ हेल्लो, यहाँ देखिये हेल्लो..” मैंने अपनी सम्पूर्ण शक्ति से चीखते हुए उस स्कूटी सवार युवती को पुकारा, उसने मेरी ओर देखा ।

“हट जाइये वहाँ से, नाला ओवर फ्लो हो रहा है, पानी बढ़ रहा है । स्कूटी छोड़ो और फौरन हटो...” किन्तु मेरे शब्द बिजली की भयंकर गड़गड़ाहट के मध्य कहीं दब कर रह गए । युवती मेरी बात सुन ही नहीं पाई, मैंने हाथों के इशारे से उसे उस नाले की ओर देखने को कहा । लेकिन वहां नाला था ही नहीं । होता कैसे ? पानी तो कब का नाले की सीमा पार कर चुका था, अब वह सम्पूर्ण सड़क ही नाले का हिस्सा बन चुकी थी । पानी का बहाव इतना तीव्र था की लड़की का उस बहाव में बच पाना मुश्किल ही था ।

“लेन बदलिए, स्कूटी छोड़िये ! नाले का पानी सड़क पर बह रहा है, फौरन इस ओर आइये ।” मैं फिर चीखा, और भगवान का शुक्र है कि इस बार उसे सुनाई दिया, उसने अपने चारों ओर देखा, उसकी स्कूटी अब पूरी तरह से पानी में डूब चुकी थी, लड़की कमर तक पानी में थी । वह घबरा गई थी, उसे स्थिति के इतनी जल्दी बिगड़ने की उम्मीद नहीं थी । उसके दिमाग ने शायद काम करना बंद कर दिया था । वह बदहवास सी चारों ओर बढ़ते जलस्तर को देखती रही ।

आखिरकार मैं घुटने तक पानी में छलांगे मारते हुए उसकी तरफ बढ़ा, दोनों लेन के बीचोबीच डिवाइडर बना हुआ था, पानी डिवाइडर तक पहुँच गया था । अचानक तेज बहाव से लड़की का संतुलन बिगड़ा और वह स्कूटी से पलट गई, उसके पलटते ही स्कूटी बहते हुए नाले में जा गिरी । वह पानी में डुबकी मार कर वापस ऊपर आई, स्कूटी के पश्चात अब उसकी बारी थी । एक मिनट से भी कम समय लगना था उसे उस बहाव में गुम हो जाने के लिए, लेकिन मैं डिवाइडर तक पहुँच चुका था, और इससे पहले की लड़की बहाव के हवाले हो जाती मैंने उसके हाथ थाम लिए । हालांकि बहाव तेज था इसके बावजूद दो व्यक्तियों की सम्मिलित शक्ति और वजन के कारण अब हमारा बहना थोड़ा मुश्किल था । ध्यान रखिये मुश्किल कहा असम्भव नहीं, अभी ऊपर ही मैंने बताया था कि उस नाले के बहाव में ट्रक तक बह सकता है । लड़कियां उतनी भी हल्की फुल्की नहीं होती जितना

फिल्मों और सीरियल्स में दिखाई जाती है, उसका हाथ पकड़ते ही मुझे इस बात का अहसास हो गया । कोई और पल होता तो वाकई वह एक रोमांटिक पल होता, लेकिन उसे एक झटके से बहने से रोकने के कारण मुझे यूँ लगा मानो मेरा कंधा ही उखड़ जायेगा । पानी का बहाव तेज था, मुझे डिवाइडर के दूसरी तरफ होने का लाभ मिल रहा था, लड़की के स्पर्श से ही मेरे शरीर में झुरझुरी सी दौड़ गई । नहीं, यह वह वाली झुरझुरी नहीं थी, दरअसल मुझे महसूस हो गया था कि उसकी मदद के चक्कर में मैंने खुद मौत के मुंह में छलांग लगा दी है । चारों ओर पानी का शोर हो रहा था, बरसात भी पता नहीं क्या खाकर बरस रही थी, ऐसा लग ही नहीं रहा था कि मैं मुंबई में हूँ । यूँ प्रतीत हो रहा था जैसे उत्तराखंड के किसी पहाड़ी क्षेत्र से बाढ़ के मध्य उफनती नदी के मध्य खड़ा हूँ, जिससे निकलने का कोई रास्ता नहीं है । लड़की अपनी सुध-बुध खो चुकी थी, वह बदहवास सी थी । नहीं, वह कैसी दिखती थी, कैसा चेहरा था उसे देखकर क्या महसूस किया यह सब नहीं बता सकता क्योंकि उस समय इन चीजों का ख्याल ही नहीं था । बस किसी तरह जान बच जाए यही काफी था, जब सांस गले में फंसी हो तो रोमांस पिछले दरवाजे से भाग जाता है ।

मेरा ऑफिस बैग लगभग मेरे कमर के समानांतर पानी में तैर रहा था, यह ख़ुशी की बात थी कि उसमें मेरा लैपटॉप नहीं था । कुछ दिनों पहले ही हार्ड डिस्क में कोई दिक्कत आने के कारण लैपटॉप रिपेयर के लिए सर्विस सेंटर में दिया हुआ था वरना चालीस हजार का फटका बैठना तय था । अब मेरे कंधों पर जोर पड़ रहा था, आज मुझे सख्त अफ़सोस हो रहा था कि मैं जिम क्यों नहीं गया ? मतलब गया तो था लेकिन दो ही दिन बाद मैंने हाथ जोड़ लिए थे, यदि उसके बाद कुछ समय और रुक जाता तो थोड़ी बहुत ताकत और ज्यादा होती । अब इसे क्या कह सकते है जब एक दुबली-पतली लड़की को भी थामना बस के बाहर हो जाए, भला इससे बढ़कर शर्म वाली बात किसी युवक के लिए क्या हो सकती है ? मैं फिर विषय से भटक रहा हूँ, मुख्य मुद्दा अब भी नाले के पानी में तैर रहा था, यानी जान बचाने का । मेरे हाथ पकड़ने से लड़की कि आँखों में हल्की सी उम्मीद दिखी, भले बहाव तेज था लेकिन इतने में भी किसी का सहारा होने का अहसास भी काफी हिम्मत दे देता है । डूबते को तिनके का सहारा वाली कहावत तो पता ही होगी, उसके लिए मैं शायद वही तिनका था, नहीं मैं इतना भी दुबला-पतला नहीं हूँ, वह बस कहावत के सन्दर्भ में कहा ।

“छोड़ना मत..” लड़की कि आवाज निकली, उस स्वर में टनों घबराहट समाई हुई थी । यह भला बोलने वाली बात थी ? मैंने छोड़ने के लिए थोड़े ही पकड़ा था ।

“हिम्मत बनाए रखो, कुछ नहीं होगा तुम्हें, तुम ये कर सकती हो..” मैंने उसे मोटिवेट करने का प्रयास किया ।

“जस्ट शट अप ओके ? अपना ध्यान बकबक में नहीं मुझे खींचने में लगाओ ।”

मैं हैरान रह गया, मतलब यार सच में ? कोई महिला ऐसी परिस्थितियों में भी कैसे डांट सकती है ? फिर मुझे याद आया वह महिला है, और उसके लिए कुछ भी नामुमकिन नहीं है । मुझे अपनी इस अज्ञानता पर बड़ी ही शर्म आई और मैंने और ताकत लगाकर उसे खींचना आरम्भ किया । अब हवा भी तेज हो चुकी थी, आँखों के आगे के दृश्य भी बौछारों के कारण धुंधले होने लगे थे । उसने काले रंग का स्कार्फ पहन रखा था, जिसपर मोतियां वगैरह जड़ी हुई थी, मुझे पता है यह उचित समय नहीं है इन चीज़ों का वर्णन करने का, लेकिन मैं उसे नजरंदाज नहीं कर सकता था क्योंकि उस तेज हवा में वह सीधे मेरे मुंह से टकरा रहा था । मैंने अतिरिक्त ताकत के लिए अपने दोनों पैर डिवाइडर के निचले हिस्से में टिका कर विपरीत दिशा में बल लगाया, लड़की ने भी दूसरे हाथ से मेरी कलाई थाम ली । अब वह पानी के मध्य डुबकियां लगाने लगी थी, मैंने अपने दोनों हाथ उसके कंधों के मध्य रखा और पूरी ताकत से अपनी ओर खींचा, जाहिर सी बात है अकेले में इतना दम नहीं था जो उसे पानी के इस बहाव से खींच लेता, उसने भी अपने आप को पूरी ताकत से मेरी ओर धकेला था । एक ही झटके में वह डिवाइडर पार करके मेरे पास आ चुकी थी । मैंने अब तक उसे पकड़ा हुआ था । वह भी अपनी पूरी शक्ति से चिपटी हुई थी, माहौल ही ऐसा था कि दोनों को एक साथ रहना आवश्यक था, पानी का प्रवाह अकेले व्यक्ति के सम्भालने लायक बिलकुल नहीं था ।

“देखिये हमें इस सड़क की दूसरी ओर जाना होगा, यह पूरा रास्ता पानी से भर रहा है, थोड़ी देर और रहे तो डिवाइडर पूरा डूब जायेगा और हम भी नाले में जा गिरेंगे ।” मैंने उससे कहा, चेहरा अब भी नहीं देख पाया था, उसका होश ही किसे था । यहाँ जान के लाले पड़े हुए थे ।

किसी तरह से हम एक-दूसरे को पकड़े हुए कमर भर पानी में चलते रहे, अचानक से कोई चीज सरसराते हुए हमारे बीच से निकल गई, वह सांप था, मैंने साफ़-साफ़ देखा वह दो हाथ लम्बा सांप था । दोनों का गला खुश्क हो गया, सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई ।

“क्या वह सांप था ?” लड़की ने कहा, हालांकि जवाब उसे अच्छे से पता था वह इतना बड़ा था कि कोई अंधा भी देख लेता ।

“हां ! लगा तो वही ।” मैंने अपनी घबराहट पर काबू पाने की नाकाम कोशिश की लेकिन असफल रहा, लड़की मेरी घबराहट भांप चुकी थी ।

“निकलने की कोशिश करो जल्दी से जल्दी । यहाँ और भी होंगे ।” उसने कहा, गजब का बदलाव आया था उसमें, अभी थोड़ी ही देर पहले तक खुद का होश नहीं था उसे, और अब मुझे ही ऑर्डर दे रही थी । वैसे मेरी हालत भी अब उल्टी हो चुकी थी, जहां शुरुआत में मैं हीरोगिरी कर रहा था वही अब दहशत के मारे मेरा बुरा हाल था । यह हंसने की बात नहीं है, जब कमर भर पानी के नीचे कोई लहराती हुई चीज आपने दोनों टांगो के बीच छू कर

निकल जाये और आपको पता चले कि वह सांप था तो आपकी भी हीरोगिरी धरी की धरी रह जाएगी। लड़की मेरा हाथ पूरी मजबूती से पकड़े हुए थी, हम धीरे-धीरे आगे बढ़ते रहे, डिवाइडर से लगकर चलना ही सुरक्षित था। लगभग सौ डेढ़ सौ मीटर पर कुछ इमारतें दिखाई दे रही थीं, उनमें स्थित दुकानों की सीढ़ियाँ काफी ऊँची थी जहाँ पानी नहीं था, और वह इमारतें एक दूसरे से नजदीक थी।

"हम उन इमारतों कि सीढ़ियों से होते हुए चलते हैं, फिलहाल तो सड़क सुरक्षित नहीं लग रही।" मैंने लड़की की ओर देखते हुए कहा। अँधेरा था अब भी चेहरा नहीं देख पाया। उसने कुछ नहीं कहा, बस सिर हिला कर सहमती दे दी, पानी का बहाव यहाँ तेज होने लगा था तो कलाई छोड़ वह मेरे कंधे से चिपक गई। यह बात और थी कि डर के मारे मैं खुद उससे अपने आप को नहीं छुड़ा पा रहा था। इसी प्रकार यदि हम किसी और परिस्थिति में मिले होते तो ? आहा हा ....लेकिन नहीं, मैं इतना खुशकिस्मत नहीं हूँ इतना तो मुझे पता है।

हम थोड़ी ही देर में बहते पानी से संघर्ष करते हुए हम इमारतों की सीढ़ियों पर पहुँच गए, बिजली अब भी रह-रह कर कौंध रही थी। बिजली अब तक नहीं आई थी, स्टेशन यहाँ से मात्र दस मिनट की दूरी पर ही था।

"मैं स्टेशन जा रहा हूँ, और आप ?" मैंने थोड़ा घबराते हुए पूछा।

"क्यों ? आपका घर नहीं है क्या ?" उसने मासूमियत से पूछा।

"म...मेरा मतलब था स्टेशन से घर के लिए निकलने वाला हूँ।" उसके इस अप्रत्याशित प्रश्न से मैं हड़बड़ा गया।

"मैं भी, लेकिन मेरी स्कूटी.." कहते-कहते वह रुक गई, एक लड़की के लिए उसकी स्कूटी के खोने से बड़ा दुःख भला क्या हो सकता था ? मैं शर्त लगा कर कह सकता हूँ कि उसका रंग पिंक रहा होगा।

"पिंक कलर की थी ना आपकी स्कूटी ?"

"जी हां।" उसने दर्द भरी आवाज में पुष्टि कर दी, मैं मन ही मन अपनी इस क्षमता पर मुस्कुराया लेकिन फिर वह मुस्कुराहट गायब हो गई। बरसात अभी भी लगातार हो रही थी, हमारे सामने की सड़क अब पूरी तरह से नदी बन चुकी थी, घर पहुंच पाऊंगा या नहीं यह भी कहना मुश्किल था, ऐसे में भला मुस्कुराहट कैसे कायम रह पाती ?

"स्टेशन जाकर क्या करेंगे ? स्टेशन तो पूरा डूब चुका होगा, लोकल तो सुबह ही बंद हो गई थी, और तब से बरसात भी नहीं रुकी है। वहां जाकर कोई मतलब भी तो नहीं है ? वैसे आप रहते कहाँ हैं ?" उसने पूछा, यह सवाल मैं पूछने वाला था लेकिन कोई बात नहीं।

"जी ! डोम्बिवली और आप ?"

"ठाणे।" उसने सपाट भाव से उत्तर दिया।

"बांद्रा से वहाँ तक कैसे पहुंचेंगे ? सब तो बंद है, टैक्सी, बस, ऑटो, ट्रेन, यहाँ तक कि कोई आदमी भी दूर-दूर तक नहीं दिखाई दे रहा है । मेरा मोबाइल भी भीग कर खराब हो चुका है, घरवालों को भी खबर नहीं कर सकती, मम्मी पापा, भैय्या परेशान होंगे ।" वह अपने आप में ही बड़बड़ा रही थी, उसका शरीर कांप रहा था । लगातार बारिश में भीगने के कारण ठंड लगने से मेरी भी कंपकंपी छूट रही थी ।

"मेरे ख्याल से जब तक कोई रास्ता नहीं निकलता हमें एक साथ रहना चाहिए ।" यह कहते हुए मुझे बेहद संकोच हो रहा था । वह कुछ नहीं बोली, वह फिर खुद से कुछ बुदबुदाई । बीच में ही उसके चेहरे पर हल्की सी मुस्कुराहट दिखाई और फिर उसकी जगह उदासी ने घेर ली । मुझे ताज्जुब हुआ कि इन परिस्थितियों में वह कैसे मुस्कुरा सकती है ? लेकिन फिर यह सोचकर हमदर्दी भी हुई कि शायद स्कूटी के खोने के सदमे के कारण उसपर असर हुआ है, होता है । मेरा लैपटॉप भी जब गिरा था तो मैं भी सनक गया था । वहां रुके रहने का कोई मतलब नहीं था, सड़क पर पानी बढ़ता जा रहा था, शायद प्लास्टिक्स के कारण पानी को निकलने का मार्ग नहीं मिल रहा था । मुंबई हमेशा से प्लास्टिक और जाम नालियों के चलते बरसातों में यूँ ही परेशान होती है । हालांकि इस बार जैसा हुआ था वैसा अब तक के इतिहास में कभी नहीं हुआ था । इसलिये स्थिति अभी और बदतर हो सकती थी, वहां रुकने का जोखिम नहीं उठा सकते थे, पानी निचली सीढ़ियों तक आने लगा था ।

"हमें चलते रहना चाहिए ।" मैंने धीरे से कहा, लड़की ने सिर हिला कर सहमती दे दी, शायद वह भी स्थिति की गंभीरता को समझ गई थी । हम काफी देर तक यूँ ही इमारतों की सीढ़ियों पर चलते रहे । एक बार तो मन में विचार भी आया कि किसी इमारत में ही शरण ले ली जाए, लेकिन सभी इमारतों के प्रवेश पिछले हिस्से में थे, और वहां तक का रास्ता पानी के तेज बहाव से होकर जाता था, जिसमें उतरने का मतलब था किसी ना किसी नाले में बह जाना । जहाँ तक रास्ता दिखे वहां तक चलना ही उचित था, आखिरकार हमने आगे बढ़ने का फैसला किया और किनारे-किनारे से होते हुए आगे बढ़ने लगे । काफी देर तक चलने के पश्चात बचते बचाते हम स्टेशन परिसर के आसपास पहुंच गए, वहां का नजारा देख कर होश उड़ गए, स्टेशन तक जाने का कोई रास्ता ही नजर नहीं आ रहा था । चारों ओर बस पानी ही पानी, अंधेरे में बहते पानी का शोर बेहद भयंकर लग रहा था, स्टेशन की ओर बढ़ना अब बेवकूफी ही थी । हम लगातार भीगे जा रहे थे, कहीं रुकना जरूरी था वरना तबीयत खराब होने का डर था, लेकिन वो रिस्क ले सकते थे । कम से कम डूबने से बीमार होना बेहतर पर्याय होता ।

"अब क्या करें ?" लड़की ने प्रश्न किया ।

“चलते रहना पड़ेगा, एक जगह रुक नहीं सकते । रात भी हो रही है और पूरी मुम्बई सुनसान पड़ी है, कहीं आने जाने का रास्ता नहीं दिखाई दे रहा है, मोबाइल खराब हो चुके है, कोई वाहन नहीं है । सब कुछ बंद है, इस हालत में हमारा डोम्बिवली-ठाणे पहुंचना असम्भव है अब बस हमें सर्वाइव करना है, किसी तरह की कोई मदद खोजनी होगी ।” मैं मौजूदा हालात देखते हुए नतीजे पर पहुंचा ।

“हे भगवान !जाने किस मनहूस घड़ी में मैं ऑफिस के लिये निकली थी । बुरी तरह फंस गई, घरवाले हैरान परेशान होंगे, क्या करूँ मैं ।” लड़की की रुलाई फूट पड़ी और वह सिर पकड़ कर बैठ गई । मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि मैं उसे किस प्रकार सांत्वना दूं, मैं ऐसी किसी परिस्थिति में किसी लड़की के साथ पहली ही बार फंसा था ।

“देखो हिम्मत मत हारो, हिम्मत है तो...”

“शट अप ! जस्ट शट अप, डोंट से अगेन दिस नॉनसेंस ।” उसने एकदम से डांट दिया और रोने लगी ।

“देखो, तुम एक काम करो, यहीं बैठी रोती रहो, मैं चला । एक तो यार किसी की मदद करने की कोशिश करो उस पर उसकी बातें भी सुनो, तो यह मुझसे नहीं होगा । अब तक साथ देने के लिये थैंक यू ।” अब मुझे भी बिना बात की डांट सुनकर गुस्सा आ गया था, इतना कौन बर्दाश्त करे भाई । मैं आगे बढ़ गया लेकिन उसे इस तरह ऐसे माहौल में छोड़ने का अपराध बोध सा होने लगा, लड़की ने रोका तक नहीं । पता नहीं किस बात का घमंड था उसे । थोड़ी दूर चलते रहने के बाद मन बेचैन होने लगा । अंधेरी रात है, आंधी तूफान बरसात हो रही है ऐसे में एक लड़की को अकेले छोड़ना बिल्कुल भी सही नहीं था, नहीं, हीरो बनने का शौक नहीं था और ना ही उसे इम्प्रेस करने का कोई इरादा था । वो अंदर जो इंसानियत नाम की बीमारी थी वह रह-रह कर उफन रही थी । मन कचोटने लगा ।

अचानक लड़की की चीख सुनाई दी, अब सोचने का समय ही नहीं था । मैं घुटनों भर पानी में छपाक-छपाक करते हुए जहाँ से आया था वहीं वापस दौड़ा । लड़की इस समय तीन व्यक्तियों के मध्य घिरी थी, निस्संदेह उनका इरादा सही नहीं था, अब मैं ठिठक गया पता नहीं आगे बढ़ना सही है या नहीं ? तीन लोगों से मैं अकेला तो नहीं भिड़ सकता था । ऐसा केवल फिल्मों में ही होता है, हकीकत में तो ये तीनों मुझे मार पीट कर उसी नाले में बहा देते । चाहे कुछ भी हो लेकिन अपने सामने ऐसा कुछ होते देखकर चुप नहीं बैठ सकता था । मुझे गुस्सा आया ऐसे लोगों कि नीचता पर कि इस समय जब सारा शहर मुसीबत में है तब कैसे कुछ लोग इस अवसर का फायदा उठा सकते हैं ? मेरी मुंबई के लोग ऐसे नहीं है, बाकी दिनों भले आपस में लड़ते झगड़ते रहे लेकिन ऐसी किसी आपदा के समय सब एक दूसरे कि सहायता करते है । लेकिन कुछ लोगों का जन्म ही इन सब चीज़ों

के लिए होता है । वे कुत्ते की दुम होते है । खैर ज्यादा फिलासफी पेलने का समय नहीं था, लड़की से छीनाझपटी शुरू हो गई थी ।

"अरे भाई ! रुक जाओ, ये क्या कर रहे हैं आप लोग ?" मैं पूरी शक्ति से चीखा, नहीं ! गुस्से से नहीं चीखा था, जोर से इसलिये ताकि इस बरसात और अंधड़ भरे वातावरण में मेरी आवाज उन तक पहुँच सके । हैरानी की बात थी कि ये तीनों आखिर किस रास्ते से यहाँ पहुंचे थे ? खैर अब आगे बढ़ने का समय था, हिरोगिरी करने का समय था । मैं फुर्ती से लड़की तक पहुँच गया, तीनों एकदम सतर्क हो गए, तीनों हट्टे-कट्टे मुष्टंडे थे और मैं सिंगल पसली, समझ गया कि अब पिटना निश्चित है ।

"हीरोगिरी में मत पड़, चल अपना रास्ता नाप ।" उनमें से एक ने मुझे डपट दिया ।

"उस्ताद ! इसको भी लूट लो, बड़की पार्टी लग रही है, पर्स वगैरह छीन लो ।" उनमें से एक ने सुझाव दिया ।

"देखो भाई, ऐसा कोई करता है क्या ? इस समय सारी मुम्बई एक दूसरे की मदद कर रही होगी और आप लोग ऐसा करोगे तो लोगों का विश्वास उठ जाएगा मुम्बई स्पिरिट से ।" मैंने समझाने का प्रयास किया, लड़की मुझे वहां देखकर भौंचक्की थी, वह आश्चर्यजनक रूप से शांत हो गई । शायद सदमे में हो, आज उसने काफी कुछ झेला था, होता है ऐसा ।

"काहे की स्पिरिट ? ये क्या होता है बे ? चल अबी चुपचाप अपना पर्स मेरे हवाले करने का । अंगूठी, चेन,घड़ी भी देने का और जिधर से आया उधर ही निकल लेने का ।" उसने धमकाया, और कोई रास्ता नहीं था, फिलहाल जान है तो जहान है वाली बात थी । वैसे भी मन्थ एंड था, पर्स खस्ताहाल ही है, हां चेन और अंगूठी जाने का दुःख था । मैंने निकालने का प्रयास किया ।

"ठीक है मैं देता हूँ फिर हमें जाने दीजिये ।" अंगूठी उंगली में फंस सी गई थी ।

"अबे जल्दी निकाल ।"

"फंस गई है, नहीं निकल रही ।"

"रुक मैं ही निकालता उंगली के साथ ।"

यह सुनकर मेरे होश ही उड़ गए । उसने वाकई में एक बड़ा सा चाकू अपनी कमर से निकाल लिया था, क्या वह वाकई उंगली काटने वाला था ?

"भाई न...निकाल रहा हूँ ना, बस निकल ही गई ।" मैं छटपटाया, हालांकि अंगूठी टस से मस नहीं हुई । उंगली कटने के खौफ से मैंने पूरा जोर लगाया जिसके फलस्वरूप उधर कि चमड़ी ही कट गई, दर्द की एक तेज लहर मेरे शरीर में दौड़ गई लेकिन यह दर्द उस दर्द के सामने कुछ भी नहीं था जो उंगली कटने के बाद होता । अब वे तीनों बेसब्र हो गए थे उसमें से एक ने झपट कर मुझे पकड़ लिया । दूसरा चाक़ू लिए आगे बढ़ा ।

"इससे सब लेने के बाद लड़की से भी मजे लेंगे, आज तो नसीब चमक गया अपना..." उसके शब्द उसके मुंह में ही अटक गए, उंगली कटने के भय से जाने कहाँ से इतनी हिम्मत आ गई कि मैंने उछल कर अपना बूट उसके चेहरे पर दे मारा। बूट की ठोकर से वह सीढ़ियों पर गिर पड़ा, उसकी नकसीर फूट गई जिसमें से खून बहने लगा। उसने अपना बहता खून देखा तो मानो पागल सा हो गया। जिसने मुझे जकड़ रखा था उसने मेरी पीठ में अपने घुटने का जोरदार प्रहार किया, मैं घुटने के बल आ गिरा तो उसने मेरे बालों को बेरहमी से अपनी मुट्ठियों में कस लिया।

"@#$% हीरोगिरी करेगा स्याने, अभी तो उंगली कटनी थी अब देख तेरा क्या हाल बनाते है।" उसने भी अपनी जेब से एक खंजर निकाल लिया, हो सकता है वह चाक़ू हो, या खंजर, मुझे नहीं पता। फिल्मों में कभी खंजर, कभी छुरा, कभी चाक़ू और पता नहीं क्या-क्या कहते है। खैर वह समय खंजर-चाक़ू के डेफिनेशन को ढूंढने का तो हरगिज नहीं था। मैंने अपनी शक्ति जुटाने का प्रयास किया ही था कि तीसरे बचे साथी ने एक जबरदस्त घूंसा मेरे चेहरे पर टिका दिया, निस्संदेह मेरी आँख नीली पड़ गई होगी, जबड़ा बुरी तरह हिल गया था, आँखों के आगे तारे नाच गए। उन दोनों ने फिर ताबड़तोड़ मुझे ठोकरों पर रखना शुरू कर दिया। मैंने जिसकी नाक तोड़ी थी अब वह भी आ गया, वह तो शुरू से ही मुझे फाड़ खाने को आतुर था, अब तो छोड़ने की कोई वजह ही नहीं थी, वह आगे बढ़ता तब तक धम्म की जोरदार आवाज आई और वह मुंह से खून की उल्टी करता हुआ कई फीट दूर तक उड़ते हुए जाकर सड़क के तेज बहाव वाले पानी में जा गिरा। बहाव में वह पलक झपकते ही गायब हो गया, सड़क के नीचे गुजरते नाले ने शायद उसे अपनी आगोश में ले लिया। मेरी आँखें हैरत से फटी जा रही थी, वैसे फट तो बहुत कुछ गया था, लेकिन यह अलग फटना था, वह यूँ उछला था मानो वह सौ किलोमीटर प्रति घंटा से आती किसी कार से जा टकराया हो। मैंने उसे टक्कर मारने वाली चीज के पास देखा, वहां कुछ भी नहीं था, सिवाय उस लड़की के। उन दोनों गुंडों की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई थी। लेकिन बस कुछ ही क्षणों के लिए, सारा माजरा उन्हें समझ में आते ही वे गुस्से में उसकी ओर दौड़े, एक ने चाक़ू लहराया लेकिन लड़की ने उसका चाक़ू वाला हाथ ही थाम लिया, वह आश्चर्यजनक रूप से उसकी पकड़ से बिलबिलाने लगा था, लड़की की पकड़ बेहद शक्तिशाली लग रही थी। गुंडा छटपटाने लगा और घुटनों पर बैठ गया, लेकिन लड़की की पकड़ अब भी उसकी कलाई पर कसी जा रही थी। उसके कंधों पर लड़की ने अपना पाँव पूरी शक्ति से दे मारा, हड्डी टूटने की आवाज साफ़ सुनाई दी। मुझे तो अपने कानों पर यकीन ही नहीं हुआ कि मैंने ऐसी कोई आवाज सुनी थी। लड़की की दूसरी ठोकर में वह सीढ़ियों से किसी फुटबॉल की तरह टप्पा खाते हुए नीचे बहते पानी में जा गिरा। पानी में गिरने के बाद कुछ दूर तक वह बहता हुआ दिखाई दिया फिर अपने साथी की तरह वह भी ओझल हो गया। तीसरा गुंडा अब तक असमंजस में था, उसे लड़की से इस तरह लड़ने की

उम्मीद नहीं थी, वह थर-थर कांप रहा था, लड़की भयंकर गति से उसकी ओर बढ़ी और उसका सिर इमारत की खुरदुरी दीवार में लड़ा दिया । सिर और दीवार के टकराव से ऐसी भयानक आवाज आई कि मेरी सांस ही अटक गई, गुंडा निस्संदेह चीखा था किन्तु उसकी चीख गले में ही अटक गई थी । लड़की ने उसके बालो को बेरहमी से जकड़ते हुए अपनी ओर खींचा, इसी समय बिजली कड़की । लड़की के चेहरे पर उस गुंडे के खून की बूंदें स्पष्ट दिखाई दी थी, उस बिजली की चमक में उसका वह स्वरूप बेहद डरावना था, एकदम साक्षात माँ काली का प्रतिरूप दिखाई दे रही थी वह । बदमाश भयाक्रांत होकर उसकी आँखों में देखता रहा, वह दहशत से मरा जा रहा था । उसे ना जाने क्या हो गया था कि मिर्गी के मरीज की भांति कांपने लगा, उसने पूरी शक्ति से अपने बालों को लड़की की मुट्ठी से आजाद करवाया और बिना सोचे समझे बहते पानी में छलांग लगा दी । पानी में अनेकों गुलाटियां खाने के पश्चात सड़क के दूसरे छोर पर जाकर वह भी अपने साथियों की तरह गुम हो गया । यह सब देख कर मेरे शरीर में झुरझुरी दौड़ रही थी, मैं हक्का-बक्का होकर लड़की की ओर देखता रहा । लड़की एकदम सपाट भाव लिए खड़ी थी, रह-रह कर बिजली की कौंध से उसका चेहरा चमक उठता था, बारिश के कारण उसके चेहरे पर पड़ी खून की बूंदें धुल चुकी थी, उसने मेरी ओर देखा ।

ओह गॉड ! ऐसी ठंडी नजरों से उसने मुझे देखा था कि सम्पूर्ण शरीर में डर की सर्द लहर सी दौड़ गई, कानों तक झुरझुरी महसूस की । अभी मैं कोई प्रतिक्रिया देता उसके पहले ही वह किसी शराबी की तरह लहराई और सीढ़ियों पर गिर पड़ी । अचानक उसे क्या हुआ यह मुझे समझ में नहीं आया, मुझे हैरानी के सागर से बाहर आने में कुछ पलों का समय लगा । अब मुझे अपनी चोटों से उठते दर्द का अहसास होने लगा था, मेरे जोड़-जोड़ में दर्द हो रहा था, कमीनों ने बुरी तरह तोड़ा था मुझे । क्या वे ज़िंदा है ? क्या मैंने आज अपनी आँखों के सामने तीन लोगों को मरते देखा है ? अभी जो हुआ उसे याद करते ही मेरा दिल कांप गया था । सब कुछ किसी डरावने सपने की भांति प्रतीत हो रहा था । मैं घबराते हुए लड़की के पास पहुंचा, अब तो उसकी परछाई से भी खौफ होने लगा था । फिर भी पता नहीं क्यों मैं उसके नजदीक पहुँच गया, मैंने घबराते हुए उसे देखा ।

“अ..आप ठ...ठीक तो हैं ?” लड़खड़ाती जुबान से मैंने कहा, किन्तु उसने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी । फिर कांपते दिल से मैंने उसकी ओर हाथ बढ़ाया, उसके कंधे को छुआ भर था कि वह एक झटके से पलट गई और मेरी कलाई थाम ली । उसकी पकड़ इतनी मजबूत थी कि मेरी कलाई कि हड्डी तक कड़कड़ाने लगी ।

“आह ! अम्मा, अरे मेरी माँ ! ! आ.. आह, अरे मैं हूँ, हम अभी साथ थे, मैंने तुम्हें बचाया था, आ ! अहह ।” मैं दर्द और दहशत से बिलबिलाया तो उसकी पकड़ एकदम ढीली हो गई और वह पुन: निढाल हो गई, मैं घबराकर जितनी तेजी से हो सका उतनी तेजी

से पीछे हटा, पीछे हटते ही दीवार का एक उभरा हुआ कोना मेरे सिर से जा टकराया और आँखों के आगे अन्धेरा छा गया ।

□□□

मेरी आँखें खुली, सिर के पिछले हिस्से में दर्द हो रहा था, मैंने हाथ लगा कर टटोला तो कुछ चिपचिपा सा लगा, देखा तो वह खून था । बालों का एक गुच्छा सा मेरे हाथ में आ गया । सिर अब भी घूम रहा था, मैंने अपने आसपास देखने का प्रयास किया, लड़की मेरे समीप ही घुटनों में सिर छुपाये बैठी हुई थी । बरसात अपने चरम पर थी, चारों ओर फैली अँधेरे की चादर स्पष्ट चुगली कर रही थी कि अच्छी खासी रात हो चुकी है । बौछारों से हम भीग रहे थे, लड़की जिस प्रकार घुटनों में सिर छुपाये थी वह बेहद डरावना सा प्रतीत हो रहा था । उसके बाल भीग कर घुटनों के चारों ओर फैले हुए थे, चेहरा उसके भीतर कहीं छिपा हुआ था । बिजली कड़कने भर की कमी बाकी थी, वह हो जाता तो किसी भूतिया फिल्म का माहौल हो जाता । सच कहूँ तो अब उस लड़की को देखकर डर लगने लगा था, वह अजीब सी थी, पहले पहल तो लड़की का साथ है इसलिये मैंने इस ओर ध्यान नहीं दिया लेकिन अभी कुछ देर पहले जो हुआ था वह कोई सामान्य बात भी नहीं थी । इस दुबली पतली लड़की ने जिसे मैंने डूबने से बचाया था, जो पानी में खुद को सम्भालने में असमर्थ थी, वह तीन-तीन मुस्टंडों से न केवल भिड़ गई बल्कि उन्हें शायद मार भी डाला ।

हे भगवान ! क्या वे सच में मारे गए है ? क्या मेरे सामने तीन लोगों की हत्या कर दी गई ? यह सोचकर ही मेरे तिरपन कांप गए । उस लड़की के सुबकने के स्वर ने मुझे चौंकाया, वह घुटनों में सिर छिपाए सुबक रही थी । यकीन मानिए यह इतना ज्यादा खौफनाक लग रहा था कि मन किया मैं भी उस बहते पानी में जाकर कूद पड़ूँ जिसमें तीन बदमाशों की मौत हुई थी । लेकिन यह इतना आसान भी तो नहीं था, कहने के लिए तो कुछ भी कह सकते है, जान देना इतना आसान थोड़े ही है । लड़की ने अचानक अपना सिर उठाया, और उसी पल बिजली कड़की । यह बिजली भी शायद इसी मौके के तलाश में थी, उसके चेहरे पर अफ़सोस वाले भाव थे, लेकिन वह मुझे देख कर एकदम से चहक उठी ।

“आप ठीक है न ? मैं कितना डर गई थी । मुझे लगा आप भी निकल लिए ।” उसने यह बात कुछ ऐसे अंदाज में कही कि मेरी फट गई । मतलब यार इतना कैजुअली कौन बोल सकता है ? वह भी इन हालातों में ? उसका हाथ मेरी ओर बढ़ा और मैं दहशत में आकर चीखते हुए पीछे हटा, लेकिन इस बार सिर बचाकर । वह हतप्रभ रह गई । पता नहीं मैं क्या कर रहा था, लेकिन जब मेरी हरकत का पता चला तो शर्मिंदगी हो गई ।

“जी म...मैं ठीक हूँ ।” मैंने नजरें चुराते हुए कहा ।

“आप मुझसे क्यों डर रहे है ?”

"क...कहाँ डर रहा हूँ, बस ऐसे ही थोड़ा-सा...अ...क्या वो बदमाश मर गए ?" मैंने हिम्मत करके पूछा ।

"लगा तो मुझे भी ऐसा ही था, लेकिन वो तीनों सड़क के दूसरी ओर दिखाई दिए थे, किसी तरह पानी से बाहर निकल चुके थे, लेकिन फिर वो रुके ही नहीं और भाग खड़े हुए ।" उसने सामान्य स्वर में कहा ।

यह सुनकर मेरी ग्लानि थोड़ी कम हुई, मेरी जान में जान आई । भगवान का शुक्र है जो वो तीनों बच गए ।

"लेकिन त...तुमने यह किया कैसे ? मेरा मतलब अकेले ही उन तीनों को कैसे ?"

"अच्छा उस बात को लेकर परेशान हो ? मैं ब्लैक बेल्ट हूँ कराटे में, ऐसी चीजों को बखूबी सम्भाल सकती हूँ, क्यों इसमें हैरानी क्यों हो रही है तुम्हें ? अगर इसका उल्टा होता, मेरा मतलब तुमने उन्हें पीटा होता तो क्या तब भी हैरानी होती ? मतलब तुम्हें क्या लगता है केवल मर्द ही लड़ सकता है ?"

"नहीं ! मेरा वो मतलब बिलकुल नहीं था, मान गया तुम्हें, तुम कमाल की हो ।"

"तुमने अब तक मेरा नाम नहीं पूछा ?"

"तुमने मौक़ा ही कहा दिया ? तुमने भी कौन सा मेरा नाम पूछ लिया ?"

"लड़के पहले पूछते है ना ?"

"यह कहीं का रिवाज है क्या ? आप पूछोगी तो जुबान घिस जाएगी क्या ?"

एक पल को शान्ति छा गई, यह क्या निकल गया मुंह से । दोनों ने एक दूसरे की ओर देखा, फिर हमारी हंसी छूट गई । और फिर हम पागलों की तरह हंसने लगे ।

"तुम्हारा चेहरा तो देखो.." उसकी हंसी रुक ही नहीं रही थी । मैं हंस रहा था लेकिन इस बात पर खिसियानी मुस्कुराहट दे दी । हंसते-हंसते वह अचानक से रुकी, इस तरह रुकी जैसे कोई बटन दबा कर उसकी हंसी बंद कर दी गई हो ।

"सोनल ! मेरा नाम सोनल है ।" उसके स्वर में वही पुराना ठंडापन लौट आया जिसे सुनकर मेरी रूह कांप जाती थी ।

"प्रीतम ! प्रीतम शुक्ला ।" मैंने प्रत्युत्तर में मेरा नाम बता दिया ।

"अब हमें चलना चाहिए, तुम्हें बेहोश हुए एक घंटे से ऊपर बीत चुका है । हमें किसी तरह किसी सुरक्षित जगह पहुंचना चाहिए, इस तरह रात भर हम यहाँ भीगते नहीं रह सकते, और वैसे भी तुम्हें इलाज की सख्त जरूरत है ।" लड़की उठ खड़ी हो गई । मैंने भी उठने का प्रयास किया और दर्द से दोहरा होकर वापस बैठ गया । शरीर के हर हिस्से में दर्द हो रहा था, आँखों के नीचे की सूजन इतनी बढ़ गई थी कि आधी आँख ही बंद हो गई थी, हाथ पैरों में तेज दर्द था । कमर में तो ऐसे दु:ख रहा था मानो कोई नश्तर धंसा दिया गया

हो, निस्संदेह दो तीन पसलियाँ टूट गई होंगी । घुटनों में बेतहाशा दर्द था, हरामखोरों ने लात घूंसों से पूरी तबीयत से बजाया था । सोनल ने आगे बढ़कर मुझे सहारा दिया ।

"सम्भल कर ।" उसने कहा, मैं किसी प्रकार उठ खड़ा हो गया । दर्द निरंतर जारी था, सिर भी चकरा रहा था, वह शायद सिर की चोट का असर था । उसने मुझे अपना सहारा देना चाहा लेकिन मैंने संकोचवश मना कर दिया । है न ? कितना बड़ा बेवकूफ हूँ न मैं भी ?

लेकिन यह जरूरी भी था, ना जाने क्यों मुझे अब भी कोई अनजाना डर सता रहा था । ना जाने क्या शंका हुई कि मैंने एक उचटती हुई चोर नजर उसके पैरों पर डाली ।

"मेरे दोनों पैर सीधे है, इस तरह चोरी छिपे देखने की जरूरत नहीं है ।' वह खिलखिलाई । उसने मेरी चोरी पकड़ ली थी, मैं खिसिया कर रह गया ।

"नहीं, ऐसा कुछ नहीं है ।" मैं फिर शर्मिंदा हो गया था, लेकिन तसल्ली भी हो गई कि पैर सीधे है । पता नहीं इससे मुझे क्या संतोष मिल गया था, मुझे अपनी बेवकूफी पर हंसी आ रही थी कि मैं इस लड़की को भूत प्रेत चुड़ैल जैसा कुछ समझ रहा था । मैं इन दकियानूसी बातों को मान भी कैसे सकता था ? मैं चुप रहा । कुछ समझ में ही नहीं आ रहा था कि क्या बोलूँ, मैं लड़की को सामान्य मानने को तैयार ही नहीं था, जब से मिला था उसका व्यवहार काफी अजीब सा था । कभी बात बेबात डांट देती है, कभी उदास रहती है, एकदम से हंसती है और उसी तरह एकदम शांत हो जाती है । कुछ देर पहले ही स्कूटी जाने के सदमे में थी, फिर मुझे ही बिना बात के डपट दिया, फिर शांत, फिर हंसना, फिर चुप रहना, एकदम सर्द आवाज तो कभी खिलखिलाते रहना तो कभी रोना, कभी एकदम कमजोर तो कभी ऐसी ताकतवर कि तीन-तीन बदमाशों के जान के लाले पड़ जाए । यार इतना सब कुछ वह लड़की कुछ ही घंटों में कैसे कर सकती है ? ओह ! मेरे प्रश्न में ही मेरा उत्तर भी छिपा हुआ था, 'वह लड़की है', मैं ही मूर्ख हूँ जो उसकी क्षमता पर संदेह कर रहा था । जाने अनजाने में ही समस्त लड़की प्रजाति का अपमान करने का अक्षम्य अपराध हो गया था, दो पलों की गिल्ट हुई और फिर मैंने एक बार चुपके से उसके कदमों को देखा, नहीं ! अब भी बराबर थे । मैंने गहरी सांस छोड़ी ।

बारिश थोड़ी धीमी हो गई थी, वह भी आखिरकार थक चुकी थी । मैंने इतना सोचना भर था कि बरसात फिर तेज हो गई, मैंने ऊपर की ओर देखा, मोटी-मोटी बूंदों के कारण फौरन अपनी नजरें नीची कर ली । हम दोनों बचते बचाते, कभी किनारों से, कभी सीढ़ियों से तो कभी फुटपाथ से चलते रहे, अब हम जहाँ पहुंचे थे वहां सम्पूर्ण मार्ग पानी से भरा हुआ था । पानी बह रहा था लेकिन बहाव सामान्य था । सड़क के दोनों किनारों पर अनेक गाड़ियां डूबी हुई खड़ी थी । रात के अँधेरे के कारण वातावरण बड़ा डरावना प्रतीत हो रहा था । कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था, आखिरकार हिम्मत ने जवाब देना शुरू कर दिया । मेरा सिर अब भी घूम रहा था, कमजोरी हो रही थी । सड़क पर कमर तक पानी में चलना

घातक था, मुम्बई की सड़कों का कोई भरोसा नहीं है, पता चला आगे जाकर किसी नाले में डूब डाब जाए । लेकिन हमें सड़क पार करनी ही थी, यहाँ वहां नजरें दौड़ायीं, सड़क के किनारे लगे हुए कुछ पेड़ झुके हुए थे, ये पेड़ जिनका मुझे आज तक नाम नहीं पता, यह साले सबसे बड़े धोखेबाज होते हैं । आंधी-बारिश आते ही मजबूत दिखाई देने वाले ये पेड़ ही सबसे पहले गिरते हैं, ऐसे कमजोर पेड़ सड़क के किनारे लगाते ही क्यों है ? खैर मुझे एक लाठी चाहिए थी तो मैं पानी को धकेलते हुए पेड़ की झुकी डाल की ओर बढ़ा, लम्बी सी चार-पांच फीट की टहनी देख कर उसे ताकत से खींचा । जैसा कि मैंने कहा था ये पेड़ जितने मजबूत दिखाई देते हैं उतने होते नहीं, टहनी एक झटके में टूट गई और मैं कमर भर पानी में जा गिरा, चारों ओर मटमैला पानी नजर आने लगा । नाक, मुंह और गले में पानी भर गया, लेकिन एक ही क्षण में मैं पानी से बाहर आ गया, नाक मुंह में पानी जाने के कारण बुरी तरह खांसी आने लगी । सोनल ने मेरी पीठ जोर-जोर से थपथपाई, मैंने खुद को संयत किया ।

“हमें आगे बढ़ना है, स्टेशन डूबा हुआ है । प्लेटफ़ॉर्म और पटरियों पर काफी पानी है, हमें अब इसी सड़क से होते हुए चलते रहना होगा । पानी में कहीं नाला या गटर ना खुला हो यह जांचने के लिए यह टहनी काम आयेगी ।”मैंने कहा । वह कुछ नहीं बोली और मेरे पीछे चल पड़ी । मैं डरते हुए पानी में बढ़ रहा था, सांप वाली घटना अब भी ताजा थी, पैरों को कोई चीज टकरा भी जाती तो प्राण सूख जाते थे । इसी प्रकार हम काफी समय तक चलते रहे, सड़क के आगे जहां भी नजरें जा रही थी वहां केवल पानी ही पानी दिखाई दे रहा था । सड़क की दूसरी ओर और भी कुछ लोग दिखाई दिए जो पानी से जूझ रहे थे, एक दूसरे की सहायता कर रहे थे । इस डरावने माहौल में इंसानों को देखकर पहली बार राहत महसूस हुई, वरना अब तक तो ऐसा लग रहा था मानो पूरी मुंबई में केवल हम दोनों एकमात्र इंसान है जो जीवित बचे है । वैसे वो लोग खुद ही अपने-अपने में व्यस्त थे । उनकी दिशा हमारी दिशा से अलग थी, शायद उनका गंतव्य कहीं और था और हमारा कहीं और । बरसात हल्की-हल्की हो रही थी तो कोई भी रुकना नहीं चाहता था, इससे पहले कि बरसात पुन: अपना रौद्र रूप दिखाए सबको अपने-अपने घर पहुँचने की जल्दी थी, यह बात और थी कि लोगों को अब पैदल ही चलना था । सब कुछ जहाँ का तहा थम सा गया था ।

“हमें उनके साथ हो लेना चाहिए ।” सोनल ने कहा ।

“हमें ठाणे पहुंचना है जो सेंट्रल लाइन में अर्थात मध्य मुंबई में है, और वो वेस्टर्न लाइन वाले हैं, उनके साथ रहकर हम फिर वहीं पहुँच जायेंगे जहाँ से आये थे, इसलिये उन्हें नजरंदाज करो और चलते रहो ।” मैंने कहा, कमाल है इतनी सीधी सी बात इसे समझ नहीं आ रही थी । चोट मुझे लगी थी और दिमाग ने इसके काम करना बंद कर दिया था । उसने

कुछ नहीं कहा और यह शायद उसकी सहमती का प्रतीक था । लड़कियाँ आमतौर पर चुप नहीं रह सकती, वह भी तब जब ज्ञान झाड़ने का समय हो । खैर यह मेरे लिए अच्छा ही था क्योंकि मैं इस समय बहस करने की हालत में बिल्कुल भी नहीं था, सिर में दर्द हो रहा था और मुश्किल से अपने पैर टिकाये हुए थे । सिर अब भी चक्कर खा रहा था, मैंने अपने बालों को टटोला, अब तक खून रिस रहा था । यह खतरनाक स्थिति थी, यदि कमजोरी से मैं कहीं गिर गया तो कोई मदद भी नहीं मिल पायेगी ।

"तुम्हें फर्स्ट एड की जरूरत है प्रीतम !" उसने पहली बार मेरा नाम लिया । उसने फर्स्ट एड के लिए कहा इसका मतलब उसने मेरी चोट से लगातार रिसते खून को देख लिया था ।

"हां ! वह तो है, लेकिन उसके लिए किसी सही जगह पर पहुँच जाए, यूँ पानी भरे इलाके में हम ज्यादा देर तक नहीं रह सकते, बारिश फिर जोर पकड़ने वाली है । हम इस तरह घंटों से भीग रहे है, और ऐसे में रास्ता कब तक खत्म होगा कुछ कहा नहीं जा सकता । कमर भर पानी में निरंतर चलना खतरनाक है, आगे कई मोड़ ऐसे दिख रहे है जहां अलग-अलग दिशाओं से पानी अपने पूरे बहाव में बह रहा है, हम उन मोड़ों को पार नहीं कर पाएंगे ।" मैं माहौल देख कर चिंतित हो गया, सबसे बड़ी समस्या अँधेरे को लेकर भी आ रही थी, कहीं भी बिजली नहीं थी, बीच-बीच में कड़कती बिजली से जब चारों ओर फैला हुआ पानी दिखाई देता था तो वातावरण और भी भयानक दिखाई देता था । ऐसे माहौल में चलते रहना भी सुरक्षित नहीं था । हो न हो मुंबई पूरी तरह डूब चुकी है, और ऐसा है तो सारा सिस्टम सतर्क हो गया होगा, लोगों का रेस्क्यू ऑपरेशन शुरू हो गया होगा, राहतकार्य आरम्भ हो चुके होंगे, यदि ऐसा है तो हमारा किसी ऐसी जगह रुकना ही अधिक समझदारी भरा फैसला होता जहाँ बरसात से बच सके । मैंने यही बात सोनल को भी समझाई, उसका चेहरा उदास हो गया ।

"यानी हम घर नहीं पहुँच पाएंगे ?"

"तुम्हें लगता है तुम ऐसी हालत में घर तक पहुँच पाओगी ? कहाँ से और कैसे जाओगी यह भी बता दो, चारों ओर अँधेरा है, पानी बह रहा है, बरसात शुरू है । सब यातायात बंद है, ऐसे में जब एक किलोमीटर का फासला भी माउन्ट एवरेस्ट फ़तेह करने से कम नहीं लग रहा है, हम भला २५-३० किलोमीटर कैसे पहुंचेंगे ।" मैंने कहा तो उसने फिर चुप्पी साध ली, जिसका मतलब था वह फिर सहमत थी ।

अब मेरा सिर चकराने लगा था, पानी में लगातार चलते रहने के कारण थकान भी हावी हो रही थी, आज लंच का भी समय नहीं मिला था, पेट भी खाली था तो रही सही ऊर्जा भी खत्म होने लगी थी । अधिक देर तक ऐसे नहीं चल पाऊंगा यह स्पष्ट था ।

"सुनो !"

"बोलो ।"

"तुम्हारी हालत खराब होती जा रही है, हमें आसपास कहीं ठहरने की जगह खोजनी चाहिए जहाँ माहौल ठीक होने तक हम सुरक्षित रह सके । और मुझे थोड़ी ही दूरी पर एक स्कूल बस दिखाई दे रही है, जो शायद बंद पड़ी है । हमें वहां चलना चाहिए, फ़िलहाल उसमें रुकना ही सबसे ज्यादा सुरक्षित लग रहा है ।" सोनल ने हिचकिचाते हुए कहा । इस बरसात और माहौल में रुकना भी सुरक्षित नहीं था तो आगे बढ़ना उससे भी ज्यादा खतरनाक था । इसलिये जब तक स्थिति सामान्य ना हो जाए उस बस में रुकने में कोई समस्या नहीं थी । इस बार मैं खामोश था और उसने इसे मेरी सहमती मान ली और मेरे हाथ से टहनी लेकर आगे बढ़ी । उसने मेरी हथेली थाम ली । यह स्पर्श कुछ ऐसा था कि मुझे भीतर तक गुदगुदी सी महसूस हुई । आज तक कभी किसी लड़की ने इस तरह मेरा हाथ नहीं थामा था । किसी की हथेलियाँ इतनी नर्म कैसे हो सकती है ?

थोड़ी ही देर में हम बस के भीतर पहुँच चुके थे, हालांकि बस में भी पानी भरा हुआ था लेकिन केवल फर्श तक । सीट तक पानी आया ही नहीं था । तो हम वहां आराम से बैठ सकते थे । बाहर थोड़ा तो उजाला था, लेकिन यहाँ एकदम घुप्प अँधेरा था । मैं किसी प्रकार टटोलते हुए ड्राइविंग सीट की ओर बढ़ा । उसने अब भी मेरा हाथ थामा हुआ था ।

"वहां कहाँ जा रहे हो ? यहाँ सीट्स की ओर चलो ।"

"ड्राइविंग सीट पर कुछ काम की चीजें मिल सकती है ।" मैंने कहा, मुझे दरअसल फर्स्ट एड किट की तलाश थी, स्कूल बस होने के कारण इसमें फर्स्ट एड किट के होने के चांसेज थे । और मेरा अनुमान सही निकला, फर्स्ट एड बॉक्स मिल ही गया, लेकिन फिर टटोला तो सीट के नीचे एक टॉर्च भी मिल गई । यह बढ़िया बात हुई थी । ऐसी परिस्थितियों में एक टॉर्च का होना वाकई बेहद राहत वाली बात थी । वैसे संयोग अच्छा ही था जो बस का दरवाजा खुला हुआ मिल गया था । शायद बस खराब होने की वजह से और बरसात के कारण हड़बड़ी में खाली करवाई गई हो जिस वजह काफी कुछ छूट गया होगा । मैंने टॉर्च चमकाई, रोशनी सीधे सोनल के चेहरे पर केन्द्रित हुई, उसकी आँखें चुंधिया गई ।

और मैं हतप्रभ रह गया, उफ्फ इतनी खूबसूरत ! मैं अगर कोई बढ़िया शायर होता या कविताओं में दिलचस्पी होती तो उसकी सुन्दरता पर एक पूरी किताब लिख सकता था, लेकिन मैं था एक कार्पोरेट जॉब वाला बंदा, हद बोरिंग आदमी । मैं उन शब्दों से अनजान था जिससे किसी की खूबसूरती की तारीफ़ की जा सके । फिल्मों में हीरो हीरोइन के पहली बार मिलने वाले दृश्य जैसा ही माहौल था वह, टॉर्च की रोशनी से उसकी आँखें चुंधिया गई थी और उसके रूप से मेरी अंतरात्मा तक चुंधिया गई थी । 'अंतरात्मा ?' रियली ? मतलब यह शब्द यहाँ किसी हिसाब से फिट बैठता है ? लेकिन जैसा कि मैंने पहले ही बताया कि मैं न शायर हूँ, न ही कवि और न ही मैंने साहित्य को घोंटा हुआ है, साहित्य के नाम पर बस

प्रेमचन्द जी का थोड़ा बहुत पढ़ा है, वह भी प्राथमिक शिक्षा के दौरान किताबों । अब प्रेमचन्द जी की कहानियों वाला माहौल तो यहाँ फीट नहीं बैठता था, तो याद करके कोई फायदा ही नहीं था । यह जरूर निश्चय कर लिया कि यहाँ से जाने के बाद ढेर सारी कविताएं पढूँगा, साहित्य में व्यस्त हो जाऊंगा ताकि अगली बार वर्णन करते समय मेरे पास शब्दों की कमी न रहे । इतनी खूबसूरत लड़की मेरे साथ हाथों में हाथ डाले चल रही थी ? यह किसी सपने जैसा था, फिर मुझे अचानक ही उन तीन बदमाशों का हश्र याद आ गया, क्यों याद आया पता नहीं लेकिन ऐसी चीजें अच्छे समय पर याद आकर अच्छे समय की बैंड बजा देती हैं ।

"अरे ! अब बंद भी करो टॉर्च, हटाओ मेरे चेहरे से ।"

उसकी आवाज से मेरी बेहोशी टूटी । मैं उसके पास पहुंचा, वह एक सीट पर बैठ चुकी थी, उसके पास बैठने में संकोच हो रहा था तो मैं बगल वाली सीट की ओर बढ़ गया ।

"बैठ जाओ यही पर ।" उसने धीमे से कहा । मैं चुपचाप उससे थोड़ी दूरी बना कर बैठ गया ।

"मेडीकल किट मिला ?"

"हां ।" कहकर मैंने उसे बक्सा दिखाया, उसने टटोल कर देखा ।

"टॉर्च भी दो ।" कहकर उसने बिना मेरी बात सुने ही टॉर्च पर कब्जा कर लिया । उसने टॉर्च का बटन दबा कर उसे बस की सीट में मध्य फंसा दिया । अब उजाला था, हम एक दूसरे को स्पष्ट देख सकते थे । उसने मेरी ओर देखा और एकदम खामोश हो गई । एकटक मुझे देखती रही, उसे कुछ कहते न बना । फिर मुझे समझ में आया कि यह मेरी खूबसूरती के कारण नहीं हुआ है, मेरे सूजे हुए गाल और होंठ किसी गुब्बारे कि भांति दिख रहे थे, उसके चेहरे पर चिंता के भाव उभरे । उसने फर्स्ट एड किट निकाला और मुझे घूमने को कहा, मैं सकुचाते हुए घूमकर बैठ गया, टॉर्च की मद्धिम रोशनी में ही उसने मेरे सिर की मरहम पट्टी कर दी । चेहरे पर भी दो चार जगहों पर बैंडेज लगा दिये ।

"अब थोड़ी राहत रहेगी । घाव खुला नहीं रहेगा, और खून भी नहीं बहेगा ।" वह मुस्कुराई, भाई उसका मुस्कुराना भी बड़ा ही गजब था, जैसा कि पहले भी बता चुका हूँ, मैं फिर से खुद को तारीफ़ करने में असमर्थ पा रहा था, और इस बात पर वाकई में अब खीज होने लगी थी, मानो पूरी जिन्दगी की पढ़ाई लिखाई ही व्यर्थ हो गई थी ।

मैंने टॉर्च वापस ली और बस का मुआयना करने लगा । इधर-उधर देखने के बाद एक सीट पर दो स्कूल बैग पड़े हुए दिखाई दिए, मैंने उन बैगों को अपने कब्जे में लिया । सोनल देखती रही, उसके चेहरे पर उलझन के भाव थे, वह अपनी खूबसूरत सी आँखें और बड़ी करके मुझे ही देख रही थी, क्या उसकी आँखें स्ट्रेचेबल थी ? नहीं यह बकवास सी लाइन

थी । बैग में मुझे मेरी इच्छित वस्तु मिल गई और मैं लगभग चीख पड़ा । फिर सीट पर आकर बैठ गया । मैंने उसमें से दो लंच बॉक्स निकाले जो उन बैग वाले बच्चों का था ।

"इसमें लंच बॉक्स है, भरा हुआ है, तो फिलहाल खाने का इंतजाम भी हो गया और पानी की बोतल भी है ।" मैं चहका । एक टिफिन में एक वेज सैंडविच तो दूसरे में बिस्किट थे, वो वाले बिस्किट जिसमें काजू बादाम वगैरह भरे होते है, कुकीज, कुकीज बोलते है जिसे । मेरा मुंह उतर सा गया ।

"तुम्हें क्या लगा था स्कूल के बच्चे क्या शाही थाली लेकर जाते है ? छोटे बच्चे हैं वो, उनके टिफिन में यही सब मिलता है । इतना शुक्र मनाओ कि कम से कम यह तो मिला ।" सोनल ने टिफिन के भीतर मौजूद प्रत्येक वस्तु के बराबर हिस्से कर दिए । उसकी बात भी सही थी, आमतौर पर इन चीजों को मैं पूछता भी नहीं था लेकिन आज की परिस्थिति अलग थी, खाने को मिल गया यह हमारी खुशकिस्मती थी । टिफिन समाप्त करने में दो मिनट से ज्यादा का समय नहीं लगा, बारिश पुन: अपने उफान पर थी । बस के भीतर से बाहर देखते हुए लग ही नहीं रहा था कि हम मुख्य सड़क पर हैं, सड़क किसी गहरी नदी की भांति प्रतीत हो रही थी । काफी समय से चलते रहने और चोट खाने के बाद अब कहीं आराम मिला था । वाकई काफी सुकून मिला । टॉर्च अब मद्धिम पड़ने लगी थी, जो की बैटरी खत्म होने का इशारा था ।

"हमें इसकी आगे भी जरूरत पड़ सकती है, इसलिये बेहतर होगा कि जब जरूरत हो तभी जलाया जाए ।" मैंने टॉर्च बंद कर दी, सोनल ने कोई प्रतिरोध नहीं किया जबकि मुझे पूरी उम्मीद थी कि अन्य लड़कियों की तरह वह भी अँधेरे से घबराती होगी, और टॉर्च बंद करने से रोकेगी, लेकिन उसने ऐसी कोई प्रतिक्रिया नहीं दी । मैं इस विषय पर अधिक नहीं सोचना चाहता था, क्योंकि मुझे जवाब पता था, लड़की कुछ भी कर सकती है, उनकी क्षमता पर अविश्वास नहीं किया जा सकता था । मेरी पलकें भारी सी लग रही थी, मैंने अपना सिर सीट की गद्दी से टिका दिया और आँखें बंद कर ली । अब पूर्णतया खामोशी छा गई थी, केवल बरसात और बिजलियाँ कड़कने के स्वर सुनाई दे रहे थे । बस में घुप्प अँधेरा था, बात तक करने की ताकत नहीं बची थी । मुझे सांस लेने में कठिनाई होने लगी थी, मुझे ठंड लग चुकी थी और देखते ही देखते पूरा शरीर कांपने लगा था, यूँ लग रहा था मानो मुझे किसी फ्रीजर में डालकर दरवाजा बंद कर दिया गया हो । मेरी आँखें खुली, मैंने अपनी बगल की सीट की तरफ देखा जहाँ सोनल बैठी थी, अँधेरे में कुछ साफ़ दिखाई नहीं दे रहा था, किन्तु इतना जरूर पता चल रहा था की वह सीट अब खाली है, मैंने भारी होती अपनी पलकों को बड़ी मुश्किल से खोला और अपना हाथ आगे बढ़ा कर सीट को टटोला, सोनल वाकई अपने स्थान पर नहीं थी ।

कहाँ गई ? मैंने टॉर्च के लिए हाथ बढ़ाया लेकिन टॉर्च अपने स्थान से गायब थी ।

“सोनल ! कहा हो ?” मैंने अँधेरे में यहाँ वहां देखते हुए कहा । निश्चित रूप से वह बस के बाहर तो नहीं गई होगी, बाहर का माहौल बिल्कुल भी सुरक्षित ही था । मैंने बस में एक नजर डाली किन्तु अँधेरे में कुछ भी स्पष्ट नजर नहीं आ रहा था । अचानक से सारा शोर थम गया, बारिश की आवाज, बहते पानी की ध्वनि, आंधी और पेड़ों की हलचल, सब का सब यूँ शांत हो गया मानो मैं उस माहौल से निकल कर किसी बंद कमरे में आ गया हूँ । सन्नाटा इतना तेज था कि मेरे कान में सीटियाँ सी सुनाई देने लगी । बारिश एकदम से रुक गई थी, बस की छत से होकर रिसते पानी कि ध्वनि तक स्पष्ट सुनाई दे रही थी । बस की पिछली सीट चरमराने की आवाज सुनाई दी, उस सन्नाटे में वह आवाज इतनी भयानक प्रतीत हुई कि मेरी आवाज तक हलक में घुटी की घुटी रह गई ।

“स..सोनल ! सोनल जी ! कहाँ हो ? देखो यह मजाक का समय नहीं है ।” मैं कुर्सियों को टटोलते हुए आगे बढ़ता रहा, हर कदम के साथ मुझे कुछ अजीब सा भय महसूस होते जा रहा था । बिजली चमकी, अचानक ही चमकी जिससे एक क्षण के लिए प्रकाश हुआ और सोनल की झलक मिली, वह बस की पिछली सीट के पास ही खड़ी थी, लेकिन उसका चेहरा दीवार की तरफ था ।

“तुम...अ...आप वहां क्या कर रही हो ?” उस समय हालत ऐसी थी कि आप और तुम का प्रयोग ही गड़बड़ा गया था, उस लड़की में जरूर कुछ गड़बड़ थी, वह शुरू से ही अजीब थी । मेरी ही मति मारी गई थी जो मैं उसके साथ आया । वह मुझसे दस फीट की दूरी पर खड़ी थी । अचानक फिर बिजली कौंधी और मैंने उसे अपने एकदम सामने खड़ा पाया ।

मैं एकदम से उछला और पीछे की सीट पर जा गिरा, सीट से उठने का प्रयास किया ही था कि मैंने सोनल का चेहरा अपने ऊपर पाया, उसकी भीगी जुल्फें मेरे चेहरे पर बिखरी हुई थी, वह इतने करीब थी कि मैं उसकी साँसों की गरमाहट तक को महसूस कर रहा था । मैं भय से अकड़ गया था, अपने स्थान से हिल भी नहीं पा रहा था, चीखने का प्रयास किया लेकिन आवाज तक गले से बाहर नहीं निकली । उसकी सांस लेने की आवाज सुनाई दे रही थी । अँधेरे में मैं केवल उसकी जुल्फों को महसूस कर रहा था, वह एकदम ठंडी थी, इतनी ठंडी कि मेरी हड्डियां तक जमती हुई सी प्रतीत होने लगी । वह तेज-तेज साँसे ले रही थी, उसकी साँसों की आवाज में बदलाव आने लगा, धीरे उसमें एक विचित्र सी गुर्राहट के स्वर सुनाई देने लगे और वह किसी जानवर की आवाज लग रही थी, वह सुनकर मेरे रोंगटे खड़े हो गए । उसकी गुर्राहट मेरे समीप तक आ गई थी, मैंने अपनी ठोड़ी पर एक नुकीला स्पर्श महसूस किया, क्या हो सकता था वह ? जब मुझे समझ में आया कि वे दांत थे तब मेरी आँखें फ़ैल गई । मैंने नुकीले और लम्बे दांतों का स्पर्श मेरे चेहरे पर महसूस किया जो मेरे मांस में धंसने लगा था । मैं छटपटाना चाहता था लेकिन शरीर जड हो गया था । अचानक वह मेरे ऊपर से हटी, मैंने अपने दोनों कंधों पर उसकी हथेलियों का दबाव महसूस किया,

कुछ देर पहले जिन हथेलियों को मैंने नर्म कहा था वे ही हथेलियाँ किसी विशालकाय मकड़ी के पैरों की भांति प्रतीत होने लगी थी, उसके स्पर्श मात्र से ही मुझे मेरे शरीर पर सैकड़ों कनखजूरों के रेंगने का आभास हुआ, मेरे पूरे बदन में झुरझुरी दौड़ गई, नहीं यह भ्रम नहीं था । मेरे पैरों पर भी कुछ रेंग रहा था, बस के भीतर ना जाने क्या था जो पानी से निकलकर मेरे सारे शरीर पर रेंग रहा था, कनखजूरे ! हजारों की संख्या में कनखजूरे मेरे बदन पर दौड़ रहे थे । सोनल मेरे सामने ही खड़ी थी, उसके नुकीले नाखून भरे हाथ मेरे कंधे के मांस को फाड़ते हुए भीतर धंसते जा रहे थे । फिर बिजली कौंधी और मुझे सोनल का चेहरा दिखाई दिया, नहीं वह सोनल नहीं थी, उसकी आँखों में पुतलियाँ नहीं थी । उसके बाल दरअसल विशालकाय रेंगते कनखजूरों का एक गुच्छा था, और वे सारे वही से मेरे शरीर पर आ रहे थे । वह मेरी ओर देखकर भयानक ढंग से मुस्कुराई और अपना मुंह खोला, उफ्फ उसके दांत, उसके मुंह में सैकड़ों नुकीले दांतों का समूह था, यह मेरी कल्पना से भी परे का दृश्य था, उसका मुंह इतना खुल गया कि अब वह एक झटके में मेरा पूरा सिर निगल सकती थी । और उसने एक ही क्षण में अपने सैकड़ों नुकीले दांतों से भरा हुआ मुंह मेरे सिर पर दे मारा और मेरे सिर को निगल लिया । इस बार मेरी चीख निकली । मैं गला फाड़कर चीखा, पूरी शक्ति से चीखा ।

"छोड़ दो मुझे ! छोड़ दो मुझे ।" मैं कसमसाया, उसी समय चेहरे पर पानी की जोरदार बौछार पड़ी और मैं हड़बड़ा गया । मेरी साँसे धौंकनी की भांति चल रही थीं, शरीर ठंडा पड़ गया था, भय के मारे आवाज बंद हो चुकी थी । मैंने सामने देखा, सोनल के हाथ में पानी की खाली बोतल दिखाई दी । "सनक गए हो क्या ? कौन सा सपना देख रहे थे ?" सोनल भी घबराई हुई थी ।

अब जाकर मेरी अटकी हुई सांस वापस आई, हे भगवान ! यह सपना था, मैंने भगवान को लाख-लाख धन्यवाद दिया । बस मैं रोया नहीं वही बड़ी बात थी । इस सपने ने ऐसी हवा टाईट की थी अब शायद ही मुझे नींद आती ।

"हुआ क्या ?" सोनल ने फिर प्रश्न किया ।

"सपना देखा, बहुत भयानक सपना ।" मैंने अपनी साँसों को नियंत्रित करते हुए कहा ।

"कितना बुरा ? हम जिन हालातों में फंसे है कम से कम उतना बुरा तो नहीं रहा होगा ।"

"उससे भी बुरा और भयानक ।" मैंने अपनी घबराहट पर काबू पाने का प्रयास किया जिसमें असफल रहा ।

"अब हमें क्या करना है ?" सोनल ने धीमे से पूछा ।

मैंने एक नजर बाहर की ओर देखा, बरसात अब भी जारी थी, अँधेरा अब और भी घना हो गया था, मुझे अब डर लगने लगा था कि कहीं बस भी न डूब जाये ।

“फिलहाल यहीं रुके रहना ज्यादा सुरक्षित है ।” मैंने हथियार डाल दिए, सच तो यह था कि अब मेरे हाथ पैर ठंडे होने लगे थे, पानी में उतरने के नाम से ही सिहरन होने लगी थी । “ठीक है, हम मदद का इंतजार करेंगे या फिर बरसात रुकने तक का वेट करेंगे, पानी थोड़ा सा उतरते ही हम फिर चलेंगे । समय भी पता नहीं क्या हो रहा है, । किसी तरह भैय्या को खबर दे पाती.....”

“नहीं ! वह भी मदद नहीं कर पाते, इन हालातों में व्यक्ति चाहकर भी ठाणे से यहाँ नहीं पहुँच पायेगा ।” मैंने निराश स्वर में कहा ।

“कम से कम उन्हें खबर तो रहती कि मैं सुरक्षित हूँ । पता नहीं उन पर क्या बीत रही होगी ।” उसके अंतिम शब्दों में भर्राहट थ, मैं समझ सकता था । अब इंतजारइंतजार करना ही था, मेरा सिर अब भी भारी था । मैंने अपनी पीठ सीट से पुन: टिका ली, इस समय और कुछ नहीं कर सकता था । कब मेरी आँख लग गई पता ही नहीं चला ।

□□□

जब आँखें खुली तब सोनल को अपने सामने पाया, मैंने यहाँ वहां देखा, यह बस तो नहीं थी और ना ही मैं सीट पर था । मैं एक नर्म गद्दे पर लेटा हुआ था, मैंने अपनी नजरें घुमाई, कमरा शानदार था, फर्नीचर से लेकर दीवार का पेंट तक एकदम क्वालिटी माल लग रहा था । दीवारों पर कुछ अजीबोगरीब पेंटिंग्स फ्रेम करके टंगी हुई थी, उनमें कोई आकृति समझ में नहीं आ रही थी, बस लग रहा था मानो पेंट के ब्रश में बचे हुए रंग को सफ़ेद कैनवास पर झटक दिया गया हो । शायद यह मॉडर्न आर्ट था, लेकिन मुझे उसकी समझ नहीं, इतना भी क्या मॉडर्न हो जाना कि लोगों की समझ से ही बाहर निकल जाओ । उस कमरे के हाल हुलिए को देखकर पता चल रहा था कि मैं किसी शानदार फ़्लैट या मकान के बेडरूम में हूँ । इस कमरे में एक अलग सी खुशबु आ रही थी, मैंने देखा तो चारों कोनों में कुछ अगरबत्तियां लगी हुई थी । किसी बहुत बड़े आस्तिक का घर था यह, दीवारों पर हनुमान चालीसा के मन्त्र भी छपे हुए थे । मैंने ऐसा पहली बार देखा था, इस घर में जो भी रहता होगा वह जरूर हनुमान जी का बड़ा भक्त होगा ।

“कैसे हो तुम ?” एक मर्दाने स्वर ने मेरा ध्यान खींचा, मैं सोनल की उम्मीद कर रहा था । मैंने अपनी गर्दन घुमाई और उसे देखा, वह लगभग मेरी ही उम्र का एक हैंडसम जवान था । इस समय उसने जींस और चेक्स वाली शर्ट पहन रखी थी, चेहरे पर सलीके ट्रीम की हुई हल्की सी दाढ़ी उस पर काफी फब रही थी । मैंने भी कई बार ऐसी दाढ़ी रखने का प्रयास किया था लेकिन हमेशा कुछ न कुछ कम ज्यादा हो जाने के कारण क्लीन शेव करवाना पड़ जाता था । उसने अपना प्रश्न पूछ लिया था और मैं जवाब देने के बजाय उसके विवरण में व्यस्त था जो कि थोड़ा अभद्र सा लगा । अपनी गलती ध्यान में आते ही मैं बोल पड़ा ।

“मैं ठीक हूँ, थोड़ा दर्द है बदन में, और सिर में भी ।” मैंने कहा और तब मुझे मेरी हालत का भान हुआ, मैं बुखार से तप रहा था । आँखों के आगे भाप सी उड़ रही थी ।

“डॉक्टर आये थे, इंजेक्शन, टाँके, दवाइयां और पट्टी करके गए है । ठीक हो जाओगे ।” यह सोनल की आवाज थी, वह मेरी दाहिनी ओर एक नक्काशीदार लकड़ी की कुर्सी पर बैठी हुई थी । उसे देखकर मैंने मुस्कुराने की कोशिश की लेकिन जबड़े में खिंचाव के कारण मुस्कुरा नहीं पाया ।

“मैं यहाँ कैसे और कब से हूँ ? यह कौन सी जगह है ?” मैंने धीमे से पूछा ।

“यह मेरा घर है, तुम यहाँ दो दिन से हो । बेहोश थे, तुम दोनों बारिश में फंसे थे । सुबह राहत और बचाव दल जब मुंबई में बचाव कार्य कर रहा था उस दौरान तुम दोनों उन्हें उस बस में मिले । उनकी सहायता से सोनल ने मुझे सम्पर्क किया, मैंने अपने कुछ जान पहचान वालों की सहायता से तुम दोनों को वहां से निकलवा लिया । तुम्हें बचाव दल ने हॉस्पिटल में रखा था, तुम्हारे इलाज के पश्चात कोई खतरे वाली बात नहीं है कहकर डॉक्टर ने डिस्चार्ज कर दिया ।” उस लड़के ने कहा ।

“ऐसे ही बेहोशी में डिस्चार्ज कर दिया ?” मुझे बड़ी हैरानी हुई, और यह जानकर और भी हैरानी हुई कि दो दिन बीत चुके है ।

“यह बरसात मुम्बई के इतिहास की सबसे भयानक बरसात रही प्रीतम । हजार के आसपास लोग मारे गए और हजारों प्रभावित हुए । घायलों से अस्पताल भरे पड़े है, इमरजेंसी घोषित कर दी गई है, चारों ओर अफरातफरी का माहौल है, ऐसे में केवल सीरियस केसेज को ही अस्पताल प्राथमिकता दे रहे है । और उनके हिसाब से तुम्हारा केस अंडर कंट्रोल था । तो हम तुम्हें घर ले आये, यह बात अच्छी रही कि बारिश रुक जाने के कारण पानी उतर चुका था और रास्ते थोड़े बहुत खुल गए थे । भैय्या की गाड़ी से कोई ज्यादा परेशानी नहीं हुई । तुम्हारे घर का पता जानने का प्रयास किया, तुम्हारा पर्स तक खोजने का प्रयास किया ताकि कोई डॉक्युमेंट या आयडी मिल सके जिससे तुम्हारी पहचान करके तुम्हारे घरवालों को सूचित किया जा सके, लेकिन अफ़सोस तुम्हारी जेब में पर्स ही नहीं था । जिस कारण तुम्हारे होश में आने तक का इंतजार करना ही था ।” सोनल बोली, एक ही सांस में उसने सारी घटनाएं बता दीं, वह एक अच्छी रिपोर्टर बन सकती थी । मेरी नजरें कैमरामैन मेरा मतलब उस लड़के की ओर घूमी । मुझे पर्स खो जाने का अफ़सोस हुआ, लेकिन वह वैसे भी खाली ही था तो इतना ज्यादा अफ़सोस भी नहीं हुआ ।

“मुझे मेरी बहन ने सारी बात बताई कि किस तरह तुमने उसकी जान बचाई और उसके साथ रहे, जिस वजह से वह सर्वाइव कर पाई । आजकल ऐसे लोग बेहद कम मिलते है । मैं भी कितना बेवकूफ हूँ, मैंने अपना नाम तो बताया ही नहीं, मैं हूँ हर्ष और इससे तो तुम मिल ही चुके हो, यह है सोनल, और सोनल मेरी प्यारी छोटी बहन । मैं और मेरा

परिवार हमेशा तुम्हारे अहसानमंद रहेंगे ।" हर्ष के स्वर में भर्राहट स्पष्ट महसूस की जा सकती थी । मैंने अपने सिर को टटोला तो वहां पट्टी बंधी पाई । लेकिन मेरे बाल नदारद थे, मेरे बाल ? मैंने बेसब्री से हाथ घुमाया, ओह नहीं ! मेरा सिर बालों से अलग हो चुका था, मैं एकदम गंजा था ।

"यह फिल्म नहीं है जो कितनी भी चोट लग जाए उसके बावजूद सिर पर पट्टी बाँध कर हीरो बन गए । रियल लाइफ में ऐसा नहीं होता, सिर में दो टांको के लिए डॉक्टर गंजा कर देते है । बाल ही है, आ जायेंगे महीने भर में ।" उसने मुस्कुराते हुए कहा । मुझे मेरे बालों का सख्त अफ़सोस था, लेकिन उसकी बात भी सही थी । फिल्मों में हीरो ट्रक के नीचे भी आ जाये तो उसके माथे पर ही बैंडेज लगा रहेगा, वह भी छोटा सा । असल में किसी से दो चार घूंसे भी पड़ जाये तो बीस मीटर पट्टी लपेटने की नौबत आ जाती है और चेहरा एक महीना पहचान में ना आये वह अलग । उसी समय कमरे में एक अंकल-आंटी ने प्रवेश किया । सीधी सी बात थी ये जरूर सोनल के माता पिता होंगे । आंटी जी मेरे समीप आई और मेरे माथे पर हाथ फेरा, उनके चेहरे पर दुनिया भर की करुणा उमड़ आई थी । माँ की कल्पना भी करो तो शक्ल सबसे पहले जेहन में उभरेगी वह उन्हींउन्हीं के जैसी होगी । अंकल जी बेड के पास ही खड़े रहे, वे एकदम अमरीश पुरी जैसे ही लग रहे थे, जाहिर सी बात थी, यह एकदम बेमेल जोड़ी थी । कहाँ आंटी जी ममता की मूरत और कहा अंकल जी अमरीश पुरी । लेकिन इस समय उनके चेहरे पर भी काफी प्रसन्नता के भाव थे । इस समय उन्होंने हल्के पीले रंग का कुर्ता और सफ़ेद पजामा पहना हुआ था । मुझे तो यह समझ में ही नहीं आता के लोग घरों में कैसे कुर्ता पाजामा पहन कर एडजस्ट कर लेते है ? मैं तो बस एक टी शर्ट अथवा बरमूडा पहन लेता हु, वह ज्यादा आरामदायक है, पापा भी आधी बांह की बनियान और लुंगी वगैरह पहन कर पूरा कस्बा नाप लेते है । खैर अपनी-अपनी सुविधा अपना-अपना आराम ।

"बेटा, तुमने हम पर बहुत बड़ा अहसान किया है, तुम न होते तो पता नहीं मेरी बेटी का क्या होता, मुझे समझ में नहीं आ रहा है कि मैं किन शब्दों में तुम्हारा धन्यवाद करूँ ?" उन्होंने मेरी ओर देखकर कहा । उनकी आँखें भरी हुई थी, उसपर मैं कोई कमेन्ट नहीं कर सकता । एक माँ के भाव थे वे ।

"आ...आप मुझे शर्मिंदा कर रहे हैं ? मेरी जगह कोई और होता तो वह भी वही करता । आपकी बेटी ने भी काफी मदद की, अगर वह ना होती तो आज मैं भी यहाँ खड़ा नहीं होता । क्या मुझे यहाँ फोन मिल सकता है ? मम्मी पापा को बता दूँ कि मैं ठीक हूँ ।" मेरा वाक्य पूर्ण होने से पहले ही अमरीश...मेरा मतलब अंकल जी ने अपना मोबाइल मेरी ओर बढ़ा दिया । मैंने धन्यवाद कहकर फोन लिया और घर का नम्बर याद करने लगा । मोबाइल आने के बाद से नम्बर याद करने में बड़ी दिक्कत होने लगी है, लोग अब नम्बर

याद करने के लिए मेहनत नहीं करते। मुझे भी घर का नम्बर याद नहीं आ रहा था, काफी जोर डालने के बाद नम्बर याद आते ही डायल कर दिया। माँ ने फोन उठाया, मैंने उन्हें सारी बातों से अवगत करा दिया, बस वो बदमाशों से भिड़ंत वाली घटना गोल कर गया, उस पर कोई यकीन नहीं करता। पापा को भी बेफिक्र रहने के लिए कह दिया लेकिन वे नहीं माने और यहाँ का पता लेकर निकल लिए। हालाँकि बारिश रुक चुकी थी लेकिन फिर भी यातायात अब भी इतना सही नहीं हुआ था, और जो था वह भी ट्रैफिक की भेंट चढ़ चुका था। मैंने दीवार में लगी हुई घड़ी को देखा, अभी दिन के साढ़े ग्यारह बज रहे थे। पापा ठाणे से डोम्बिवली दो घंटे के भीतर ही पहुँच जायेंगे, ट्रैफिक में फंसे तो शाम हो जाएगी।

"तुम यहाँ रुक सकते हो, तुमने हमारी बेटी की जान बचाई है, तुम यहाँ रहोगे तो हमें अच्छा लगेगा, और इन हालातों में वैसे भी तुम्हारा ज्यादा घूमना फिरना ठीक नहीं।" अंकल जी ने अपनी रौबदार आवाज में कहा।

"मैं ठीक हूँ, बस हल्का सा बुखार है और कुछ नहीं। आप बेफिक्र रहिए, और बार-बार मैंने बचाया कहके मुझे शर्मिंदा मत कीजिये।" मैं हर बार यह सुनकर उकता चुका था, अहसान-अहसान भक्क। मुझे तो समझ में ही नहीं आ रहा था कि मैं इस बात का जवाब कैसे दूँ। मुझे यह सब असहज कर रहा था।

"मैं तुम्हारे लिए गर्म सूप लाती हूँ, थोड़ी ताजगी मिलेगी।" आंटी ने प्यार से कहा तो मैं मना नहीं कर पाया, करना भी नहीं था। भूख लगी हुई थी और बुखार से हालत भी खराब थी। ऐसे में चटपटा और गर्मागर्म सूप भीतर जाता तो वाकई मजा आ जाता।

"मेको भी।" सोनल ने हाथ ऊपर उठाया।

मेको ? यार ये लडकियाँ हमेशा हिंदी का सत्यानाश क्यों कर देती है ? उनको यह गलतफहमी क्यों है कि मेको-तेको करके बोलना क्यूट नहीं बल्कि इरिटेटिंग लगता है। इनके साथ क्या समस्या है पता नहीं। वह मेरी तरफ देखकर मुस्कुराई, मैंने उसकी तरफ देखा। अब उसका चेहरा साफ़-साफ़ दिखाई दे रहा था, दिन के उजाले में उसका चेहरा एकदम किसी दिए के समान दमक रहा था। अब मैं उसकी तारीफ़ कर सकता था, अब तो मौसम भी खराब नहीं था और ना ही हम कहीं फंसे हुए थे, लेकिन फिर याद आया उसका भाई हर्ष भी वहीं बैठा था। मैंने थोड़ा उठने का प्रयास किया लेकिन उसने उठने से मना कर दिया।

"लेटे रहो, फिलहाल आराम करो। किसी भी चीज की जरूरत हो तो निस्संकोच बता देना।" हर्ष ने कहा और उठ गया। तब तक आंटी जी भी सूप बनाने में जुट गई थी। अंकल जी ने काफी पूछताछ की, कहाँ से हो ? क्या काम करते हो ? परिवार में और कौन-कौन है ? पढ़ाई वगैरह, और पता नहीं क्या क्या। भारतीय पेरेंट्स की यही एक समस्या

है । वे मेलजोल बढ़ाने की कोशिश में भी एच.आर की तरह व्यवहार करने लगते है । उन्हें पूरी जन्मकुंडली चाहिए होती है । तब तक आंटी जी आ गई थी, अंकल जी बस मेरे गोत्र तक पहुँचने ही वाले थे । फिर थोड़ी बहुत औपचारिक बातों के पश्चात माहौल हल्का-फुल्का हो गया । इसके आगे की बातें डिटेल में बताऊंगा तो बाकी कहानी के लिए जगह नहीं बचेगी । आपको टिपिकल भारतीय परिवार के बारे में पता ही है, इनकी बातें कभी खत्म नहीं होती । तो उन बातों का उल्लेख जरूरी भी नहीं । कुछ ही घंटों पश्चात पापा भी पहुँच गए, मम्मी का तो रो रोकर बुरा हाल था, एक बारगी मेरी आँखें भी नम हो गई लेकिन खुद को संभाल लिया । सोनल सबके लिए चाय नाश्ता लेकर आई । वह एकदम ठीक-ठाक थी, वैसे भी उस घटना को दो दिन हो चुके थे और उसे कोई चोट भी नहीं लगी थी, तो उसके ठीक होने में कोई आश्चर्य की बात नहीं थी । मेरे माता-पिता कुछ देर तक भगवान का धन्यवाद करते रहे । माँ ने तो कई-कई बार गले लगाकर ईश्वर को धन्यवाद दिया । मैंने बड़ी मुश्किल से उन्हें यकीन दिलाया कि मैं ठीक हूँ । और जैसा की होता है, दो उत्तर भारतीय परिवार आपस में घुलने मिलने में ज्यादा समय नहीं लगाते, हाय हेल्लो से बातचीत शुरू होकर 'कउन जिला ?' तक पहुँच गई । हम उत्तर भारतीयों का अलग ही स्वैग है । लोग नाम पता पूछते है लेकिन हम सबसे पहले 'कउन जिला' पूछते है, मतलब यार गाँव बस्ती यहाँ तक कि शहर तक पूछना समझ में आता है, लेकिन 'जिला' ? ओह ! कम ऑन यार, एक जिले में आप कैसे किसी को खोज सकते हो ? खैर छोड़ो यह सब तो लगा ही रहेगा ।

तो मम्मी-पापा अंकल आंटी से अच्छे से घुल मिल गए, एक दूसरे के नम्बर्स शेयर हुए । गाँव देहात की बातों में कुछ आपसी जान-पहचान वालों तक पहुँच हो गई । अब तो यह सब चलना ही था । अब तो मुंबई भी पटरी पर लौट चुकी थी तो हमारी क्या बिसात थी । फिर आगे मौके बेमौके मिलते रहने के वादे के हमने सबसे विदा ली ।

मैं और केशव

“क्या बात कर रहा है ? भाई तू तो छुपा रुस्तम निकल गया एकदम से, हमें देखो इतने सालों से कोई घास नहीं डाल रहा और तुम एक झटके में लड़की ले उड़े ।” केशव ने समोसा भकोसते हुए कहा ।

“अबे बकवास ना किया करो यार, ले उड़े क्या होता है ? जैसा तू समझ रहा है वैसा कुछ भी नहीं है । उस समय हालात ही ऐसे थे कि हमें साथ रहना पड़ा, मेरी जगह कोई और होता तो वह भी यही करता । लड़की थी यार, वह भी इस बरसात में अकेली, तो उसकी मदद करना अपना फर्ज बनता है ।” मैंने सफाई देते हुए कहा ।

“अबे तूने उसकी मदद की या उसने तेरी जान बचाई ? शर्म तो आती नहीं क्रेडिट लूटते हुए, उसने तुझे उन गुंडों से बचाया था...”

“वो तो बाद में हुआ, लेकिन पहले तो मैंने उसे डूबने से बचाया था ।” मैंने सफाई पेश की । केशव को सारी बातें बताकर मैंने गलती कर दी थी, जिगरी दोस्त पर भरोसा करने का यह सबसे बड़ा नुकसान होता है, आप ईमानदारी से सब बता देते है और फिर वह उन्हीं चीजों के लेकर आपका जिन्दगी भर मजाक उड़ाएगा । लेकिन अब बता ही चुका था ।

“लेकिन क्या सच में उसने उन गुंडों को उतनी बुरी तरह से पीटा ? मतलब भाई खतरनाक लड़की है, जैसा तूने मुझे बताया उस हिसाब से तो मुझे वह लड़की थोड़ी गड़बड़ लगती है भाई । क्या नाम बताया उसका.... ?”

“सोनल ।”

“हां, सोनल । तूने बताया कि उससे मिलने के बाद से तुझे अजीब सी चीजें महसूस होने लगी थी । उसका व्यवहार, अचानक रोना, अचानक हंसना, एकदम से खामोश हो जाना, और अपने से दुगुना ताकतवर लोगों को कीड़े मकौड़े की तरह मसल कर रख देना । इन बातों से वह कोई सामान्य लड़की नहीं लगती । उसमें कुछ अलग है, हो सकता है कि उसे कोई बीमारी हो, जैसे मल्टीपल पर्सनालिटी डिसऑर्डर टाइप ? इसमें होता यह है कि एक ही व्यक्ति में उसकी दबी छुपी भावनाओं एवं सुप्त व्यक्तिमत्व के कारण दोहरा या तीहरा या फिर और भी व्यक्तित्व उभर आते है । आसान शब्दों में कहो तो वह आदमी अपने भीतर अनेक आदमी छिपाए रहता है जिससे वह खुद अनजान रहता है....” केशव बकते जा रहा था ।

“मैंने ‘अपरिचित’ देखी है ।” मैंने कहा तो उसने प्रश्नसूचक दृष्टि से मेरी ओर देखा, उसे मेरी बात समझ में नहीं आई ।

“मैं कहना चाहता हूँ कि मैंने भी ‘अपरिचित’ फिल्म देखी हुई है, जिसमें नायक के भीतर तीन चार व्यक्तित्व होते है इसलिये मुझे समझाने के लिए पूरी थ्योरी बताने कि

जरूरत नहीं है । सोनल बीमार या ऐसी किसी डिसऑर्डर से पीड़ित तो लग नहीं रही थी ।" मैंने कहा तो वह एक पल के लिए चुप हो गया, लेकिन मुझे पता था वह चुप रहने वालों में से नहीं था ।

"मैं तो बस अंदाजा बता रहा था और दूसरी सम्भावना भी हो सकती, अगर वह बीमार नहीं है, तो इसमें कुछ सुपरनैचुरल एलिमेंट्स भी हो सकते है, समझ रहे हो ना क्या कहना चाहता हूँ ? पारलौकिक शक्तियां जैसे ..."

"भूत-प्रेत-पिशाच वगैरह वगैरह ?" मैंने कहा, मुझे पता था बात घूम फिर कर उसके पसंदीदा विषय पर ही आकर अटकने वाली थी ।

"अबे मजाक की बात नहीं है यह, यह कोई अंधविश्वास नहीं है । ऐसे काफी एलिमेंट्स और चीजें है जिन्हें आज तक समझा नहीं गया है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि इन चीजों का अस्तित्व नहीं है । विज्ञान हमें उन्हीं चीजों की थ्योरीज दे पाया है जिसे समझ पाया है, जिन्हें अभी तक समझ नहीं पाया उनके जवाब नहीं दे पाया, लेकिन इससे उन चीजों के अस्तित्व को नाकारा नहीं जा सकता । हमारे यहाँ इन्हें अंधविश्वास कहकर मजाक बना दिया जाता है । लेकिन पश्चिमी देशों में इन चीजों पर बाकायदा रिसर्च की जाती है, घोस्ट हंटिंग और सुपरनैचरल रिसर्चर के लिए ऑफिशियल कोर्सेस होते है, जबकि वहां शिक्षा का अनुपात और आधुनिकता का प्रमाण हमसे कहीं ज्यादा है । इसके बावजूद पश्चिम में लगभग हर दसवें घर में पारलौकिक शक्तियों की कहानियां मिल जायेंगी, कई देशों को ही भूतों का देश तक कहा जाता है । व्हाईट हाउस तक अछूता नहीं है, अब्राहम लिंकन, केनेडी और ना जाने कितने लोगों की आत्माएं अब भी वहां देखी जाती हैं, इन चीजों को मजाक के बजाय...."

"तू समोसा खायेगा या मैं खा लूँ ?" मैंने उसे बीच में ही टोका । बन्दा अब अब्राहम लिंकन तक पहुँच गया था, रोकना जरूरी था ।

उसने अजीब सी नजरों से मेरी ओर देखा और समोसे पर इस तरह कब्जा कर लिया मानो वह दुनिया का आखिरी समोसा हो ।

"सही है भाई ! अपने ही देश में टैलेंट की कद्र नहीं है ।" उसने समोसा चबाते हुए कहा ।

दरअसल मुझे उसकी इन बातों से उकताहट होने लगी थी । केशव को स्कूल के समय से ही इन चीजों में बेहद दिलचस्पी थी, पहले तो लगा था बचपन की आदतों की तरह उसकी यह बीमारी भी उम्र के साथ-साथ कम हो जाएगी, लेकिन उसकी दिलचस्पी बढ़ती ही जा रही थी । उसे हॉरर फिल्मों का पागलपन की हद तक का चस्का था । पारलौकिक विषयों पर आधारित नॉवेल्स और पुस्तकों का ढेर था उसके घर में । वह बाकायदा इन चीजों पर शोध कर रहा था । और मुझे समझ में नहीं आ रहा था इस शोध का आखिर क्या

फायदा उसे मिलने वाला है। शायद कुछ चीजें केवल पैशन या जिज्ञासा के लिए की जाती है, उसमें फायदा नुकसान नहीं देखा जाता। चूँकि वह अच्छी जॉब और अच्छी सैलरी वाला वेल सेटल्ड युवा था तो घरवालों को भी उसके इस शौक से कोई परेशानी नहीं थी। कम से कम दारु, शराब, सिगरेट, लड़की जैसे शौक तो नहीं पाले थे उसने। घरवालों को लिए यही सबसे बड़ी राहत की बात थी। यदि आप उसके पास बैठे तो उसकी बातों से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते और दिलचस्पी से उसकी बातें सुनते। लेकिन मेरी बात अलग थी, मैं बचपन से उसके साथ था इसलिये मेरे कान अब जवाब दे चुके थे। मैंने बेसब्री से रेस्टोरेंट के दरवाजे की तरफ देखा, सोनल को आता देखकर थोड़ी राहत मिली। अब कम से कम केशव की बकबक नहीं सुननी पड़ती।

"वही है सोनल ?" केशव ने मेरी नजरों का पीछा करते हुए पूछा। मैंने हाँ में सिर हिलाया, वह बड़ी अजीब ढंग से मुस्कुराया।

"भाई ! मैं गलत था।" उसकी इस बात पर मैंने ना समझने वाले भाव से उसकी तरफ देखा।

"अगर यह सोनल है तो भाई इसमें ऐसी कोई पैरानॉर्मल टाइप चीजें नहीं हो सकती यार।" उसने एक ठंडी आह भरते हुए कहा, मैंने उसे सख्त निगाहों से घूरा तो उसने वापस अपना ध्यान समोसे में लगा दिया। सोनल ने मेरी ओर देखा और मुस्कुराकर हाथ हिलाया।

वह हमारी टेबल के सामने आकर खड़ी हो गई, उसने एक नजर केशव को देखा। केशव का समोसा आधा मुंह में ही फंसा रह गया, उसने हेल्लो कहना चाहा लेकिन मुंह भरा होने के कारण, बस अजीब सा मुंह बना कर रह गया।

"यह केशव है, मेरा बेस्ट फ्रेंड।" मुझे ही उसका परिचय देना पड़ा। केशव ने सोनल की ओर अपना हाथ बढ़ाया, लेकिन सोनल ने नमस्ते करना ज्यादा बेहतर समझा। अब भला कौन लाल हरी चटनी में डूबे हाथों से हाथ मिलाना पसंद करेगा ? केशव को अपनी गलती का अहसास हुआ और वह सॉरी बोलकर मुस्कुराया। लेकिन उसकी मुस्कुराहट भी कम भद्दी नहीं थी। दांत पर समोसे के अंश अटके पड़े थे, चटनी भी अलग ही इन्द्रधनुषी छटा बिखेर रही थी।

"आपसे मिलकर अच्छा लगा केशव जी।" सोनल ने पूरी गर्मजोशी से कहा, उसके भाव में कोई बनावटीपन नहीं था।

"केशव !"

"जी ?"

"मुझे केशव कहिये, केशव जी नहीं।" कहकर केशव मुस्कुरा दिया। अरे यार यह कितना वीयर्ड सा लग रहा था। केशव का बार-बार इस तरह बेवकूफों की तरह बर्ताव

करना एकदम अजीब था । लड़की के सामने होने पर किस तरह का बर्ताव किया जाए कुछ लोगों में इसका कॉमनसेंस ही नहीं होता । एकदम उजड्डपन था यह, लेकिन केशव को मानो कोई परवाह ही नहीं थी, वह प्लेट में बची हुई लाल चटनी तक को उंगलियों से पोंछ कर चाट गया । अब यह वाकई ज्यादा हो रहा था, हालांकि केशव का यह रोज का काम था, लेकिन आज सोनल साथ थी । उसका चपर-चपर करके खाना और यह उजड्ड जैसी हरकतें अब सोनल को भी असहज महसूस करवा रही थी, उसने उसे नजरंदाज करने की कोशिश की लेकिन केशव नजरंदाज करने वाली चीज था ही नहीं ।

"मैं सोनल.."

"जी ! मुझे आपके बारे में पता है, प्रीतम मुझसे कुछ नहीं छुपाता ।" वह मुस्कुराया । भगवान का शुक्र था कि समोसा खत्म हो चुका था, लेकिन टेबल पर अब भी तूफ़ान के बाद की तबाही के निशान मौजूद थे । मैंने वेटर को टेबल साफ़ करने का संकेत किया जिसका उसने तुरंत पालन किया, अब टेबल साफ़ था । सोनल कुर्सी पर बैठ चुकी थी, उसने मुस्कुराहट कायम रखी ।

"आज भैय्या नहीं आ रहा है, किसी काम से मुंबई से बाहर गया हुआ है, मैं स्टेशन तक अकेले ही थी तो सोचा तुम्हारे साथ हो लूँ, कम्पनी भी हो जाएगी ।" सोनल ने कहा, अब आप सोच रहे होंगे सोनल को हमारे होटल में होने के बारे में कैसे पता ? तो उसका उत्तर यह है कि छब्बीस जुलाई वाली घटना को २ महीने बीत चुके थे, सितम्बर शुरू हो चुका था । और चूँकि हमारे आने जाने का रास्ता एक ही पड़ता था तो अक्सर हम मिल जाया करते थे, पहले वह स्कूटी से जाती थी लेकिन अब स्कूटी भी नहीं थी, लेकिन एक अच्छी बात यह हुई कि इसी बीच हर्ष की जॉब उसी इलाके में लग गई तो वह हर्ष की बाइक पर साथ आती जाती थी । कभी कभार हर्ष के ना आने पर हम स्टेशन या रास्ते में एक दूसरे को दिखाई दे जाते थे, चूँकि हमारे घर का रास्ता एक ही था तो कई बार हमने साथ ही सफर भी किया । धीरे-धीरे हमारे बीच की औपचारिकता खत्म हो चुकी थी और हम अच्छे दोस्त बन गए । बातों बातों में अक्सर उसके सामने इस रेस्टोरंट का जिक्र करता था, क्योंकि मेरे सारे कलीग्स और आसपास के ऑफिसों के कर्मचारी यहीं आते थे । यह ऑफिस छूटने का समय था तो उसे पता था कि मैं और केशव यही चाय नाश्ता करते हुए पाये जायेंगे, इसलिये वह सीधे यहीं चली आई । वैसे मुझे भला उसके साथ चलने में क्या आपत्ति हो सकती थी । लेकिन केशव मेरे साथ था, उसे छोड़कर सोनल के साथ जाना थोड़ा अजीब लग रहा था और उससे कह भी नहीं सकता था, दोस्त साले होते ही कमीने हैं । आज सोनल के साथ चला जाऊँगा तो जिन्दगी भर 'एक लड़की के लिए दोस्त को छोड़कर चला गया' टाइप बातें सुननी पड़ेंगी । और मैं ऐसा नहीं चाहता था ।

“तू चला जा, इन्हें ड्राप कर दे । मुझे अभी कुछ काम है, देर हो जायेगी ।” केशव ने मेरी ओर देखे बिना ही कहा और साथ ही साथ उसने मुझे टेबल के नीचे से ठोकर भी मारी । मैंने उसकी तरफ देखा तो उसने अनजान बनने का दिखावा किया । केशव कमाल का आदमी था, वह खब्ती, खडूस और अजीब भले ही हो लेकिन वह परिस्थितियों के अनुसार व्यवहार करने में कुशल था । बिना बोले ही मेरी मन की बात समझ गया था ।

“ठीक है, हम चलते है फिर ।” सोनल मुस्कुराते हुए उठी तो केशव ने फिर हाथ बढ़ाया और अपनी गलती का अहसास होते ही उसने हाथ जोड़ लिए, सोनल ने भी हाथ जोड़कर नमस्ते किया ।

“और सुन ! बिल भरते जा भाई ।” केशव व्यंग्यपूर्ण मुस्कान के साथ बोला । मैं भी मुस्कुराकर रह गया और काउन्टर पर जाकर बिल चुकता किया, वह अपनी टेबल पर मस्तमौला और बेफिक्र सा बैठा रहा । हम होटल से निकल कर अब मुख्य सड़क पर टहल रहे थे, काश मैं केशव के चेहरे पर उभरे भावों को देख पाता जो हमारे जाने के पश्चात उभरे थे । हमारे हटते ही उसकी बेफिक्री की जगह माथे पर चिंता की लकीरों ने ले ली । वह गहरी सोच में डूबा हुआ था, यहाँ वहां नजरें घुमाते हुए वह कुछ विश्लेषण करने में व्यस्त हो गया ।

□□□

“तो हर्ष कहाँ गया हुआ है ?” बात कहीं से आरम्भ करनी थी, इसलिये मैंने प्रश्न किया ।

“मेरी होने वाली भाभी के साथ मूवी गया हुआ है ।” सोनल शरारती मुस्कान के साथ बोली । हर्ष मेरा भी अच्छा दोस्त बन चुका था, लेकिन ऐसी कोई बात उसने मुझे नहीं बताई थी ।

“होने वाली ?” मैंने प्रश्न किया ।

“काफी रिश्ते आये थे लेकिन भैय्या तैयार ही नहीं हो रहा था, कुछ दिनों पहले रिश्तेदारी में किसी के पहचान से कोमल का रिश्ता आया था । तस्वीर देखते ही भैय्या को पसंद आ गई, अब शादी की तारीख फिक्स होते ही तुम्हें भी बता देगा ।” उसने बताया, वैसे भी मुझे क्या फर्क पड़ना था इन सबसे ? तो मैं बस सिर हिला कर रह गया ।

“भैय्या कोमल से मिला था, दोनों में खूब बनने लगी थी । तो काफी कोशिशों के बाद आज फिल्म देखने का प्लान बना है उनका ।”

पता नहीं क्यों लेकिन यह सब मुझे अच्छा नहीं लगता था, मैं कभी किसी लड़की के साथ फिल्म देखने नहीं गया था । दोस्तों के नाम पर लौंडे ही थे जो किसी काम के नहीं थे, साले फिल्म देखते समय सीटियाँ मारते थे, चिल्लाते थे तो बड़ी शर्मिंदगी होती थी । सब के

सब उजड्ड थे, एक केशव थोड़ा सही था, वह भी इसलिये कि वह केवल हॉरर फ़िल्में देखने ही आता था । लड़का लड़की फिल्म देखने के बहाने जो वाहियात चीजें करते है वह मुझे सख्त नापसंद है, आप यह भी कह सकते हो कि मुझे अवसर नहीं मिला शायद इसलिये दूसरों को मिलता देख जलता हूँ, यह बात भी सही है । मनोवैज्ञानिक नजरिये से देखे तो हां इन चीजों का सिंगल वह भी मुझ जैसे अखंड सिंगल लौंडों पर असर होता है, बड़ा गहरा होता है । क्योंकि मुझे पता है वो साले फिल्म कम देखते है अपनी स्क्रिप्ट ज्यादा लिखते रहते है, लेकिन मुझको क्या ? यह बोलकर भी मैं खुद को राहत नहीं पहुंचा पाता ।

"किस सोच में पड़ गए ?" सोनल की आवाज से चिहुँका और विचारों की दुनिया से बाहर आ गया । मैं बस मुस्कुरा कर रह गया, उसने मुझे अपनी कुहनी मारी ।

"अपनी गर्लफ्रेंड की याद आ गई क्या ?" वह मुस्कुराई, उसकी बात सुनकर मुझे बेहद शर्म आई । नहीं वो शर्म से गाल लाल होने वाली शर्म नहीं थी, यह शर्म से सिर झुक जाने वाली शर्म थी । शर्म के भी दो प्रकार होते है ना, तो यह दूसरी वाली थी । अब उसे क्या बताता कि मेरे केवल फ्रेंड है और उस फ्रेंड सर्कल में गर्ल का कहीं दूर दूर तक निशान नहीं है ।

"नहीं, मेरी कोई गर्लफ्रेंड ही नहीं है ।"

"झूठ मत बोलो । होगी कोई ना कोई, मुझे पूरा यकीन है ।"

"इस यकीन के पीछे की वजह ?"

"अरे यार स्मार्ट हो, डैशिंग पर्सनालिटी है, किसी हीरो से कम थोड़े ही हो । कोई लड़की लाइफ में ना हो ऐसा हो ही नहीं सकता ।"

उसकी बात सुनकर मुझे शर्म आई, हां यह पहली वाली शर्म थी । गाल लाल होने वाली । पहली बार किसी ने मेरी तारीफ़ की थी और वह भी लड़की ने, तो जाहिर सी बात थी मुझे समझ ही नहीं आया कि क्या प्रतिक्रिया दूँ । मैंने नजरें झुका ली ।

"चल झूठी ।" मेरे मुंह से अनायास ही निकला ।

"क्या बोले ? फिर से बोलो, क्या बोले ?" वह हंसने लगी ।

"कितना क्यूट तरीके से बोले हो, एक बार और बोलो ना ।" वह जोर-जोर से हंसने लगी । अब मुझे वाकई बेहद शर्म आ रही थी ।

"बस करो यार, अब नहीं है गर्लफ्रेंड तो उस पे इतना क्या ? गर्लफ्रेंड नहीं होना कोई इतनी बड़ी बात भी नहीं है कि ऐसे रिएक्ट करके सामने वाले को शर्मिंदा कर दो ।" मैंने झेंपते हुए कहा । सोनल एकदम से चुप हो गई । मैंने उसकी तरफ देखा, शायद मेरी बात बुरी लग गई थी । उसने मेरी ओर देखा, एकदम से खामोश थी, लेकिन बस कुछ पलों तक । फिर उसकी हंसी छुपाये नहीं छुपी और मुंह पर हाथ रखकर हंस पड़ी । पहले तो मैं

झेंपता रहा फिर मुझे भी उसकी हंसी देखकर हंसी आने लगी । उसने मेरी पीठ पर शाब्बाश वाली थप्पी लगाई । हम फिर हंसे ।

"नहीं है यार गर्लफ्रेंड, मैं बचपन से ही ऐसा रहा हूँ । कभी किसी लड़की के साथ घुला-मिला नहीं, उनसे बात करने का कॉन्फिडेंस ही नहीं आया कभी । ऑफिस में भी उनसे कटा-कटा रहता हूँ, पता नहीं क्यों सामने आते ही पूरा आत्मविश्वास डगमगा जाता है, किसी इंटरव्यू में अगर महिला इंटरव्यूवर रहे तो हाथ पाँव कांपने लगते है, आते जवाब भी भूल जाता हूँ ।" मैं अपनी रौ में बहते हुए बहुत कुछ बोल गया ।

"और तुम्हारा कोई बॉय..."

"नहीं है !" मेरा प्रश्न पूरा होने से पहले ही सोनल तपाक से बोली । उसके उत्तर में अजीब सा ठंडापन था । वह पता नहीं क्यों इतनी अजीब सी थी । हो सकता है कि उसे सवाल पसंद नहीं आया हो, भला किस लड़की को यह पसंद होगा कि कोई उसके बॉयफ्रेंड के बारे में पूछे ? यह अधिकार तो केवल लड़कियों को ही है हमसे जो चाहे पूछें और छेड़खानी करें ।

"अगले हफ्ते मेरी फेवरिट नॉवेल पर एक फिल्म आ रही है, तुम चाहो तो मुझे ज्वाइन कर सकते हो ।" सोनल ने धीमे से कहा, उसने मुझसे नजरें नहीं मिलाई थी । जानता था यह कहते हुए वह सकुचाई थी ।

"वाह ! तुम भी नॉवेल्स पढ़ती हो ?" मैंने कहा । दरअसल उसके द्वारा फिल्म पर बुलाने पर मुझे यकीन ही नहीं हुआ कि मैंने जो सुना वह सच था, ख़ुशी की अधिकता के कारण कोई बेवकूफी ना कर जाऊं इसलिये मुझे बात मोड़नी जरूरी थी ।

"तुम भी ? मतलब तुम भी पढ़ते हो, चलो अच्छा है हम अपने नॉवेल्स आपस में एक्सचेंज कर सकते है, मेरे पास पांच सौ के आसपास होंगे, और तुम्हारे ?" सोनल के चेहरे से उसकी प्रसन्नता झलक रही थी ।

"कभी गिना नहीं लेकिन हजार के आसपास होंगे ही ।" मैंने सामान्य रहने का प्रयास किया जबकि ना जाने क्यों मन में लड्डू से फूट रहे थे ।

"जो फिल्म आ रही है उसकी क्या कहानी है ?" अब बात मुद्दे की तरफ मोड़ना जरूरी था, मुझे डर था कि सोनल कहीं फिल्म वाली बात ही ना भूल जाये ।

"दरअसल वो एक वैम्पायर, वेयरवूल्फ और एक लड़की की प्रेम कहानी है, यह आखिरी भाग है फिल्म का । इसमें लड़की एक वैम्पायर से प्यार कर बैठती है । वैम्पायर उससे दूर भागता रहता है क्योंकि वह उसे खोना नहीं चाहता और ना ही अपनी दुनिया में लाना चाहता है, लड़की के बचपन का एक दोस्त भी है जो उसके हर दुःख सुख में उसके साथ रहता है, लेकिन वह भी मन ही मन उसे चाहने लगता है । वह उसके बॉयफ्रेंड से नफरत करता रहता है, बाद में पता चलता है कि वह एक वेयरवूल्फ है, आधा भेड़िया

आधा मनुष्य । और वेयरवूल्फ और वैम्पायर्स जन्म जन्मान्तर के दुश्मन होते है । लड़की भी यह सब जान लेती है और दोनों के प्यार में फंस जाती है ।" सोनल ने कहा ।

"हां समझ गया किसकी बात कर रही हो, मुझसे तो झेली नहीं गई यह कहानी ।" मेरे मुंह से ना चाहते हुए भी यह निकल गया । सोनल ने तीखी नजरों से मेरी ओर देखा ।

"लड़की बड़ी कन्फ्यूज है इसमें, कभी इधर कभी उधर, कभी इससे प्यार कभी उससे प्यार । कभी इससे कमिटमेंट तो कभी उससे, हमेशा उलझन में रहती है, अरे ऐसी भी क्या उलझन होती है इन लड़कियों के साथ । प्यार है तो है, नहीं है तो नहीं है, बस दो टूक । हां या ना, असल जिन्दगी में ऐसा नहीं चलता, चीजों को क्लियर करना पड़ता है । किसी एक स्टैंड पर रहना पड़ता है, यह फ़िल्मी @तियापे असल जिन्दगी में नहीं चलते ।" अब न चाहते हुए भी अपशब्द निकल गया । वैसे इसे अपशब्द भी नहीं माना जाता, पहले गाली-गलौज असभ्य लोगों की निशानी मानी जाती थी, लेकिन सिर्फ तब तक जब तक आप हिंदी में गाली दो । अंग्रेजी में तो गालियाँ देना अनिवार्य है, आप जितने ज्यादा पढ़े लिखे आप उतना ज्यादा 'एफ' वर्ड प्रयोग करोगे, सुंदर चीज है तो वो भी फ@क ब्यूटीफुल, डरावनी है तो भी फ@क स्केरी, सही है तो फ@क राईट, मतलब चीज अच्छी हो चाहे बुरी, यह #क साला हर जगह प्रयोग होता है । यह तो एलिट लोगों की गालियाँ है जो असभ्यता में नहीं आती । खैर मैं विषय से भटक गया, अभी मुझे सोनल पर ज्यादा ध्यान देने की जरूरत थी क्योंकि उसे मेरी बात शायद पसंद नहीं आई थी ।

"मैं मूवी देखना पसंद करूँगा, कब चलना है ।" सोनल के कुछ बोलने से पहले ही मैं बोल पड़ा । मुझे डर था कहीं वह इरादा ना बदल दे ।

"तुम्हें तो पसंद नहीं है न ?"

"जरूरी नहीं कि जो चीज मुझे पसंद नहीं वह बुरी ही हो, हो सकता है मेरा टेस्ट ही अलग हो ? मैं अपना टेस्ट बदलने की कोशिश तो कर ही सकता हूँ ।" मैंने झेंपते हुए कहा ।

"वैसे फिल्म देखने का एक कारण और है तुम्हारे पास ।" सोनल ने मेरी ओर देखा, उसकी नजरों से मैं नजरें मिला नहीं सका ।

"और वह कौन सा ?" मैंने प्रश्न किया ।

"तुमने किसी लड़की के साथ फिल्म नहीं देखी ।" वह खिलखिलाई ।

"भक्क !" मैं भी हंस दिया । उसने मन की बात पकड़ ली थी, सोनल अजीब भले हो लेकिन वो क्यूट सी थी । नहीं मुझे प्यार-व्यार नहीं हुआ था, लेकिन उसका साथ अच्छा लगता था । केशव के साथ बचपन से रहते-रहते थोड़ा ऊब सा गया था सोनल का साथ थोड़ा बदलाव लेकर आया था । ईमानदारी से कहूँ तो सोनल वह पहली लड़की थी जिससे मैं इतनी जल्दी इतना घुल मिल गया था ।

हमारा स्टेशन आ गया था, इस समय भीड़ काफी होती है तो हमारा एक साथ एक ही बोगी में जाना बेवकूफी होती ।

“मैं लेडीज डिब्बे की ओर जाती हूँ ।” सोनल ने कहा, हां मुझे थोड़ा खराब लग रहा था । सोनल के साथ समय कैसे गुजर जाता था कुछ पता ही नहीं चलता था । स्टेशन हालांकि दूर है लेकिन सोनल के साथ रहते हुए वह दूरी कुछ ही पलों की लगती थी ।

फ़ास्ट ट्रेन आ चुकी थी और जैसा कि होता आया है वह खचाखच भरी हुई थी । रुकते ही प्रवासियों का एक रेला सा बाहर निकला और दूसरी ओर से ट्रेन पकड़ने वालों की सुनामी भी उसी ओर बढ़ी । बाहरी व्यक्ति यह सब देखकर एक पल को घबरा ही जाएगा और लोकल पकड़ने का इरादा ही त्याग देगा, लेकिन अन्य मुम्बई वासियों की भांति मुझे भी इसकी आदत हो गई थी । मैं उस भीड़ में धक्का मुक्की करते हुए आगे बढ़ा लेकिन उतरने वाले भी आज ज्यादा ही थे । चारों ओर चिल्लाहट गरमा गर्मी बढ़ गई, हर किसी को बस लोकल का दरवाजा ही दिख रहा था । इस भीड़ में कब मुझे धक्का लगा और मैं पंक्ति की अंतिम श्रेणी में आ गिरा मुझे पता ही नहीं चला, प्लेटफॉर्म पर स्थित वेटिंग चेयर पर जा टकराया । उसका छोर मेरी आँख से थोड़ी दूर बायीं ओर लगा और आँखों के आगे चाँद सितारे नाच गए । लोग अब भी हड़बड़ी में थे । ट्रेन धीरे-धीरे चल पड़ी । मैंने हताश होकर उस ट्रेन की तरफ देखा, वह मुझे मुंह चिढ़ा रही थी । मेरे सामने से लेडिज डिब्बा गुजर रहा था और सोनल की नजर मुझ पर पड़ी । वह मुझे प्लेटफॉर्म पर कुर्सी के सहारे बैठा देख कर चौंक पड़ी । लेकिन गति पकड़ चुकी थी और उसका उतरना मुमकिन नहीं था । मैंने उसे देखा और जबरन मुस्कुराया, मानो कोई बात नहीं, होता है ।

थोड़ी दूर जाकर ट्रेन की गति धीमी होने लगी और सोनल छलांग लगा कर बाहर कूदी, बाकी यात्री जो ट्रेन नहीं पकड़ पाये थे वो फिर से आंधी तूफ़ान की भांति लोकल की ओर दौड़ पड़े । सोनल दौड़ती हुई मेरी तरफ बढ़ी । आह ! वह दृश्य, कभी ना भुलाया जा सकने वाला दृश्य था वह, एकदम फ़िल्मी दृश्य था वह । भीड़ की विपरीत दिशा की ओर दौड़ती हुई सोनल, माथे पे पसीने की बूंदें दमक रही थीं, उसकी दाहिनी ओर ट्रेन गति पकड़ने लगी थी । काश वह दृश्य स्लो मोशन में चलता, लेकिन असल जिन्दगी में केवल तकलीफें ही स्लो मोशन में चलती है, खुशियाँ तो फास्ट फॉरवर्ड में रहती है । सोनल मेरे सामने ही बैठ गई और मेरे माथे को देखने लगी । उसके स्पर्श मात्र से मैं रोमांचित हो उठा, उसकी हथेलियाँ बर्फ की भांति सर्द थी, पता नहीं क्यों ।

“यह कैसे हो गया ? संभाल कर चलना चाहिए था ना, इतने साल हो गए है अब भी लोकल में चढ़ने की आदत नहीं है तुम्हें ?” उसके स्वर में गुस्सा था, लेकिन यह अधिकार और अपने पन से सराबोर था । मैं मुस्कुराया, सोनल से मिलने के बाद ऐसा अक्सर होते रहा है कि मैं मौके बेमौके ऐसी हरकतें कर देता हूँ जो नहीं करनी चाहिए ।

“मुस्कुरा क्यों रहे हो ? माथे से खून बह रहा है, लेकिन इतना नहीं, खरोंच आई है और सूजन भी होने वाली है । ज्यादा चोट नहीं लगी ।” इतना कहकर वह फौरन उठ खड़ी हो गई और मेरी तरफ अपना हाथ बढ़ाया । वह कितनी निष्ठुर थी, कितना अच्छा होता यदि वह मेरे माथे को सहलाती, अपने दुपट्टे से मेरा बहता खून पोंछती । लेकिन उसके पास दुपट्टा ही नहीं था, आजकल कुर्ते पर दुपट्टा कौन पहनता है और पहनता भी है तो यह कोई फिल्म या रोमांटिक नॉवेल तो है नहीं जो वह अपने दुपट्टे को फाड़कर मुझे पट्टी बांधती ।

“अरे क्या हो गया ? यह हर बार ख्यालों में कहाँ खो जाते हो ?” सोनल ने प्रश्न किया, वह स्पष्ट रूप से झल्लाई हुई थी । अब उसे क्या बताता कि मैं ख्यालों में कहाँ गुम रहता हूँ, आखिर फर्स्ट पर्सन हूँ कहानी का, तो खोना जरूरी है, मतलब सूत्रधार तो मैं ही हूँ ना, तो यह सब विवरण देने के लिए रुकना ही पड़ता ही । लेकिन वो ना समझ पाएगी और ना मेरी उसे समझाने की क्षमता थी, ऐसा क्यों ? तो उसका जवाब मैं पहले भी कई बार दे चुका हूँ, वो लड़की है और उसे समझाने की क्षमता खुद भगवान में भी नहीं है । मैंने उसका हाथ थामा और उठ खड़ा हो गया । मेरे माथे पर अब गूमड़ आ चुका था जो मेरी खूबसूरती में चार चाँद लगा रहा था । उसे देखकर वह अपनी हंसी नहीं रोक पाई ।

“मुझे चोट लगी है और तुम्हें हंसी आ रही है, खैर वो छोड़ो, यह बताओ ट्रेन रुकी कैसे ?” मैंने सवाल किया ।

“ट्रेन में एक चेन होती है, जिसे खींच कर ट्रेन को रुकाया जा सकता है, पता ही होगा तुम्हें ?” सोनल के स्वर में मजाक का पुट था ।

“क्या बात कर रही हो ? बहुत काम की जानकारी मिली आज तो ।” मैंने भी हैरान होने का अभिनय किया, हम दोनों ही हंस पड़े ।

“तो अब क्या करना है ? ट्रेन तो निकल गई अब अगली ट्रेन का इंतजार करें ?” सोनल ने कहा । करने को तो यह भी कर सकते थे लेकिन मेरे सिर में दर्द होने लगा था और जिस प्रकार से मैं प्लेटफॉर्म पर गिरा था, मेरे अंजर-पंजर ढीले हो गए थे तो फिलहाल तो मैं लोकल की सवारी के मूड में कतई नहीं था ।

“मैं सोच रहा हूँ यही से कैब बुक कर लेते हैं, मैं इस हालत में नहीं हूँ कि दोबारा ट्रेन पकड़ने की कोशिश करूं, तुम्हारा सही है, तुम कूद फांद कर चढ़ गई, चाहो तो अगली ट्रेन की प्रतीक्षा कर सकती हो या मेरे साथ ही चलो ।” मैंने थोड़ा सकुचाते हुए कहा ।

“दूसरा सुझाव ज्यादा समझदारी वाला लग रहा है, जब कैब मिल रही है तो मैं क्यों लोकल के धक्के खाना पसंद करने लगी ।”

मैंने आनन-फानन में मोबाइल द्वारा ऑनलाइन एक कैब बुक कर ली, किराया थोड़ा महंगा पड़ रहा था लेकिन सुकून से जाता । और वैसे भी सोनल का साथ था तो सफर और खूबसूरत होने वाला था । ओह अब मैं भी फ़िल्मी भाषा में बात करने लगा था । सूजन हो

आई थी लेकिन शुक्र था खून ज्यादा नहीं बहा, जो भी था वह मामूली खरोंच के कारण थोड़ा बहुत बहा था। कैब आने तक स्टेशन के बाहर स्थित एक क्लिनिक पर हल्की मरहम पट्टी करवा ली। वैसे इसकी जरूरत नहीं थी, लेकिन सोनल की जिद के आगे एक नहीं चली। इसी बीच सोनल को हर्ष का फोन भी आया, ट्रेन छूट गई सुनकर वह थोड़ा चिंतित भी था, लेकिन फिर उसने मुझसे बात करनी चाही।

"हाय प्रीतम ! क्या यार अपना ख्याल रखा करो, तुम तो एकदम लापरवाह से हो, सोचा था सोनल तुम्हारे साथ है तो अच्छे से घर पहुँच जाएगी, भाई की कमी महसूस नहीं होने दोगे उसे।" हर्ष ने कहा तो सुनकर एक पल को मेरा सारा खून ही फुंक गया। लेकिन फिर हर्ष के हंसने की आवाज सुनाई दी।

"अरे बस खींच रहा हूँ यार, सीरियस हो गए क्या ?" हर्ष ने हंसते हुए कहा।

"न...नहीं तो, मैं भला क्यों सीरियस होने लगा ?" कहकर मैं भी हंस दिया, लेकिन मेरी हंसी में खिसियाहट स्पष्ट झलक रही थी।

"तुम ट्रेन से गिर पड़े ? ज्यादा चोट तो नहीं लगी ? पिछली बार मिले थे तब भी टूटे फूटे थे, यह भला क्या शौक पाल रखा है तुमने ?" कहकर उसने ठहाका लगाया, मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि कोई आदमी कैसे बिना बात के भी हर वाक्य पर लगातार हंस सकता है। मुझसे तो बनावटी हंसी भी नहीं हंसी जा रही थी। मैंने बस यूँ ही औपचारिकता निभाई और उसे जितनी जल्दी हो सके निपटा दिया। हमारी कैब भी आ चुकी थी, मैंने सोनल को उसका फोन लौटा दिया और कैब का दरवाजा खोलकर पहले आप की मुद्रा में खड़ा हो गया, सोनल मुस्कुराई और कैब में बैठ गई। अब हम अपने घर की ओर बढ़ रहे थे।

"भैय्या से तुम्हारी बहुत पटने लगी है आजकल। मेरे घर में भी सब तुम्हारी तारीफ़ करते रहते है।" सोनल ने धीमे स्वर में कहा, यह सुनकर मेरे रोम-रोम में हल्की सी सिहरन दौड़ गई। लड़की के परिवार वाले किसी लड़के की चर्चा कर रहे है, और उन्हें वह पसंद भी है तो कहीं ये..... ?

"नहीं ऐसा कुछ भी नहीं है।" सोनल ने मेरी तन्द्रा भंग की, मैंने हैरानी से उसकी तरफ देखा। उसने जैसे मेरी मन की बात पढ़ ली थी।

"हां, जो सोच रहे हो वैसा कुछ भी नहीं है, तुमने मुझे बचाया था। उस बरसात में एक दूसरे का खयाल रखा था इसलिये सब तुम्हारे स्वभाव और तुमसे बेहद प्रभावित है, जो कि होना भी चाहिए, और अब एक दूसरे के घरवालों का भी मिलना जुलना लगा रहता है, ऐसे में बातें तो होती ही रहती है। वैसे भी तुम मेरे अच्छे दोस्त हो।" सोनल के द्वारा कहे अंतिम शब्द से मेरा मूड ही खराब हो गया, यह नया ट्रेंड नहीं है। बहुत पुराने समय से 'तुम सिर्फ अच्छे दोस्त हो' नाम का अस्त्र लेकर अच्छे अच्छों का काटा जा रहा है, अब मेरा नंबर था।

"सुनो ! सब बोलो लेकिन ये तुम मेरे अच्छे दोस्त हो, फलाने हो यह मत बोलो यार ।" मैंने यूँ ही मजाक में कह दिया ।

"तब क्या बोलूँ ?" वह चहकी, आज मेरी टांग खींचने के मूड में थी ।

"छोड़ो ! यह बताओ मूवी कब चलना है ।" मैंने बात बदली ।

"इसी रविवार को चलेंगे, मैं टिकट्स बुक कर लूंगी ।"

"तुम क्यों कर लोगी ? मैं करता हूँ ना ।" मैंने कहा ।

"ठीक है, तुम टिकट्स ले लेना और मैं खाने पीने का खर्चा करूँगी । अब ना मत बोलना, अगर बोले तो रहने दो, नहीं देखना फिल्म विल्म ।" वह तुनककर बोली । मैं बस मुस्कुराकर रह गया और हामी में सिर हिला दिया । वह अचानक से खामोश हो गई तो मैंने उसकी ओर सिर घुमाया, वह कही खो सी गई थी, मैंने उसके चेहरे को देखा, वह एकदम भावनाशून्य था, शून्य में ताक रही थी । मैंने उसे टोकना उचित नहीं समझा, लेकिन कुछ खुरचने जैसी आवाज सुनकर मैंने उस आवाज की दिशा में देखा । सोनल स्तब्ध बैठी थी और उसकी उंगलियाँ सीट पर मचल रही थी, वह अपने नाखूनों से सीट पर हरकतें कर रही थी, मैंने उसकी तरफ देखा लेकिन उसका ध्यान ही नहीं था ।

उसकी उंगलियाँ मानो सीट का कवर फाड़ कर धंसने को मचल रही थी, मुझे ठंड का अहसास हुआ । मेरे रोम-रोम खड़ा हो गया, मैंने कहीं पढ़ रखा था कि जहां भी कुछ पैरानॉर्मल एक्टिविटी होती है वहाँ के तापमान में अचानक से गिरावट आ जाती है ।

"ठंड ज्यादा हो रही है, मैं एसी बंद कर देता हूँ साहब ।" ड्राइवर की आवाज ने मुझे चौंकाया, ओह ! मैं भी कितना बेवकूफ था, एसी के कारण ठंड बढ़ी थी और मैं कुछ भी सोचने लगा था, होता है ! केशव से मुलाकात का असर पड़ता ही है । ड्राइवर की आवाज सुनकर सोनल का ध्यान भंग हुआ । हमारे बीच अजीब सी शांति छाई हुई थी, मुझे बेचैनी हुई तो बात शुरू करने की गर्ज से मैंने प्रश्न किया "तुम्हारी कोई सहेली वगैरह नहीं है क्या ?"

"अचानक यह सवाल कैसे ?" उसने अपने आपको सामान्य करते हुए कहा, हां वह जिस तरह से स्तब्ध बैठी थी उसे असामान्य ही कहा जाएगा ।

"तुम केशव के बारे में जानती हो, हम कई बार मिल चुके है, मैं अक्सर अपने दोस्तों यारों का जिक्र करता हूँ, लेकिन तुम्हारे मुंह से कभी नहीं सुना । तुम्हारे दोस्त या सहेली नहीं है क्या ?"

"तुम हो न ? तुम मेरे दोस्त हो ना ।" वह मुस्कुराई, उसकी मुस्कुराहट में कुछ तो बात थी जो उसे देखकर मेरे कानों में सीटियाँ सी बजने लगती थी ।

"बात घुमाओ मत, सच बताओ ।" मुझे पता नहीं क्यों बेचैनी हो रही थी ।

वह कुछ पल तक शून्य में ताकती रही, उसकी मुस्कान फीकी प्रतीत होने लगी थी ।

“नहीं, मैंने कभी दोस्त नहीं बनाये । मुझे बचपन से ही किसी से घुलना मिलना पसंद नहीं है । यह भी कह सकते हो कि शायद मेरा स्वभाव ही ऐसा है कि मैं किसी से दोस्ती नहीं करना चाहती ।” वह धीमे से हंसी, साफ जाहिर था यह खोखली हंसी थी । मुझे समझ में ही नहीं आया कि मैं उसकी इस बात पर क्या प्रतिक्रिया दूँ । उसकी बातों में जो खोखलापन था उससे साफ़ जाहिर हो रहा था कि वह सच बोल रही है ।

“ऐसा कौन सा स्वभाव है तुम्हारा ? थोड़ा हमें भी तो पता चले ।” मैं माहौल को गम्भीर होता देखकर बोल पड़ा ।

“सब कहते है कि मैं थोड़ी अजीब हूँ, मेरा व्यवहार सामान्य नहीं है । मुझे कब कहा और क्या प्रतिक्रिया देनी है यह नहीं पता । मैं हंसने की बात पर शांत रहती हूँ, तो शांत रहने की बात पर हंस देती हूँ । किसी चीज में कोई उत्साह भी नहीं होता, मैं थोड़ा अन्तर्मुखी सी हूँ और किसी भी बात का बुरा लगने पर मुंह पर बोल देती हूँ, इसलिये भी लोग मुझसे कटे कटे रहते है और खड़ूस समझते है । मैं स्कूल टाइम में थोड़ा चुलबुली थी लेकिन कॉलेज में आते ही मेरे स्वभाव में दब्बूपन आ गया । मैं उस माहौल से कभी तालमेल नहीं बिठा पाई, मुझे न फैशन की समझ थी और ना ही कूल समझे जाने वाली चीजों के बारे में कोई जानकारी और ना ही ऐसी कोई खासियत थी । ऐसा माहौल था मानो किसी जंगली को उठा कर शहर के बाजार में छोड़ दिया गया हो । ऐसा इसलिये भी था कि मैंने अपनी पढ़ाई के अलावा और किसी चीज पर कभी ध्यान ही नहीं दिया । दुनिया में जीने के लिए जिस पढ़ाई में डूबी रही, उसी ने मुझे इस दुनिया से काट दिया । मैं बस एक किताबी कीड़ा बन कर रह गई थी जिसके पास पढ़ाई और किताबों के अलावा और कोई काम नहीं था, मैं बस सफल होना चाहती थी, लेकिन किसमें ? यह नहीं पता था । बस जिस चीज में हाथ डाला वहां मुझे सफल होना ही है, यही जिद पकड़े रही और धीरे-धीरे इस समाज से ही कट गई, पता है कॉलेज में मुझे क्या बुलाते थे ?” उसने मुस्कुराते हुए मेरी ओर देखा । मेरा मन ही नहीं हुआ कि मैं पूछूँ ।

“जोम्बी ! मुझे जोम्बी बुलाते थे ।” वह हंसी, लेकिन उसकी हंसी नकली थी, कोई बेवकूफ भी पहचान सकता था । मैं कुछ पलों तक खामोश रहा ।

“मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मेरी कहानी मैं किसी और के मुंह से सुन रहा हूँ ।” मैंने धीमे से कहा और यह सही भी था, थोड़े बहुत बदलाव के बाद उसकी और मेरी कहानी लगभग एक जैसी ही थी । कॉलेज में दब्बू बने रहने के कारण आज तक कभी कांफिडेंस नहीं आ पाया ।” मैंने खुद को थोड़ा भावुक महसूस किया और फौरन बात रोक दी ।

बातों-बातों में कब समय बीत गया कुछ पता ही नहीं चला, सोनल के घर से कुछ ही दूर मैंने कैब रुकवा दी, वह कैब से बाहर निकली ।

“सन्डे को याद रहेगा ना ?” उसने इठलाते हुए पूछा ।

“यह भी कोई भूलने वाली बात है ?” मेरे जवाब पर वह मुस्कुराई और हाथ हिलाकर मुझे विदा किया, मैंने कैब वाले को ठाणे चलने के निर्देश दे दिए । पता नहीं क्यों लेकिन मेरे चेहरे पर जो मुस्कुराहट सोनल के जाने के बाद उभरी थी वह घर पहुँचने तक कायम थी । मैंने कैब का शीशा नीचे किया, ठंडी हवा के झोंके मेरे बालों से खेलने लगे । भीड़ भरी यह सड़कें जो हमेशा मुझे इरिटेट करती थी, आज पता नहीं क्यों मुझे वे अच्छी लगने लगी थी । मेरे भीतर कुछ तो बदल रहा था, कुछ तो चल रहा था जो मैं उस समय तक समझ नहीं पाया था । अपने अपार्टमेंट के सामने पहुँच कर देखा तो माँ बालकनी में खड़ी नजर आई । मैंने कैब वाले के पैसे चुकता किये और धन्यवाद बोल कर आगे बढ़ गया । तीन मंजिले चढ़ने के बाद मुझे याद आया कि मेरी बिल्डिंग में लिफ्ट भी है, मैं अपनी हालत पर खिसिया कर रह गया । अब दो मंजिले और बची थी और लिफ्ट ऊपर से नीचे की ओर आ रही थी तो मैं रुका ही नहीं, आज थकान ही नहीं हो रही थी । लग रहा था जैसे मेरे पाँव जमीन पर नहीं बल्कि हवा में उड़ रहे थे । दरवाजा खुला था, मैं दनदनाते हुए भीतर घुसा और बैग एक कोने में फेंक दिया ।

“अरे जूता पहने-पहने कहा दौड़ा चला रहा है ? बाहर निकाल ।” माँ चिल्लाई तब मुझे जूते उतारने का होश आया । नहीं, अभी हम इतने भी मॉडर्न नहीं बने थे कि जूते पहन कर ही घर में प्रवेश कर जाए, मुझे तो फिल्मों में दिखाए जाने वाले करेक्टर्स पर हैरानी होती है कि भला कोई कैसे बिस्तर तक में जूते पहन कर सो सकता है ? उनके चोंचले उन्हीं को मुबारक ।

“माँ मुझे भूख लगी है । खाना निकाल दो, मैं नहा कर आता हु ।” मैं जूते शू रैक में रखते हुए ही बोला । कुछ ही मिनटों में मैं नहा कर कमरे में पहुंचा । खाना लगा हुआ था, पापा और माँ बैठे हुए थे, मैंने उनकी तरफ देखा और मुस्कुरा दिया ।

“प्रमोशन हो गया क्या ?” पापा ने मेरी ओर देखते हुए कहा ।

“न... नहीं तो ।” मैंने अपने आप को संयत करने का प्रयास किया लेकिन एक अलग सा गुलाबी अहसास मेरे मन को मथ रहा था ।

“तुम्हारे चेहरे पर आज अलग ही रौनक दिखाई दे रही है ।” पापा ने मेरे हाव भाव देखकर कहा, मैं भूल ही गया था कि पापा को जासूसी उपन्यासों का जबरदस्त शौक है, वे इतने जासूसी उपन्यास पढ़ चुके थे कि खुद को किसी जासूस से कम नहीं समझते थे । मैंने अपने आप को संयत किया और कुर्सी पर बैठ गया ।

“आज बॉस ने सबके सामने मेरे काम की तारीफ़ की, इसलिये मूड थोड़ा अच्छा है ।” मैंने सफ़ेद झूठ बोला, मेरे बॉस को घंटा फर्क नहीं पड़ता था कि मैं क्या करता हूँ, और तारीफ़ ? उसने पूरी जिन्दगी में अपने अलावा किसी और की तारीफ़ नहीं की होगी । मैंने प्लेट में जो आया वह खाना शुरू कर दिया ।

“बॉस कोई महिला है क्या ?” पापा के प्रश्न से निवाला गले में फंसते-फंसते बचा, खांसने लगा और गिलास उठा कर पानी गले में उतारा ।

“यह कैसा सवाल हुआ पापा ? बॉस महिला या पुरुष होने से क्या फर्क पड़ता है ?” मैंने फिर झूठ बोला, जबकि दुनिया जानती है इससे फर्क पड़ता है बहुत पड़ता है, लेकिन मेरी किस्मत में खड़ूस बुढ़ऊ ही लिखा था जो अपने आप में डूबा रहता है । जिसे अपने अलावा पूरी दुनिया कामचोर लगती है । जो कुर्सी पर बैठ जाए तो गड्ढा किये बगैर वहाँ से हिले भी नहीं ।

“अरे मतलब, पहले भी तुम्हें अवार्ड वगैरह मिले है, लेकिन तब कभी इतना चहकते हुए नहीं देखा ।” पापा वाकई में जासूस बनने के काबिल थे ।

“अरे क्या आप भी ? खाना खा रहा है वो, चैन से खाने तो दो ।” माँ ने सब्जी मेरे थाली में डालते हुए कहा, माँ की बात टालने का साहस पापा में नहीं था । मैंने जल्दी-जल्दी खाना निपटाया और उठ गया ।

“चलता हूँ माँ, केशव आने वाला है ।” मैंने कहा और उठ गया, मुझे गाड़ी में ही केशव का एसएमएस मिल गया था । माँ पापा के कुछ कहने के पहले ही मैं उठा और बाहर की ओर निकल लिया ।

“कुछ बदला तो जरूर है ।” अब माँ ने कहा, पिता जी ने उनकी ओर देखा ।

“तुम्हें कैसे पता ? “

“आज उसने बैंगन की सब्जी भी खा ली, जो उसे पसंद ही नहीं ।” माँ मुस्कुराई । पापा की आँखें किसी शातिर जासूस कि मानिंद सिकुड़ गई ।

काश मैं अंत में यह देख पाता, कमरे से बाहर निकलने के बाद मुझे पता चला कि मैंने बैंगन की सब्जी खाई है । और इतना ही काफी था उन्हें यह बताने के लिए कि यहाँ काफी कुछ बदल गया है, कुछ तो गड़बड़ है । खैर अब जो हुआ सो हुआ, उसे बदला नहीं जा सकता । माँ को तो सौ कहानियां सुना सकता हूँ । फिलहाल केशव से मिलना था, वह सामने वाले अपार्टमेंट में ही रहता था ।

पैरानॉर्मल इन्वेस्टिगेटर

केशव छत की मुंडेर के समीप चहलकदमी कर रहा था, पता नहीं क्यों उसने गम्भीर मुद्रा बना रखी थी, हां यह साफ़ पता चल रहा था यह नकली और जबरदस्ती की गंभीरता है । उसने जेब से एक सिगरेट निकाली और दस रुपल्ली वाले प्लास्टिक के लाइटर से उसने सुलगाने का प्रयास किया । मुझे यह देखकर हैरत हुई, वह सिगरेट पीता है यह बात मुझे आज पता चली थी । उसने सिगरेट सुलगा कर चहलकदमी करते हुए एक कश लगाया, कश लगाते ही वह बुरी तरह खांसने लगा । मैं उसकी ओर दौड़ा, वह इतनी बुरी तरह खांस रहा था कि मुझे डर था कही वह छत से नीचे ही न जा गिरे ।

"अबे पी तो ऐसे रहा था जैसे चेन स्मोकर हो, एक कश में ही गश आ गया ? ऐसी चीज पीता ही क्यों है ? पता है ना यह सब चीजें कैंसर का कारण बनती है ।" मैंने अंतिम पंक्ति जानबूझकर बोली, कहानी में धूम्रपान के लिए डिस्क्लेमर होना बेहद जरूरी है । वैसे सिगरेट हानिकारक है यह सभी जानते है, यहाँ सब महाज्ञानी बैठे है लेकिन इसके बावजूद उनकी सिगरेट वाली बेवकूफी छूटती नहीं है, खैर डिस्क्लेमर के लिए इतना बहुत हो गया । अब आगे बढ़ते है ।

"अबे माहौल बना रहा था, फिल्मों में दिखाते है ना कि जब भी कोई गंभीर डिस्कशन होना हो या कोई रहस्य बतलाया जाना हो । बताने वाला और या सुनने वाला शराब या सिगरेट पीते हुए माहौल बनाता है, इससे सीन इंटेंस और डार्क बनता है ।" केशव ने सिगरेट को गुस्से से पटक कर अपने पैरों के नीचे यूँ मसला मानो अपने जन्म जन्मान्तर के दुश्मन से बदला ले रहा हो । पता नहीं वह क्या सीन बनाने वाला था ।

"सस्पेंस मत बना भाई, सीधे-सीधे बोल ना ।" मुझे उसकी यह जबरदस्ती का रहस्यमय बनने वाली एक्टिंग बिल्कुल भी पसंद नहीं थी, पता नहीं ऐसा करके उसे क्या मिलता था ।

"तूने मुझे अपनी गर्लफ्रेंड सोनल के बारे में बताया था ना, इतने दिनों से मैंने बरसात वाली उस मुलाक़ात और पूरी घटनाओं के बारे में काफी सोच विचार किया और आज उससे मिला भी । और इस मुलाक़ात से मैं समझ गया कि वह कोई आम लड़की नहीं है ।"

"हां वह सबसे अलग और खास है ।"

"अबे आशिक की औलाद, यह घिसी पिटी लाइन इस्तेमाल करना बंद कर, हर झोलाछाप आशिक यही कहता रहता है, जबकि कटता सबका है ।" केशव ने इस प्रकार मुझे झिड़का मानो मैंने कोई घृणित बात कर दी हो ।

"देख भाई पहले तो यह बात समझ ले कि वो मेरी गर्लफ्रेंड नहीं है ।" मैंने उसकी गलतफहमी दूर करने का प्रयास किया ।

"क्यों वो गर्ल नहीं है क्या ?"

"है !"

"फ्रेंड नहीं है क्या ?"

"है !"

"तो तेरी गर्लफ्रेंड नहीं तो क्या बॉयफ्रेंड बोलूँ उसे ?"

"अबे तो तू भी तो मेरा दोस्त है तो क्या तुझे बॉयफ्रेंड बोलूंगा मैं ?" मेरी बात सुनकर वह एकदम से निरुत्तर हो गया ।

"अबे खाली फ्रेंड भी होता है, दोस्त होता है । लड़का लड़की दोस्त भी हो सकते है ।" मैंने उसे खामोश देखकर कहा ।

"हो सकते है, हो सकते है । लेकिन तेरे सिनेरिओ में ऐसा हो ही नहीं सकता, कोई लड़की तेरी दोस्त हो ही नहीं सकती ।" केशव मुस्कुराते हुए बोला, उसने अपने गंभीर बने रहने का प्रोटोकॉल तोड़ दिया था ।

"और ऐसा क्यों ?" मैंने प्रश्न किया ।

"क्योंकि तू नल्ला है, सिंगल आदमी, सिंगल नहीं अखंड सिंगल आदमी । अबे तू जन्म जन्मान्तर का सूखा आदमी है बे । लड़की तो छोड़ उसकी परछाई भी तेरे बगल में पड़ गई तो तू बिदक कर दूर हट जाएगा । दोस्त तो साले तो आज तक हमारा भी नहीं हुआ ढंग से, तो एक लड़की से भला कैसी दोस्ती होगी तेरी ? अबे तू तरस गया है, फिल्मों में रोमांटिक सीन देखते हुए तेरी लार टपकती रहती है, आज तक कभी किसी लड़की के छूने का अहसास तक नहीं है तेरे पास ।" वह बोलते जा रहा था, जबकि यह गलत बात थी । मैंने इंटरव्यू के समय लेडी एच.आर. से हाथ मिलाया था, उसे यह कहने का बिल्कुल भी हक नहीं है कि मैंने किसी लड़की को छुआ नहीं है ।

"देख भाई, मैंने इंटरव्यू के समय हाथ मिलाया था 'लिंडा' से ।" मैंने थोड़ा आत्मविश्वास से कहा ।

"मतलब तू भी मानता है कि पूरी जिन्दगी में तूने हाथ मिलाने से ज्यादा कुछ नहीं किया ? अबे हाथ मिलाया भी तो किससे ? मैंने लड़की की बात की थी और लिंडा लड़की नहीं अधेड़ है अधेड़ ।" वह हंस पड़ा, मुझे पता था इस बात के निकलने पर जरूर मेरी बेइज्जती करेगा, दोस्त होने का फर्ज उसने निभा दिया, मैं खामोश रह गया ।

"मैं यह कह रहा था कि तू तपा हुआ है, तुझे एक लड़की के सहवास की जरूरत है ।" वह भद्दे ढंग से मुस्कुराया ।

"सह...सहवास क्या ?" मुझे मतलब नहीं समझ में आया ।

"इसका मतलब नहीं पता ?" उसने पूरी हमदर्दी से मेरी ओर देखा, मैंने ना में सिर हिला दिया और दूसरी बेइज्जती के लिए खुद को तैयार कर लिया ।

"इसलिये तो कहा तुझे सहवास की सख्त जरूरत है ।" उसने आँख मारी तो पल भर में सारा माजरा समझ गया ।

"तू मुझसे यही सब कहना चाहता था ? इसलिये मुझे यहाँ बुलाया था ?" मुझे कुढ़न होने लगी थी । उसने फिर से जेब से सिगरेट निकाली और मुंह से लगा ली ।

"अबे तू ये क्या बार-बार सिगरेट उठा रहा है ? बंद कर यह, बोला ना कैंसर होता है, सड़ कर मरेगा साले, इतना टार भरेगा फेफड़ों में कि खांसेगा तो भी मुंह से ग्रीस फेंकेगा, जबड़ा काट कर अलग कर देंगे, गले में पाइप भर देंगे, बची जिन्दगी उसी से खाना पड़ेगा । मुंह में जख्म फ़ैल जायेगा और वो कभी सूखेगा नहीं, हमेशा मवाद टपकता रहेगा, बदबू मारता रहेगा और कोई तेरे पास आने वाला नहीं बचेगा, तुझे भी वह नहीं मिलेगा जो मुझे नहीं मिला, वो क्या बोला था तूने 'सहवास' हां । सुधर जा बंद कर दे ये सिगरेट वाली नौटंकी और माहौल बनाना, सीधे-सीधे अपनी बात पर आ और बता मुझे क्यों बुलाया है ।" मैंने एक सांस में कह दिया, केशव एकदम स्तब्ध हो गया था, सिगरेट उसके होंठों से सीधे जमीन पर आ गिरी ।

"भाई, ऐसे कौन समझाता है ? तौबा जो मेरी सात पुश्तों में किसी ने सिगरेट का नाम भी लिया तो ।" वह वाकई गम्भीर हो गया था, शायद जो मैंने कहा था वह उन चीजों को इमेजिन कर रहा था ।

"अब बता बात क्या थी ? सोनल के बारे में क्या कह रहा था ?" मैंने कहा तो वह बेखयाली से बाहर आया ।

"हां ! तो मैं यह बता रहा था, सोनल नॉर्मल लड़की नहीं है । मेरा मतलब 'मेरी वाली सबसे अलग है' वाली टैगलाइन नहीं है, यह वाकई में अलग है, वो थोड़ा क्रिपी है, पता नहीं क्यों डरावनी सी लगती है, उसकी आँखें कभी देखी है ? लगता है किसी और ही दुनिया में खोई रहती है । और एक बात नोट की मैंने, उसकी पलकें नहीं झपकतीं ।" केशव ने एक सांस में कह दिया और रुक गया, वह मेरे भाव देखना चाहता था । मैंने यह बात कभी नोट ही नहीं की थी, उसे देखकर मैं अपनी पलकें झपकाना ही भूल जाता हूँ तो मैं यह कैसे याद रखूं कि उसकी पलकें झपकती है या नहीं ।

"तू कहना क्या चाहता है ?"

"देख भाई, मैंने अब तक इन सब चीजों पर इतनी रिसर्च की है कि ऐसी अजीबोगरीब एनर्जीस को देखकर ही पहचान लेता हूँ । तू खुद बता, भला कौन सी ऐसी लड़की होगी जो तीन-तीन मुस्टंडों को कपड़े की तरह धो डालें ?" केशव ने कहा और एक पल को खामोश हुआ ।

"बताया तो था कि उसने कुंग-फु वगैरह सीख रखी है ।"

"अगर ऐसा है तो तूने उसे कुंग-फु कराटे वगैरह के दांव पेंच आजमाते हुए जरूर देखा होगा, चाइनीज फिल्मों की तरह ?"

"कम ऑन केशव ! असल जिंदगी में फिल्मों में दिखाए जाने वाले दांव पेंच नहीं होते, उनका असलियत से दूर-दूर तक कोई वास्ता नहीं होता ।" केशव के इस वाहियात और फिजूल के तर्क पर मैं झल्ला रहा था ।

"तूने उसे छुआ है ना ?"

"यह क्या बेहूदा सवाल है ?"

"भाई छूने में हजार तरह का छूना होता है, मैं केवल हाय हेल्लो जैसी फोर्मेलिटीज वाले छूने की बात कर रहा हूँ, क्योंकि मैं जानता हूँ कि तेरी किस्मत ऐसी है ही नहीं कि तुझे कभी उसके आगे जाने का मौका भी मिलेगा ।" वह मुस्कुराया । एक पल को तो मेरी इच्छा हुई साले को उठा कर छत से नीचे फेंक दूँ ।

"नहीं फेंक सकता ।" वह मुस्कुराते हुए बोला तो मैं सकपका गया, उसने मेरी मन की बात कैसे पढ़ ली ? क्या केशव वाकई कोई सिद्धि वगैरह जानता था ?

"अबे जिस तरह तू आँखों में अंगारे लिए मुझे और छत की मुंडेर को देख रहा है, कोई बेवकूफ भी समझ जायेगा कि तू क्या सोच रहा है । हैरान होना बंद कर ।" वह मुंडेर पर तशरीफ़ टिका कर बैठ गया । या तो वह पक्का उस्ताद आदमी था या मैं बेवकूफ जो अपने भाव नहीं छिपा पाया । वैसे भी वह मेरा दोस्त था तो उसे फेंकने का सवाल ही नहीं उठता था, वह तो बस क्षणिक भावना होती है । गुस्सा जाहिर करने के लिए लोग ऐसी बातें करते है ।

"बता, छुआ है ?"

"हां, कई बार ।" मैंने कुढ़ कर कहा, कहना ही पड़ा, वरना मैं लूजर की श्रेणी में आ जाता ।

"कभी कुछ अजीब नहीं लगा ?"

"कैसा अजीब ? छूना तो छूना है, दोस्त है, आते जाते मिलते जुलते हाथ मिलाना गले मिलना तो आम बात है । इसमें भला क्या अजीब ? अगर तुझे इसमें कुछ अजीब लगता है तो अजीब यह नहीं अजीब तेरा दिमाग है, जाकर उसका इलाज करा ।" वो क्या कभी से छूना-छूना लेकर बैठा हुआ था समझ के बाहर था । मैं समझ नहीं पा रहा था कि वह आखिर सुनना क्या चाहता था ।

"उसके स्पर्श में कोई अनोखी बात ? जो तुझे अजीब लगी ?" वह शातिर ढंग से मुस्कुराया । इस प्रश्न पर मैं थोड़ा ठिठक गया । सोनल के स्पर्श से हमेशा मेरे शरीर में

सिहरन दौड़ जाती थी, लेकिन यह सिहरन रोमांच या ख़ुशी की नहीं होती थी । यह सिहरन होती थी उसके अत्यंत ठंडे स्पर्श से, उसका शरीर मानो बर्फ से बना हुआ था ।

"इस सवाल पर तू ठिठक गया, इसका मतलब कुछ ऐसा जरूर है जो तुझे अजीब लगा था ।" केशव बड़ा ही काइयां आदमी था, उसमें और मेरे माँ बाप में एक समानता थी, वो दोनों एक जबरदस्त जासूस बनने की सारी खूबियाँ रखते थे ।

"बस उसके हाथ हमेशा ठंडे रहते है, पता नहीं क्यों लेकिन पहली मुलाक़ात से अब तक जितनी बार उसका स्पर्श हुआ है, उसका सम्पूर्ण शरीर एकदम किसी बर्फ की सिल्ली की तरह ठंडा महसूस होता है ।" मैंने हथियार डाल दिए ।

"उस रात कुछ अजीब हुआ था ? कुछ ऐसा जो तुझे उससे पहले कभी महसूस नहीं हुआ ?" केशव अपना तीर निशाने पर लगता देख कर अपनी प्रसन्नता छिपा नहीं पा रहा था । मुझे उसके सवालों से निजात पानी थी और वह इतनी आसानी से जान छोड़ने वालों में से नहीं था । उसके प्रश्नों का उत्तर देने में वैसे भी कोई नुकसान नहीं था, क्योंकि सोनल और मेरे बीच ऐसा कुछ भी नहीं था जिसे बताने या छिपाने से कोई फर्क पड़ता हो ।

"उस रात, हमने एक बस में पनाह ली थी, बस में मुझे हल्की सी झपकी आ गई थी । और उस दौरान मैंने एक भयानक सपना देखा, जिसे देखकर मेरे रोंगटे खड़े हो गए थे ।" मैंने सपने वाली बात का उल्लेख किया, केशव को उसकी तथाकथित इन्वेस्टिगेशन के लिए उसके हिसाब का मसाला चाहिए था, जो उसे देने में ही भलाई थी ।

"सपना क्या था ?" उसका स्वर अब पहले से ज्यादा गंभीर था ।

"पहले अपनी आवाज सही कर ले, ऐसी आवाज में बात करेगा तो जूते से पिटेगा जासूस की औलाद ।" मुझे उसकी नकली गंभीरता बहुत ज्यादा इरिटेट कर रही थी ।

"पैरानॉर्मल इन्वेस्टीगेटर ।" केशव ने कहा ।

"क्या बोला ?"

"मैंने कहा पैरानॉर्मल इन्वेस्टीगेटर बोलो, जासूस नहीं ।"

"पैरानॉर्मल इन्वेस्टीगेटर जैसा कुछ नहीं होता ।"

"होता है ।" वह मुस्कुराया ।

"अपने देश में तो नहीं होता ।" मैं कुढ़ कर बोला ।

"पश्चिमी देशों में यह आम बात है ।" वह पुन: गम्भीर होकर बोला ।

"तू डिस्कवरी और नैशनल ज्योग्राफिक के हंटिंग सीरिज देखना बंद करेगा ?" मैंने उसे चेतावनी सी दी, जो की खोखली थी यह उसे भी पता था ।

"अपने देश में तांत्रिक, औघड़, मान्त्रिक, बाबा टाइप होते है, वहां सूटेड बूटेड और अच्छे खासे पढ़े लिखे होते है, अंग्रेजी भी बोलते है ।" केशव ने ज्ञान झाड़ा ।

“अबे अंग्रेजी उनकी मातृभाषा है तो वही बोलेंगे ना ? अब बातों का रुख फिजूल चीजों की तरफ जा रहा है । तू आगे बोल, उगल जो उगलना चाहता है, सपना देखा अब उसके आगे का बोल ।” मैं उकता गया था ।

“विस्तार में बता, सपने के बारे में एकदम डिटेल में बता ।”

मैंने बस में देखे हुए उस सपने के बारे में उसे जितना याद था वह सब बता दिया । वह कुछ पल तक टहलते रहा, आँखें मटकाते रहा, भौहों को टेढ़ी मेढ़ी करते रहा, उंगलियाँ नचाते रहा ।

“अब चुपचाप, बिना टोके मेरी बात ध्यान से सुन ।” वह छत के फर्श पर आलथी पालती मार कर बैठ गया और मुझे भी बैठने का संकेत किया ।

“बोलो अब ।” मैं उसके सामने बैठ गया ।

“एक लड़की तुझे भयानक बरसात में मिलती है, जहाँ तू मर्द होकर पिट गया वहीं वह अकेले तीन-तीन खतरनाक बदमाशों से ना केवल भीड़ जाती है बल्कि उन्हें ठिकाने भी लगा देती है । किसी तरह एक दूसरे की मदद से तुम दोनों सरवाईव करते हो, एक बस में पनाह लेते हो, फिर बस में तुझे एक भयानक सपना आता है और उस सपने में वही लड़की तुझे शैतान जैसी डरावनी दिखाई देती है, जिसके बालों में कनखजूरे वास करते है । लड़की को जब भी स्पर्श करते हो उसे एकदम ठंडा पाते हो, बर्फ जैसा । मैंने जितनी देर उसे देखा उतनी देर में एक बार भी उसे पलकें झपकाते नहीं देखा । उसके कोई फ्रेंड्स नहीं है जबकि वह इतनी खूबसूरत है, यहाँ तक कि कोई क्लोज सहेली भी नहीं । इन सारे बातों का निष्कर्ष आखिर में यही निकलता है कि वह लड़की कुछ ज्यादा ही अजीब और असामान्य है, कोई तो गड़बड़ है । तू उसके घर गया था, कोई ऐसी चीज नोटिस की जो अजीब लगी हो ? ध्यान से सोचकर बता ।” केशव अब वाकई गंभीर मुद्रा में था, उसके बताये गए पॉइंट्स सुनकर एक बार मैं भी थोड़ा विचलित हो गया था । मैंने वाकई अपने दिमाग पर जोर डालना शुरू कर दिया, उस कमरे में क्या अजीब चीज थी ? कोई ऐसी चीज जो सामान्य नहीं हो, आखिर क्या ?

“हां ! उसके कमरे की दीवारों पर अनेक जगहों पर सुंदर और अनोखे फॉण्ट में कुछ मंत्र लिखे हुए थे, वापसी में मैंने वही मंत्र घर में जहां तक नजर गई हर दीवार देखे थे । लेकिन यह असामान्य नहीं लगता, हो सकता है वह घर के इंटीरियर का हिस्सा हो, वैसे भी उसके माता पिता बड़े उपासक टाइप लोग है, ऐसे लोगों के घरों में देवी देवताओं की तस्वीर वगैरह सामान्य बात है ।” मैंने खुद ही प्रश्न करके खुद ही उत्तर भी दे दिया ।

“अगर इसमें कुछ असामान्य नहीं था, तो तेरे जेहन में यही बात क्यों खटकी ? यकीनन यह अजीब चीज है । बड़े से बड़े आस्तिकों को देखा है जो दिन रात भक्ति में लीन रहते है, हर एक के घर में तस्वीरें देखी है, प्रतिमाएं देखी है, बड़े-बड़े मंदिर तक देखे हैं, लेकिन घरों

की दीवारों मंत्र लिखने की बात बेहद कम देखी सुनी है, एकाध कमरा फिर भी समझ सकते है किन्तु सारे घर की दीवारों पर मंत्र लिखना कभी देखा-सुना नहीं है । अच्छा याद करके बता वो मंत्र क्या थे ? हां पता है अच्छे से याद नहीं होगा, लेकिन फिर भी जो याद आये बता दें ।" केशव ने एक लम्बी सांस ली और मेरी ओर देखने लगा । मैंने अपने दिमाग पर जोर डाला, मैं जानता था कि यह सब केवल और केवल बेवकूफी है और केशव का दिमाग भूतिया साहित्य और फ़िल्में देख-देख कर थोड़ा सनक गया है इसलिये उसे हर वस्तु में केवल अपने मतलब की चीज ही दिखाई देती है ।

"मेरे ख़याल से वह मंत्र शायद हनुमान चालीसा थे ।" मैंने एकाध पंक्ति को याद करते हुए कहा ।

"हनुमान चालीसा ? बाकी दीवारों पर भी हनुमान चालीसा ही थी या कोई और मंत्र थे ?"

"बाकी दीवारों पर मेरे खयाल से हनुमान चालीसा जैसा कुछ नहीं था ।"

"वो कोई अलग मंत्र होंगे ।" वह बोला, हम दोनों के बीच कुछ पलों तक शांति छाई रही ।

"यार एक बात कहूँ ?"

"बोल ।" केशव गर्वीली मुस्कान के साथ बोला ।

"यार तू ना यह सब फिजूल की चीजें छोड़ दे, यह भूत प्रेत, पैरानॉर्मल इन्वेस्टीगेटर वाली बकवास, यह सब जिन्दगी में काम नहीं आने वाली । तू अपने करियर पर ध्यान दे, अभी तुझे बहुत कुछ करना है भाई । यह सब वैसे भी बेसिर पैर की बातें हैं, अपने आप को बर्बाद मत कर, और अपने करियर पे ही ध्यान दे, पैसा बना भाई ।" मैं लगातार उसके प्रवचनों से चिढ़ गया था, हालांकि उसके तर्कों से मैं भी सोचने पर मजबूर हो गया था लेकिन अगर मैं उससे सहमत हो जाता तो वह सातवें आसमान पर पहुँच जाता ।

"करियर की बात तो तू रहने ही दे, भाई तुझसे डेढ़ गुना ज्यादा का पैकेज ले रहा हूँ मैं, और कुछ ही महीनों में प्रमोट भी होने वाला हूँ ।"

उसकी बात सही थी, सैलरी के मामले में वह मुझसे कहीं ज्यादा आगे था, मुझे उसके करियर की चिंता करने की जगह खुद के करियर पर ध्यान देने की जरूरत थी ।

"यार वह सब छोड़, तर्क कुतर्क मत कर । लेकिन अपनी शंका दूर कर लेने में क्या हर्ज है ?" केशव ने कहा ।

"अपनी नहीं, तेरी शंका बोल तेरी । मेरे मन में कोई संदेह नहीं है । वो नॉर्मल लड़की ही है, उसे लेकर मेरा दिमाग खराब करना बंद कर ।" मैं इस पूरी चर्चा से बुरी तरह उकता गया था ।

"अगली मीटिंग कब है ?" उसे कोई फर्क नहीं पड़ा था, वह उसी जासूसों वाली शैली में प्रश्न कर रहा था ।

"रविवार को, फिल्म देखने जा रहे है ।" मैंने यह जानबूझकर बताया, दोस्तों को ऐसी बातें जानबूझकर बताई जाती है ताकि उन्हें पता चल सके कि आप नल्ले, अखंड सिंगल नहीं हो । मैंने व्यंग्यपूर्ण मुस्कान उसकी तरफ फेंकी लेकिन उसके चेहरे पर कोई भाव नहीं उभरे, अब यह असामान्य था । अचानक मुझे लगा कि शायद केशव इनसिक्योर महसूस कर रहा है, कहीं उसमें असुरक्षा की भावना तो नहीं आ गई ? ऐसा हो सकता है, अक्सर दोस्तों के बीच ऐसा तब होता है जब उनके मध्य किसी नारी का प्रवेश हो जाए, लड़की आ जाए ।

ऐसे में दोस्त खुद को कम भाव दिए जाने से कुढ़ने लगते हैं, हमेशा साथ रहने वाला दोस्त जब समय की कमी का बहाना बनाने लगे, दोस्त से मिलने के लिए समय ना हो लेकिन लड़की के लिए फौरन समय निकाल ले, दिन रात केवल लड़की के बारे में बातें करके दोस्त की जान खाने लगे । बचपन से साथ-साथ पाले शौक लड़की के चलते बदलने लगे तो उसी दोस्त के लिए वह लड़की किसी विलेन से कम नहीं होती, उसे वहम होता है कि उस लड़की ने उससे उसका दोस्त छीन लिया । वैसे ये वहम नहीं है, यह तो हकीकत है, ऐसा ही होता है । लेकिन मेरे मामले में यह अलग बात थी, केशव भले मेरा लंगोटिया यार था लेकिन हम हमेशा साथ नहीं रहते इसके बावजूद वह असुरक्षित है, बेचारा केशव ! उसे समझना चाहिए लड़के और लड़की की कम्पनी में जमीन आसमान का फर्क है, लेकिन उसे क्या पता, वह दूसरों को ज्ञान भले ही देता है लेकिन खुद भी अखंड सिंगल है । लड़की का साथ तो क्या लड़की की परछाई तक उसपर नहीं पड़ी थी । उसका फ्रस्ट्रेट होना लाजमी था ।

"अच्छा वह सब छोड़, मुझसे एक वादा कर ।"

"मैं ऐसा कुछ भी नहीं करने वाला ?" उसकी बात पूरी होने से पहले ही मैंने काट दी, मुझे पता था वह कोई और बेवकूफी भरी बात बोलेगा ।

"अबे सुन तो ले पहले ?" वह भुनभुनाया ।

"देख भाई यह तू भी जानता है कि मैं किसी वादे-फादे के चक्कर में नहीं पड़ता, आज तक न कोई वादा किया है और ना किसी को दिया है, यह वादे के नाम पर काटने वाला सिस्टम मैं ना पालने वाला ।" मैंने साफ़-साफ़ कहना ही उचित समझा ।

"मैं तो बस यही कहने वाला था कि अगली बार जब सोनल से मिलने पर तुझे कुछ अजीब लगे तो मुझे बताना ।" केशव थोड़ा मायूस स्वर में बोला ।

"गलती एक बार होती है भाई, बार-बार नहीं ।" मैं तुनककर बोला ।

“मतलब मुझे बताना तेरी गलती थी ?” उसने आँखें मटका कर पूछा, उसके भीतर का जासूस अब किसी बेवकूफ बच्चे में बदलता हुआ दिखाई दे रहा था ।

“अबे अब रहने भी दे, चल अब उठ जा और जाकर सो जा । सुबह ऑफिस जाना है ।” मैंने कहा और बगैर उसके जवाब की प्रतीक्षा किये मुड़ गया ।

“अबे ! लड़की के चक्कर में दोस्त को भूल गया रे, हाय तेरी मतलबी दोस्ती ।” वह किसी दुखियारी महिला के स्वर की भांति मिमिक्री करते हुए अभिनय करने लगा ।

“अब चलेगा या तुझे इसी छत से नीचे फेंक दूँ ? फिर बैठे रहना अपने भूत प्रेतों के साथ ।” मेरे कहने से पहले ही वह उठ खड़ा हुआ और मेरे साथ हो लिया ।

“देख भाई, मजाक एक तरफ और सोनल के बारे में जो कहा वह एक तरफ । अगर तुझे लगता है तेरा केशव इतना बेवकूफ है कि दूसरे दोस्तों की तरह इनसिक्योर हो जाए तो तू गलत सोचता है, मुझे पता है लड़का और लड़की की कम्पनी अलग है, दोनों में अलग बात है, लड़की के आने के बाद तू दोस्तों को समय नहीं दे पायेगा तो दोस्त इनसिक्योर हो जायेंगे, जलने लगेंगे या कुढ़ने लगेंगे । अगर तू ऐसा सोचता है तो तू गलत है, भाई ईमानदारी से बता, तू किसी को अपना समय देता भी है ? अबे खुद तेरे लिए किसी के पास समय नहीं होता, तू क्या साले किसी और को इनसिक्योर फील करवाएगा ।” वह हंसा ।

मैं मुस्कुरा कर रह गया, कमीने ने सौ टका सच बोला था । यह इनसिक्योर होने वाला बंदा था ही नहीं ।

अच्छा शो था वह

आज रविवार था, मैं मॉल के बाहर कब से खड़ा था। मुझे लगा सोनल जल्दी पहुंचेगी, हालांकि शो में अभी भी एक घंटा बाकी था। मैं लड़की के बुलाये जाने पर उससे भी पहले पहुँचने की लड़कों वाली स्वाभाविक आदत से मजबूर था। मुझ पर झुंझलाहट बढ़ती जा रही थी, मैं बार-बार घड़ी देख रहा, लोगों को पता नहीं क्यों यह गलतफहमी होती है कि बार-बार घड़ी देखने से समय जल्दी कट जाएगा।

"हेल्लो, कब से आये हो ?" सोनल ने मेरे कंधे पर हाथ रखा। उसकी आवाज सुनकर सारी झुंझलाहट दूर हो गई, यह कहने में कोई हिचक नहीं है कि अब मुझे उसका साथ अच्छा लगने लगा था। यह दोस्ती से थोड़ा आगे का लेवल था, हां ! जानता हूँ अब इसे प्यार कह सकता हूँ।

"बस अभी-अभी पहुंचा हूँ।" मैंने झूठ कहा।

"चलो मॉल के भीतर चलो, यहाँ काफी गर्मी पड़ रही है।" उसने बिना किसी फॉर्मेलिटी के कहा। उसके कंधे पर तोते के रंग से मिलते जुलते रंग का बड़ा सा हैंडबैग लटका हुआ था। उस रंग को अंग्रेजी में किस फैंसी नाम से जानते है यह मुझे नहीं पता, लेकिन बैग देखकर सबसे पहले मुझे तोते का ही खयाल आया था तो मैं तो यही कहूँगा। हैरानी की बात थी कि लड़कियां केवल मूवी देखने के लिए भी इतना बड़ा हैंडबैग लिए आ जाती है, ऐसा क्या भरा रहता है ? मुझे याद है मैं किसी काम से एक हफ्ते के लिए हैदराबाद गया था, मेरे पूरे हफ्ते भर का सामान इससे भी छोटे बैग में आ गया था।

"तुम हर बार किस सोच में पड़ जाते हो ?" उसने मेरे कंधे पर चिकोटी काटी। उसके नाखून बड़े तीक्ष्ण थे, मुझे चुभन हुई लेकिन इसमें तकलीफ के बजाय दूसरा अहसास था, मैं वो एक्सप्लेन नहीं कर सकता। मैं केवल मुस्कुरा कर रह गया, चिलचिलाती गर्मी से निकलकर मॉल के वातावरण में प्रवेश होते ही राहत मिली। इसके बाद हमने कुछ स्नैक्स, कोल्डड्रिंक्स के नाम पर ढेर सारे कार्बोनेटेड वाटर पर अपने पैसे फूंके। आलू के सीधे कटे टुकड़ों को फैंसी नाम से बुला कर अच्छी खासी चपत लगना भी इस समय स्वीकार्य था। कुछ ही देर में हम हॉल में पहुँच चुके थे। फिल्म शुरू होकर आधा घंटा बीत चुका था, फिल्म वाकई बोझिल थी, यह लड़की, वैम्पायर और मानव भेड़िये के बीच वाला लव ट्रायंगल अब फैमिली ड्रामे में तब्दील हो चुका था। मुझे भारतीय डेली सोप जैसा ही प्रतीत हो रहा था। लेकिन सोनल एकदम शांत थी, जिन भावुक दृश्यों पर मुझे कोफ़्त हो रही थी, उन दृश्यों पर उसकी आँखों में नमी महसूस हो रही थी। लड़कियों का भी कमाल है, वो ऐसी-ऐसी चीजों पर रो सकती है जिनकी आप कल्पना भी नहीं कर सकते। मैंने मॉल के अंदर नाश्ता करने से लेकर हॉल में जाकर बैठने तक कि डिटेल्स जान-बूझकर स्किप कर

दी क्योंकि वह इतनी जरूरी नहीं है, उन्हें खींचने से कोई फायदा नहीं था, मुद्दे पर आना ज्यादा सही है ।

एक दृश्य में जब वैम्पायर्स ने हमला किया तब सोनल ने घबरा कर मेरी कलाई थाम ली, एसी की उस ठंड में उसका स्पर्श पाकर मेरे शरीर में सिहरन दौड़ गई । कमाल की बात यह रही कि उसका स्पर्श हमेशा की तरह सर्द नहीं था, बल्कि यह एक अलग ही गरमाहट लिए हुए था । मैं रोमांटिक फिल्म का हीरो नहीं हूँ जो लफ्फाजी करके इस अहसास का वर्णन कर सकूं । बस यह कह सकता हूँ कि यदि किसी व्यक्ति को जीरो डिग्री के तापमान में छोड़ दिया जाए और उसका शरीर ठंड से अकड़ रहा हो ऐसे में उसे कहीं से किसी छोटे से अलाव की उष्मा मिल जाए तो उसे जो राहत मिलेगी, जो अहसास होगा यह वही था । मैंने उसकी तरफ देखा, उसने अपना हाथ हटाने का कोई उपक्रम नहीं किया । मैंने घबराकर हॉल में यहाँ वहां देखा, वहां अन्धेरा था, किसी को किसी से कोई मतलब नहीं था । सिंगल टाइप लोग फिल्म का मजा ले रहे थे और कपल-कुपल टाइप लोग फिल्म छोड़ कर हर चीज का । मुझे तो साला इनका कुछ समझ में नहीं आता, इन्हें यही सब करना है तो इतने ही पैसे में अच्छे खासे कमरे मिल जाते है, वहां जाकर क्यों नहीं मर मरा जाते ? इस तरह हॉल में बेशर्मों की तरह लगे रहते है और जो बिचारे अकेले है उनका भी दिल जलाते है । अब तो हॉल के भीतर भी सीसीटीवी कैमेराज लगे होते है, पता नहीं इन्हें जानकारी होती भी है या नहीं ? बेशक प्यार कोई सार्वजनिक प्रदर्शन की चीज नहीं है । यह सब सोचते हुए मैंने सोनल की तरफ देखा, पर्दे पर कोई रोमांटिक दृश्य चल रहा था । हीरो हीरोइन की गलबहियां चल रही थी, मैंने सोनल को कार्बोनेटेड वाटर ऑफर किया जिसे उसने इशारे से मना कर दिया ।

“तुमने कभी किसी लड़की को इस तरह चूमा है ?” सोनल ने पर्दे की ओर नजरे गड़ाए हुए कहा । मैंने ढेर सारी कैलरी युक्त कार्बन मिश्रित जल यानी कोल्ड ड्रिंक अपने भीतर उड़ेला और इशारे से मना कर दिया ।

“और तुमने ?” मैंने हिचकिचाते हुए पूछा ।

“नहीं ! मेरा लड़कियों में कोई इंटरेस्ट नहीं ।” उसने कहा । मुझे समझ में नहीं आया, लेकिन वह खिलखिला कर हंसी । ओह ! तो यह मजाक था, बड़ा बेहूदा था लेकिन मुझे भी हंसी आई । उसने मेरी बांह कसकर पकड़ी हुई थी, हम अब इतने करीब थे जितने कभी नहीं थे । एक दूसरे की साँसों की आवाज तक हमें सुनाई दे रही थी, ऐसा कहता, लेकिन यह मत भूलिए कि हम चलती फिल्म के मध्य बैठे हुए थे, यहाँ इतनी डिटेल में कुछ नहीं सुनाई देगा । यदि हम कहीं और होते तो जरूर एक दूसरे की साँसों की आवाज और गरमाहट स्पष्ट महसूस कर रहे होते, अब मेरा मूड धीरे-धीरे बदल रहा था । अब हार्मोन्स अपना असर दिखाने लगे थे, मैं खुद को दोष क्यों दूँ ? इसलिये सारा इल्जाम हार्मोन्स के

मत्थे मढ़ दिया । सोनल और मेरी नजरें मिली, हम एक दूसरे को बिन कहे देखते रहे । सोनल की पकड़ मेरी बांह पर थोड़ी और मजबूत हो गई, मैंने घबराते हुए उसकी बांह को पकड़ा, मेरा दिल इस तरह धड़क रहा था मानो मैं किसी मैराथन में दौड़ कर आया हूँ । और वह क्षण आ गया, हमने एक दूसरे को चूम लिया, उसका शरीर बेहद तेजी से सर्द हो गया था, इतना सर्द कि मेरी नसों में मानो बर्फ दौड़ने लगी थी । पूरे शरीर में कंपकंपी हो रही थी । यह रोमांच के कारण नहीं था । उसने मेरी कलाई पर अपनी पकड़ और कसनी शुरू कर दी, इतना कि मुझे मेरी कलाइयां कड़कड़ाती सी महसूस होने लगी, मुझे दर्द हुआ, उसकी साँसों से मानो शीत लहर सी दौड़ रही थी, सोनल के स्वर में एक गुर्राहट सी गूंज रही थी ।

"तू ऐसा नहीं कर सकता लड़के । तेरी हिम्मत कैसे हुई ।" सोनल भयानक स्वर में गुर्राई, उसकी आवाज एकदम से बदल गई थी । ऐसा लग रहा था मानो कई लोग एकसाथ एक स्वर में बोल रहे थे । वह आवाज मेरे कानों में नहीं बल्कि मेरे दिमाग तक में गूंजती सुनाई दी । मैंने घबरा कर अपनी कलाई छुड़ाने का प्रयास किया लेकिन उसकी पकड़ और मजबूत हो गई, उसने मेरी दूसरी कलाई भी पकड़ ली । लड़की को बिना उसकी मर्जी के चूमना नहीं चाहिए, यह मैं समझ गया था लेकिन देर हो गई थी ।

मेरी दोनों कलाइयों में दर्द हो रहा था ।

"कड्ड ! !" यह भयानक स्वर में कलाई से निकला, शायद हड्डी टूट गई थी, नहीं हड्डी नहीं हड्डियां कहना ज्यादा सही था । इस अँधेरे में भी सोनल की आँखें सुलगती हुई सी दिखाई दे रही थी । मेरे सारे शरीर पर कीड़े से रेंगते हुए महसूस होने लगे थे ठीक उसी प्रकार जिस तरह मैंने उस बरसात वाली रात को बस में महसूस किया था । मेरे गले से आवाज तक नहीं निकल रही थी ।

"सोनल ! छोडो मुझे ।" मैं किसी प्रकार चीखा, मैंने अपनी पूरी ताकत इकट्ठी करके चीखने लायक शक्ति जुटाई थी । सोनल ने मेरी दोनों बांहों को पकड़ कर मुझे किसी खिलौने की भांति फेंक दिया, उसका झटका इतना शक्तिशाली था कि मैं कुर्सियों के बीच से होता हुआ मुख्य गैलरी में जा गिरा । मेरी कमर टूटती हुई सी महसूस हुई ।

"अबे क्या शोर मचा रखा है ?"

"थियेटर में कैसे रहते है इसकी तमीज नहीं है ।"

"इतनी आग है तो बाहर जाकर मुंह काला करो बे, इधर हमारा पैसा खराब करने क्यों आ जाते हो ?"

"अपने झगड़े बाहर सुलझाओ, निकलो यहाँ ।"

"क्या चल रहा बे @#$ @#$**@@" अब अश्लील गालियाँ भी गूंजने लगी । सोनल अपनी कुर्सी से उठी और दौड़ते हुए मेरी तरफ आई, मैं घबराकर पीछे हटा ।

“रुको-रुको ! मेरी बात सुनो, आई एम् सॉरी ! आई एम् रियली रियली सॉरी ।” उसकी आवाज भर्रा रही थी, पता नहीं उसकी आवाज में ऐसा क्या था कि मैं सबकुछ भुला कर वही पड़ा रहा । उसने मुझे अपने कंधे का सहारा देकर उठाया, वैसे मैं चल सकता था, लेकिन डर की अधिकता के कारण अब तक स्तब्ध था । यह क्या हुआ था । अचानक ही इस बदले हुए व्यक्तित्व से मैं सन्न रह गया था, भला ऐसे रोमांटिक माहौल में ऐसी किसी चीज की कौन उम्मीद कर सकता है ?

“अबे मजनू की औलाद बाहर जाक...”

“चुप !” सोनल दहाड़ी, उसकी आवाज इतनी भयंकर थी कि डॉल्बी डिजिटल एटमोस भी फेल हो गया । चारों ओर सन्नाटा सा छा गया, बैकग्राउंड में केवल फिल्म चलने की आवाज गूंज रही थी । मेरी तो पैंट भी गीली होते-होते रह गई । फिर वह मुझे सहारा देकर हॉल से बाहर ले आई । बाहर आते ही उसके चेहरे के भाव बदल गए, यकीन नहीं हो रहा था कि यह वही सोनल है जो अभी-अभी थियेटर में गुर्रा रही थी, उसकी आँखों में आंसू स्पष्ट दिखाई दे रहे थे । मेरी घबराहट अब भी कम नहीं हो रही थी, मेरी जगह कोई और होता तो उसकी भी यही हालत होती । मैंने अपने आप को उससे छुड़ाया, वह केवल देखती रही ।

“आई एम् सॉरी प्रीतम ! मुझे नहीं पता कि अचानक मुझे क्या हो गया ।” उसने अपने आप को मुश्किल से सम्भाला हुआ था जमाने भर की बेचारगी इस समय उसके चेहरे पर मौजूद थी ।

“गलती मेरी ही है, मैंने अपनी हद तोड़ी थी । तुमने बिल्कुल सही किया, मैं अपनी दोस्ती को कुछ अलग ही सोच बैठा था । मुझे तुम्हारी मर्जी जाने बगैर तुम्हारे साथ ऐसी हरकत ।नहीं करनी चाहिए थी ।” मेरा सारा शरीर तप रहा था, गुस्से और डर से मैं कांप रहा था, उस समय परिस्थिति ही ऐसी थी कि मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि मैं क्या करूँ ? मुझे सोनल से डर लगने लगा था लेकिन उसका चेहरा देखकर मैं फिर सब भूल जाता था कि अगले ही पल हॉल में हुई घटना और मेरा धकेला जाना मेरी आँखों के सामने नाचने लगा, अपमान और शर्मिंदगी से मेरी नजरें झुक सी गई । मैं भूल गया था कि वो ब्लैक बेल्ट थी, उसने लड़ना सीखा है और वह मुझ जैसे तीन चार को आसानी से तोड़ सकती थी । लेकिन यह भला क्या तरीका हुआ ? मैंने नजरें झुकाई और मुड़ गया, मैं उसके सामने खड़ा नहीं रह सकता था । मुझे अपने शरीर पर जलती हुई दो नजरें साफ़ महसूस हो रही थी । मैं तेज क़दमों से लिफ्ट की तरफ बढ़ गया, लिफ्ट के बंद होते दरवाजे से मैंने सोनल की ओर देखा, वह अब भी मायूस, स्तब्ध और हक्की-बक्की खड़ी थी, हां अब उसकी आँखों के मोती उसके चमकीले गालों पर लुढक रहे थे । उसने कुछ कहने का प्रयास किया लेकिन फिर अपने आप को रोक लिया । लिफ्ट का दरवाजा बंद हो गया ।

मैं प्यार में अँधा हो गया

"अबे अँधा नहीं, बावला हो गया है तू । किसकी गर्लफ्रेंड ऐसे कलाई तोडती है भाई ?" केशव भुनभुना रहा था और मेरी कलाइयों में बंधे प्लास्टर को देख रहा था, मैं घर पर मम्मी पापा की भी सुन कर आया था, इसलिये मेरा और सुनने का मेरा मूड बिल्कुल भी नहीं था ।

"अब जाने दे भाई ।"

"घर पर क्या बताया ?" केशव ने पूछा । हम अपने हेडक्वार्टर पर थे, यानी केशव के अपार्टमेंट की छत पर । शाम के आठ बज रहे थे, यहाँ से अपने शहर में झिलमिलाती इमारतों को देखना एक अलग ही अहसास था । ठंडी हवा के झोंके रह रह कर शरीर से टकरा रहे थे । आज ऑफिस नहीं गया था, अर्जंट में सिक लीव ले ली, सीढ़ियों से गिरने का बहाना बना दिया ।

"मम्मी पापा को भी वही बताया जो ऑफिस में बताया, बस सीढ़ियाँ बदल दी । मम्मी पापा के लिए मॉल की सीढ़ियों से गिरा था तो ऑफिस वालों के लिए घर की सीढ़ी से ।" मैंने प्लास्टर वाले हाथ को सहलाते हुए कहा । दर्द रुकने का नाम नहीं ले रहा था, लेकिन पेन किलर लेने के बाद से थोड़ा आराम था ।

"हां ! जैसे अंकल आंटी मान ही गए होंगे तेरी बात ।" वह मुस्कुराया ।

"डॉक्टर ने क्या बताया ?"

"कलाई की तीन हड्डियां टूटी है, दूसरी कलाई में मोच के कारण सुजन है और पसली में हल्की चोट है, कुछ दिन दर्द रहेगा ।" मैंने सब सच-सच बता दिया । केशव पहले तो चिंतित दिखा लेकिन फिर उसे मुस्कुराता देख कर मुझे हैरानी हुई ।

"तू मुस्कुरा रहा है ? अबे तेरे दोस्त की ऐसी हालत पर तू मुस्कुरा रहा है ?" मैं झुंझलाया । हालांकि उसकी जगह मैं होता तो मैं भी यही करता ।

"मैं बस यह सोच रहा था कि केवल चूमने के चक्कर में तेरी कलाई और कमर का यह हाल हो गया, तो बेटा अगर गलती से शादी हो गई तो हनीमून पर तेरा क्या होगा वही सोच कर....."

"अबे बंद कर ! क्या बकवास लगा रखी है, कहाँ से कहाँ पहुँच रहा है तू ।" उसकी इस अजीब कल्पना पर मेरे तन बदन में आग लग गई, लेकिन फिर मुझे भी हंसी आ ही गई । दोनों काफी देर तक एक दूसरे का मुंह देखकर हंसते रहे ।

"यार केशव ! मुझे भी तेरी बातों पर थोड़ा यकीन होने लगा है अब ।" मैंने एकदम से कहा तो वह हैरानी से मेरी तरफ देखने लगा । वह कुछ बोलता इसके पहले ही फोन बज उठा, सोनल का कॉल था । मैंने साइलेंट करके वापस रख दिया और खामोश होकर केशव की ओर देखने लगा ।

“सोनल का फोन है ?” उसने अंदाजा लगाया । मैंने सिर हिला दिया ।

“कितनी बार आ चुका है ?” उसके सवाल ही कभी खत्म नहीं होते थे ।

“छह बार ।” मैंने गहरी सांस ली । वैसे गहरी सांस ली इसका उल्लेख करना वाकई जरूरी नहीं था ।

“फोन उठा कर बात तो कर ले कम से कम ।”

“अबे तू ही तो बोल रहा था कि वह अजीब है..” मुझे गुस्सा आने लगा था ।

“भाई मैंने उसके अजीब होने के बारे में कहा था, यह नहीं कहा था कि उससे अपनी दोस्ती ही खत्म कर ले । कुछ चीजें बात करके भी तो सुलझाई जा सकती है ।” उसने किसी गंभीर दार्शनिक की तरह कहा । लेकिन वह दार्शनिक नहीं था । क्योंकि वह कमाता-धमाता आदमी था और दार्शनिक हमेशा खाने के मोहताज रहे है, फक्कड़ रहे है और जो थोड़े बहुत सही भी रहे है वो जबरन दार्शनिक बने हुए थे ।

“तू पहले यह बता कि तुझे क्यों अजीब लगी ?” वह अब गंभीर था और छत पर अलथी-पालथी मार कर बैठ गया । मेरा बैठना भी स्वाभाविक था, बाबा जी अब ज्ञान मोड में आ गए थे ।

“देखो हो सकता है यह सुनने में अजीब लगे, लेकिन मुझे आज फिर से वही अहसास हुआ जैसा उस रात बस में हुआ था । जब सोनल ने मेरी कलाइयों को पकड़ा था तो उसकी पकड़ इतनी मजबूत थी कि मैं यकीन नहीं कर सकता, आप कितने भी तर्क दे दो कि वह कुंग-फु, कराटे या कोई और आत्मरक्षा या लड़ने की टेक्निक जानती हो या उसमें चैम्पियन हो, लेकिन इस तरह की पकड़ को जस्टिफाई नहीं कर सकते । मुझे एकदम यूँ लगा जैसे मेरा हाथ किसी क्रशर में फंस गया हो, किसी चरखे के बीच से जब गन्ने को निकाला जाता है, उस समय गन्ने की जो हालत होगी वो मेरी थी, जो गन्ना महसूस करेगा वह मैंने महसूस किया ।” मैंने सकुचाते हुए कहा ।

“गन्ने की कोई फीलिंग नहीं होती ।” केशव सपाट स्वर में बोला ।

“क्या ?” मैं उसकी इस बात पर अटका, उसने मेरी लय बिगाड़ दी थी ।

“मैंने कहा गन्ने की कोई फीलिंग नहीं होती और जब उसमें कोई भावनाएं नहीं होती तो तू कैसे उसे महसूस कर सकता है ?” उसका सवाल सुनकर एक बार मेरा मन किया कि मैं उसे वाकई में छत से नीचे फेंक दूँ । वह कभी-कभार ऐसी मूर्खता भरी हरकतें करता था जिसे समझ पाना कम से कम मेरे जैसे व्यक्ति के बस में तो बिल्कुल भी नहीं था । मुझे तो लगता है उसका दिमाग पैरानॉर्मल चीजों की खोज करते-करते सनक गया था ।

“आगे बोल भाई और उदाहरण देते समय किसी सही चीज का उदाहरण देना ।” केशव मुस्कुराया, साफ़ जाहिर था कि वह मुझे खिजा रहा था ।

"मेरे कहने का मतलब यह था कि उसकी पकड़ किसी इंसान की पकड़ जैसी बिल्कुल नहीं थी । मुझे मेरी टूटती हड्डियां महसूस हो रही थी । दूसरी बात, उसका शरीर एकदम ठंडा हो गया था, इतना ठंडा कि मुझे मेरे खून में भी बर्फ दौड़ती महसूस होने लगी थी । जबकि थोड़ी देर पहले ही उसका शरीर नॉर्मल था, बल्कि यह कहना सही होगा कि इतने दिनों में शायद पहली बार ही उसका शरीर नॉर्मल था ।"

"होता है ऐसा, पहले भी रहा होगा लेकिन तुझे स्पर्श का अवसर नहीं मिला होगा ।" वह मुस्कुराया, मैंने उसकी ओर देखा । उसे मजाक सूझ रहा था ।

"भाई मैं चला, तू सीरियस नहीं है । उस दिन बेहद गंभीर था, और जब आज तेरे मतलब की बात कर रहा हूँ तो नखरे दिखा रहा है । मुझे नहीं बताना कुछ भी, बैठे रह यही ।" मैं उठने ही वाला था कि उसने मेरा हाथ पकड़ कर मुझे खींच लिया ।

"अरे बैठ मेरी जान ! बैठ जा बैठ जा, बस थोड़ा तपा रहा था तुझे, चल अब बीच में नहीं टोकूंगा, बोल, पूरी बात बोल ।" केशव ने खुशामद करते हुए कहा । मन तो मेरा भी वहां से उठने को था लेकिन मन में सोनल की बात खदक रही थी । अपने में घुटते रहने से कोई जवाब नहीं मिलने वाला था, किसी दोस्त से बात करना ही इस समय सबसे सही रास्ता था, दोस्त तो हर्ष भी था । लेकिन उसी की बहन के बारे में उसी से यह बातें करता तो वह मेरी दूसरी कलाई भी तोड़ देता । वैसे वह समझदार है, सोनल और मेरी नजदीकियों से उसे कोई ख़ास समस्या दिखाई नहीं देती थी, लेकिन फिर भी एक हिचक तो होती ही है । वैसे भी उससे मेरी जान पहचान हुए अभी कुछ ही महीने तो हुए थे । केशव ही इस मामले में सही चुनाव था । एक तो मेरा बचपन का दोस्त ऊपर से ऐसी अजीबोगरीब चीजों में उसकी दिलचस्पी । मैं चुपचाप बैठ गया ।

"जब उसने मुझे कसकर जकड़ा था और चीखी तब वह उसकी आवाज तो थी ही, लेकिन वह अकेली आवाज नहीं थी जिसे मैंने सुना । ऐसा लग रहा था जैसे दो-चार औरतें एक साथ चीख रही थी । उसने मुझे धक्का दिया तो मैं लगभग बीस फीट तक जा गिरा था और वह भी एकदम स्पीड में । उसी ने मुझे सम्भाला और कंधे का सहारा देकर किसी खिलौने की भांति उठा लिया । हॉल में जब पब्लिक शोर करने लगी तो वह इतनी भयानक तरह से गरजी की सब की फट गई ।"

मैंने कुछ कहने के लिए मुंह खोला और खामोश हो गया, सब तो बता दिया था । आगे क्या बताऊँ समझ में ही नहीं आया ।

"मतलब यह सब हो गया । देख भाई मैंने पहले भी कहा था लड़की अजीब है, तूने पलकें देखी उसकी ? झपकी या नहीं ?"

"मैंने ध्यान नहीं दिया ।" यार मैं इतनी बारीक चीजें कैसे याद रख सकता हूँ, और जब इतनी खूबसूरत लड़की साथ में हो तो पलकें कौन देखता है ? मैंने केशव की ओर देखा, वह

अपनी नाक में उंगली घुसाए कुछ खंगाल रहा था, यह बड़ा ही घिनौना था । हां जानता हूँ इसका जिक्र करना जरूरी नहीं था, लेकिन यह ऐसी चीज थी जिसे नजरंदाज नहीं कर सकता था, चाह कर भी नहीं ।

"तू यह हरकत बंद कर, मुझे इरिटेट हो रहा है ।" मुझे कहना ही पड़ा ।

"कुल मिलाकर आखिरकार तू भी मानता है कि वह लड़की अजीब है, या उसमें कोई अलग चीज है ?"

"हो सकता है यह कोई बीमारी हो, जैसे पहले बताया था ना । मल्टीपल पर्सनालिटी डिसऑर्डर ? हो सकता है यह भी कुछ ऐसी ही मिलती जुलती बीमारी हो ?" मेरा मन सारे सुबूत देखकर भी नहीं मान रहा था ।

"देख भाई तुझे नहीं मानना तो मत मान, लेकिन यह बहाने मत बना । और उसका फोन काटने से कुछ नहीं होगा, उससे बात कर ले, मैं और तू केवल अंदाजे लगा सकता है, फ़ालतू की थ्योरीज बना सकता है, लेकिन असल बात क्या है यह केवल वही बता सकती है । दो चीजें तू कर सकता है.."

"और वह कौन सी ?"

"पहली ! अगर तू सोनल से अटैच नहीं है, तेरे दिल में उसके लिए कोई सॉफ्ट कॉर्नर नहीं है, या तू केवल 'जस्ट फ्रेंड्स' टाइप वाले बुद्धूपन में फंसा है और उसके साथ बस दोस्ती यारी वाले रिलेशन में है और इसका आगे कोई भविष्य नहीं देखता तो सीधे-सीधे उससे दूर हो जा । फोन काटने के बजाय नंबर ब्लॉक कर दे, जिन्दगी ऐसे जी मानो सोनल नाम की कोई लड़की जिन्दगी में आई ही नहीं थी ।" केशव ने गहरी नजर से मेरी तरफ देखा । मैं समझ गया वह मेरे भाव पढ़ने का प्रयास कर रहा है, मैंने अपने भाव छिपाने चाहे लेकिन तब तक देर हो चुकी थी ।

"तू हिचकिचा रहा है, चेहरे पर असमंजस वाले भाव है, अफ़सोस जैसा हो रहा है । सोनल के अलग होने के ख्याल से दुखी हो रहा है, इसका मतलब तू उसके साथ गंभीर रिश्ते में है और इसे आगे बढ़ाना चाहता है ।" केशव ने मेरे मन की बात कह दी, यह अच्छा ही हुआ क्योंकि मैं तो बताने से रहा यह बात ।

"तो बात कर, पता कर आखिर क्या वजह है इन सब चीजों की । अगर वह तेरे साथ अपने रिश्ते को लेकर इतनी ही गंभीर है जितना तू है तो यकीनन वह सब बताएगी ।" केशव ने बात समाप्त की । इसी बीच मोबाइल वापस बजा, लेकिन मैंने नहीं उठाया । यह सही समय नहीं था बात करने का । लेकिन मैंने ठान लिया था कि बात चाहे जो हो मुझे उसकी तह तक जाना ही होगा । मैं यूँ ही अपने रिश्ते को खत्म होता नहीं देख सकता था ।

□□□

एक सप्ताह बीत चुका था, इसी बीच मेरी और सोनल की कोई मुलाकात नहीं हुई और ना ही बात हुई, उसने कुछ दिन फोन किये लेकिन मैंने नहीं उनका जवाब नहीं दिया । सोनल से बचने के लिए मैं जानबूझकर ऑफिस से देर से निकलने लगा था ।

"प्रीतम ! एम.डी. से एक मेल आया है, कुछ रिपोर्ट्स है जिनका डेटा मिसिंग है और वह हमारी सर्विस लेवल को इफेक्ट कर रहा है । उस रिपोर्ट को मैंने तुम्हें फॉरवर्ड किया है, जल्द से जल्द उसे निपटाकर भेजो । उन्हें कल तक सारी रिपोर्ट्स क्लियर चाहिए ।" शुक्ला जी ने मुझे आदेश देते हुए कहा, ये हमारे मैनेजर है । ये खुद कोई काम नहीं करते, अपने काम भी मुझसे ही करवाते है । हमेशा की तरह उनकी समझ में नहीं आने वाले रिपोर्ट्स और मेल्स आज भी उन्होंने मुझे ही फॉरवर्ड कर दिए थे, जिनपर मैं काम करूंगा और क्रेडिट ये झपट लेंगे । उनकी बात सुनकर गुस्सा तो इतना आया कि मन किया की बोर्ड उठा कर मुंह पर दे मारूँ । लेकिन फिर खुद को कंट्रोल कर लिया, अच्छे खासे पैकेज की नौकरी को जोश-जोश में नहीं गंवा सकता । औरों की तरह अपने जमीर का गला घोंट कर काम करना मेरी भी विवशता थी । काम बता कर वो चले गए, उनका जिक्र जरूरी था, यह बताने के लिए कि लाइफ में केवल सोनल ही मेरी समस्या नहीं थी । अभी मेल देख ही रहा था कि मोबाइल वाइब्रेट हुआ, हर्ष का फोन था ।

"प्रीतम ! छुट्टी के लिए अप्लाई कर दे, अगले महीने की तीन तारीख को मेरी शादी तय हुई है, गाँव चलना पड़ेगा । और कोई बहाना नहीं, तुझे आना ही होगा ।" हर्ष ने चहकते हुए कहा । कमाल है, यहाँ मुझे मेरे रिश्ते को समझने में ही महीनों लग गए थे और दो ही महीनों में इन्हें प्यार भी हो गया और शादी भी तय हो गई ।

"क्या बात कर रहे हो ? बधाई हो । लेकिन इतनी जल्दी ? आनन फानन में शादी ? वह भी गाँव में ?" मैंने सवाल किया ।

"दादाजी की तबीयत खराब है और वे जल्द से जल्द मेरी शादी देखने के इच्छुक है । वो नहीं चाहते कि मैं मुंबई में शादी करूँ, सारे रीति रिवाजों के साथ गाँव में ही अपनी आँखों के सामने शादी करवाने की इच्छा है । उनकी तबीयत बेहद खराब रहती है, ज्यादा दिन तक नहीं रह पाएंगे इसलिये पापा और मैं उनकी इस इच्छा को पूरा करना चाहते है, वैसे भी मुझे और कोमल को कोई समस्या नहीं है ।" उसने पूरी बात बताई ।

"ठीक है, मैं कोशिश करता हूँ ।"

"कोशिश नहीं भाई, आना ही है । और केशव को भी बोल चुका हूँ, वह तैयार है, अब तुम अपनी छुट्टिया अप्लाई करो । और बहाने मत बनाओ, सोनल भी फ़ोर्स कर रही है, आओगे तो अच्छा लगेगा ।" हर्ष के मुंह से सोनल का उल्लेख सुनकर मुझे अच्छा लगा । अभी मुश्किल से एक हफ्ता भी नहीं हुआ था उससे बातचीत बंद किये हुए फिर भी ऐसा लग रहा था मानो कितने साल हो गए हो ।

“मैं जवाब सुनना चाहता हूँ ।” हर्ष ने कहा ।

“हां ! मैं आऊंगा ।” मैंने हामी भर दी, मैं सोनल से दूर नहीं रह सकता था । मैं समझ गया था कि भागने की कोशिश बेवकूफी है । शायद गाँव के एकांत वातावरण में हम एक दूसरे को और अच्छी तरह से समझ पाए यही सोचकर मैंने हां कह दी ।

□□□

अब और नहीं

मैं सोनल की ओर देख रहा था, उसके चेहरे पर गुस्से का कोई निशान नहीं था । वह इस तरह मिली थी मानो उसे कोई फर्क ही नहीं पड़ा हो, मुझे लगा इतने फोन कॉल्स को नजरंदाज करने के बाद वह जब भी मिलेगी तमतमाती हुई मिलेगी, गुस्से में होगी । शिकायतों का पिटारा लेकर बैठ जाएगी, लेकिन यह मेरी उम्मीद से एकदम ही उलट हो रहा था । मैं कुछ पूछता उससे पहले ही वेटर सिर पर आकर सवार हो गया । कैफे में बैठे हुए मुश्किल से एक मिनट भी नहीं हुआ था कि ये मंडराते हुए आ गया ।

"दो कोल्ड कॉफ़ी ।" मैंने ऑर्डर दिया ।

"मैं हॉट लूंगी ।" सोनल ने प्रतिवाद किया, वह इस प्रकार बोली मानो मैं उसे जबरदस्ती उसकी मर्जी के खिलाफ कोल्ड कॉफ़ी पिला रहा था । वेटर ने उसे देखा, फिर मेरी ओर देखकर मुस्कुराया । कैफे में सौ टाइप के कपल्स आते रहते है । प्रेमी जोड़े ना हो तो कैफे और होटलों में ताले लग जाये, इनके स्टाफ पक्के वाले काइयां और अनुभवी होते है, साले एक नजर देखकर कर ही लड़का लड़की की हिस्ट्री ज्योग्राफी समझ जाते है ।

"अबे मुस्कुरा क्या रहा है, जाकर कॉफ़ी ला ना ।" उसकी वाहियात मुस्कुराहट देखकर मुझे गुस्सा आ गया था । उसने सिर झुकाया और बेशर्मी से मुस्कुराते हुए चला गया ।

"उस पर क्यों गुस्सा दिखा रहे हो ?" सोनल ने ठंडे स्वर में कहा ।

"क्योंकि वह गुस्सा दिला रहा था ।" मैंने दो टूक जवाब दिया ।

"वह बस अपना काम कर रहा था ।" सोनल ने उसी टोन में कहा ।

"वह मुस्कुरा रहा था ।" मैंने कहा ।

"मुस्कुराना कोई जुर्म नहीं है ।" सोनल का स्वर थोड़ा और तेज हुआ ।

"वह मुझे जानबूझकर मुस्कुरा कर चिढ़ा रहा था ।" मुझे इस रैपिड सवाल जवाब पर गुस्सा आने लगा था ।

"उसकी मुस्कुराहट में व्यंग्य था ।"

"तुम अन्तर्यामी नहीं हो । तुम किसी की मुस्कुराहट से उसके मन का अंदाजा नहीं लगा सकते ।"

"किसी के मन में क्या चल रहा है यह जानने के लिए अन्तर्यामी होना जरूरी नहीं है, थोड़ा सा कॉमन सेन्स और समझदारी ही काफी है ।" मैंने कहा ।

"वो तो तुम में है ही नहीं, तो उसकी बात ना ही करो तो बेहतर ।" उसकी इस बात ने मानो मेरे तन बदन में आग लगा दी ।

“क्या बकवास कर रही हो तुम ? यही सब करने के लिए हम मिले है ?” मैंने किसी तरह खुद को कंट्रोल करने की कोशिश की ।

“बकवास नहीं, सही कह रही हूँ मैं । अगर इतना ही कॉमन सेन्स और लोगों को पढ़ना जानते तो अब तक समझ जाते कि.....” वह बोलते-बोलते अटक गई ।

“क्या समझ जाता ?” उसके अचानक रुक जाने से मैं हैरान हुआ । वह खामोश रही और वेटर फिर आ धमका । इस बार उसके पास हमारा ऑर्डर भी था, उसकी मुस्कान गायब थी । मैंने उसकी तरफ देखा, वह फिर गलत समय पर आ धमका था ।

“भाई ! वैसे तो गला फाड़-फाड़ कर चीखते रहो लेकिन ऑर्डर कभी नहीं आएगा, लेकिन जब भी कोई जरूरी बात चल रही हो और हम चाहे कि थोड़ा समय मिल जाए तो एक मिनट के भीतर ही ऑर्डर ले आते हो । आखिर ऐसा कैसे कर लेते हो आप लोग ?” मैंने व्यंग्य से कहा तो वह फिर मुस्कुराया ।

“थैंक्स ।” मेरी कोई प्रतिक्रिया देने से पहले ही सोनल ने मुस्कुराते हुए उसे धन्यवाद दिया, उसने सम्मान में सिर हिलाया और निकलने लगा ।

“कम से कम मैडम से ही कुछ सीखिए ।” वह बड़बड़ाते हुए निकल गया । उसकी इस बात पर तो मन हुआ कि साले का कॉलर पकड़ कर उसे घसीट-घसीट कर मारूं लेकिन वह मुझसे ज्यादा हट्टा-कट्टा था, रेगुलर जिम जाने वाली प्रजाति का जान पड़ता था ।

“उसे छोड़ो और यहाँ फोकस करो । तुम्हारा हाथ कैसा है ?” उसने मेरी प्लास्टर लगी हुई हथेली को छूते हुए कहा ।

“तुमने ही तोड़ी है, कम से कम अपनी ताकत पर इतना तो यकीन होना चाहिए कि फ्रैक्चर से नीचे के नीचे के लेवल की चोट तो लगेगी नहीं । कलाई फ्रैक्चर है, पीठ और कमर में भी काफी कुछ हिला हुआ है ।” मन तो किया कि उसका हाथ झटक दूँ लेकिन उसके प्यार भरे स्पर्श ने पता नहीं क्या जादू कर रखा था कि हाथ हटने को राजी ही नहीं थे । वैसे भी जीवन में लड़की के नाम पर ले दे कर मुश्किल से एक सोनल ही तो थी ।

“मुझे इतने दिन इग्नोर क्यों कर रहे थे ? फोन क्यों नहीं उठा रहे थे ?” उसने नाराजगी भरे स्वर में कहा और यहाँ मैं पिघल गया । ऐसा नहीं करना चाहता था लेकिन मेरी जगह कोई और भी होता तो पिघल जाता, लड़के होते ही पिघलने के लिए है । भले ही साले पिघल कर पानी बनकर किसी नाले में बह जायें लेकिन पिघलेंगे जरूर, लड़की ज़रा सा मुस्कुरा दे, जरा सा मना ले तो बाबू शोना छाप लौंडे लाइन पर आ ही जाते है, ओह ! क्या मैंने ‘बाबु-शोना’ छाप कहा ? नहीं मुझे कतई नहीं पिघलना था, मैं इस कैटेगरी से था ही नहीं । मैंने उसका हाथ अपने हाथ से हटा कर अपने सख्त होने का प्रमाण दे दिया । मुझे यूँ लगा मानो मैंने बहुत बड़ा तीर मार लिया, एवरेस्ट फ़तेह कर लिया, सारी दुनिया मुझ पर

गर्व करेगी ऐसा कोई काम कर दिया । हद होती है गलतफहमी की भी । उसने फिर मेरी कलाई अपने कोमल हाथों में थाम ली, अब मेरी परीक्षा थी ।

"मेरा हाथ छोड़ो ! पता चला मेरा कंधा भी तोड़ दोगी ।" मैंने अपनी आवाज में भरपूर सख्ती लाते हुए कहा । उसकी तरफ देखने की मेरी हिम्मत नहीं हो रही थी ।

"मेरी आँखों में देखकर बोलो यह सब ।" उसके स्वर से पता चल रहा था कि उसे मेरी कही बात बिलकुल भी पसंद नहीं आई थी । मैंने उसकी तरफ देखा ।

"तुम्हारी समस्या क्या है ? तुम इतनी अजीब क्यों हो ? आखिर शुरू से ही तुम ऐसी ऐसी चीजें कैसे कर रही हो जैसी मैं सपने में भी नहीं सोच सकता ? तीन-तीन गुंडों को पीट देती हो, उन्हें खिलौने के जैसे तोड़ मरोड़ देती हो, भगवान जाने वे जिन्दा बचे भी या नहीं । तुम्हारे पास आते ही अजीब से डरावने अहसास होने लगते है, एक स्पर्श में कोमलता महसूस होती है तो अगले ही स्पर्श में बर्फ सी ठंडी होती हो । एक ही पकड़ में हड्डियां तोड़ देती हो, कुछ ही पलों में पूरी तरह बदल जाती हो । अभी एक प्यारी सी लड़की हो तो अगले ही पल एक अजीब सी डरावनी चीज में बदल जाती हो । एक पल को तुमसे डर लगता है, तुम्हें छोड़ कर भाग जाने का दिल करता है तो दूसरे ही पल तुम्हें प्यार......" मैंने अपनी जीभ काट ली । मुझे प्यार जैसा कुछ नहीं कहना था, मेरी नजरें झुक गई उसकी ओर देखने की हिम्मत नहीं हो रही थी । हमारे बीच एक अजीब सा सन्नाटा था ।

"अपनी बात पूरी करो ।" उसने गम्भीर स्वर में कहा ।

"पूरी हो चुकी ।" मैंने अटकते हुए कहा ।

"प्यार के आगे क्या बोल रहे थे ?"

"कुछ नहीं, फुलस्टॉप की जगह प्यार आ गया गलती से ।" मैंने बेहद ही वाहियात सा कारण दिया ।

"प्यार फुलस्टॉप नहीं होता, यहाँ आकर बात खत्म नहीं होती । प्यार अर्धविराम है, यहाँ से चीजें शुरू होती है, आगे बढ़ती हैं । अपनी बात पूरी करो, मुझे सुनना है ।" उसने फिलोसोफी झाड़ी, आजकल के लड़के लड़कियां रोमांटिक उपन्यास पढ़कर सस्ती फिलोसोफी झाड़ना भी सीख गये है ।

"कुछ नहीं, मैं कह रहा था इतने प्यार से कॉफ़ी मंगवाई है उसके मजे लो ।"

"सीधे-सीधे बोलो, मुझे यह सब पसंद नहीं ।" वह तुनककर बोली ।

"ओह, हेलो ! नहीं पसंद तो मत करो मैं कोई जबरदस्ती नहीं कर रहा ।" मैंने बनावटी गुस्से से कहा । जबकि जानता था उसे घंटा फर्क नहीं पड़ना था मेरे गुस्से से ।

"हो गया तुम्हारा ? तुम मुझे अजीब कहते हो लेकिन कभी खुद को देखा है ? अपने आप को देखो फिर समझ में आयेगा कौन अजीब है । कहना कुछ और होता है कहते कुछ और हो, मन की बात बोलने की हिम्मत तो होती नहीं है । सीधे सीधे क्यों नहीं बोलते कि

प्यार करते हो ।" वह लगभग बिफर पड़ी । कैफे में मौजूद कुछ लपझंडूस कपल्स ने यहाँ देखा, मैंने एक झेंपती हुई मुस्कान उनकी तरफ फेंकी । सभी अपने अपने काम में लग गए । यहाँ सभी एक ही कटेगरी के प्राणी थे, बस किसी का कट चुका था तो किसी का कटने वाला था, लेकिन कटे बगैर रहेगा नहीं, कोई नहीं बचेगा इस दुनिया में । "मैं आज यहाँ यह सुनने नहीं आई हूँ, मैं आई क्योंकि मुझे तुम्हारी परवाह है । तुम्हें चोट लगी है , मुझे तुम्हारा हाल जानने की बेचैनी हो रही थी । लेकिन तुम्हारे अलग ही नखरे है ।" कोमल का बड़बड़ाना जारी था ।

"चोट तुम्हीं ने दी है, यह हाल तुम्हीं ने किया है । इतनी ही परवाह थी तो यह सब करती ही नहीं ।" मुझे गुस्सा आ गया उसकी बात पर, और यह सही भी था । यार कोई किसी की परवाह करता है तो उसके हाथ पैर नहीं तोड़ता, इसे परवाह नहीं सनक कहते है । मन तो आया कि बोल दूँ कि तुम्हें दिमागी इलाज की जरूरत है लेकिन फिर थियेटर वाला किस्सा याद आया, कम से कम अभी एक हाथ सलामत था । और मैं उसे तुड़वाने का इच्छुक बिल्कुल भी नहीं था ।

"तुम्हें अपने हाथ का इलाज सही से करवाना चाहिए ।" उसने कहा ।

"और तुम्हें अपने दिमाग का ।" मेरे मुंह से निकल गया । यह सुनकर उसके चेहरे के भाव बदल गए, चेहरा गुस्से से लाल हो गया, अब मेरी बाकी हड्डियों का टूटना निश्चित था, वह फौरन खड़ी हो गई । कहीं वह मुझे टेबल पर ही न पटक मारे इस खयाल से ही मैं सिहर उठा । इतने लोगों के बीच यह भयंकर बेइज्जती होती, बेइज्जती के बजाय मुझे अपनी हड्डियों की परवाह करनी चाहिए थी । उसने मेरे चेहरे के सामने अपना चेहरा किया, उसके चेहरे पर भले ही गुस्सा था लेकिन उसकी आँखों में नमी थी । मेरी हथेली पर कुछ गीलापन सा महसूस हुआ, यह उस आंसू के कारण था जो सोनल के गालो से लुढ़कते हुए मेरी हथेली पर गिरा था । मुझे अपने आप पर शर्मिंदगी सी हुई, मुझे उसके साथ ऐसा नहीं करना चाहिए था । मेरा डर अपने आप दूर हो गया, उसकी जगह शर्मिंदगी ने ले ली ।

"स...सॉरी, मुझे यह नहीं कहना था ।" मैंने उसकी आँखों में झाँका जिसमें दुनिया भर का समन्दर समाया हुआ नजर आ रहा था ।

"लेकिन अब तो कह चुके ।" उसकी आवाज कांप रही थी, क्या वो रोने वाली थी ? नहीं ! यह जगह रोने के लिए बिल्कुल भी सही नहीं थी, तमाशा बन जाता । फिर मुझे अपने आप पर शर्मिंदगी हुई, सोनल को मैंने रुला दिया और अब अपनी गलती मानने के बजाय मैं तमाशा खड़े होने की चिंता कर रहा था । जब रुलाते समय लोगों का ख्याल नहीं आया तो मनाते समय उनकी परवाह क्यों करूँ । पता नहीं मुझे क्या हुआ, मेरे भीतर क्या समा गया कि मैं फौरन अपने स्थान से उठा और सोनल को कसकर गले लगा लिया ।

उसकी मजबूत पकड़ उसके दिल दुखने की चुगली कर रही थी, और यह सब था मेरे कारण ।

“मुझसे कुछ मत छुपाओ, वो बताओ जो मुझे पता होना चाहिए ।” मैं उसके कानों में फुसफुसाया ।

“लेकिन तुम मुझ पर यकीन नहीं करोगे, मुझे पागल, बेवकूफ या दकियानूसी खयालातों वाली लड़की समझोगे ।” उसने सुबकते हुए कहा ।

“मेरे पास तुम पर यकीन करने के अलावा और कोई रास्ता है ?मैं यकीन करता हूँ, मुझे करना ही होगा । तुम बताओ तो सही ।” मैंने उसे हौले से अलग किया उसकी आँखों में झाँका । इस समय वह इस दुनिया का सबसे मासूम चेहरा था जो मैं देख रहा था ।

“सर बिल !” वेटर की आवाज ने मेरा ध्यान भंग किया । मैंने उसे खा जाने वाली नजरों से देखा, इस समय अगर सोनल साथ नहीं होती तो मैं उस वेटर के साइज की परवाह किये बगैर बल भर तोड़ता साले को, लेकिन सोनल होती ही नहीं तो तोड़ने की वैसे भी कोई वजह नहीं बचती । इस समय उसे घूर कर ही मैंने अपना गुस्सा निकाल लिया, यदि घूरने से कोई भस्म होता तो वह वेटर अब तक ख़ाक हो चुका होता । वह मेरी तरफ ही देख रहा था, उसकी यह वाहियात हंसी । मैंने बिल देखा और पैसे रख दिए । अब हमें यहाँ से निकलना था, अभी-अभी जो हुआ था वह केवल फिल्मों में ही सही लगता है, यहाँ पब्लिक प्लेस में करने से सैकड़ों नजरें आपकी ओर घूम जाती है और जब तक आप वहां खड़े रहो तब तक आपको घूर घूर कर देखती रहेंगी जब तक आपके शरीर के भीतर छेद ना हो जाए, और मुझे छेद करवाने का कोई शौक नहीं था । मैं आगे बढ़ा तो वेटर भद्दी मुस्कान लिए मेरी ओर देखने लगा ।

“क्या हुआ ? पैसे तो पूरे दिए है ।” मैंने बिल की ओर संकेत किया ।

“सर टिप...” वह खीस निपोर दिया ।

“कभी भी किसी को जरूरी बात करते समय बिल नहीं दिया जाता है, वह भी तब जब वह जरूरी बात किसी की जिन्दगी बनाने या बिगाड़ने वाली हो, ऐसे में टोकने पर हड्डियां टूटने का डर रहता है, यह बात गाठ बाँध लो ।” मैंने उसे कहा और हटा, वह उलझन में था ।

“यही टिप थी, इसका हमेशा पालन करना, हाथ पैर सलामत रहेंगे ।” मैंने कहा, सोनल ने मेरी बांह पकड़ी और कैफे के बाहर की ओर निकल पड़ी ।

“तुम भैय्या की शादी में चलने की तैयारी करो, मैं वहाँ सारी बातें साफ़ कर दूंगी ।” सोनल ने धीरे से कहा ।

“क्यों ? वहीं क्यों ? ऐसी कौन सी बात है जो यहाँ समझाई नहीं जा सकती ?” मुझमें अब और सब्र नहीं था ।

“प्लीज ! जिद मत करो, यह बात मान लो । थोड़े ही दिनों की बात है, अभी चलना होगा । भैय्या कबसे मैसेज कर रहा है । वहां पहुंचकर मैं हर चीज बता दूंगी, तुम्हारी सारी उलझन दूर हो जाएगी ।” सोनल मुस्कुराई । उसकी वह मुस्कुराहट खोखली थी, साफ़ प्रतीत हो रहा था । लेकिन मैं उसका दिल नहीं दुखाना चाहता था । हमारे रिश्ते पर अब मोहर लग चुकी थी ।

□□□

अनजानगंज स्टेशन

हमारी ट्रेन रात के लगभग डेढ़ बजे अनजानगंज रुकी । मैंने केशव को झंझोड़ कर जगाया । हमें इसी स्टेशन पर रुकना था ।

"पहुँच गए क्या भाई ?" केशव ने आँखें मलते हुए कहा ।

"हां ! चल, अपना लगेज थाम और उतर, ट्रेन पांच ही मिनट रुकेगी ।" मैंने अपना बैग पीठ पर टांगते हुए कहा । केशव भी बिना समय गंवाए अपना बैग लेकर मेरे पीछे-पीछे चल दिया, कमाल की बात यह थी कि स्टेशन पर कोई चहल-पहल नहीं थी और ना ही ट्रेन से कोई और यात्री यहाँ उतरते दिखाई दे रहा था, हम ही इकलौते शख्स थे जिन्हें इस स्टेशन पर उतरना था । हमने जैसे ही प्लेटफ़ॉर्म पर कदम रखे ट्रेन चल पड़ी । कुछ मिनट तक ट्रेन की धड़धड़ाहट सुनाई देती रही उसके पश्चात एक भयानक शांति छा गई । इस पूरे स्टेशन पर केवल हम दो ही इंसान मौजूद थे, मुझे हैरानी हुई ।

"यहाँ तो कोई भी नहीं है, लगता है जैसे यहाँ कर्फ्यू लगा हो ।" मेरा दिल पता नहीं क्यों घबरा सा रहा था । स्टेशन पर मटमैले पुराने पीले बल्ब लगे थे जो काम चलाऊ मद्धिम रोशनी दे रहे थे, खामोशी इतनी कि कान में सन्नाटे की सीटियाँ सी गूंज रही थी । स्टेशन पर बामुश्किल चार प्लेटफ़ॉर्म थे, शायद चौथे प्लेटफ़ॉर्म के आगे कोई बड़ा सा तालाब भी था, वहां से मेंढकों के टर्राने और झींगुरों की आवाजें निरंतर गूंज रही थी । किनारे पर कुछ पेड़ों के झुण्ड थे जो इतने अजीब थे कि देख कर ही किसी भयानक दानव की भांति प्रतीत होते रहे थे । यहाँ ठंड भी असामान्य रूप से बढ़ने लगी थी । केशव यहाँ वहां देखते रहा ।

"स्टेशन अजीब नहीं लग रहा तुझे ?" वह उत्साहित होकर बोला, ऐसे समय में जब मेरी लगी पड़ी थी, केशव इस भयानक वीराने को देखकर खुश हो रहा था । आपने हॉरर फ़िल्में देखी होंगी ? नहीं, विदेशी नहीं, हिंदी वाली । उसमें किसी वीरान, शापित और भुतहे स्थान के बारे में जैसा दिखाया जाता है वह स्टेशन एकदम वैसा ही था । बल्कि उससे भी ज्यादा डरावना कहूँ तो गलत नहीं होगा । मुझे जब कुछ नहीं सुझा तो मैंने अपनी जेब से फोन निकाला और हर्ष का नंबर डायल किया, डायल करते ही नेटवर्क चला गया ।

"केशव, हर्ष को फोन लगा, मेरा नेटवर्क नहीं दिखाई दे रहा है ।" मेरी बात सुनकर केशव ने फोन निकाला लेकिन उसका चेहरा देखकर मैं समझ गया कि उसके फोन में भी नेटवर्क नहीं था ।

"माहौल देखते हुए यही सही रहेगा कि हम सुबह तक स्टेशन पर इंतजार करते है, गाँव देहातों में इस समय गाड़ियां भी नहीं मिलने वाली । वैसे भी स्टेशन से कुछ चालीस किलोमीटर दूर है विचित्रगंज । इस समय कहीं और जाना सुरक्षित नहीं रहेगा ।" मैंने केशव से कहा । जब स्टेशन का यह हाल था तो स्टेशन के बाहर पता नहीं कैसा माहौल हो, वैसे

भी इस सन्नाटे में दूर दूर तक कोई गाँव वगैरह दिखाई नहीं दे रहे थे । इसका मतलब साफ़ था कि इस वीराने में यह स्टेशन ही एकमात्र इमारत थी जो फ़िलहाल हमारा आसरा थी । केशव ने अपनी बैग से कोई लाल रंग की अजीब सी पोटली निकाली । शायद उसे भूख लगी हो, वह थोड़ा सटका हुआ आदमी था लेकिन इतना होगा यह मुझे नहीं पता था । ऐसे माहौल में जब आदमी की डर के मारे सुसु निकल जाए, एक नंबर, दो नंबर सब याद आ जाए, ऐसे में भला किसे भूख लगती है, कौन खाने के बारे में सोच सकता है ? केशव ने पोटली से एक निम्बू निकाला ।

"अबे हद कर रहा है तू, इतनी रात को क्या चटकारे लेने की सूझ रही है तुझे ?" मैं अपने आप को सम्भाल नहीं पाया ।

"अबे अब तू देख, मैं कब से ऐसे किसी माहौल और जगह की तलाश में था, ताकि अपनी थ्योरी को जांच सकूँ । यह समझ सकूँ कि मैंने जितना सीखा है वह सही भी है या नहीं ।" कहकर उसने एक कागज की पुडिया से दो सुईयां निकाली और निम्बू में खोंस दी, एक काले धागे को सुई में पिरो कर उसने निम्बू को अपने हाथ में लटकाया और यहाँ वहां अलग-अलग दिशाओं में घुमाने लगा ।

"यह कर क्या रहा है बे तू ?" इस समय उसकी यह अजीब हरकत वाकई डरावनी लग रही थी ।

"अगर यह निम्बू भीतर से लाल हो गया तो समझ लेना कि इस जगह पर अतृप्त आत्माओं का वास है ।" उसने उत्साहित होते हुए कहा । उसकी बात सुनकर मेरे होश फाख्ता हो गए, मतलब यार यह कैसा आदमी है जो इस माहौल में ऐसे प्रयोग करता है ? यह सारे टोटके सुनने में भले वाहियात लगे और मैं इन पर यकीन ना करता होऊं लेकिन ऐसे वातावरण और इस डरावनी जगह पर मैं ऐसी किसी चीज के लिए तैयार नहीं था । सच झूठ, अंधविश्वास अपनी जगह पर और डर अपनी जगह । केशव बेपरवाही से प्लेटफ़ॉर्म के यहाँ वहां निम्बू लटकाए घूमता रहा । अचानक एक स्थान पर आकर वह ठिठक गया ।

"प..प्रीतम यहाँ आ ।" उसकी आवाज की थरथराहट सुनकर मेरे पसीने छूट गये, मैं किसी अनजानी शक्ति के वशीभूत होकर मानो उसकी ओर चलने लगा, वह निम्बू की ओर विस्फारित नजरों से देख रहा था । मैंने डरते-डरते उस निम्बू की तरफ देखा । उसमें से लाल रंग टपक रहा था, एकदम सुर्ख गाढ़ा लाल रंग । मेरे होश गुम करने के लिए इतना ही पर्याप्त था । लेकिन फिर मुझे लगा शायद यह केशव की कोई ट्रिक हो ।

"अबे बंद कर यह सब बच्चों वाली ट्रिक, साला निम्बू में सिरिंज से कोई लिक्विड डाल रखा है । सुइयों में उन लिक्विड से प्रतिक्रिया करने वाला कोई पदार्थ लगा कर उन्हें इस में धंसा दिया जिससे इसके रस का रंग बदल गया । यह सब ट्रिक्स बच्चों को दिखा कर

डराया कर ।'' मैंने अपनी थ्योरी बकी, हालांकि अंदाजे से फेंका था लेकिन यह तर्क मुझे भी जम गया था । अब मेरा डर अपने आप कम हो गया । केशव स्तब्ध सा खड़ा था ।

''अबे अब ओवर एक्टिंग बंद कर दे ।'' मैंने उसकी पीठ पर घूंसा मारते हुए कहा ।

''भाई ! निम्बू का साइज देख और उससे बहने वाले लाल रंग की मात्रा देख ।'' उसकी आवाज में कम्पन था । मैंने निम्बू को देखा उससे वाकई में लाल रंग यूँ बह रहा था मानो किसी ने नल की टोंटी खुली छोड़ दी हो, यह असम्भव था । कोई भी ट्रिक किसी भी चीज में उसकी साइज से दस गुना चीज कैसे भर सकती है ? वह लाल रंग बहकर मेरे पैरों के पास तक आ गया था, मैंने अपने जूते हटाये ।

''यह लाल रंग नहीं, खून है ।'' केशव का आतंकित स्वर उभरा । उसकी बात सुनकर मेरा खून सूख गया ।

''इतना खून कहाँ से आ रहा है ? क्या मतलब है इसका ।'' मुझे उत्तर जानना ही नहीं था, क्योंकि मुझे पता था जवाब डरावना ही होगा ।

''अबे ! मरने के बाद तो चैन से रहने दो बे ! ! !'' एक भारी स्वर गूंजा जिसे सुनकर हमारा पेशाब निकलते-निकलते बचा । हमने यहाँ वहां नजरें दौड़ाई लेकिन कोई नजर नहीं आया । नजर ना ही आये वही सही था । आवाज प्लेटफ़ॉर्म की दिशा से आ रही थी ।

''ट्रेन के नीचे कट कर मर गए फिर भी लोगों को चैन नहीं है ।'' वह आवाज चीखते हुए बोली । हमारी सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई ।

''य..यह ट्रेन के नीचे मरे हुए लोगों की आत्माएं हैं ।'' केशव अटकते हुए बोला, उसके हाथ से निम्बू छूट चुका था ।

''अबे ! पेले जाओगे तबीयत से सालों ।'' वह आवाज लगभग चीखते हुए हमारे करीब आते जा रही थी, हम अपने स्थान से हिल भी नहीं पा रहे थे । हमारी नजरें उस आवाज का पीछा कर रही थी । वह शायद आखिरी प्लेटफॉर्म से आ रही थी, जहाँ तालाब और झाड़ियों का झुरमुट था । मैं पटरियों की ओर देख रहा था । केशव भी मेरी नजरों का पीछा कर रहा था, साफ़ जाहिर था कि उसकी हालत भी खस्ता हो चुकी है । अचानक से फिर वही भयानक सन्नाटा छा गया, मेरी नजरों ने अचानक किसी चीज को अँधेरी पटरी से उठते हुए देखा । अब मुझे दिल का दौरा पड़ने ही वाला था । वह चीज लड़खड़ाई लेकिन पूरी तरह उठ नहीं पाई, वह पटरी पर घिसट रही थी । अचानक ही मुझे लगा जैसे वह कोई आदमी है जो घायल पड़ा है, उसके हाथ पैर शायद कट चुके थे । लेकिन वो अब तक क्यों नहीं दिखा था ? केशव को मानो लकवा मार गया था । वह विचित्र आकृति कराहते हुए प्लेटफ़ॉर्म और पटरियों के मध्य वाले स्थान पर आकर गायब हो गई । अब कुछ दिखाई नहीं दे रहा था, मुझे देखना भी नहीं था ।

इसके बावजूद हमारी नजरें प्लेटफ़ॉर्म पर जमी हुई थी । अचानक खून से सराबोर एक हाथ पटरियों के मध्य से निकला और उसने एक समूचा कटा हुआ पैर प्लेटफ़ॉर्म पर रख दिया, वह आकृति खून से नहाई हुई थी । मैंने एक से बढ़कर एक हॉरर फ़िल्में देखी है लेकिन ऐसा कुछ असल में देखना अलग बात है । मैं अब गिरा कि तब गिरा वाली अवस्था में था ।

“वह चीज प्लेटफ़ॉर्म का सहारा लेकर ऊपर उठने की कोशिश कर रही है ।” केशव बुदबुदाया । वह सच कह रहा था । ख़ून से नहाई वह टूटी फूटी आकृति प्लेटफ़ॉर्म पर चढ़ने का प्रयास कर रही थी, उसकी नजरें हमसे मिली । उसने दूसरे हाथ से एक और कटा हुआ पैर प्लेटफ़ॉर्म पर रख दिया ।

“मरने के बाद भी तुम लोगों को चैन नहीं है, अरे जीते जी जिन्दगी झन्ड थी, कम से कम मरने के बाद शांति से रहने दो ।” वह बेहद सर्द आवाज में बोला, उसके बोलते ही उसका जबड़ा टूट कर प्लेटफ़ॉर्म के फर्श पर गिर पड़ा । उसी पल मेरे कंधे पर मुझे किसी की पकड़ का अहसास हुआ, इस अहसास के होते ही पटरी वाली आकृति गायब हो गई, कहाँ गई पता नहीं । बस पलक झपकते ही यूँ अदृश्य हो गई मानो वहां कभी थी ही नहीं ।

“क..केशव मेरे कंधे पर..” मैं बड़ी मुश्किल से बोला, जुबान हिलाने में भी कठिनाई हो रही थी । केशव ने मेरी ओर देखा ।

“बाबू !” वह एक भयानक खरखराती हुई आवाज थी जो मेरे पीछे से आई । मेरी हिम्मत नहीं हुई कि पलट कर देख भी लूँ ।

“बाबू जी ! मेरे साथ चलिए ।” उस भयानक आवाज ने धीमे से कहा । मेरी तो आवाज ही नहीं निकल रही थी, मैं भला क्या बोलता ?

“मुझे हर्ष बाबु ने आप दोनों को लेने भेजा है ।”

यह सुनकर हमने पीछे देखा, हमारी जान में जान आई । वह एक हट्टा कट्टा आदमी था । मुझ जैसे चार के बराबर वह अकेला था, मटमैली सी लाल आँखें, सुर्ख सांवला रंग, मूँछें इतनी घनी की होंठ तक दिखाई नहीं दे रहे थे । उसने एक सादा सा कुर्ता और पायजामा पहना हुआ था । वह किसी दानव से कम प्रतीत नहीं हो रहा था ।

“आप कौन है ?” केशव ने प्रश्न किया, अब जाकर उसके मुंह से बोल फूटा था ।

“हर्ष बाबू ने आपका नंबर दिया था, कब से मिला रहा हूँ लेकिन लग ही नहीं रहा था । स्टेशन के बाहर मेरी कार खड़ी है, चलिए अपना सामान मुझे दीजिए, रात काफी हो चुकी है ।” उसने खरखराती आवाज में कहा । उसकी आवाज किसी खराब रेडिओ जैसी थी, इस कदर भयानक आवाज कि कमजोर दिलवाला सुन ले तो उसे दिल का दौरा ही पड़ जाए । हमने अपने बैग दिए तो उसने किसी खिलौने की तरह दोनों बैग अपने कंधों पर टांग लिए और स्टेशन से बाहर की ओर बढ़ा । मैंने मुड़कर एक नजर प्लेटफ़ॉर्म की तरफ देखा

लेकिन वहां कुछ भी नहीं था, खून से सनी वह जगह इस प्रकार सूखी थी मानो वहां कभी खून गिरा ही ना हो । फिर मैंने निम्बू की ओर देखना चाहा, निम्बू गायब था, निम्बू के साथ साथ खून भी इस प्रकार से साफ हो गया था मानो वहां कभी कुछ हुआ ही ना हो । यह कैसे सम्भव था ? क्या अभी-अभी जो देखा वह हमारा भ्रम था । लेकिन भ्रम केवल एक को हो सकता है, दोनों को एक साथ एक ही भ्रम नहीं हो सकता ।

"ह...हमने यहाँ कुछ देखा ।" केशव ने उस व्यक्ति से कहा । उसने कोई जवाब नहीं दिया और अपनी गति से चलते रहा । हम उसकी चाल से चाल मिलाकर लगभग दौड़ रहे थे, किसी भी प्रकार इस स्टेशन से हमें निकलना था । वह गाड़ी में बैठा और हम पिछली सीट पर सवार हो गए । उसने बिना कोई प्रश्न किये चाभी घुमाई और गाड़ी स्टार्ट कर दी, गाड़ी के इंजन की आवाज इस भयानक सन्नाटे को चीरते चली गई । कुछ ही सेकंड में गाड़ी कच्चे पक्के रास्तों पर दौड़ रही थी । हम दोनों अब तक स्तब्ध थे, मेरा पूरा शरीर जल रहा था ।

"हमने प्लेटफ़ॉर्म पर कुछ देखा था ।" मैंने हिम्मत करते हुए कहा ।

"कलुआ गिरहकट था वह ।" उस व्यक्ति ने अपनी भयानक आवाज में बेहद डरावने ठंडेपन से कहा । उसकी आवाज सुनकर हमारे होश उड़ जाते थे । लेकिन अभी हमने जो देखा उसके बारे में जानने की उत्सुकता अपने चरम पर थी ।

"कलुआ गिरहकट ? यह कौन है ?" केशव ने अब तक स्वयं को संयत कर लिया था, उसे अब भी विश्वास नहीं हो रहा था कि वह ऐसी अजीबोगरीब घटना का साक्षी बना है ।

"ट्रेनों में चोरी-चकारी करता था, बहुत उत्पात मचाये था किसी जमाने में । पुलिस वाले आये दिन पकड़ते रहते और तबीयत से धुलाई करते थे, लेकिन ससुरा 'हेंगर' होई गया रहा ।"

"हेंगर ? यह क्या ?" मैं उस शब्द से परिचित नहीं था ।

"मतलब एकदम निर्लज्ज, गेंडे की चमड़ी हो चुकी थी । कितना भी मार खा ले कोई असर नहीं, ना शर्म आती थी और ना दर्द होता था । उसे आदत हो गई थी, बिना मार खाए साले का खाना हजम नहीं होता था । एक बार एक बारात में सामान चुराते हुए पकड़ा गया, दबंगों की बारात थी तबीयत से पेलाई हुई कलुआ की, बारात की भीड़ में शामिल होकर लोगों ने भी अच्छा हाथ साफ किया । उसकी हरकतों से अजीज आई भीड़ ने उसे बुरी तरह तोड़ ताड़कर पटरियों पर फेंक दिया, उसी समय गुजरती एक्सप्रेस की चपेट में आकर कलुआ टुकड़े-टुकड़े हो गया और उसके आतंक से गाँव वालों को मुक्ति मिली । लेकिन कहते है ना शैतान आत्माएं मर कर भी अपनी शैतानी से बाज नहीं आती, तो वह तभी से उस स्टेशन पर रात-बिरात दिखाई पड़ने लगा । आलम यह हो गया कि स्टेशन का स्टाफ तक रात में ड्यूटी नहीं करता, नाइट शिफ्ट बंद ही हो गई । यहाँ उतरने वाले यात्री

अगर देर हो गई तो इसके एक स्टेशन आगे या पीछे उतर जाते है । नौ बजे तक वैसे भी थोड़ी भीड़-भाड़ रहती है, लेकिन उसके बाद यहाँ सन्नाटा छा जाता है ।" उसने अपनी बात पूरी की और गाड़ी की डैशबोर्ड पर चिपकाई हुई हनुमान जी की प्रतिमा को स्पर्श किया ।

"हर्ष ने हमें इस स्टेशन के बारे में क्यों नहीं बताया ?" केशव बुदबुदाया ।

"हर्ष बाबु को खुद नहीं पता । वह तो बड़े छोटे थे जब बड़े साहब उनको लेकर शहर चले गए थे ।" वह बोला ।

"आपका नाम नहीं बताया चाचा ?" मैंने पूछा ।

"मंगलू ।" वह इतना ही बोला और खामोश हो गया, मैंने अपना मोबाइल चेक किया, अब नेटवर्क आ रहा था । हर्ष को फोन लगाया लेकिन अब उसका नेटवर्क नहीं आ रहा था । थक हार कर मैंने मैप में विचित्रगंज का पता डालकर रास्ता देखने का प्रयास किया, लेकिन कोई मैप नहीं दिखा ।

"यहाँ तो गूगल भी रास्ता नहीं बता पा रहा है । ऐसी कौन सी जगह पर है विचित्रगंज ।" मैं झुंझलाया, हालांकि मैं अब भी दहशत में था । केशव की अब तक बोलती बंद रही, वह कांप रहा था ।

"बस बाबू, आगे दस किलोमीटर का घना जंगल वाला रास्ता है, यहाँ से घर नजदीक पड़ेगा लेकिन इस समय यहाँ से जाना ठीक नहीं तो आगे जाकर एक लम्बा वाला रास्ता है वो लेता हूँ ।" मंगलू ने कहा, उसने मुख्य सड़क की दाई ओर जाती संकरी सड़क को छोड़ कर आगे जाता हुआ सीधा रास्ता पकड़ लिया, अब तक हम लगभग १५ किलोमीटर रास्ता पार कर चुके थे लेकिन कहीं भी किसी भी सड़क पर कोई स्ट्रीट लाइन या रोशनी दिखाई नहीं दे रही थी । घुप्प अँधेरे में केवल हमारी कार की हेडलाईट ही चमक रही थी ।

"जल्दी वाला रास्ता ना पकड़ने का कोई कारण ?" मैंने उत्सुकता से पूछा ।

"कलुआ को देखे थे ना ? बस समझ जाइए उसके भी दो चार बाप है इस सड़क पर । इस समय उस रास्ते से कोई नहीं जाता ।" वह फिर शांत हो गया और हनुमान जी की प्रतिमा के चरण स्पर्श किये । उसकी बात सुनकर हमारी हालत और पतली हो गई ।

"यार आखिर हम किस जगह आकर फंस गये है ? यहाँ तो हर जगह कुछ ना कुछ अजीब है ।" केशव घबराए हुए स्वर में बोला ।

"भाई और कर ले पैरानॉर्मल इन्वेस्टिगेशन, बन ले घोस्ट हन्टर । एक अजीब चीज से पाला पड़ा और यह हालत हो गई ।" अब मेरी आँखें भी जलने लगी थी । मुझे बुखार हो चला था । अचानक से सिर चकराया और मैं अपनी सीट पर गिर पड़ा, गिरने से पहले मैं समझ चुका था कि केशव मुझसे पहले ही बेहोशी की आगोश में समा चुका है ।

□□□

मेरी आँखें खुली, चारों ओर पक्षियों के स्वर सुनाई दे रहे थे । मिट्टी की सौंधी सी गंध चारों ओर महक रही थी, वातावरण में ठंड और नमी सी थी । शायद अभी धूप भी नहीं निकली थी, मैंने अपने चारों ओर देखा, मैं एक चारपाई पर पड़ा हुआ था । एक मोटी रजाई मेरे ऊपर ओढ़ाई गई थी, मैंने उसे हटाया और उठने का प्रयास किया । रजाई से निकलते ही ठंड का अहसास हुआ, मैं जिस कमरे में था वह बेहद शानदार कमरा था, कमरे की बनावट और नक्काशीदार कीमती फर्नीचर यह किसी पैसे वाले साहूकार या जमींदार टाइप बंदे का घर होने की चुगली कर रहे थे । जैसे हिंदी की स्टीरियोटाइप फिल्मों में ठाकुरों की हवेलियाँ होती थी ना, बस कुछ-कुछ उसी जैसा । मिट्टी की महक खिड़की से आ रही थी, जो इस समय खुली हुई थी । मैंने खिड़की से नीचे झाँका, कुछ लोग आंगन बुहार रहे थे, पानी का छिड़काव भी हो रहा था । आंगन कच्चा ही था, वैसे भी आंगन की पहचान मिट्टी ही तो होती है । शहरों में तो आंगन ही नहीं मिलते, आंगन के नाम पर तीन-चार फीट की बाल्कनी होती है जहाँ बामुश्किल से ही दो व्यक्ति एक साथ खड़े रह सकते है । लोग बाग़-नौकर चाकर अपने अपने कामों में व्यस्त थे, शादी ब्याह वाला घर साफ़ प्रतीत हो रहा था । कहीं ट्रैक्टर से चारपाइयां उतारी जा रही थी, कहीं किसी ट्रक से दरियां, कुर्सियां और राशन का सामान उतारा जा रहा था तो कहीं फूल मालाओं की टोकरियाँ सजाई जा रहीं थीं । आंगन के ही एक कोने में भट्टी के लिए गड्ढा खोदा जा रहा था, वही बड़े-बड़े बर्तन और खाना पकाने का साजो सामान बिखरा पड़ा था । एकदम खांटी देहाती स्टाइल में हलवाई द्वारा ही खाना बनाया जाने वाला था । मुझे अपना गाँव याद आ गया । आंगन से थोड़ी ही दूरी पर विभिन्न प्रकार के पेड़ों का झुण्ड था, कुछ अमरूदों के पेड़ों पर अमरूद भरे पड़े थे । पपीतों के भार से पपीतों के पेड़ मानो झुके जा रहे थे । आंगन को घेरी हुई चारदीवारी के भीतर विभिन्न फूलों की घनी क्यारियाँ सजाई हुई थी, फूलों की महक कमरे तक आ रही थी । मकान से दूर दूर तक और कोई बस्ती या घर नजर नहीं आ रहा था, दूर-दूर तक केवल लहलहाते खेत ही दिखाई दे रहे थे । खेतों में कहीं पम्प चलने की फट-फट की आवाज सुनाई दे रही थी जिससे साफ़ जाहिर हो रहा था की खेतों में पानी भरा जा रहा है ।

कुल मिलाकर मैं एकदम असली गाँव वाले माहौल में था, मैंने एक गहरी सांस ली । हवा एकदम पतली और भारहीन सी प्रतीत हुई, मेरे फेफड़ों में मानो मिंट सी घुल गई थी, मुंबई की और यहाँ की हवा में जमीन आसमान का फर्क था । आंगन के ही एक नलके के पास केशव दिखाई दिया, वह हर्ष से कुछ बातें कर रहा था । उसने मुझे देखा तो इशारा करके बुला लिया । मैं फौरन नीचे पहुंचा, हर्ष ने मुझे गर्मजोशी से गले लगाया ।

“भाई ! शादी में बुलाया तुम्हें, और तुम बेहोशी में यहाँ पहुंचे, क्या बात है । मतलब शादी हमारी और ख़ुशी के मारे बेहोश तुम हुए जा रहे हो ।” वह हंसते हुए बोला । केशव दातुन कर रहा था, उसने एक दातुन मेरी ओर बढ़ा दिया ।

“ये ले, इससे कर । दातुन के फायदे अनेक है, इससे पानी भी वेस्ट नहीं होता और यहाँ वहां झाग थूककर गंदगी भी नहीं फैलती । दांत और मसूड़े भी मजबूत ।” उसने ज्ञान झाड़ा ।

“अपनी आयुर्वेद की दुकान यहीं लगाएगा क्या ? अबे दातुन देना है तो दे, ज्ञान मत दे ।” कहकर मैंने दातुन ले लिया और कूचना शुरू कर दिया, नीम का दातुन था, सुबह-सुबह चबाते ही पूरा मूड खराब हो गया । सारा मुंह कड़वा हो गया ।

“अच्छी चीजें स्वाद में भी अच्छी हो यह जरूरी नहीं भाई । वैसे केशव ने मुझे कल की सारी बात बताई, सच बताओ तुम दोनों ने ड्रिंक तो नहीं की थी ट्रेन में ?” वह शरारत से हसा ।

“अरे नहीं यार, हम ड्रिंक करते ही नहीं है । केशव तो सिगरेट भी नहीं झेल पाता, कूल बनने के चक्कर एक कश खींचा भी था तो गश खाकर गिरने वाला था ।” मैंने केशव की टांग खींची । मैं सब कुछ सामान्य दिखाने का प्रयास कर रहा था लेकिन अभी तक रात की घटनाएं मेरे दिमाग में कौंध रही थी । हर्ष से पूछने का मन था लेकिन मुझे डर था कि कहीं वह मुझे दकियानूसी खयालों वाला न समझ बैठे । मैं उसके सामने अपनी इमेज अच्छी रखना चाहता था, आखिर मेरे फ्यूचर प्लान्स थे सोनल के साथ ।

“तुम मुझसे पूछ सकते हो, बेहिचक पूछ सकते हो । कल रात तुम्हारे साथ जो भी हुआ वह केशव ने मुझे बता दिया है इसलिये संकोच करने की कोई जरूरत नहीं है । वैसे भी हम शहरी लोगों की आधुनिकता जहां आकर खत्म होती है वहां से एक नयी दुनिया शुरू होती है । मैं ऐसे माहौल में रहा हूँ जहां मुझे इन चीजों के बारे में जानकर कोई हैरत नहीं होती” हर्ष ने मेरी मन की बात पढ़ ली ।

“मुझे अब भी यकीन नहीं हो रहा है कि मैंने ऐसा कुछ देखा था, मुझे लग रहा है जैसे वह कोई बुरा सपना था ।” बात छिपाने से अब कोई फायदा भी नहीं था । केशव दातुन करते करते एक ट्रक की ओर बढ़ा जहाँ कुर्सियां, दरी और चारपाइयां उतारी जा रही थी, वहां पहुँच कर वह सबको निर्देश देने में व्यस्त हो गया । हर्ष उसे देखकर मुस्कुराया ।

“वह तुमसे दो घंटे पहले उठ चुका है, और देखो इस तरह काम में लगा है जैसे सालों से इस परिवार का हिस्सा हो । केशव जल्दी ही लोगों से घुल-मिल जाता है ।” हर्ष ने कहा ।

“हां उसकी दूसरी गर्लफ्रेंड भी यही कहती थी ।” मैंने साफ़-साफ़ झूठ बोल दिया, मुझे लगा कही केशव को ही हर्ष अपना जीजा ना मान बैठे । हर्ष एक पल को अवाक रह गया ।

“दूसरी गर्लफ्रेंड ? केशव की दो गर्लफ्रेंड्स हैं ?” उसने हैरानी से पूछा, हैरानी की बात तो थी ही । केशव की पर्सनालिटी ही ऐसी थी कि गर्लफ्रेंड की बात उस पर जंचती नहीं थी ।

"है नहीं थी, दूसरी गर्लफ्रेंड से ब्रेकअप हुए तीन महीने बीत चुके है । अब उसे एक और मिली है, साथ ही काम करते है ऑफिस में । केशव दरअसल शादी में बहुत कम यकीन करता है, बचपन से माता पिता के बीच तनाव देखकर वह अवसादग्रस्त सा रहा है, इसलिये अजीब-अजीब हरकतें करता रहता है । उसने आजीवन शादी ना करने का निर्णय लिया है, उसकी गर्लफ्रेंड्स ने जब शादी की बात छेड़ी तो वह लिव इन रिलेशनशिप में रहने की वकालत करने लगा, भला कौन लड़की ऐसे रिलेशन में रहना पसंद करेगी ? लड़कों का क्या है उन्हें कोई कुछ नहीं बोलेगा लेकिन लड़कियों की दुनिया भर की बदनामी होती है । उन्होंने बहुत समझाया लेकिन भाई साहब टस से मस नहीं हुए । वह लिव इन पर ही अड़ा रहा, नतीजा, दोनों गर्लफ्रेंड्स से हाथ धोना पड़ा ।" मैंने मिर्च मसाला लगा कर एक झूठी कहानी बना दी । मैं केशव को हर्ष कि नजरों में हीरो बनने का एक प्रतिशत भी चांस नहीं देना चाहता था ।

"लिव-इन में रहना या ना रहना किसी का व्यक्तिगत फैसला है, इससे हम उसके चरित्र के बारे में कोई अवधारणा नहीं बना सकते और ना ही हमें ऐसा कोई अधिकार है, ज़माना बदल रहा है । काफी चीजें बदल रही है, कल तक जो चीजें टैबू लगती थी आज वो सर्वमान्य हो चुकी है, कल भी ऐसा ही कुछ होगा । तो हमें लोगों को जस्टिफाई करना छोड़ देना चाहिए ।" हर्ष ने कहा, हर्ष तो पक्का वाला आजाद खयाल निकला । अब कोई और कहानी बनानी होगी ।

"मैंने उसे कभी जस्टिफाई करने या ना करने की कोशिश नहीं की और ना ही करूंगा । दोस्त है वह मेरा, माँ बाप ने दबाव दिया तो वह शादी के लिए मान भी गया, लेकिन फिर पता चला उसे कोई उस टाइप वाली बीमारी है ।" मैं कमीनेपन की हद पर था ।

"किस टाइप वाली ?" हर्ष समझ नहीं पा रहा था ।

"अरे उस टाइप वाली, मैं कैसे समझाऊँ । वह बाप नहीं बन सकता ।" मैं उसके कान में धीरे से फुसफुसाया । हर्ष ने सहानुभूति भरी नजरों से केशव की ओर देखा ।

"कुदरत भी अजीब है, देखो कैसे-कैसे बन्दों को कैसा-कैसा बना देती है । उसे देखकर कौन कहेगा कि वह ऐसा है ? अपनी तकलीफ किसी और को बता भी नहीं सकता, अकेले में घुट-घुट कर जीने वाले को किस तरह दुनिया के सामने मुस्कुराना पड़ता है ।" हर्ष के स्वर में दुनिया भर की करुणा थी । केशव ने हमारी तरफ देखा तो हर्ष मुस्कुरा दिया ।

"बहुत अच्छे केशव, शाब्बाश । तुमने अच्छे से काम सम्भाला हुआ है ।" हर्ष ने उसका उत्साहवर्धन किया ।

"बेचारा ।" हर्ष बोला ।

"हां ! बेचारा केशव ।" मैं बुदबुदाया, मेरा रास्ता साफ़ हो चुका था ।

□□□

सोनल ने अपने दादा कुलभूषण जी से मेरा परिचय करवाया, दादा जी काफी बीमार और अस्वस्थ से जान पड़ते थे, यह उम्र का नहीं बल्कि बीमारी का असर ज्यादा प्रतीत हो रहा था ।

"बैठो बेटा, हमारे पास बैठो । तुम्हारी बड़ी तारीफ़ सुनी है हर्ष और सोनल बिटिया से । तुमने मुम्बई की बाढ़ में हमारी बिटिया की जान बचाई, मुझे समझ में नहीं आ रहा कि मैं तुम्हारा धन्यवाद कैसे करूँ ?" कुलभूषण जी की आवाज बेहद खुरदुरी और सख्त थी, इतना बोलने के पश्चात वे खांसने लगे । सोनल ने उन्हें पानी पिलाया ।

"सोनल के जन्म से पहले ही इसकी माँ और मेरा बेटा महेंद्र मुंबई चले गए और वही के होकर रह गए । सही किया, जो मैंने झेला, पिता जी ने झेला वो हमारी पोती भला क्यों झेले ? अच्छा हुआ मेरी फूल सी बच्ची का इस मनहूसियत से पीछा छुटा । न जाने कैसी मनहूसियत है यहाँ की हवा में, खुशियाँ भी मातम सी लगती है यहाँ, लम्बी बीमारी से जूझ रहा हूँ, डॉक्टर ने जवाब दे दिया, कुछ ही दिनों में मर खप जाऊँगा तो यही इच्छा थी कि मरने से पहले एक बार अपने पूरे परिवार को जी भर कर देख लूँ ।" दादा जी फिर खांसे ।

"पिता जी ! मारें आपके दुश्मन, यह कोई मरने की उम्र है भला ?" अंकल यानी सोनल के पिता जी ने कमरे में प्रवेश किया, उन्होंने शायद हमारी कुछ बातें सुन ली थी ।

"नहीं ! अभी तो हमारे खेलने कूदने के दिन है, सोनल बिटिया जरा मेरी छड़ी लाना तो, बहुत दिन हो गए है इस महेंद्र को मार नहीं पड़ी, तभी इतना बिगड़ा जा रहा है ।" दादाजी ने खांसते हुए कहा । इतना सुनना था कि अंकल जी सीधे दादाजी के पैरों के पास जा बैठे और घुटने दबाने लगे । पता नहीं कही से हर्ष भी आ पहुंचा और वह भी अपने पिता के साथ बैठ कर दादाजी के पैर दबाने लगा । सोनल की माँ यानी हमारी होने वाली सासू जी दवाई लेकर पहुंची, उन्होंने हल्का घूंघट काढ़ा हुआ था, दवाई दादा जी को खिला कर पानी पिलाया । सारा परिवार एक साथ था ।

"अरे बेटा, हमारी एक फैमिली फोटो खिंच लो बढ़िया वाली ।" अंकल ने कहा तो मैंने अपना मोबाइल कैमरा ऑन किया ।

"तुम भी आ जाओ बेटा, परिवार से अलग थोड़े ही हो तुम ।" हमारी होने वाली सासू माँ ने कहा, सच में हमारी सासू माँ बड़ी ही प्यारी थी । मैंने मोबाइल पास से गुजरते एक नौकर को थमा दिया और जाकर उनके साथ खड़ा हो गया, संयोग से सोनल और मैं एकसाथ थे । फोटो खिंचवाने के बाद सभी अपने-अपने कामों में व्यस्त हो गए । मैं केशव को खोजने के लिए निकला ही था कि दादाजी ने मुझे आवाज दी, मैं उनके पास गया । उन्होंने मेरी तरफ बड़ी अर्थपूर्ण नजरों से देखा और अपने समीप वाली कुर्सी पर बैठने का संकेत किया । मैं बैठ गया, अब ज्ञान का समय हो गया था, बड़े बुजुर्गो की पुरानी आदत होती है ज्ञान देने की ।

“सोनल !” दादाजी ने सोनल को आवाज दी । सोनल फिर से कमरे में आ गई, उसके आने से मुझे थोड़ी राहत मिली ।

“यहाँ आओ बिटिया ।” दादाजी ने उसे बड़े दुलार से अपने समीप बुलाया, सोनल नजरें झुकाए हुए उनके पास पहुंची ।

“प्रेम करते हो एक दूसरे से ?” दादाजी ने मेरी आँखों में झांकते हुए प्रश्न किया । यह मेरी आशा के विपरीत था, मुझे ऐसे किसी सवाल की बिलकुल भी उम्मीद नहीं थी । सोनल हक्की बक्की रह गई थी, मैं नजरें भी नहीं मिला पा रहा था ।

“अरे दादाजी ! क्या आप भी । ऐसा कुछ भी नहीं है, बिलकुल भी नहीं वो तो हम...”

“हम बस अच्छे दोस्त है, प्रीतम हर्ष भैय्या का भी अच्छा दोस्त है, मम्मी पापा भी प्रीतम को बहुत मानते है...” सोनल ने हड़बड़ा कर कहना शुरू किया ही था कि दादाजी ने किसी फ़िल्मी विलन की तरह अपना हाथ उठा कर उसे चुप रहने का संकेत किया, सोनल एकदम से चुप हो गई, उसके सुंदर से गोरे माथे पर पसीने के बूंदें झिलमिला उठीं, शर्म की लाली उसके चेहरे की गुलाबी रंगत को और निखार रही थी । ओह ! मुझे समय देखकर तारीफ़ करना चाहिए, मैं भूल ही गया था कि दादा जी भी यहीं बैठे है ।

“मैं बेवकूफ नहीं हूँ बेटा । माना कि तुम्हारी पीढ़ी बेहद फ़ास्ट है, एडवांस्ड है लेकिन इतनी भी एडवांस नहीं है कि हमें बेवकूफ बना सके, हमने दुनिया देखी है, लोगों की आँखें देखकर उसका व्यक्तित्व बता देते थे । क्या हमसे तुम दोनों की नजरों का खेल छिपा रह सकता है ? मैंने अपने बाल धूप में सफ़ेद नहीं किये है बेटा ।” दादाजी ने गंभीर स्वर में कहा ।

“लेकिन आपके तो बाल है ही नहीं ?” मेरे मुंह से एक झटके से निकल गया, वैसे यह सच भी था । जब दादाजी के सर पर एक भी बाल नहीं है तो उन्हें बालों का उदाहरण देना भी नहीं चाहिए था । मैं अपनी गलती समझकर एकदम चुप हो गया, हमारे बीच एक पल को गहन सन्नाटा छा गया । दादाजी ने मेरी तरफ बड़ी ही खतरनाक नजरों से देखा, मैं सहम सा गया । अचानक उनके चेहरे के भाव बदले और वे हंसने लगे, उनके हंसते ही मेरी जान में जान आई । मैं भी हंसने लगा लेकिन हद में रह कर, उनके सामने मैं किसी पौराणिक सीरियल के दानव की तरह अट्टहास लगा कर नहीं हंस सकता था । फिर वे चुप हुए और सोनल की तरफ देखने लगे ।

“सोनल, बिटिया । मुझे पहचानने में गलती नहीं हुई ना ? तुम इसे पसंद करती हो ना ?” उन्होंने पूछा, सोनम के अंदर उनसे झूठ बोलने का साहस नहीं था, उसने नजरें नीची करके हाँ में सिर हिला दिया । उसकी हामी देखकर दादाजी एकदम से और गंभीर नजर आने लगे ।

“मुझे तुम दोनों के प्रेम से कोई आपत्ति नहीं, तुम दोनों की जोड़ी निस्संदेह एकदम उपयुक्त रहेगी, लेकिन सोनल तुम जानती हो ना कि तुम शादी नहीं कर सकती ?” दादाजी के चेहरे पर दुःख स्पष्ट झलक रहा था । उनकी बात सुनकर मैं चौंक पड़ा, भला यह क्या बात हुई ।

“क्यों ? सोनल शादी क्यों नहीं कर सकती ?” मैंने बड़ी ही नम्रता के साथ पूछा ।

“बिटिया तुम बताओगी या मैं बताऊँ ?” दादाजी ने सोनल की तरफ देखा ।

“आप क्यों उन बातों को याद करते है ? वैसे भी आपकी तबीयत खराब है आपको उन चीजों को याद ही नहीं रखना है जो आपको दुखी करे ।” सोनल ने कहा ।

“मैंने जो पूछा उसका जवाब दो ।” दादाजी ने एकदम ठंडे स्वर में कहा ।

“ठीक है, मैं ही बता दूंगी । आप चलिए आपकी दवाई का समय हो रहा है ।” कहकर सोनल ने अपनी माँ को पुकारा, सासू जी आई और दादा जी को अपने साथ ले गई ।

मैंने सोनल की तरफ देखा, वह खामोश और गुमसुम सी खड़ी थी ।

“अरे कोई कुछ बताएगा भी ? क्या समस्या है तुम्हारी शादी में ?” मुझसे सब्र नहीं हो रहा था ।

“बताती हूँ, पूरी कहानी बताती हूँ । यह कहानी शुरू होती है दादाजी के दादाजी से, कई वर्षों पूर्व जब वे गाँव के जमींदार थे.....” सोनल ने कहना आरम्भ किया ।

ओह ! कहानी अब दादाजी के दादाजी से शुरू होनी थी, यानी अंग्रेजों के जमाने से । यानी अब यहाँ कायदे से फ्लैशबैक चलने वाला है, उस समय मैं तो था नहीं इसलिए फ्लैशबैक वाले हिस्से में मैं सूत्रधार नहीं रहूंगा, मेरी कोई टिप्पणी नहीं होगी । चलते है फ्लैशबैक की ओर ।

प्रियंवदा

"भूषण, एक बात पूछें आप से ?" प्रियंवदा ने बड़े ही सौम्य स्वर में प्रश्न किया ।

"यह कब से हो गया ? तुम्हें भला हमसे कुछ पूछने के लिए इजाजत लेने की जरूरत पड़ गई ? निस्संकोच पूछो, यह तुम्हारा अधिकार है ।" भूषण गोद में लेटी हुई प्रियंवदा के बालों को सहलाते हुए बोला । प्रियंवदा ने करवट बदली और भूषण को निहारने लगी ।

"हमारा प्रेम सफल तो होगा ना ? तुम हमसे विवाह करोगे ना ?" प्रियंवदा के सुंदर मुखड़े पर लाज की लाली खिल उठी । भूषण ने उसके गालों पर प्रेम से चपत लगाई ।

"बार-बार यह प्रश्न मत किया करो, मैंने पहली बार ही कह दिया था यदि विवाह होगा तो केवल तुमसे ही होगा । भले ही आजीवन ब्रह्मचारी ही क्यों ना रहना पड़े किन्तु मैं तुम्हें छोड़कर किसी और के बारे में सोच ही नहीं सकता ।" भूषण के स्वर में अथाह प्रेम था । वह प्रियंवदा की चिंता को समझता था, उसके समाज में ऐसे किसी प्रेम के लिए कतई स्थान नहीं था, भूषण जमींदार का बेटा था और प्रियंवदा उनके मुंशी की बेटी थी ।

"मैं जल्द ही पिता जी अपने इस रिश्ते के बारे में बात करूँगा । यह तुम भी जानते हो कि पिता जी तुम्हें कितना मानते है कितना दुलार करते है । उन्हें हमारे संबंध से कोई आपत्ति नहीं होगी । " भूषण ने पूर्ववत प्रेम भरे शब्दों में कहा ।

"मुझे उनकी तरफ से कोई चिंता नहीं है भूषण । मुझे चिंता केवल तुम्हारी माँ से है, उन्हें मेरा हवेली में आना जाना अब पसंद नहीं । पहले जब छोटी थी तब उन्हें कोई आपत्ति नहीं होती थी, जब से सब कुछ जानने समझने लगी हूँ वो पता नहीं क्यों मेरी उपस्थिति को पसंद नहीं करती ।"

"माँ थोड़ा रूढ़िवादी विचारों की है, जब तक तुम बच्ची थी तब तुम्हारा अल्हड़पन, तुम्हारी शरारतें उन्हें भाती थी, किन्तु तुम्हारे बड़े होते ही वो इसे नापसंद करने लगी, क्योंकि अब तुम उम्र के उस पड़ाव पर पहुँच चुकी हो जब लोक लाज और समाज की परवाह करनी होती है, लड़कियां इन गाँवों में इतनी स्वच्छन्द कभी नहीं होती, माँ भी उसी परिवेश में पली बढ़ी है तो उन्हें तुम्हारा यह खुलापन अखरता है । वैसे माँ दिल की ऐसी नहीं है यह तुम भी जानती हो, बाबा को मना लूँगा तो बाबा उन्हें भी मना लेंगे । तुम फिक्र मत करो ।" भूषण की बातों से प्रियंवदा को राहत मिली ।

प्रियंवदा हिसाब किताब में तेज थी, मुंशी जी हमेशा अपने हिसाब किताब में उसकी सहायता लिया करते थे । जमींदार त्रिलोकनाथ को प्रियंवदा सदैव प्रिय रही थी । प्रियंवदा को कोई तकलीफ ना होने पाए इसके लिए वो मुंशी जी को हमेशा हिदायत देते रहते थे । हिसाब किताब और लेन देन के बहीखातों के चक्करों में कुलभूषण की भेंट प्रियंवदा से हुई । चंचल और निश्छल प्रियंवदा ने कुलभूषण को अपनी ओर आकर्षित कर लिया,

काफी समय साथ व्यतीत करते करते दोनों के मध्य एक अपनापन सा बन चुका था जिसने शीघ्र ही प्रेम का रूप ले लिया । छोटे नगरों एवं गाँवों में यह चीजें अधिक दिनों तक छिपी नहीं रह पाती । जल्द ही सारे गाँव में प्रियंवदा और कुलभूषण के चर्चे होने लगे, जमींदार साहब के रुतबे और दबाव के कारण भले ही कोई उनके सामने ना कहता हो किन्तु दबे छिपे सभी धुंए को देखकर आग का पता लगा चुके थे । भूषण की माँ इस बात को बहुत पहले ही समझ चुकी थी, आखिरकार गाँव भर में होती बातें उन तक पहुंची । उन्होंने त्रिलोकनाथ को वस्तुस्थिति से अवगत कराया, उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था, कुलभूषण एक विवाद के चक्कर में कचहरी गया हुआ था यही उचित अवसर जानकर त्रिलोकनाथ ने मुंशी जी को बुलवाया, मुंशी जी ने डरते-डरते उनके कमरे में प्रवेश किया । वो हद से आगे बढ़ चुकी बात को समझ चुके थे, मालकिन ने उन्हें पहले ही चेता दिया था । त्रिलोक अपनी आरामकुर्सी पर बैठे रहे, एक नजर मुंशी की ओर देखा । मुंशी जी उनके चेहरे को देखकर चौंक गए, त्रिलोक के चेहरे पर गहन निराशा और हताशा के भाव थे । उदासी ने उनके चिरपरिचित राजशाही तेज को मानो ढंक लिया था । उनकी पत्नी उनके समीप ही एक कुर्सी पर बैठी हुई थी ।

“बैठिये रामस्वरूप जी ।” त्रिलोकनाथ ने एक कुर्सी की ओर संकेत करते हुए कहा, किन्तु रामस्वरूप अपने स्थान से रत्ती भर भी नहीं हिले ।

“मैं आपके समक्ष नहीं बैठ सकता, आप बताइये क्या काम आन पड़ा इस गरीब से ?” रामस्वरूप के स्वर में कम्पन और बेचारगी दोनों थी ।

“तुम हमारे यहाँ इतने दिनों से काम कर रहे हो, तुम्हारे पिता मेरे पिता जी के मुंशी रह चुके है । तुमने भी अपनी पीढ़ी के काम को सम्भाला और हमारी अगली पीढ़ी के साथ बने रहे, तो तुम हमारे लिए हमारे कर्मचारी या सेवक जैसे नहीं हो । तुम्हें हम अपने परिवार का ही हिस्सा मानते आये है । इसलिये मैं बिना किसी लाग लपेट के स्पष्ट शब्दों में अपनी चिंता का कारण बताना चाहूँगा ।” कहकर त्रिलोकनाथ ने एक नजर अपनी पत्नी की ओर देखा, उनके चेहरे पर तनिक क्रोध के भाव थे, वो नहीं चाहती थी कि त्रिलोकनाथ इस प्रकार नरमी से पेश आये । लेकिन त्रिलोक अपने स्वभाव से विवश थे ।

“तुम्हारी लड़की ने अपनी मर्यादा भंग की है, उसने अपने स्तर से ऊपर उठने का प्रयास किया है । हैसियत से ऊपर उठने का प्रयास करने में कोई हर्ज नहीं है, लेकिन तभी तक जब तक वह प्रयास मर्यादा में रहकर किया जाए । तुम्हारी बेटी आगे बढ़ने और अपने स्तर से ऊपर उठने की इतनी जल्दी है कि उसने सारी नैतिकता को भुला कर और अपने स्तर का नजरंदाज करते हुए हमारे बेटे को फंसा लिया ।” मालकिन के स्वर में तल्खी थी ।

“शांत रहो भागवान, मैं बात कर रहा हूँ ना, मुंशीजी हमारे इतने वर्षों के वफादार रहे है, उनसे ऐसे बात करने से पहले हमें सोचना चाहिए ।” त्रिलोक ने थोड़ा कड़ाई से कहा । मुंशी

रामस्वरूप की अवस्था अत्यंत दयनीय थी ।

“मैं चाहता हूँ आप कुछ दिन खंडीपुर स्थित जायदाद का काम सम्भालिये, जमीन काफी दूर तक फैली है, पहले इस काम को हम ही देखते थे लेकिन कुछ वर्षों से वहां नजर नहीं पड़ी है । कुछ अनचाहे लोग जमीन हथिया ना ले इसलिये वहां का हिसाब किताब किसी योग्य व्यक्ति के हाथों में होनी चाहिए । मेरी नजर में आपसे बढ़िया व्यक्ति कोई और नहीं हो सकता । आप अपनी बेटी को लेकर वहां कुछ दिन रहिए । रहने की व्यवस्था हो जाएगी, हमारे पुरखों का एक छोटा मकान है वहां । कुछ दिन कुलभूषण भी दूर रहेगा तो सब भूल जायेगा, हम समझते है उम्र के इस पड़ाव में सभी से गलतियां हो जाती है लेकिन हम जल्लाद नहीं है जो बच्चों की भावनाओं को समझ ना सके ।” त्रिलोक ने एक नजर मुंशीजी पर डाली, वो विचलित थे ।

“देखिये मुंशी जी, असल बात बताते है । सरकारें बदल रही है, नए-नए भूमिसुधार कानून बनाये जा रहे है । जमींदारी पर काफी संकट उत्पन्न हो गया है । आर्थिक अवस्था डांवाडोल हो रही है, ऊपर से आये दिन कोर्ट कचहरी के चक्करों में पैसा पानी की तरह बहाया जा रहा है, ऐसे में खिलावनगंज के साहूकार मदन जी ने अपना हाथ बढ़ाया है, वो उनकी बेटी का विवाह हमारे बेटे से करना चाहते है, यह विवाह और दो परिवारों का संबंध ही हमारी अंतिम आशा है । आप समझ रहे होंगे कि मैं क्या कहना चाहता हूँ ।” त्रिलोक ने फिर मुंशी के हाव भाव पढ़ने चाहे । सेठानी को अपने पति का यूँ नरमी से पेश आना बिल्कुल भी रास नहीं आ रहा था, मुंशी की हैसियत ही क्या थी जो उसके सामने गिड़गिड़ाना पड़े ? आदेश देकर भगा दो बात खत्म । लेकिन त्रिलोकनाथ अलग ही मिट्टी के बने हुए थे ।

“मुझे क्षमा कर दीजिये मालिक, मेरे रहते इतना सब कुछ हो गया । मेरे ही खून में कोई कमी रह गई जो ऐसी औलाद मिली । आपका नमक खाकर आप ही से नमक हरामी करने वाला खून मेरा नहीं हो सकता ।” मुंशी कलप उठे ।

“इसमें आपका कोई दोष नहीं है, यह उम्र ही ऐसी होती है । छोटों का काम है गलतियाँ करना और बड़ों का फर्ज है उन्हें सुधारना । उन्होंने अपना काम कर दिया, अब हमारी बारी है अपना फर्ज निभाने की । आप अपने आप को दोष मत दीजिये । तैयारी कीजिये, कल शाम तक कुलभूषण शहर से आ जायेंगे, उसके पहले ही आपको खंडीपुर पहुँच जाना है, जाइए तैयारी कीजिये ।” इतना कहकर त्रिलोक उठ खड़े हुए । मुंशी दीनता से हाथ जोड़े खड़े रहे, उनकी आँखों से आंसू बह रहे थे, एक क्षण में सबकुछ हो चुका था, अपने पुरखों का गाँव छोड़ने की नौबत आएगी यह कभी सोचा तक नहीं था ।

□□□

"आपके इस फैसले में कतई समझदारी नहीं है, आपने उन्हें दण्डित करने के बजाये उन्हें एक गाँव की जमींदारी उपहार में दे दी, यह कैसा फैसला है ? आपको तो उन्हें इस समूचे गाँव से बेदखल कर देना चाहिए था ।" सेठानी क्रुद्ध थी ।

"मैंने कुछ सोच समझकर ही निर्णय लिया है भागवान । खंडीपुर से हमारा सम्पर्क क्यों कटा हुआ है जानती हो ?" त्रिलोक ने उनकी ओर देखा । वो प्रश्नवाचक नजरों से त्रिलोक को देख रहीं थी ।

"खंडीपुर शापित ग्राम है, वहाँ हमेशा अकाल ही पड़ा रहता है । खुशहाली का उस गाँव से कोई लेना देना है ही नहीं, वहां कोई उपज भी ढंग से नहीं होती । धेले भर का लाभ नहीं है उस गाँव से, हर साल महामारी फैलती रहती है वहां । वहां के श्मशान की आग कभी नहीं बुझती, एक चिंता ठंडी होने से पहले ही दूसरी चिता सज जाती है । मुर्दों का गाँव है वह । वहाँ की युवा पीढ़ी कब का पलायन कर चुकी है, आबादी के नाम पर केवल बूढ़े बुजुर्ग और बेबस महिलाएं ही बची हुई है । हर घर में मातम है, लगभग पूरा गाँव अपने परिजनों की मौत से शोकाकुल हुए विशिप्तों से भरा पड़ा है । गाँवों में तांत्रिकों औघड़ों का बसेरा है । यह समय अत्यंत उपयुक्त है दोनों बाप बेटी को वहां भेजने का, हाल ही में वहां हैजा फैला हुआ है, क्या पता मुंशी जी और उनकी बेटी वहां से वापस आ पाए या न आये । इसलिये उनके अंतिम दिनों में मैं उनका अपमान करने की इच्छा बिल्कुल भी नहीं रखता । आदमी यदि अंतिम यात्रा पर जा रहा हो तो उसे प्रेम से विदा करो, जाते जाते उसका मन मत दुखाओ । गरीब की बद्दुआ मत लो ।" त्रिलोक कुटिलता से मुस्कुराते हुए बोला । सेठानी अपने पति को आश्चर्य से देख रही थी, कमीनेपन में वो उनसे भी चार कदम आगे थे ।

□□□

अगले दिन कुलभूषण वापस आ गए, उन्हें बताया गया कि मुंशी जी अपनी बेटी के साथ उसके ननिहाल गए हुए है । प्रियंवदा का रिश्ता बचपन में ही किसी उच्च घराने के लड़के से हो गया था और विवाह का दबाव बनने लगा था । मुंशी जी का स्वास्थ्य सही नहीं रहता था, और नानी भी अंतिम साँसे गिन रही थी, उनके जीते जी वो प्रियंवदा का विवाह अपनी आँखों से देखना चाहती थी । नानी की अंतिम इच्छा और समाज के दबाव को स्वीकार करते हुए प्रियंवदा ने विवाह को मौन स्वीकृति दे दी और वे गाँव चले गए । कुलभूषण यह सब सुनकर अवसाद में आ गया । उसे प्रियंवदा से ऐसी आशा नहीं थी, भले ही लाख विवशताएं रही हों किन्तु वह एक बार तो सूचित अवश्य करती । संयोग से त्रिलोक की कही बात सच साबित हुई और मुंशी जी हैजे के चपेट में आ गए और दम तोड़ दिया । पिता की मृत्यु और कुलभूषण के भुला दिए जाने से प्रियंवदा अर्धविक्षिप्त सी हो गई । अब उसे सम्भालने वाला भी कोई नहीं था, वह दिन भर आंसू बहाती और रोती रहती । जमींदार

के यहाँ से समय समय पर आर्थिक सहायता मिल जाती थी जिससे उसे जीवन यापन की कोई समस्या नहीं हो रही थी । इसी मध्य कुलभूषण का विवाह भी तय हो गया । माता पिता और पुरखों की जमींदारी बचाने के लिए उसने भी समझौता करते हुए विवाह कर लिया । प्रियंवदा और दुखी रहने लगी, मुंशी जी मृत्यु से पूर्व उसे पुन: जमींदार के गाँव ना जाने का वचन लिया और उसे सम्पूर्ण बात बताई । प्रियंवदा शोकाकुल रहने लगी, उसके साथ घात हुआ था, कुलभूषण जिसे वह अपना सबकुछ मानकर सर्वस्व अर्पण कर चुकी थी, उसकी निष्ठुरता ने उसे पागल कर दिया था । किन्तु कुलभूषण को ऐसी किसी स्थिति का पता भी नहीं था, वह तो अब भी यही समझता था कि प्रियंवदा अपनी ससुराल में राजी ख़ुशी से रह रही है । दोनों एक दूसरे की स्थिति से पूर्णतया अनभिज्ञा थे । प्रियंवदा का मन वैरागी हो गया, वह अक्सर श्मशान के आसपास घूमती नजर आने लगी । उसे इस संसार से विरक्ति हो गई थी, उसके सम्मुख और कोई उद्देश्य था ही नहीं । कई-कई दिनों तक बिना खाए पड़ी रहती, ना उठने का होश ना भूख प्यास । श्मशान में रहने वाले अघोरियों एवं तांत्रिकों के सानिध्य में वह अपना समय व्यतीत करने लगी, श्मशान से सटे हुए एक कस्बे में गाँव से निष्काषित की हुई अर्धविक्षिप्त विचित्र महिलाओं की बस्ती थी, उन्हें चुड़ैल, और तन्त्र मंत्र के संदेह में निष्काषित कर दिया गया था । आसपास के अनेक गाँवों की निष्काषित महिलाएं वहां रहती थी, उनके सानिध्य में प्रियंवदा का सम्पूर्ण व्यक्तिमत्व ही बदल गया ।

इसी मध्य कुलभूषण की नवविवाहता पत्नी का अकस्मात रोग से देहांत हो गया, कुलभूषण अभी इससे सम्भल भी ना पाया था कि कुछ दिनों के अंतराल से उसी अनजाने रोग से उसकी माता की मृत्यु हो गई । गाँव में तरह-तरह की बातें फैलने लगी, प्रियंवदा और मुंशी जी के निकाले जाने के बाद उसके पिता की मृत्यु और कुलभूषण के वचनभंग के कारण वह विक्षिप्त हो गई थी और तन्त्र मंत्र काला जादू जानने वाली स्त्रियों के साथ मिलकर उसने मारण विद्या सीखी, उसी मारण विद्या का प्रयोग करके अब वह अपना प्रतिशोध ले रही है । पहले उसने अपनी विद्या से कुलभूषण की पत्नी को मारा और फिर उसकी माँ को । ऐसी बातों का सिर पैर नहीं होता, जितने मुंह उतनी बातें । हर कोई बढ़ा-चढ़ा कर बातें बनाने लगा, त्रिलोकनाथ और उनके समधी तक यह अफवाहें पहुंची और प्रियंवदा और कुलभूषण का इतिहास जानने के पश्चात इस बात पर मुहर लगा दी गई कि कुलभूषण की माँ और पत्नी की मृत्यु के पीछे तन्त्र मंत्र का हाथ है । रातों रात एक दल बनाया गया जो खंडीपुर की तरफ रवाना हो गया । त्रिलोकनाथ अपना प्रतिशोध चाहते थे, कुलभूषण शांति की तलाश में कुछ समय के लिए गाँव छोड़कर तीर्थ पर निकल गया । प्रियंवदा जहां रहती थी उस बस्ती में त्रिलोक, उनके समधी और कुछ आदमी जा धमके । प्रियंवदा सो रही थी, उसे बालों से घसीट कर झोपड़ी से निकाला गया । गाँव में कोलाहल मच गया, वैसे भी उस मलिन और शापित कस्बे में कोई नहीं जाता था, शापित बस्ती की

महिलाओं से किसी को कोई हमदर्दी नहीं थी । गाँव से कोई उस कस्बे की ओर नहीं गया । सभी जानते थे कि आज की रात बड़ी स्याह होने वाली है ।

□□□

"कलंकिनी, पापिनी ! डायन बन कर मेरे परिवार को निगल गई तू ।" त्रिलोक ने पूरी निर्दयता से उसके केश पकड़े हुए थे । उनके साथी अपनी अपनी दुनालियाँ ताने हुए थे । कसबे की सारी झोपड़ियों को घेरा जा चुका था । वहाँ की बदकिस्मत अर्धविक्षिप्त महिलाएं प्रतिरोध कर रही थी, किन्तु उन हट्टे-कट्टे और क्रूर गुंडों के समक्ष उनका कोई मुकाबला नहीं था । त्रिलोक और उनके समधी के आदेश पर उन सारी महिलाओं को लाठी और डंडो से बेतहाशा पीटा गया था, सभी लहूलुहान थीं । रोती कलपती तड़प रही थीं ।

"उन्हें क्यों प्रताड़ित कर रहे हो तुम ? तुम्हारा कलेजा तो मुझे दंडित करके ठंडा होता है ना, तो मुझे सजा दो, उन्हें क्यों ?" प्रियंवदा फुफकारते हुए बोली ।

"इन्हीं के कारण तूने ऐसी घृणित विद्याएँ सीखी हैं, डायन और चुड़ैल हैं यह सब । इस सारे गाँव कि मनहूसियत और मेरे परिवार के नाश में इन सबका हाथ है । आज मैं इस अभिशापित गाँव को इस मनहूसियत से मुक्ति देने आया हूँ । अपनी औकात देखी थी तूने ? मेरे बेटे से शादी करने के स्वप्न देख रही थी तू ? दो कौड़ी के नौकर की लड़की महलों की रानी बनने के स्वप्न देख रही थी तू ।" कहकर त्रिलोक ने उसे लात मारी, वह चोट से दोहरी होकर जा गिरी । वह हंसने लगी, यह बड़ी ही डरावनी हंसी थी, उसके नाक मुंह से खून बह रहा था लेकिन वह हँसते जा रही थी । बेतहाशा और निरंतर हंसती जा रही थी, उसकी हंसी सुनकर वहाँ उपस्थित सभी कि घिग्घी बंध गई । उसने अपने मुंह से बहता खून थूका, उसके बिखरे बाल अस्त व्यस्त उड़ रहे थे, पूरा शरीर धुल मिट्टी से सना हुआ था । कभी सुन्दरता की देवी प्रतीत होने वाली प्रियंवदा का चेहरा इतना विद्रूप हो चुका था कि मजबूत से मजबूत दिलवाला देख कर दहल उठे । त्रिलोक ने उसके चेहरे पर दुनाली के बट से पूरी निर्दयता के साथ प्रहार किया, वह खून फेंकते हुए भूमि पर जा गिरी लेकिन उसकी हंसी बंद नहीं हुई ।

"यह सच में डायन है ।" त्रिलोक दहशत में आकर बड़बड़ाया ।

"त्रिलोक !" प्रियंवदा इतनी जोर से दहाड़ी कि त्रिलोक के साथ साथ वहां उपस्थित सभी का खून निचुड़ सा गया ।

"अगर मैं डायन हूँ तो तू क्या है ? तू पिशाच है पिशाच । लोगों का खून पीने वाला पिशाच, उनका मांस तक नोंच-नोंचकर खाने वाला गिद्ध है तू । मुझे डायन कहने का अधिकार तुझे किसने दिया ? जा अपनी सूरत जाकर देख शीशे में । इस समय तुझसे भयानक चेहरा सारी दुनिया में किसी का नहीं होगा, तू शैतान है, शैतान है तू, आक थू ! खून पीने वाले कीड़े हो तुम ? इंसान के नाम पर गाली हो, तुम एक जहरीले कीड़े हो जो

गलती से मनुष्य देह में आ गए हो ।” प्रियंवदा ने त्रिलोक पर धिक्कार से थूक दिया, त्रिलोक सन्न रह गया ।

“मेरे सीधे साधे बाबा को अपने षड्यंत्र में फंसा कर यहाँ इस मरघट में मरने के लिए भेज दिया, उनके जीवनभर की वफादारी का यह मोल दिया तूने नीच ! पापी । एक पल को तेरा मन नहीं कांपा शैतान ? तू अपने कर्मों का फल भुगत रहा है, कुछ भी खाली नहीं जायेगा, तेरा किया तुझ पर ही लौट कर आया है । आह लगी है तुझे मेरे बेबस पिता की, बद्दुआ लगी है तुझे मेरे छलनी-छलनी हुए प्रेम की । तू जीवनपर्यन्त इस पीड़ा को भोगेगा । मुझे डायन कहा ना तूने ? मैं डायन नहीं हूँ, लेकिन अब मैं बनना चाहती हूँ, मैं डायन बनकर तेरा खून पीना चाहूंगी, तेरे समूचे निर्दयी परिवार का जीवन अभिशप्त करना चाहूंगी । हां, हूँ मैं डायन, तुझ जैसे शैतान के लिए मुझे यह भी स्वीकार है, बर्बाद होगा तू । तड़पेगी तेरी पीढ़ियां, तुम जैसे लोग अपनी दकियानूसी सोच और फायदे के लिए बेबसों को, औरतों को डायन और चुड़ैल घोषित कर देते हो ना ? मेरा शाप है तुझे और तेरे परिवार को कि तेरे घर में भी केवल डायन ही जन्म लेगी, आजीवन नर्क भोगेगा तू और तेरा परिवार । शाप है मेरा ।” रुदन करती प्रियंवदा के चेहरे पर त्रिलोक के समधी ने अपनी राइफल के बट से जोरदार प्रहार किया, वह लुढ़क गई । वहां उपस्थित सभी सन्न थे, हवायें भी एकदम रुक सी गई थी, मशालों से सुलगती लपटों के तड़तड़ाने के स्वर सुनाई दे रहे थे । त्रिलोक ने एक नजर अपने साथियों की ओर देखा और कोई संकेत किया । घायल पड़ी सभी महिलाओं को घसीट-घसीट कर उनके झोपड़ों में फेंक कर झोपड़ों को आग लगा दी गयी । महिलाएं चीखती रहीं चिल्लाती रही, जलते सुलगते मांस की गंध चारों ओर फ़ैल रही थी । गाँव वाले प्रसन्न थे कि आखिर किसी ने तो उन्हें इस मनहूसियत से छुटकारा दिलाने का काम किया । उस रात हैवानियत अपने चरम पर थी, शैतान मानव रूप में विचर रहा था । जलते झोपड़ों से चीखे गूंजती रही, कुछ ही देर में चीखे शांत हो गई, झलते झोपड़ों के मध्य जीवन के अंश राख हो चुके थे । पन्द्रह से अधिक स्त्रियों को यह भयानक आग लील गई थी । आज वह गाँव एक महाशमशान में बदल चुका था । ग्राम वासी प्रसन्न थे । वे हैवानों की भांति ठहाके लगा रहे थे, हवा अब तेज होने लगी थी । आंधी आने की सम्भावना बढ़ चुकी थी । त्रिलोक ने प्रियंवदा की तरफ घृणा से देखा, वह आँखों में बेबसी, लाचारी और क्रोध लिए इस दृश्य को देख रही थी, आज वह मनुष्य के क्रूरता की इन्तेहा देख रही थी ।

“नहीं ! तेरे लिए इतनी आसान मृत्यु नहीं चुनी है मैंने । कीड़ा कहा ना हमें ? तुझे बताते है कीड़े क्या होते है । उठाओ इसे और खजुराई दलदल के पास ले चलो । त्रिलोक आदेश मिलते ही उसे बेरहमी से उठाया गया और वहाँ से कुछ ही दूर स्थित दलदली जमीन की तरफ ले जाया गया । वह बीहड़ और दलदली स्थान था, वहां का वातावरण अत्यंत विचित्र था, गाँव का कोई भी व्यक्ति उस स्थान पर नहीं जाता था । उस स्थान के बीहड़ों में सैकड़ों जहरीले जीवों का वास था । कनखजूरों के झुण्ड के झुण्ड वहां पाए जाते थे, हजारों की

संख्या में बड़े भयानक कनखजूरे वहाँ रेंगते थे । उस स्थान की कल्पना मात्र से सभी सिहर उठे थे । त्रिलोक उस स्थान पर पहुँच गया और प्रियंवदा की तरफ एक नजर देखा । उसके चेहरे पर अब भी मुस्कुराहट थी ।

उनके सामने बीहड़ था, एक ओर दलदली जमीन दूसरी तरफ ऊँचे नीचे टीले । वह स्थान अँधेरे और गहरे गड्ढों से भरा हुआ था । प्रियंवदा छटपटाई लेकिन उसकी पकड़ छूट नहीं पाई, त्रिलोक ने पूरी शक्ति और निर्दयता के साथ उसे उस बीहड़ में फेंक दिया । वह एक अँधेरे गड्ढे में जा गिरी, गिरते ही प्रियंवदा को अपने शरीर पर कुछ रेंगता महसूस हुआ । त्रिलोक ने अपनी मशाल उस गड्ढे के समीप की । वहां का दृश्य देखकर उसकी आत्मा तक कांप उठी । सैकड़ों की संख्या में बड़े-बड़े कनखजूरे वहां रेंग रहे थे, आतंकित प्रियंवदा के शरीर पर भी अनगिनत कनखजूरे रेंग रहे थे । वह चीखती रही चिल्लाती रही, वह कीड़ों को देखकर भयाक्रांत होकर चीख रही थी । सैकड़ों डंक एक साथ उसके शरीर में पैवस्त होते जा रहे थे ।

त्रिलोक और उसके साथी उसे छटपटाता हुआ देखते रहे ।

"मशाल डाल दो त्रिलोक ।" त्रिलोक के समधी ने कहा, उससे यह देखा नहीं गया । अपने साथ लाया हुआ तेल का पीपा उन्होंने उस गड्ढे में पलट दिया । कनखजूरे तेल पड़ते ही भागने से लगे । उन्हें भागते देखकर त्रिलोक ने अपनी मशाल उसी गड्ढे में झोंक दी, एक झटके से भयंकर अग्नि का गुबार उठा और गड्ढा किसी भट्टी की मानिंद दहक उठा । लेकिन आश्चर्य प्रियंवदा की एक भी चीख नहीं उभरी, एक भी कराह नहीं सुनाई दी ।

"मैं मरूंगी नहीं त्रिलोक, मैं नहीं मरूंगी । तेरे परिवार पर श्राप बनकर हमेशा रहूंगी, हमेशा रहूंगी, जिसने जिसने आज की रात हैवानियत दिखाई उनमें से किसी को नहीं छोड़ूंगी । सब मरेंगे, लेकिन तू रहेगा, तू अपनी बर्बादी अपनी तड़प देखेगा, देखेगा ..तू..अ.." चीखता स्वर धीमा होता चला गया और शांत हो गया, अग्नि ने उसे अपने भीतर समेट लिया था । प्रियंवदा सदैव के लिए शांत हो चुकी थी । त्रिलोक के चेहरे पर अब भी घृणा के भाव थे ।

"चलो ! खत्म हुई इसकी कहानी, इस गाँव को भी इस नरक से मुक्ति मिली ।" कहकर वे वापसी के लिए पलटे । आंधी तेज हो चली थी, गाँव में पहुँचते ही वहाँ का दृश्य देखकर सभी अवाक रह गए । सारा गाँव धू-धू कर जल रहा था, कोई घर ऐसा नहीं बचा था जहाँ आग ना लगी हो । हर दिशा में चीख चिल्लाहट मची हुई थी, मौत का तांडव हो रहा था वहाँ ।

"ये कैसे हो गया ? सारा गाँव कैसे जल रहा है ?" त्रिलोक की आँखों में खौफ की छाया स्पष्ट देखी जा सकती थी ।

"उन चुड़ैल औरतों की बस्तियों में लगाई गई आग शायद आंधी के कारण गाँव भर में फ़ैल गई है ।" समधी जी फटी-फटी आवाज में बोले ।

"लेकिन इतनी जल्दी सारे गाँव में आग कैसे फ़ैल गई, वह भी इतनी भयानक ।" एक साथी ने प्रश्न किया ।

"श्राप है यह, उन चुड़ैलों का कहर टूटा है सारे गाँव पर । जैसे उन्हें जलाया है उसी तरह से सारा गाँव जल रहा है । यहाँ कोई नहीं बचा, चारों ओर जली हुई लाशें ही है । हे भगवान उसने हमें भी श्राप दिया था, उसकी बात सच साबित हो रही है ।" दूसरा साथी दहशत से रोने ही वाला था ।

"फौरन यहाँ से निकलो, भागो इस गाँव से । यहाँ चारों तरफ आग लगी है, जो भी यहाँ रहेगा वो मारा जाएगा, भागो ।" त्रिलोक अपनी जान छुड़ा कर भागा, चारों ओर बस आग ही आग फैली हुई थी, क्या घर, क्या इंसान, पेड़ों तक पर आग लगी हुई थी । एक विशालकाय जलता हुआ ठूंठ त्रिलोक के समधी के ऊपर आ गिरा, ठूंठ भयानक रूप से जल रहा था, वह चीखता रहा चिल्लाता रहा लेकिन उसे कोई नहीं बचा पाया । सबके सामने उसने तड़पते हुए अपने प्राण त्याग दिए, उस विशालकाय जलते ठूंठ को हटा पाना उनके वश के बाहर की बात थी, दो लोगों न प्रयास किया भी था की वो भी उस आग की चपेट में आ गए और इतनी इतने भयंकर रूप से आग में घिर गए जिसमें जीवित बचने का कोई प्रश्न ही नहीं था । बड़ी अजीब आग थी वह, जिसे छू भर लेती उसे पूर्णतया अपने आगोश में ले लेती, गाँव की प्रत्येक जीवित वस्तु ख़ाक हो चुकी थी । त्रिलोक अपने साथियों के साथ किसी प्रकार से गाँव की सीमा से बाहर निकल पाया । दोबारा उसकी हिम्मत नहीं हुई उस गाँव की तरफ रूख करके सोने की । समय बीतता चला गया, कुलभूषण को बताया गया कि जंगल की आग ने सम्पूर्ण गाँव को घेर लिया जिसमें प्रियंवदा भी मारी गई । त्रिलोक ने अपने बेटे से भले झूठ बोल दिया लेकिन कुलभूषण उड़ती-उड़ती खबरों और बातों से सारी वस्तुस्थिति जान गया । उसे अपने पिता से नफरत सी हो गई लेकिन उसने कभी जाहिर नहीं किया । उन दो सालों में इस अग्निकांड में शामिल प्रत्येक व्यक्ति विचित्र मृत्यु को प्राप्त हुआ, त्रिलोक अकेला ही था जो उस काण्ड के पश्चात अब तक जीवित था । वह जीवित था क्योंकि उसे आमरण शाप भोगना था, प्रियंवदा का श्राप । कुलभूषण ने कुछ वर्षों पश्चात विवाह कर लिया, सरकार बदलने के पश्चात जमींदारों की जमींदारियां भी समाप्त होने लगी । त्रिलोक अब जमींदार नहीं रहे किन्तु उनके रौब में कतई कमी नहीं आई, कुलभूषण की सन्तान के समय त्रिलोक को प्रियंवदा के शाप की याद आई । किन्तु उन्हें पोता हुआ और वह श्राप निष्फल हो गया । उनके घर किसी डायन-वायन का आगमन नहीं हुआ, हालांकि त्रिलोक उसके पश्चात कभी चैन से नहीं सो पाए, यही हाल कुलभूषण का भी रहा, उन्हें मानसिक शांति कभी नहीं मिली । त्रिलोक सर्वाधिक

आयु तक जिये लगभग एक सौ पन्द्रह वर्ष की आयु में उनकी मृत्यु हुई । अपनी वृद्धावस्था में उसे चारों ओर केवल प्रियंवदा और जलाई गई महिलायें ही दिखाई देने लगीं थीं, वह पागल हो गया और एड़ियाँ घिस-घिस कर मरा ।

कुलभूषण की सन्तान युवावस्था तक पहुँचने लगी, गाँव जस का तस ही रहा, उस गाँव की कहानियां और बढ़ती चली गई । कुलभूषण ने उस शाप की बात पर विश्वास नहीं किया और अपने बेटे को बेहतर भविष्य के लिए बम्बई भेज दिया, यहीं कालान्तर में उनके बेटे ने विवाह भी किया, उनके बेटे से दो बच्चे हुए, पहला लड़का जिसका नाम रखा गया हर्ष, हर्ष का मुंडन समारोह गाँव में ही करवाया गया, उस समय सोनल पेट में सात माह की थी । गाँव पहुँचने के पश्चात समय से पहले ही सोनल का जन्म हो गया । वह सातवें महीने में जन्मी थी, सोनल की हालत कमजोर थी, वह कमजोर पैदा हुई थी और जन्म के पश्चात रोई भी नहीं, हैरानी की बात थी कि प्रसव में सहायता करने वाली दाई ने कहा कि कन्या के चेहरे पर जन्म के पश्चात मुस्कान थी । शायद प्रियंवदा का श्राप फलीभूत हो रहा था ।

□□□

“तो तुम्हारे कहने का मतलब क्या है ? तुमने जो भी कुछ बताया वह वाकई दर्दनाक और डरावनी कहानी है लेकिन उसका तुम्हारी शादी और तुमसे क्या सम्बन्ध ?”मैंने सोनल के चेहरे की तरफ देखते हुए कहा ।

उसने मेरी ओर देखा, उसकी बड़ी-बड़ी आँखों में आंसू थे, उसके होंठ कांप रहे थे, पल भर में सोनल के चेहरे पर असीम पीड़ा सी उभर आई जिसे देख कर मेरा मन एकदम से विचलित हो गया ।

“अरे क्या हो गया ? तुम रो क्यों रही हो ?” मैंने उसके सुंदर से मुखड़े को अपनी हथेली से ऊपर उठाया और आंसू पोंछे, मैं उसकी आँखों में आंसू देखकर अजीब सी बेचैनी महसूस कर रहा था ।

“मुझे पता है तुम मेरी बात का विश्वास नहीं करोगे, तुम्हें यह मजाक लगेगा, या दकियानूसी बातें लगेंगी, लेकिन प्रियंवदा कहीं और नहीं गई है, वह हमेशा मेरे साथ है, मेरे भीतर है । जब उसका मन चाहे तब वह मुझपर हावी हो जाती है । मेरे इस शरीर में मैं अकेली नहीं हूँ, मैं बचपन से उस डर के साये में जीती आ रही हूँ । और शायद आगे भी उसी के साये में पूरी जिन्दगी गुजरेगी ।” वह सिसक पड़ी मुझे कुछ समझ नहीं आया तो मैंने उसे कसकर अपने सीने से लगा लिया । उसके माथे को चूम लिया ।

“तुम यह सोच भी कैसे सकती हो कि मैं तुमपर विश्वास नहीं करूंगा ? तुम्हारी तकलीफ को मजाक समझूंगा ? मैं मुम्बई की उस बरसात से तुम्हारे साथ रहा हूँ, फिर भी तुम्हें लगता है कि मैं तुम्हारी बातों को दकियानूसी कहूंगा ? उस पर यकीन नहीं करूंगा ? ऐसा बिलकुल नहीं है, मैं तुम पर यकीन करता हूँ और आख़िरी समय तक करता रहूँगा,

कोई प्रियंवदा फ्रीयंवदा तुम्हें मुझसे अलग नहीं कर सकती ।" मैं भावनाओं के आवेग में बहता चला गया । मेरे इतना कहते ही सोनल ने मुझे अपने से परे धकेल दिया और पीछे हट गई । उसका इस प्रकार मुझे धकेलना मुझे समझ में नहीं आया । मैंने उसकी और देखा सोनल की आँखों की पुतलियां तीव्र गति से यहाँ वहां घूम रही थी, उसके शरीर में कम्पन सा होने लगा था । उसके होंठ बुरी तरह से फड़फड़ा रहे थे । मैं घबरा गया, मुझे समझ ही नहीं आ रहा था कि मैं क्या करूँ, उसी समय हर्ष वहाँ आ पहुंचा ।

"तू यहाँ है ? वहाँ मम्मी पापा तुझे खोज रहे है ।" हर्ष ने सोनल को झिंझोड़ा तो सोनल मानो नींद से जागी, एक पल में ही वह ऐसे सामान्य हो गई जैसे कुछ हुआ ही नहीं हो । उसने मेरी ओर बेचारगी भरी नजरों से देखा और हर्ष के साथ चली गई । उसकी प्रियंवदा वाली बात में कुछ तो सच्चाई अवश्य थी ।

□□□

कोमल के घरवालों की तरफ से आज शगुन के तौर पर कपड़े और कुछ जेवर वगैरह भिजवाये गए थे । इससे पहले कि आप पूछे यह कोमल कौन है, तो आपको बता दूँ कोमल हमारे साले जी की होने वाली धर्म पत्नी यानी हमारी सलहज है, यहाँ आकर पता चला कोमल का पैतृक गाँव सोनल के गाँव से कुछ पचास किलोमीटर के अंतर पर पड़ता है । कोमल के परिवार वाले भी मुंबई में ही सैटल हो चुके थे । गाँव की उनकी सम्पत्ति और मकान उनके रिश्तेदारों के हवाले थे, वैसे उनके रिश्तेदार अब तक एक संयुक्त परिवार के तौर पर रहते आये है जिस कारण जमीन जायदाद को लेकर कभी कोई वाद विवाद नहीं हुआ । कोमल के माता पिता को भी गाँव की सम्पत्ति में कोई विशेष रुचि नहीं थी, वह तो बस कभी देस की याद आ गई तो दिलवाले दुल्हनियां ले जायेंगे वाले अमरीश पूरी की तरह उनके पिताजी गाँव आ जाया करते थे । बस इतना ही था उनका गाँव से सम्बन्ध, अब जब कोमल का विवाह गाँव से ही होने वाला था तो रिश्तेदारों ने कमान सम्भाल रखी थी, शर्त यह रखी गई थी कि शादी कोमल के गाँव में ना होकर हर्ष के गाँव में होगी, यह निर्णय दादाजी की खराब तबीयत को देखकर लिया गया था ।

वातावरण सूरज की लाली से दमक रहा था, शाम के चार बज रहे थे । सर्दियों के दिनों में अँधेरा जल्दी हो जाता है । उसी समय उस आलिशान मकान के सामने गाड़ियों का एक काफिला धूल उड़ाते हुए आ पहुंचा । दादाजी अपनी व्हीलचेयर पर आंगन में बैठे गाड़ियों के उस जत्थे को देख रहे थे । अंकल आंटी और हर्ष भी मकान से निकलकर आंगन में आ पहुंचे थे । मैं और केशव अभी यह सब देखकर आश्चर्यचकित ही थे कि किसी के फुसफुसाने की भयंकर आवाज मेरे कानों में पड़ी । मैं लगभग उछल ही पड़ा और गिरते-गिरते बचा । केशव ने पीछे मुड़ कर देखा तो एक दीन-हीन अधेड़ सा व्यक्ति हमारे पीछे खड़ा पाया । वह एकटक हमें देखे जा रहा था, उसकी आँखें मानो शून्य में ताक रही थी,

चेहरे पर बड़ी विचित्र सी मुस्कान थी । हमें घबराया देख कर वह भद्दी सी हंसी हंसा जिसके फौरन बाद उसे मानो खांसी का दौरा सा पड़ गया ।

“अरे चचा मुस्कुराने भर से आत्मा कांप गई है, यदि गलती से ठहाका लगा बैठे तो यमलोक के दर्शन ही ना कर जाओ आप ?” केशव ने स्वयं को संयत करते हुए कहा ।

“ये रामजस जी है, हमारे पुराने वफादार है । परिवार के सदस्य ही समझो । दादाजी ने इन्हें तब सहारा दिया था जब इनके माता पिता अकाल में मृत्यु को प्राप्त हुए थे, रामजस काका ने हमें बचपन में अपनी गोदी में खिलाया है ।” सोनल ने कहा, वह मेरे बिलकुल समीप ही आकर खड़ी हो गई थी, मैंने उसकी तरफ देखा । उसने महरून रंग का सलवार सूट पहन रखा था, उसी रंग से मैच करती लिपस्टिक उसके होंठों पर कमाल लग रही थी । उसे देखकर मेरे दिल ने एकदम से धड़कना ही बंद कर दिया ।

“रामसज काका, आई लव यू ।” मेरे मुंह से निकला, केशव फौरन मेरा साथ छोड़कर अंकल और हर्ष की ओर भाग निकला तब मुझे अपनी गलती का अहसास हुआ ।

“मेरा मतलब था रामजस चाचा तुम्हारे परिवार का हिस्सा है तो मेरे लिए भी आदरणीय है, आप सब की तरह मैं भी उनसे अपनापन महसूस करने लगा हूँ ।” मैंने झेंपते हुए कहा । सोनल मुस्कुरा उठी और उसी पल उसे दादाजी ने बुला लिया, इस पल मुझे दादाजी का उसे बुलाना बिलकुल भी पसंद नहीं आया । आंगन में स्थित शामियाने में ही आलिशान कुर्सियां बिछी हुई थी, गाड़ियों से निकलने वाले व्यक्ति एकदम किसी फ़िल्मी साहूकार या जमींदारों की टोली जैसे प्रतीत हो रहे थे, उनके साथ में कुछ सहायक वगैरह भी थे जिन्होंने बड़े-बड़े बक्से उठाये हुए थे । यह निश्चित रूप से किसी प्रकार का शगुन था, सभी की खूब आवभगत की गई, केशव भी उनकी आवभगत करने में इस तरह जुटा हुआ था मानो उसकी बहन के देखुआर आये हुए हो । साला दामाद हमको बनना है और आदर्श लड़के ये बने जा रहे थे । गलती मेरी ही थी, मैं रामजस चचा और सोनल के खयालों में ही अटका रह गया ।

अंत समय में मैंने भी कुछ कामों में हाथ बंटा कर अपना रुतबा फिर बना लिया, जबकि इसकी कोई जरूरत ही नहीं थी । हर्ष के परिवार के पास पर्याप्त रूप से नौकर चाकर थे जो यह काम आसानी से कर सकते थे, लेकिन मेरे भीतर असुरक्षा की भावना कुलबुला रही थी । मेहमानों के जाते-जाते अँधेरा हो गया था, धीरे-धीरे चहल पहल भी खत्म हो गई, हम खाना वगैरह खा कर अपने अपने कमरों की ओर बढ़ गए । सोनल अपने परिवार के साथ शगुन का सामान देखने में व्यस्त थी, उसके चेहरे की चमक देखने लायक थी लेकिन हमें कोई देखने का मौक़ा दे तब न, शादी ब्याह वाले घर में सैकड़ों काम होते है ऐसे में किसी को किसी की सुध लेने की फुर्सत ही नहीं थी । अब शादी कुछ ही दिनों पर थी, कल से सोनल के बाकी नाते रिश्तेदार भी पहुँचने आरंभ हो जाने थे, उसके बाद तो वैसे

भी समय मिलना मुश्किल था । "क्या हुआ ? इतना बुझा बुझा सा क्यों है ?" केशव बिस्तर पर रजाई में घुसा हुआ था ।

"कुछ नहीं यार, बस आज दिन भर सोनल ...." मैंने अपने आप को रोक लिया ।

"अबे समझदार बन भाई, सोनल समय निकाल कर बीच बीच में तुझसे किसी न किसी बहाने से मिल ही रही है, लेकिन तुझे लगता है वह मुंबई में जैसे समय देती थी वैसा ही समय यहाँ भी दे, तो भाई यह तेरी गलतफहमी है । यहाँ इस माहौल में ऐसा बिलकुल भी सम्भव नहीं है, यहाँ वह हर समय नाते रिश्तेदारों के बीच घिरी रहती है, हजारों काम और रीति रिवाज चल रहे है, ऐसे में टाइम मैनेज करना बड़ा डिफिकल्ट टास्क है ब्रो ।" केशव ने जो बताया उसमें ऐसा कुछ भी नहीं था जो मैं नहीं समझता था, इसके बावजूद उसका मेरे सामने होकर भी साथ ना होना मुझे बेचैन कर देता था । अब ठंड बढ़ने लगी थी, गाँव की कुछ महिलाएं मुख्य हॉल में इकट्ठी थी, शायद संगीत या कोई गाने बजाने का कार्यक्रम था । काफी देर तक प्रोग्राम चलता रहा, गीत संगीत और नृत्य होता रहा । कुछ समय बाद कार्यक्रम समाप्त हुआ और महिलाएं अपने अपने घरों की ओर चली गई । अब जाहिर सी बात थी, सोनल का आना मुश्किल था । मैंने खिड़की के पट बंद कर दिए, हमारा कमरा मकान के पिछले हिस्से में था, यहाँ की खिड़की से आम के बगीचे दिखाई देते थे, भले ही दिन में देखने में ये बड़े सुंदर लगते है लेकिन रात में इन्हें देखना किसी बुरे सपने से कम नहीं था । आम के घने पेड़ों, दूर-दूर तक फैले खेत, झाड़ियाँ और सरसराती हवा मिलकर एक भयानक से सन्नाटे का निर्माण करती थी, पता नहीं क्या बात थी कि यहाँ इस माहौल में झींगुर तक खामोश हो गए थे । हमारे दरवाजे के खुलने की भयानक आवाज हुई तो हम दोनों ने चिहुँक कर उस तरफ देखा, रामजस हाथ में दो गिलास लिए खड़ा था ।

यह हवेलीनुमा मकान, यह सुनसान सा गाँव । आसपास घना जंगल, मरघट सी मनहूसियत, हॉरर फिल्मों में दिखाये जाने वाले रहस्यमई किरदारों जैसा रामजस, और सर्विसिंग की मांग करते दरवाजे, जो हर बार खोलने बंद करने पर प्राण सूख जाने वाली आवाजें किया करते थे ।

मिशन आरम्भ

रात के लगभग पौने ग्यारह बज रहे थे, हम तीनों अब उस भूतिया सड़क पर थे जिसके बारे में अनेकों कहानियां सुनी जाती थीं । रामजस अकेला व्यक्ति था जो एक रात में अनेकों भूतों से बच कर लौट आया था । हालांकि सामान्य हालातों में यह कहानियां गप्प प्रतीत होती लेकिन सोनल से मिलने के बाद से अब तक मैं इतनी चीजें देख चुका था कि मुझे अब इन चीजों के बारे में जानकर अब ख़ास हैरानी नहीं होती थी, इनके अस्तित्व को नकारने का सवाल ही नहीं उठता था । आखिर सोनल के अनुसार वो एक डायन है और मैं एक डायन के प्यार में गिरफ्तार हो चुका था । इन चीजों पर यकीन करना ना करना अलग बात थी और सोनल को डायन मान लेना अलग । वह डायन तो बिल्कुल भी नहीं थी, लेकिन उस पर उस प्रियंवदा का साया अवश्य था । प्रियंवदा उसके व्यक्तित्व और शरीर पर कब्जा कर चुकी थी । और मैं जो उससे प्यार करता था, हर हाल में उस प्रियंवदा नाम के शैतान के साये से सोनल को आजाद करना चाहता था । हमारी योजनानुसार हम उस सड़क के आरम्भ में खड़े थे । केशव मेरी पिछली सीट पर बैठा था और हर्ष अकेला अपनी बाइक पर सवार था, रात गहरी होने के लिए हमने उस स्थान पर लगभग आधा घंटा प्रतीक्षा की । वह सड़क हर गुजरते समय के साथ और भयानक होती जा रही थी, झींगुरों की किर्र-किर्र के बीच अचानक से चलती हवाओं के झोंके से सड़क के दोनों किनारों पर जमी हुई सरपतों में हलचल सी होती जिससे ऐसी आवाजें आती मानो उसमें सैकड़ों जीव दौड़ रहे हो । ऐसी आवाजें हमारा दम खुश्क करने के लिए काफी थीं ।

"एक बार फिर सोच लो प्रीतम । हम इन चीजों को हल्के में ले रहे है ।" केशव ने कहा, अब उसके भीतर का घोस्ट हंटर और पैरानॉर्मल इन्वेस्टिगेटर कहीं खो चुका था ।

"मैंने सोच लिया है, अगर तुम लोगों को कोई शक हो या डर लग रहा हो तो वापस जा सकते हो, अब मैं यहाँ से तो खाली हाथ नहीं जाऊंगा ।" मैंने निश्चय कर लिया था । हालांकि मन तो यही कर रहा था कि यहाँ से भाग जाऊं, भागने का खयाल आता भी तो सामने सोनल का चेहरा घूम जाता था, वह इस तकलीफ को अपने जन्म के साथ से झेलती आ रही है । जिस डर को मैं आज महसूस कर रहा हूँ उस डर के साथ उसने अपनी अब तक की जिन्दगी काटी है । अब और नहीं, मैं प्यार करता हूँ उससे । कम से एक प्रयास तो कर ही सकता हूँ, यूँ हाथ पर हाथ धरे उसे मुझसे अलग होते नहीं देख सकता ।" मेरी आँखों में नमी सी महसूस हुई जिसे मैंने फौरन अपनी हथेली से पोंछ दिया, हालांकि अँधेरे में केशव और हर्ष को इन आंसुओं का पता भी नहीं चला ।

"और तुझे तो बड़ी चुल्ल थी ऐसी पैरानॉर्मल चीजों की खोजबीन करने की, अब नहीं करेगा ? चल आगे बढ़, हमें रास्ता बता । या यह सब नहीं देखा अपनी फिल्मों में ? कही

किसी किताब में इसका जिक्र नहीं है क्या ?" मैंने केशव की ओर देखकर कहा ।

"भाई यह सब देसी भूत है, ऐसे भूतों की मुझे कोई जानकारी नहीं और मैं कोई तांत्रिक तो हूँ नहीं जो यह सब जानना जरूरी है । केवल एक जिज्ञासु आदमी हूँ भाई, जिसे जानकारी चाहिए बस । मुझे क्या पता था कि एक दिन मुझे यही सब करना पड़ेगा ।" केशव का बस रोना ही बाकी था । मैंने बाइक स्टार्ट की, हेडलाईट की रोशनी जंगल से घिरे उस मार्ग पर पड़ी । दूर-दूर तक फैली हुई पेड़ों की शाखाएं आपस में गुत्थमगुत्था होकर एक गुफा सी शक्ल ले रही थी, इन्ही गुफाओं के मध्य से वह मार्ग गुजर रहा था जहाँ हमारी मौत, मेरा मतलब मंजिल थी । इस भयानक सड़क और उसपर फैली हुई शाखाओं को देखकर मेरे प्राण ही सूख गए, यहाँ तो दिन में भी सूरज की रोशनी नहीं पहुँच पाती होगी । अब सोचना व्यर्थ था मैंने बाइक उसी मार्ग पर डाल दी, मेरे पीछे-पीछे हर्ष भी निकल लिया । केशव कोई मंत्र बड़बड़ा रहा था या ऐसे ही डर के मारे अंट शंट बक रहा था यह पता नहीं चला ।

पूरी सड़क पर केवल हमारी बाइक के धड़धड़ाने की आवाजें ही गूंज रही थी, दिल में धुकधुकी सी हो रही थी । हमारे प्रवेश करते ही हवायें मानो और तेज हो गई थी । दूर कहीं सियारों की टोलियों में रुदन शुरू हो गया, यह एकदम परफेक्ट हॉरर सीन का माहौल बन रहा था । हम धीरे-धीरे आगे बढ़ते रहे । मेरी नजरें अँधेरे में दिखती परछाइयों तक को देखकर डर जाती थी, अचानक ही प्रतीत होता जैसे मेरे समीप से कोई साया गुजरा हो, अभी उस अनुभव को ठीक से महसूस भी नहीं किया था कि सिर के ऊपर से भी किसी साये के गुजर जाने की अनुभूति हो जाती । यह मेरा वहम भी हो सकता है, रात में ऐसी सुनसान राहों से गुजरते समय हमारा डर हमें ऐसी ऐसी आकृतियाँ दिखाता है जो हमने कभी सोची भी नहीं थी । सब दिमाग का खेल है, आप जितना डरोगे आपको चीजें उतना ही परेशान करेंगी । भले ही मैं इस समय यह थ्योरी बता रहा हूँ लेकिन उस समय इस थ्योरी की बत्ती बन चुकी थी । मेरे कानों में किसी के हंसने की हल्की ध्वनि सुनाई देने लगी थी ।

"अबे प्रीतम ! कुछ सुनाई दिया ? जैसे कोई महिला रो रही हो ।" केशव के कहने से मुझे यकीन हो गया कि यह मेरा वहम नहीं था और ना ही मेरे मन का डर था । यहाँ वहां नजरें दौड़ाते समय हमें जंगलों के बीच कोई परछाई सी दिख रही थी, जैसे कोई महिला घूँघट ओढ़े हुए उन जंगलों के बीच मातम मना रही हो । एकाध बार और ऐसा महसूस होने पर हमें अहसास हो गया कि अब खेल शुरू हो चुका है । हमारी बाइक भले ही आगे भाग रही थी, लेकिन वह महिला परछाई पीछे नहीं छूट रही थी । हर बार वह हमारे आसपास के जंगलों में उसी अवस्था में दिखाई दे जाती थी । हमारी बोलती बंद हो चुकी थी, हर्ष डर के मारे मेरी बाइक के एकदम पास ही चल रहा था, वह अपने दाएँ बाएँ तक नहीं देख रहा था ।

अचानक ही बड़ी तेज हंसी का स्वर गूंजा और हमारी बाइक लड़खड़ाई, बाइक जंगल के मध्य ही किसी पेड़ से टकरा जाती लेकिन समय पर मैंने बाइक को संभाल लिया । यहाँ दोनों तरफ बांस के घने पेड़ थे, चलती हवा के साथ वे बांस बड़े ही अजीब और डरावने स्वर पैदा कर रहे थे, मानो सैकड़ों चुड़ैलें वहाँ बैठी कराह रही हो । हर्ष भी हमें रुकता देख कर हमारे समीप आ गया ।

“यहाँ क्यों रुके हो ?” वह बोला और घबराकर यहाँ वहां देखने लगा । केशव ने फटाफट अपने बैग से निम्बू निकाला ।

“अबे रहने दे, यहाँ इसकी जरूरत नहीं है । वो हमारे आसपास ही है, देखा नहीं ? वो हमारा पीछा कर रही है, हमारे चारों ओर घूम रही है ।” मैंने उसे निम्बू वाला टोटका करने से रोका, मुझे स्टेशन पर बिगड़े हुए हालात अब भी याद थे, यहाँ पता नहीं क्या से क्या हो जाए । अचानक ही कोई हमारे पीछे से लहराते हुए निकल गया, हमने घबराकर उस दिशा में देखा, वहां केवल एक भयानक सी हंसी ही गूंजती सुनाई दे रही थी । हम एक दूसरे को पकड़ कर खड़े थे, यहाँ आने का फैसला भले ही कर लिया था लेकिन अब यहाँ पहुँचने के बाद मुझे करना क्या है यही नहीं पता था । मैं गलती कर चुका था, अपने चक्कर में मैंने केशव और हर्ष की जान भी जोखिम में डाल दी थी ।

“प प्रीतम ।” हर्ष का गला बैठ सा गया ।

“हां..”

“वो हमारे सामने सड़क के दूसरे छोर पर देखो ।” हर्ष ने कहा, उसके होश गुम से हो रहे थे । केशव और मैंने उस ओर देखा, वहाँ एक महिला खड़ी थी । उसकी साड़ी का पल्लू हवा में लहरा रहा था, चेहरे पर शायद घूँघट था । वह आश्चर्यजनक रूप से लम्बी थी, नहीं वह लम्बी नहीं थी बल्कि वह हवा में लगभग तीन फीट ऊपर लहरा रही थी, उसके पाँव जमीन पर नहीं थे । हमारी जान बस निकलने ही वाली थी । हम एक जीती जागती चुड़ैल देख रहे थे, मेरा मतलब मरी हुई चुड़ैल । वह बहुत ही दर्दनाक स्वर में कराही, उसकी कराह उस वीराने में गूंज उठी । हम कुछ कहते या बोलते उसके पहले ही वह पलक झपकते ही सड़क पार करके हमारे सामने आकर खड़ी हो गई । एकदम सामने, लगभग दो फीट के अंतर पर । वह बड़ी जोर से चीखी, उसकी चीख सुनकर बस हमारी पतलून गीली होते-होते रह गई ।

उसने अपना हाथ बढ़ाया, उंगलियाँ सामान्य से डेढ़ गुना लम्बी, अजीब और बदसूरत सी थी, उस पर किसी जानवर की भांति काले काले नुकीले और पैने नाखून उभरे हुए थे । वह हमारे और समीप आई, उसके चेहरे से उठती भाप हमने साफ़ तौर पर महसूस की थी । हवा बिल्कुल ही ठंडी हो चुकी थी, हमने शायद गलती कर दी थी । बाइक रोकनी नहीं चाहिए थी । यदि बाइक चलती रहती तो वह बाइक की पिछली सीट पर चुपचाप आकर

सवार हो जाती जिसके बाद काम थोड़ा आसान हो जाता। लेकिन हमने बाइक रोक दी थी इसलिये शायद वह अत्यधिक क्रोधित थी, उसने मेरी गर्दन दबोच कर मुझे उठा ही लिया, उसके नाखून मेरी गर्दन में धंस गए थे, खून बहकर उसकी भद्दी बाँहों पर फ़ैल रहा था।

"ज.जय हनुमान...जय..हनुमान ग.. ज्ञान गुण सागर..." मेरे मुंह से निकला। चुड़ैल क्षण भर को अपने स्थान पर ठिठक सी गई। उसके मुंह से एक कराह सी निकली जिसे सुनकर हमारी हड्डियां कीर्तन कर उठी। मुझे खुद नहीं पता किस शक्ति के वशीभूत होकर मैं चालीसा बड़बड़ाने लगा था।

"भ भाई, यह काम कर रहा है, आगे बोल, आगे बोल.." केशव को उम्मीद की किरण दिखाई देने लगी। चुड़ैल वाकई अपने स्थान पर यूँ ठिठक गई थी मानो उसके सामने कोई दीवार आ खड़ी हो गई हो।

"हा, मान गया भईय्या, मान गया। हनुमान जी शक्तिशाली है, मैं तो भक्त बन जाऊंगा, आजीवन हनुमान जी की भक्ति करूँगा। आगे बोल भाई, चुड़ैल रुकी हुई है।" हर्ष अपने डर के बावजूद उत्साहित था।

"इतना ही आता है ब्रो, इससे आगे नहीं आता।" मैंने अटकते हुए कहा। यह सुनकर दोनों की हवा सँट हो गई।

"अबे पागल हो गया तू ? कैसा आदमी है बे, हनुमान चालीसा नहीं आती तुझे, हनुमान चालीसा नहीं आती। लानत है बे तुझ पे, हमारा कल्चर हमारी संस्कृति का कुछ भी याद नहीं। अब देख वो चुड़ैल हंस रही है, मार देगी हमें।" केशव भयातिरके चीखने लगा। चुड़ैल के मुंह से हड्डियां जमा देने वाली मद्धिम हंसी के स्वर उभरे।

"अबे हम पे किस बात की लानत ? तुमको कौन सा आती है बे हनुमान चालीसा ? हरामखोरों, कभी इंग्लिश रैप और पॉप म्यूजिक से फुर्सत लेने दी है जो याद रहेगा ? तुम्हारा कल्चर नहीं है क्या ? मैंने कम से कम कोशिश तो की...." मैं बिफर उठा, ऐसे समय में भला कौन ज्ञान देता है ?

"ईहिहिहिहि..." चुड़ैल भयंकर रूप से ठहाके लगाते हुए हमारी ओर तीव्र गति से उड़ने सी लगी, हां उड़ रही थी वह, उसके पैर जमीन से कई फीट ऊपर लहरा रहे थे। मुझे तो अब चक्कर भी आने लगे थे, बाकी दोनों की हालत भी मुझसे जुदा नहीं थी।

"रुक ! इन दी नेम ऑफ गॉड.. आई .." हर्ष ने अपने गले में पहना हुआ क्रॉस निकाल कर चुड़ैल के सामने कर दिया, चुड़ैल फिर ठिठक गई। पता नहीं हर्ष को अचानक क्या हो गया था, या मौत सामने देख कर छटपटाहट में वह कुछ भी कर रहा था।

"यह सही है भाई, यहां चालीसा जैसा याद करने की जरूरत ही नहीं है, बस क्रॉस दिखा दो, भूत-वूत सब रुक जाते है।" हर्ष घबरा रहा था लेकिन चुड़ैल को ठिठकता हुआ

देखकर उसमें हिम्मत का संचार हुआ । लेकिन चुड़ैल बस एक मिनट के लिये रुकी थी, वह पुनः हंसते हुए हमारी तरफ आने लगी ।

"अबे इंग्लिश फिल्में नहीं देखता क्या ? उनके खुद के भूत तक नहीं डरते उनकी इन चीजों से । साले गिरिजाघर तक में घुसे चले आते है । जब उनकी चीजों का उनपर फर्क नहीं पड़ता तो भाई यह तो देसी भूत है, इनपर घण्टा फर्क पड़ना है इन चीजों का ।" इस बार केशव बोला । वह समझ चुका था कि अब उनका अंत आ चुका है ।

"यारी दोस्ती के चक्कर में भूतों से लड़वा दिया यार । मति मारी गई थी हमारी भी ।" केशव बड़बड़ाया । चुड़ैल अब हम से मात्र एक फिट की दूरी पर आकर खड़ी हो गई थी । उसका घूंघट हवा से उड़ रहा था, घूंघट के भीतर सफेद सी रोशनी दिखाई दे रही थी । हर्ष ने विस्मय से उस प्रकाश का कारण जानना चाहा । वह थोड़ा झुका ।

"मत देख भाई मत देख, दांत है दांत ।" केशव कांप रहा था । हर्ष ने यू देखा जैसे समझा ही नहीं हो ।

"अबे उसके पैने और नुकीले दांत की रोशनी है वो । जिससे वो इंसानों को खाती है ।" केशव फुसफुसाया ।

"यार ! यह बताने की क्या जरूरत थी ? वैसे ही फटी पड़ी है और तू अब बता रहा कि यह इंसानों को खा जाती ...." हर्ष का मुंह खुला का खुला रह गया । चुड़ैल का मुंह भयंकर रूप से खुलते जा रहा था, उसके सफेद और नुकीले दांत स्पष्ट रूप से चमक रहे थे । उसका मुंह किसी व्यक्ति के समूचे सिर को निगल जाने लायक बड़ा हो चुका था । दोनों के बोल न फूट रहे थे, वे एकदम से मानो जम से गए थे । चुड़ैल किसी भी क्षण दोनों में से एक का सिर कच्चा चबा जाने को तैयार थी ।

"रुक जाओ !" मैं पूरी शक्ति इकट्ठी करके मरियल सी आवाज में चीखा, वैसे उसे चीखना नहीं मिमियाना कहना ज्यादा सही था ।

चुड़ैल ने अपना सिर ही चकरी की भांति पीछे घुमा दिया । उसका धड़ जस का तस रहा और पूरा सिर पीछे उलट गया । बस यही कमी बाकी रह गई थी, चुड़ैल का इस प्रकार से अपना सर घुमाना ही बाकी रह गया था बस । मेरी आवाज मेरे गले में ही फंस कर रह गई । क्या बोलना था वह भूल ही गया, चुड़ैल ने मेरा गला दबोच लिया । उसकी पकड़ इतनी मजबूत थी कि लगा मेरी गर्दन ही धड़ से अलग हो जाएगी, मुझे मेरी मौत साफ़ दिखाई देने लगी थी । चुड़ैल की आँखें उलट-पुलट सी रही थी, वह मेरी तरफ अपनी कंटीली जीभ लपलपा रही थी । उसके दांत मेरी ओर बढ़े, अब किसी पल वह मेरा काम निपटा देने वाली थी ।

"झ..झुमरी ! रुक जाओ झुमरी ।" मेरे गले से बड़ी मुश्किल से फुसफुसाहट निकली । चुड़ैल अपना नाम सुनकर ठिठक सी गई, गाँव के किस्से कहानियों में उसका नाम प्रसिद्ध

था, रामजस ने मुझे उसके विषय में काफी कुछ बता दिया था । उसके चेहरे पर और भयानक भाव उभरे, पता नहीं वह हैरानी के भाव थे या गुस्से के । उसने मेरी गर्दन से ही मुझे किसी खिलौने की भांति उठा कर बांसवाड़ी में फेंक दिया, मैं किसी गेंद की तरह ही बांस के पेड़ों से टकराकर टप्पा खाते हुए जमीन पर जा गिरा । केशव और हर्ष आगे बढ़े लेकिन चुड़ैल ने दोनों को पकड़ कर मेरी ओर फेंक दिया । फेंकते ही वह अपने स्थान से अदृश्य हो गई, एकदम से गायब । हम तीनों रोते कराहते बांस के झुरमुट में पड़े रहे, चारों ओर से खून जमा देने वाली हंसी गूंजी रही थी ।

“अंत आ गया भाई, अच्छा अलविदा कहते है एक दूसरे को ।” केशव रोते हुए बोला । उसे शायद समझ में आ गया था कि फ़िल्में और किताबें पढ़कर वह भूत एक्सपर्ट नहीं बन सकता, हकीकत में जब इन चीजों से वास्ता पड़ा तो वह अपनी सारी थ्योरीज ही भूल गया ।

मुझे मेरे कंधे पर किसी का हाथ महसूस हुआ, अब यहाँ हम तीनों के अलावा केवल चुड़ैल ही थी । उसने एक झटके से मुझे झाड़ियों में खिंच लिया, केशव और हर्ष चीखते रह गए और मैं झाड़ियों और जंगलों के मध्य कहीं गुम हो गया । मैं तेजी से किसी अँधेरे कुएं में खींचता सा जा रहा था । झाड़ियो, काँटों और टहनियों से घिसटते, छिलते हुए मैं कहीं खींचा जा रहा था, मेरा अंत आ चुका था, मुझे अँधेरे के सिवा कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था, ना जाने कितने ही जख्म हो चुके थे । मैं कहाँ जा रहा था किसी बात का होश ही नहीं था ।

“झुमरी, म..मैं तुझे मायके पहुंचाऊंगा ।” किसी तरह मैंने अंतिम प्रयास करते हुए यह कहा । मैं मेरा शरीर एक झटके से रुका, मानो ब्रेक लग गया हो, रुकते ही मैं उछला और जाकर किसी पेड़ से टकराया । मैंने आसपास नजरें दौड़ाई, केवल और केवल जंगल ही नजर आ रहा था । मेरे सामने कुछ ही दूर पर एक काला साया खड़ा था, वह हवा में ही लहरा रहा था । चुड़ैल मेरे ठीक सामने खड़ी थी । वह ठिठकी हुई थी, शायद मेरी कही बात ने उस पर असर किया था । वह गुर्राई, उसकी गुर्राहट सुनकर मेरी हालत खराब हो गई ।

“म..मैं सच कह रहा हूँ, मैं तुम्हें तुम्हारे मायके पहुँचाने आया हूँ । मैं..जानता हूँ आज तक हर कोई तुमसे डरता रहा, तुमसे भागता रहा । तुमसे नफरत करता रहा ।” वह अब तक ठिठकी हुई थी । शायद मेरी बातें काम कर रही थी ।

“पता नहीं लोग तुमसे क्यों डर रहे थे, तुम बुरी नहीं हो, लोगों ने तुम्हें बुरा बना दिया है । तुम तो बस अपने रास्ते से भटकी हुई हो, तुम्हें सही रास्ते पर ले जाना है, बीच मंजिल पर आकर तुम्हारी मौत हुई और तभी से तुम उसी मंझधार में फंसी हुई हो । वही बंध गई हो, खुद से नहीं जा सकती, कोई तुम्हारी मदद करें तो ही जा पाओगी । तुम हर बार केवल यही तो कहती थी कि मुझे मायके तक छोड़ दो, लेकिन आज तक किसी ने तुम्हें नहीं

छोड़ा । किसी ने तुम्हारी तकलीफ नहीं समझी । सब तुमसे डरते रहे, जीते जी तुम्हें प्यार नहीं मिला, दुत्कार मिलती रही । मरने के बाद लोग तुमसे डरने लगे, झुमरी को समझने की कभी कोशिश ही नहीं की गई । झुमरी अपने माँ बाप से मिलना चाहती थी, वह ऐसी बेटी थी जो पूरे समाज और दुनिया की सताई गई थी, उसे दुःख के अलावा और कुछ नहीं मिला । उसे अपने माता पिता के पास जाना था जहाँ उसे सुकून मिलता, आराम मिलता, उनसे मिलना था, झुमरी तो एक बेटी थी जिसे अपने गाँव जाना था । अपने मायके जाना था । लेकिन किसी ने उसे समझने का कभी प्रयास ही नहीं किया । मैं समझता हूँ तुम्हें, मैं नहीं डरता तुमसे, मैं तुम्हें पहुंचाऊंगा तुम्हारे घर 'दीदी' ।" मैंने पता नहीं किस आवेश में यह सब कह दिया, वह भी तब जब मेरी सिट्टी पिट्टी गुम थी ।

झुमरी स्तब्ध खड़ी थी, हमारे बीच एक सन्नाटा था । पूरा जंगल एकदम से खामोश हो गया, यहाँ तक की झींगुरों की आवाजें तक बंद हो गई । मुझे सिसकने की आवाज सुनाई दी । झुमरी सिसक रही थी, उसकी आवाज अब भी डरावनी ही थी लेकिन अब मुझे उससे डर नहीं बल्कि हमदर्दी हो रही थी, ना जाने कितने साल से वह मासूम इस वीराने में केवल एक उम्मीद में भटक रही थी कि कोई उसे घर पहुंचा दे, लेकिन कोई नहीं सुना । सुनता भी कैसे ? इस दुनिया में जिन्दा इंसान की ही जब कोई कद्र नहीं है तो मुर्दे कि भला किसे पड़ी होगी ? उसकी कौन सुनेगा, झुमरी रोते हुए अपने घुटनों पर बैठ गई, उसका चेहरा घूंघट में पूरी तरह छिपा हुआ था, वह बिलख रही थी । मैं हिम्मत करते हुए उसकी तरफ बढ़ा, जबकी मेरा दिमाग मना कर रहा था । लेकिन मैंने अपने दिल की सुनने का फैसला किया । मैंने आगे बढ़कर कांपते हाथों से झुमरी के सर पर अपना हाथ रखा ।

"दीदी ! मुझ पर भरोसा रखो, मैं केवल इसी लिए यहाँ आया हुआ हूँ ।" मुझे डर लग रहा था इसके बावजूद मैं उसे सांत्वना दे रहा था । यह सुनने में ही कितना अजीब लग रहा होगा कि मैं एक मरी हुई औरत के सिर पर हाथ रखकर उसे सांत्वना दे रहा हूँ, उससे सहानुभूति जता रहा हूँ । शायद मेरे द्वारा दीदी कहना भी एक कारण रहा होगा, मैं उसकी तकलीफ और अकेलेपन को शायद समझ चुका था ।

"दीदी ! मैं तुम्हारी सहायता करूंगा, क्या आप अपने छोटे भाई की भी सहायता करेंगी ?" मैंने डरते हुए कहा, मुझे डर था कि मेरी बात सुनकर कहीं वह फिर से अपने दांत फाड़े हुए विकराल चेहरे के साथ मुझपर टूट न पड़े ।

"हमका घरें पहुंचाय दो, हम तोहार मदद करब भैय्या ।" उसके घूंघट से खरखराती सी आवाज निकली । झुमरी पहली बार बोली थी । उसके शब्द में करुणा थी, विनती थी । मुझे अपने आप पर शर्म आई कि मैं अपने केवल अपने स्वार्थ के लिए उसका इस्तेमाल कर रहा था, लेकिन मैंने उससे सहायता का वचन लिया है और उससे कुछ भी नहीं छिपाया है । यदि इसमें मेरा स्वार्थ है तो भी मैं झुमरी को मुक्ति दिला रहा हूँ, उसे उसके घर पहुंचा रहा

हु । इतने सालों बाद उसे इस वीराने से मुक्ति मिलने वाली थी, अगर मेरे किसी स्वार्थ के सहारे उसकी मुक्ति हो रही है तो यह स्वार्थ कहाँ रहा ?

"मेरे साथ आओ, मैं अपनी मोटर साइकिल से तुम्हें तुम्हारे गाँव तक छोड़ दूंगा ।" मैंने इतना कहा और जंगल में चारों तरफ देखने लगा । मुझे रास्ता ही नहीं पता चल रहा था, लेकिन कुछ ही दूरी पर कुछ रोशनी दिखाई थी । झाड़ियाँ हिली और केशव, हर्ष वहाँ नजर आये, वे हांफ रहे थे । मेरी गुम होने की दिशा में वो दौड़ पड़े थे, उन्होंने मेरे सामने झुमरी को बैठे देखा तो भय से जड़वत हो गए । झुमरी उनकी आहट पाकर पुन: चीखते हुए हवा में लहराई, उसकी उंगलियाँ लम्बी होकर हर्ष और केशव की तरफ बढ़ी ।

"नहीं दीदी ! ऐसा मत करो, यह मेरे साथ है । मेरे दोस्त है । अपने भाई के लिए ऐसा मत करो ।" मैं चीखा । झुमरी हवा में ही स्थिर हो गई, उसने अपने हाथ खींच लिए । उसके मुंह से गुर्राहट अब भी निकल रही थी । हर्ष और केशव को मानो काटो तो खून नहीं था, वे हैरानी से मेरी ओर देखते रहे । मैं उनके करीब पहुंचा ।

"मेरे साथ रहो, दीदी नुकसान नहीं पहुंचाएगी ।" मैं फुसफुसाया ।

"ओह, हेल्लो दीदी । मैं केशव । केशव ने घबराते हुए खुद का परिचय दिया ।

"और मैं हर्ष ।" हर्ष ने हवा में लहराती झुमरी को प्रणाम करते हुए कहा । हालांकि दोनों की हालत अब भी खराब ही थी । बस किसी तरह से यह सब खत्म हो और वे जान छुड़ा कर भाग खड़े हो जाए । हम तीनों आगे बढ़ते रहे, झुमरी हमसे कुछ ही दूरी पर हवा में लहराते हुए आ रही थी, हमारी हिम्मत नहीं हो रही थी कि हम एक बार भी पीछे पलट कर देख भी लें । आप सुनसान जंगलों से आधी रात को गुजर रहे हो और आप के पीछे एक चुड़ैल चल रही है तो आपकी क्या हालत होगी आप कल्पना भी नहीं कर सकते । हमारी हालत भी वही थी । कुछ ही देर में हम सड़क पर आ गये, हमारी दोनों बाइक्स सड़क पर खड़ी थी ।

"केशव, मैं हर्ष के साथ बैठ जाता हूँ तू दीदी को अपनी बाइक पर बिठा ले ।" मैंने केशव की ओर देखकर कहा, यह सुनकर ही उसके चेहरे पर हवाईयां उड़ने लगीं ।

"भाई, दीदी तुम्हारी है । तुम बिठा लो, अपने भाई के साथ ज्यादा कंफर्टेबल रहेंगी दीदी, ज्यादा अपनापन महसूस होगा उन्हें ।" वह हड़बड़ा गया था ।

"क्यों ? तेरी दीदी नहीं है ? तूने भी तो दीदी बोला था ना ? और सोच तू पहला ऐसा घोस्ट हंटर होगा जिसने किसी भूत को अपनी बाइक पर घुमाया । यह तेरी रिसर्च के भी काम आयेगा । आगे भी तुझे भूतों की मानसिकता समझने के काम आयेगा ।" मैंने उसे घुड़का ।

"भाई मुझे नहीं समझनी किसी की मानसिकता, नहीं बनना घोस्ट हंटर । मैं सीधा साधा आदमी ही ठीक हूँ । दीदी को बिठा लो, मैं तो हर्ष के साथ चला ।" कहकर वह बिना

कुछ सुने हर्ष की बाइक पर सवार हो गया। झुमरी अब भी हमारे सिरों पर लहरा रही थी। मैंने बाइक स्टार्ट की लेकिन हिम्मत नहीं हुई कि एक बार पीछे देख लूँ। झुमरी के बाइक पर बैठते ही मैं सिहर उठा, आगे पीछे कुछ भी देखने का होश नहीं था। बाइक उस भयानक सुनसान सड़क पर चलती रही, बंसवाड़ी से गुजरती हवा भयानक आवाजें करती प्रतीत हो रही थी, लेकिन मुझे उसका डर नहीं था, आप एक चुड़ैल के साथ बाइक पर सवारी कर रहे हो अब इससे बढ़कर और कौन सा डर हो सकता है।

मेरे पीछे बैठी चुड़ैल को देख-देख कर हर्ष और केशव के होश गुम हुए जा रहे थे, उन्हें पीछे नहीं रहना था। हर्ष ने बाइक का एक्सीलेटर दबाया और अपनी बाइक मेरी बाइक से आगे कर दी। मैं समझ चुका था कि पीछे बैठी झुमरी चुड़ैल को देखना उनके लिए कितना डरावना अनुभव रहा होगा। झुमरी का गाँव बिलासपुर अब भी ३ किलोमीटर था, मुझे जल्द से जल्द यही दूरी पार करनी थी। भले ही मैंने उसे दीदी कहा था लेकिन सच तो यही था कि वह एक चुड़ैल थी। मरने के बाद तो अपने खुद के रिश्तेदारों तक से डर लगने लगता है, यह तो इस गाँव कि पुरानी चुड़ैल थी और इनका क्या भरोसा कब क्या मूड बन जाए। अभी भावनाओं में बह कर चुप बैठी है तो क्या पता अगले ही पल हम पर टूट पड़े। नहीं, मुझे बुरा नहीं सोचना चाहिए, बुजुर्गों ने कहा है हमारी जुबान पर दिन में एक बार सरस्वती का वास होता है और उस पल बोली गई हर बात सच साबित हो जाती है, इसलिये सदैव अच्छा ही बोलना चाहिए कि क्या पता कौन सी सोची हुई बात सच हो जाये। लेकिन अभी तो रात थी ? क्या रात में भी ऐसा हो सकता है ? मैं अपना दिमाग दौड़ा रहा था। जान बूझकर उल्टी सीधी बातें सोच रहा था ताकि मन भटका रहे और चुड़ैल पर ध्यान ना जाए। अचानक मेरे कंधे झुमरी का हाथ पड़ा, उसकी लम्बी लम्बी उंगलियाँ और धारदार नाखून मेरे कंधों से होकर मेरे सीने तक लहरा रहे थे। मेरे शरीर में झुरझुरी दौड़ गई, उसके नाखूनों और उंगलियों को मैंने पहली बार इतने करीब से देखा था। वह चाहे तो एक झटके में मेरे सीने में धंस कर मेरा दिल निकाल सकती थी। वह रो रही थी, बड़े ही भयंकर अंदाज में उसका रुदन जारी था। उस सुनसान और अँधेरी सड़क पर उसका भयानक रुदन सुनकर, सियारों की टोलियाँ भी चिल्लाने लगी, पेड़ों से पंछी या चमगादड़ जो भी थे फड़फड़ा कर यहाँ वहां दौड़ने लगे। मैंने हर्ष की मोटरसाइकल को और तेजी से भागते हुए देखा। कमीनों ने झुमरी का रुदन सुनकर स्पीड और बढ़ा दी थी। बहुत साथ दे रहे थे यार दोस्त, मैंने भी स्पीड बढाई ताकि जल्द से जल्द बिलासपुर पहुँच सकूँ। पता नहीं क्यों यह तीन चार किलोमीटर हजार किलोमीटर के बराबर लग रहे थे। ऐसा लग रहा था मानो ना यह समय कट रहा था और ना ही यह रास्ता। उसका हाथ मेरे कन्धों पर लहराता रहा, उसका रोना जारी रहा, उसे टोकने की मेरी हिम्मत ही नहीं हो रही थी। थोड़ी देर में बिलासपुर के नाम का पत्थर दिखाई दिया। पत्थर की दाई ओर से ही एक संकरी और कच्ची सड़क मुड़ रही थी, जिसके दोनों किनारों पर बड़े बड़े सरपत जमे हुए थे, हमें

उन सरपतों के मध्य से गुजरना था । अब ओखली में सर दे ही चुका था तो डरने का कोई मतलब नहीं था, मैंने अपनी बाइक उस कच्ची ऊबड़ खाबड़ सड़क पर उतार दी । कुछ ही देर में हम गाँव के सामने थे, मैंने अपनी बाइक रोक दी । केशव और हर्ष पहले ही रुक चुके थे । उनकी नजरें अब भी आगे देख रही थी, मेरी ओर देखने की उनकी हिम्मत ही नहीं हो रही थी ।

"दीदी ! हम गाँव पहुँच चुके है ।" मैंने डरते-डरते कहा । मेरे कहते ही झुमरी बाइक की सीट से लहराते हुए उतरी और हमारे सामने आकर बीच हवा में स्थिर हो गई, वह अब अपने मायके में थी । उसने अपना घूंघट हटाया, अब भी अँधेरा काफी था, उसका चेहरा साफ़ नहीं दिख रहा था और ना ही मुझे देखने की इच्छा थी । वह धरती पर आ गई, लेकिन अब भी उसके पाँव शायद धरती से कुछ इंच ऊपर ही थे, क्योंकि वह चल नहीं रही थी बल्कि लहरा रही थी । वह सीधे मेरे सामने आकर खड़ी हो गई, उसके घने बाल लहरा रहे थे, उसका रोना जारी था । लेकिन उसके भयानक और अजीब से कपड़े किसी दुल्हन के लिबास में बदल चुके थे । भद्दी और कुरूप उंगलियाँ अब सुंदर हो चुकी थी, बरगद के जड़ों जैसे बाल रेशम की भांति लहरा रहे थे । वह करीब आई, मैंने उसका चेहरा देखा, स्पष्ट देखा । वह सुंदर थी, बेहद मासूम । कोई कह नहीं सकता था कि इस चेहरे के पीछे कोई खूंखार चुड़ैल छिपी हो सकती है । उसके मासूम और भोले से चेहरे पर कृतज्ञता के भाव दिखाई दे रहे थे । उसने मेरे हाथ पर अपना हाथ रखा, पता नहीं क्यों इस बार मुझे डर नहीं लगा ।

"भईया ! !" वह धीमे से बोली, उसकी आवाज अब मधुर हो गई थी, कांप सी रही थी । पता नहीं क्या हुआ किन्तु मेरा मन भी भर आया, न चाहते हुए भी मेरी आँखों में आंसू झिलमिला आये, पता नहीं उस समय क्या हो गया था ।

"तुम मेरी एक बार सहायता करोगी, मेरे एक बार बुलाने पर आओगी ना ?" मैंने घबराते हुए उससे प्रश्न किया । जबकि उस पर किसी प्रकार का वचन वगैरह की बाध्यता नहीं थी ।

"हम आउब ।" कहकर वह हवा में लहराई और फट्ट से धुंवा-धुंवा होकर बिखर गई, वह धुंवा उस सारे गाँव में फ़ैल गया । वह अपने गाँव पहुँच चुकी थी, अपनी मंजिल की ओर, ना जाने कितने सालों से उसे इस दिन की प्रतीक्षा थी ।

"भाई दीदी गई क्या ?" केशव अटकते हुए बोला ।

"अबे गीला गीला क्या लग रहा है सीट पर ?" हर्ष को कुछ महसूस हुआ ।

"अबे यार हट्ट ! डर के मारे सुसु कर दिया ?" हर्ष केशव को डांटते हुए बोला ।

"तुम किये तब तो मैं कुछ नहीं बोला, हमारे करने पर क्यों उखड़ रहे हो ?" केशव मिमियाते हुए बोला । मैंने उनकी ओर ध्यान नहीं दिया, हमें अगली मंजिल की ओर बढ़ना

था । मैंने बाइक घुमाई, स्वाभाविक था वे भी मेरे साथ साथ हो लिए । अब मुझे उस बस स्टॉप पर पहुंचना था ।

□□□

बीड़ी चाचा

बस स्टॉप की मनहूसियत इस दुनिया से परे की थी, सच कहता हूँ, एक पल को तो मुझे लगा यह सब छोड़ कर उलटे पैर भाग खड़ा होऊँ, लेकिन फिर सोनल का मासूम चेहरा सामने आ जाता । कहावत है ना प्यार का भूत जिसे चढ़े उसे छोड़ता नहीं, मेरे मामले में प्यार भी था और भूत भी । यह बात और थी कि भूतों का पूरा का पूरा कुनबा इसमें शामिल था । हवा अब भी सांय-सांय कर रही थी ।

"बाइक यहीं रोक दो, मुझे यहाँ से अकेले ही जाना होगा ।" मेरी आवाज में डर साफ़ महसूस किया जा सकता था । मेरे कहते ही केशव और हर्ष वही रुक गए ।

"हम भी आते है ।" हर्ष ने कहा ।

"नहीं ! तुम में से कोई नहीं आयेगा, शायद हमारे एक साथ रहने पर वो दिखाई ही ना दे ।" मैंने तर्क दिया । हालांकि झुमरी चुड़ैल के मामले में यह तर्क लागू नहीं हुआ था, वह तो हम तीनों के सामने आ खड़ी हो गई थी, वह ऐसा कर सकती थी क्योंकि वह एक महिला थी ।

"देख भाई ! अपना खयाल रखना, और जरा भी गड़बड़ महसूस हुई तो चिल्लाना, हम एक मिनट में तेरे पास होंगे ।" केशव ने मेरे गले लगते हुए कहा, अब इस इमोशनल ड्रामे की ही कमी रह गई थी । कमबख्त इस तरह गले लग रहा था जैसे मुझे शहीद होने के लिए भेज रहा हो । झूठे मुंह एक बार भी नहीं बोला कि तू रुक जा तेरे बदले मैं चला जाता हूँ ।

"भाई ! यह बहुत बढ़िया अवसर है, तुझे एक भूत से रूबरू होने का अवसर मिलेगा जो तेरी रिसर्च और अनुभव के लिए काफी काम आएगा, तू ही क्यों नहीं..." मेरे आगे के शब्द मेरे गले में ही फंसे रह गए । केशव ने अपनी हथेली से मेरा मुंह बंद कर दिया ।

"बस कर भाई, अब क्या रुलाकर ही मानेगा ? मेरे लिए इतनी बड़ी कुर्बानी मत दे । तू जा और शान से कामयाब होकर लौटना, दोनों भाई मिलकर एक साथ पैरानॉर्मल इन्वेस्टिगेटर, घोस्ट हंटर बनेंगे । यह सब ज्यादा समय तक नहीं चलेगा, हम जल्द ही इन चीजों से बाहर होंगे । उसके बाद हम अपने काम में और मन लगाकर उसे आगे बढ़ाएंगे । सोच हम दोनों का नाम शान से लिया जायेगा, भारत के पहले घोस्टहंटर के तौर पर हमें याद किया जायेगा ।" केशव ने बड़ी सफाई से मेरी बातों का रुख मोड़ दिया ।

"भाई साफ़-साफ़ बोल दे कि तुझे नहीं जाना ।" मैंने उसकी तरफ जलती नजरों से देखा तो वह झेंप गया ।

"मैं जाता हूँ ।" हर्ष ने स्पष्ट शब्दों में बिना किसी हिचक के कहा ।

"नहीं ! तुम नहीं, मेरा जाना ही सही रहेगा ।" मैंने उसे साफ़ मना कर दिया । अगर मैं उसे भेज देता तो मेरी बनी बनाई इज्जत को खतरा हो जाता ।

“लेकिन सोनल के लिए....”

“मैं जा रहा हूँ ।” मैंने हर्ष की बात पूरी होने से पहले ही काट दी और बिना कुछ कहे आगे बढ़ गया । उनकी क्या प्रतिक्रिया रही यह मैं देख नहीं पाया । उस संकरी सड़क के दोनों तरफ की सरपतों में हलचल सी हो रही थी, यह शायद मंद-मंद चलती हवाओं के कारण था । मुझे उनकी और देखने की हिम्मत ही नहीं हो रही थी, दिमाग अपने आप कुछ का कुछ गढ़ ले रहा था । क्या पता मैं अपने ही दिमाग के बनाये हुए किसी काल्पनिक साये को देखकर बेहोश हो जाऊँ ? अक्सर ऐसी जगहों पर अकेला आदमी यही सब ऊट-पटांग विचार करता है जो उसके डर को और बढ़ाता है । मुझे अपने आप को मजबूत रखना था । मैंने गहरी सांस ली, अपना ध्यान पूरी तरह से अपनी साँसों पर केन्द्रित किया । कुछ ही देर में मार्ग दायीं ओर हल्का सा मुड़ गया । और इसी मोड़ पर वह कच्चा बस स्टॉप बना हुआ था । बस स्टॉप की कहानियों के कारण उसका उपयोग बहुत कम ही होता था । उस स्थान की हालत दयनीय थी, स्टॉप के नाम पर टूटी हुई दीवार और कमजोर सी छत जैसे तैसे अपने स्थान पर टिकी हुई थी । यहाँ आकर हल्का सा कोहरा भी महसूस होने लगा था, बस स्टॉप के आसपास कुछ सूखे हुए पेड़ थे, जिनकी टहनियों कि और देखने कि हिम्मत मुझमें नहीं थी, मैं शर्त लगा कर कह सकता हूँ कि आमतौर पर लोग रात में ऐसी किसी चीज को देखना पसंद नहीं करेंगे जिसे देखने मात्र से आपको अजीबोगरीब आकृतियों का भ्रम होने लगे । उन टहनियों को नजरंदाज करते हुए मैं धड़कते दिल से आगे बढ़ा, अब मैं बस स्टॉप के ढाँचे पर खड़ा था । इस मोड़ पर आते ही केशव और हर्ष दिखाई देने बंद हो गए, इस वीराने में मैं नितांत अकेला था । मैंने गलत कहा, मैं अकेला तो हरगिज नहीं था । मुझे पता था वह यहीं मेरे आसपास कहीं मौजूद है, उस सन्नाटे में मुझे मेरी और असंख्य भयावह आँखें घूरती हुई सी महसूस हो रही थी । इसी बीच किसी अजीब से पक्षी की आवाज आई, मैं चिहुँक उठा, मुंह से चीख निकलते निकलते बची । यह उल्लू की आवाज थी, इस भयानक सन्नाटे में उसकी आवाज बड़े से बड़े सुरमा का भी खून जमा सकती थी । मेरे कानों में सन्नाटे की अजीब सी सिटी गूंजने लगी थी, झींगुरों की किर्र-किर्र अब एकदम से बंद हो गई थी । एक बेहद ठंडी लहर मानो मेरे शरीर से टकराई और मेरा रोम-रोम सिहर उठा । यह ठंड के कारण नहीं था, यह था भय के कारण, क्योंकि मुझे साफ़ महसूस हुआ था कि अभी-अभी कोई मेरे एकदम समीप से गुजरा था, लेकिन मुझे कोई दिखाई नहीं दिया, साफ़ जाहिर था मैं जिसके लिए आया था वह पल आ चुका था । मैं अब भी खड़ा था, स्टॉप पर बैठने की हिम्मत मुझमें नहीं थी । मैंने उस टूटी फूटी दीवारों पर किसी साये को बैठे हुए स्पष्ट महसूस किया था, मेरी साँसे रेलगाड़ी से तेज चलने लगी थी, सर से लेकर पाँव तक मैं एकदम से पसीने से भीग उठा, गला सूख गया और जुबान मानो तालू में जा चिपकी । लाख प्रयास के बावजूद मेरे गले से कोई स्वर निकल नहीं पा रहा था, मेरा पूरा शरीर जड़ हो चुका था । मुझ पर भय हावी हो चुका था, पैनिक का अटैक सा था । बस

दिल का दौरा पड़ना ही बाकी था, मैंने आँखें बंद की, मुझे इस डर को निकालना था । इस डर के होते हुए मैं कुछ नहीं कर सकता, अगर मैं कामयाब नहीं हुआ तो सोनल को खो दूंगा । मुझे हर हाल में कामयाब होना था, हर हाल में । इस खयाल के आते ही मुझमें थोड़ी हिम्मत का संचार हुआ और मैंने आँखें खोल ली । मैं उस साये में किसी हरकत की प्रतीक्षा कर रहा था किन्तु वह साया अपने स्थान पर ही स्थिर था । अचानक से मुझे ऐसा प्रतीत हुआ मानो वह आकृति अपने स्थान से गायब हो चुकी है । मैंने अपने डर को भुला कर पीछे की तरफ देखा, वहां कोई आकृति, कोई साया नहीं था । नहीं ! नहीं ! ऐसा नहीं हो सकता, गंगादीन आकर चला भी गया, उसकी उपस्थिति मैंने साफ़ महसूस की थी, वह रुका क्यों नहीं ? जैसी कहानियां सुनी थी उसके हिसाब से वह तो मेरे सामने ही आ जाना चाहिए था । कहीं वह सब झूठ तो नहीं था ? मुझे बेचैनी सी होने लगी, मैंने उस स्थान पर बैठने का निर्णय ले लिया जहाँ वह साया बैठा था, या कहूँ गंगादीन का भूत जहाँ दिखाई दिया था । मैं डरते-डरते उस स्थान पर बैठा और अपनी नजरें यहाँ वहाँ घुमाता रहा । बड़ी ही अजीब स्थिति थी, एक और भूत के नाम से हालत खस्ता थी तो दूसरी और उसी की प्रतीक्षा भी थी । डर और बेचैनी दोनों एक साथ हावी थी । मैंने अपनी पोटली टटोली और उसमें से एक सिगरेट निकाल कर कांपते हाथों से सुलगा ली । एक कश लेते ही मुझे खांसी का दौरा पड़ गया, मुझे इस वाहियात चीज की आदत नहीं थी और अब इसके बाद तो इसे छूने की इच्छा भी मर गई, बस मजबूरी थी इसलिए इसे हाथ लगाये हुए था । वैसे भी सिगरेट से कैंसर होता है, सीने में टार जमा होता है जिससे आदमी मर जाता है और मरने के बाद आदमी गंगादीन की तरह भूत बनकर भटकता रहता है, यह लत इतनी बुरी है कि साला आदमी का मरने के बाद भी पीछा नहीं छोड़ती और उसका भूत भी सबसे पूछता है.....

"बीड़ी मिलेगी बाबू ?"

एक खराब ट्रांसिस्टर की भांति खरखराती, बलगमी आवाज मेरे कानों के पास गूंजी, मेरे शरीर को मानो लकवा सा मार गया, मैंने कनखियों से देखा वह मुझे आधे फीट की दूरी पर ही बैठा था । एकदम झक्क सफ़ेद धोती, मैली सी पगड़ी और मटमैला कुर्ता पहने वह कोई सौ साल का अशक्त बूढ़ा लग रहा था, सौ साल मैंने कम कहा वह निस्संदेह हजार साल का प्राणी रहा होगा । उसका चेहरा झुर्रियों से भरा हुआ एकदम सफ़ेद और भावविहीन था, उसकी नजरें मेरी ओर थी ही नहीं । वह शून्य में ही ताक रहा था ।

"बीड़ी मिलेगी ?" वह फिर खरखराया । मैंने अब जाकर महसूस किया कि वह मेरी तरह चबूतरे पर नहीं बैठा है, वह मुझसे लगभग आधे फीट उंचाई पर हवा में बैठा हुआ था । मुझे परमात्मा याद आ गए, हनुमान चालीसा याद आने लगी थी लेकिन मैंने खुद को सम्भाल लिया । उसे भगाना मेरा मकसद था ही नहीं । मैंने कांपते हाथों से अपनी सिगरेट

उसकी तरफ बढ़ा दी । मैंने फिल्मों में देखा हुआ है कि ऐसे बढ़ाये हुए हाथ को भूत या पिशाच अचानक से अपने मुंह में भर कर कच्चा चबा जाते है, मन तो किया अपना हाथ पीछे खींच लूँ ।

"हमका बीड़ी चाही.." वह भयंकर आवाज में दहाड़ा, उसकी दहाड़ सुनकर मेरी पेंट गीली होते-होते रह गई । अच्छा ईमानदारी से बताऊँ तो गीली हो चुकी थी, छिपाने का कोई फायदा नहीं है, आप इस परिस्थिति की कल्पना कर सकते है ।

मैंने गलती कर दी थी, उसे सिगरेट नहीं बीड़ी की तलब थी । लेकिन मैं इसके लिए तैयारी करके आया था, यह पैकेट केशव का था जिसे वह जबरदस्ती कूल बनने के चक्कर में अपने साथ रखता था । इस झोले में उसी ने डाल कर रखा था । मैंने झोले को टटोलना शुरू कर दिया ।

"हमका बीड़ी चाही, बीड़ी चाही, बीड़ी !" वह भयानक ढंग से चीखने चिल्लाने लगा । उसकी आकृति भयानक ढंग से विचित्र सा आकार लेने लगी, मैं उस आकर का वर्णन नहीं कर सकता, बस शुरू में जिन पेड़ों की टहनियों का जिक्र किया था यह आकृतियाँ उसी से मिलते जुलते पैटर्न की थी । गंगादीन गुस्सा हो गया था, वह मुझे ज़िंदा नहीं छोड़ेगा । इस विचार के आते ही मेरी साँसे रुक सी गई, उसी पल पोटली में बीड़ी का बंडल मिल गया । गंगादीन का मुंह इतना बड़ा खुल चुका था कि वह मेरा पूरा सर उसमें खींच सकता था, वह किसी अजगर की भांति मुझे निगलने को आतुर प्रतीत हो रहा था । मेरी जान हलक में फंसी हुई थी, कुछ समझ में नहीं आ रहा था । गंगादीन मुंह बाए मुझ पर आकर सवार हो गया । मैंने उसी पल बीड़ी उसकी तरफ बढ़ा दी ।

"चाचा ! बीड़ी, हम बीड़ी लाये है तोहार खातिर ।" मैंने मिमयाते हुए कहा तो गंगादीन एकदम से ठिठक गया । उसकी भयंकर आकृति पुन: अपने उसी हजार साल की बुढ़ऊ वाली स्थिति में आ गई । मैंने कांपते हाथों से बीड़ी उसके होंठों तक बढ़ाई, गंगादीन एकदम सपाट भाव लिए हुए था, उसने कोई हरकत नहीं की और ना कोई प्रतिरोध किया, बीड़ी उसके होंठों से लग चुकी थी । उसे सुलगाना बाकी था । मैंने बड़ी मुश्किल से लाइटर जलाई और वह बीड़ी सुलगाई, गंगादीन ने भीतर की और कश खींचकर बीड़ी अच्छे से सुलगा ली । अब वह बीड़ी पीने में मग्न हो गया ।

"अब हमका मुक्ति मिले ।" वह एकदम शांत स्वर में बोल उठा ।

"चाचा ! हम आपको पूरा पैकेट पिलायेंगे, आपको मुक्ति दिलाएंगे ।" मैंने डरते डरते कहा, मुझे यह नहीं भूलना था कि मैं एक भूत से बात कर रहा हूँ, ऐसा भूत जो कुछ ही देर पहले मुझे समूचा निगल जाने वाला था । उसने मेरी तरफ देखा, उसकी आँखें, उसका भाव, उसका चेहरा देख कर मेरी सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई । भाई वह अस्सल देसी भूत था,

एकदम खालिस देसी । जैसा किस्से कहानियों में, गाँव के बड़े बुजुर्गों की अफवाहों में सुनते आये थे वह उससे भी ज्यादा डरावना था ।

“आपको हमारी मदद करनी होगी, हमें केवल एक बार आपकी सहायता चाहिए उसके पश्चात आप मुक्त हो जाइये ।” मैंने डरते-डरते कहा । वह किसी बंधन में नहीं था, मेरी बात मानना या ना मानना पूरी तरह से उसकी इच्छा पर था । वह बीड़ी के लिए तरसते-तरसते मर गया था, उसकी इच्छा बीड़ी पीने की थी, उसकी जान उसी इच्छा में उसी तलब में अटकी रही । हर आते जाते व्यक्ति से वह अपनी वर्षों की तलब शांत करने के लिए बीड़ी माँगा करता था लेकिन भूत को भला बीड़ी पिलाएगा कौन ? उसके नाम से ही लोग रास्ता बदल लेते थे । और बीड़ी जब तक नहीं मिलती उसकी आत्मा उसी इच्छा में अटकी रहती । आज मैंने उसे बीड़ी पिलाकर उसकी इच्छा पूर्ण की थी । वह मुक्त था, मेरी शर्त मानने की उसे कोई आवश्यकता ही नहीं थी, फिर भी मैंने प्रयास करके देखने में कोई नुकसान नहीं समझा ।

“चाचा मेरी मदद करेंगे ना ?” मैंने कातर स्वर में कहा, और इस बार मैंने नजरें फेर कर नहीं बल्कि उसकी भयानक जीवन रहित सपाट और सफ़ेद आँखों में देख कर पूछा ।

“एक बार तोहार सहायता खातिर जरूर आयेंगे ।” उसने अपनी उसी डरावनी आवाज में कहा और बीड़ी के साथ ही अदृश्य हो गया । सन्नाटे में अब केवल मैं था और गंगादीन द्वारा पी गई बीड़ी की महक ।

बुडुआ

हम उस तालाब के पास खड़े थे, मोटरसाइकिल तालाब से पहले ही एक कच्चे रास्ते पर छोड़ कर हमने तालाब की तरफ पैदल चलने का निर्णय लिया । वह तालाब मुख्य सड़क से हटकर एक कच्ची सड़क पर कुछ सौ मीटर की दूरी पर था । तालाब से एकाध डेढ़ किलोमीटर दूर कोई गाँव दिखाई दे रहा था । लेकिन इससे उस मनहूसियत में कोई कमी नहीं हो रही थी, उल्टे अँधेरे में विचित्र आकृतियों और बनावट वाले घरों से भरा वह गाँव किसी भुतहे गाँव का भास उत्पन्न कर रहा था । तालाब के चारों ओर घने पेड़ और झाड़ियों का झुरमुट सा था, वहां जाने के लिए कोई पगडंडी दिखाई नहीं दे रही थी, शायद तालाब की ओर कोई आता ही नहीं था । 'बुडुआ' के किस्से सुनकर अच्छे अच्छों की हालत खस्ता हो जाती होगी, कौन भला यहाँ मरने आये । इससे पहले आप उलझन में पड़ें मैं 'बुडुआ' के बारे में कुछ बता देता हूँ ।

उत्तर भारत के कुछ क्षेत्रों में पानी में डूब कर मरे व्यक्ति के भूत को बुडुआ कहा जाता है । कहते है बुडुआ जिस तालाब, नदी या कुएं में डूब कर मरता है, वही भटकता है और गलती से कोई उस पानी में चला जाए तो वह कितना भी कुशल तैराक क्यों ना हो लेकिन वह उसे पानी के भीतर खींच लेता है । इस तालाब का बुडुआ अत्यंत कुख्यात था, कहते है रात में इसकी चीखें सड़क तक सुनाई देती है । शाम का अँधेरा होते ही आस-पड़ोस के गाँव बंद हो जाते है, उन गाँवों में बुडुआ की चीखें सुनाई देती है । मानो वह किसी को पुकार रहा हो, लेकिन यहाँ जीवित व्यक्ति को कोई नहीं पूछता तो भला भूत की चीखें सुनकर आये कौन ? सब जानते है कि जिसने एक बार तालाब के क्षेत्र में कदम रखा वह उसी में खींचा चला जायेगा । हम तालाब की तरफ बढ़ रहे थे । सम्पूर्ण अँधेरी रात में झींगुरों के स्वरों के मध्य, घास और झाड़ियों को अपने पैरों तले रौंदते हुए हम आगे बढ़ते रहे । तीनों की हालत बद से बदतर थी । एक रात में ही हम दो-दो भूतों से टकरा चुके थे इसके बावजूद हर बार पहले से भी ज्यादा भय महसूस हो रहा था । हम पेड़ों से घिरे तालाब के किनारे पहुँच चुके थे, तालाब के ऊपर हल्का कोहरा सा था जिस कारण दूसरे छोर का नामोनिशान तक दिखाई नहीं दे रहा था । इसी बीच दूर कहीं सियारों की टोली ने अपनी मनहूस आवाज में रोना आरम्भ कर दिया ।

"यहाँ का माहौल तो हद से ज्यादा डरावना है, हमें यहाँ आना चाहिए था ?" हर्ष ने अपने माथे पर उभर आये पसीने को पोंछते हुए कहा ।

"हमारी जरूरत है हर्ष, हमें यह करना ही था । और कोई रास्ता भी तो नहीं है ।" मैंने अपनी घबराहट को छिपाने का भरपूर प्रयास किया लेकिन असफल रहा ।

"भाई तो इस बुडू....." केशव भूल गया ।

“बुडुआ !” मैंने याद दिलाया ।

“हाँ ! बुडुआ, इस बुडुआ से भिड़ना जरूरी है क्या ? हमें और भी तो अनेकों प्रकार के भूत मिल सकते है । वो अगले चौराहे वाले ‘पहलवान बाबा’ से भी तो काम चला सकते थे, या पुराने मरघट वाले बेताल से भी मिल सकते थे । जरूरी है क्या इस पानी के भूत से मिलना ?” केशव ने रामजस द्वारा बताये गए भूतों और क्षेत्रों का जिक्र करते हुए अपनी बदहवासी और घबराहट जाहिर की ।

“सुन मेरी बात, पहलवान बाबा ने अपनी इच्छा से उस कुंए में समाधि ली हुई है, वे उस क्षेत्र के रक्षक है, अपने क्षेत्र से कही नहीं जाते और ना ही उनकी कोई अतृप्त इच्छा थी जिसे पूरी करने के बहाने हम उनसे मदद मांगते । उल्टे पहलवान बाबा को छेड़ने का नतीजा हद से ज्यादा बुरा भी हो सकता है, वे क्रोधित हो गए तो जिन्दगी झन्ड बना देंगे । और जिस बेताल की बात कर रहे हो उसकी भी कोई अतृप्त इच्छा नहीं है, वह शैतान ही है । वह डाकू था, जीते जी लोगों को मारने काटने में उसे आनन्द आता था तो मरने के बाद भी उसे लोगों को सताने में आनन्द ही आता है, ऐसे शैतान से मदद मांगने का मतलब है उसी मरघट में हमारी चिताए सजा लेना । बचा ये बुडुआ, तो इसकी कहानी जानते ही हो ।” मैंने अपनी बात स्पष्ट करते हुए कहा, मैं भूतों का इतनी सरलता से उल्लेख कर रहा हूँ इसका यह मतलब बिलकुल भी नहीं था कि मैं उस माहौल में सामंजस्य बिठा चुका हूँ, या मेरा डर कम हो गया है, मैं अब भी उतना ही डरा हुआ था जितना पहली बार स्टेशन पर उस पटरी से कटे भूत को देखकर डरा था ।

“बबलू एक चोर था, आस-पड़ोस का कोई गाँव नहीं था जहाँ उसने चोरी ना की हो, लोगबाग उससे परेशान रहने लगे थे, बारी-बारी करके गाँवों में पहरा देते जिससे बबलू अपने मंसूबों में कामयाब ना हो सके । एक बार यही जो हमें गाँव दिखाई दे रहा है ना, उसी में उसने प्रधान के घर चोरी कर ली और संयोग से वह पहरेदारों की टोली की नजर में आ गया और दौड़ा लिया गया, गाँव भर में हल्ला मच गया और सारे गाँव ने बाहर जाने के रास्तों पर घेरा डाल लिया । बबलू जहाँ रास्ता मिला वहाँ से सरपट दौड़ लिया, खेतों क्यारियों, बागों झाड़ियों से होता हुआ वह सीधे इस तालाब में जा गिरा, संयोग से बबलू को तैरना नहीं आता था । वह छटपटाने लगा, गाँव वाले तालाब के पास आ चुके थे, किन्तु वे उस चोर से इतना त्रस्त हो चुके थे कि उसकी किसी ने सहायता नहीं की, बबलू रोता रहा, माफ़ी मांगता रहा, सुधरने की कसमें खाता रहा लेकिन किसी का दिल नहीं पसीजा और आखिरकार छटपटाता बबलू डूब कर मर गया । उसके बाद से इस तालाब में खेलते हुए कुछ बच्चे डूब गए, जबकि वे बच्चे रोजाना इस तालाब में नहाया करते थे और तैरने में कुशल भी थे, अकस्मात ही चार बच्चे डूब गए । महीने भर में ही दर्जन भर से अधिक लोग यहाँ डूब कर मर गए । किसी राहगीर ने बबलू की आत्मा को पानी पर चलते हुए भी देखा

था और तभी से यह बात फ़ैल गई कि बबलू बुडुआ बन चुका है और इस तालाब पर अब उसका कब्जा है, लोगों ने इस तालाब की ओर आना ही छोड़ दिया । अब भी बबलू की चीखें इस परिसर में गूंजती है और मदद मांगती है ।" मैंने कहानी दोहराई । हालांकि बबलू के बारे में बताते-बताते मेरे खुद के रोंगटे खड़े हो गए थे ।

"रामजस ने हमें यह बता दिया था, दुबारा यह सब मत बता ।" केशव सिहर उठा था । तभी अचानक तालाब के पानी में बुलबुला सा फूटा जिसने हमें चौंका दिया, हमारी साँसे एक पल को रुक सी गई, धीरे-धीरे तालाब के अलग-अलग हिस्सों में बुलबुले फूटने लगे । ऐसा लग रहा था मानो पानी खौल रहा हो । आसपास के पेड़ों से सोते पक्षीयों का झुण्ड इस शोर से उठ गया और यहाँ वहाँ उड़ने लगे, उन पेड़ों पर सैकड़ों की संख्या में चमगादड़ थे, जिनके पंख फड़फड़ाने के स्वरों से वह इलाका गूंज उठा । पेड़ों में भयंकर रूप से हलचल होने लगी थी, पत्तियों एवं डालियों के टकराने के स्वरों से भयंकर ध्वनि हो रही थी । धीरे-धीरे तालाब पर कोहरा और घना होने लगा । सहसा मुझे उस कोहरे के मध्य तालाब के बीचोबीच एक हाथ दिखाई दिया, जो पानी से बाहर निकला हुआ था । वह हाथ संकेत से मुझे अपनी तरफ बुला रहा था । मुझे ना जाने क्या हुआ कि मैंने खुद ब खुद अपने कदम आगे बढ़ा दिए, मैं अगले ही कदम में सीधे तालाब में जा गिरता कि केशव में मेरा हाथ पीछे खिंच लिया, उसके खींचते ही मानो मैं बेहोशी से जागा ।

"अबे बावला हुआ जा रहा है क्या ? तालाब में क्यों कूदने जा रहा था ? बबलू भैय्या छोड़ेंगे नहीं, निकल लोगे तालाब की गहराइयों में । यहाँ आत्महत्या करने आये थे क्या ?" केशव ने चीखते हुए कहा ।

"पता नहीं मुझे क्या हो गया था, मैंने बस तालाब में एक हाथ देखा और मेरे कदम अपने आप खिंच गए ।" मैंने कहा तो उनके होश उड़ गए । कोहरे के कारण शायद वह हाथ उन्हें दिखाई नहीं दिया था लेकिन मेरे कहे पर अविश्वास करने का कोई प्रश्न ही नहीं था । अब हम विश्वास अन्धविश्वास से परे जा चुके थे, यहाँ आकर अब ऐसी कोई शक्ति नहीं थी जिसके अस्तित्व पर हमें अविश्वास हो ।

"इसका मतलब बुडुआ आ गया है ।" हर्ष के स्वर में थरथराहट थी, जो स्वाभाविक थी ।

"मेरी बात सुनो ।" मेरा इतना कहना था कि पूरा तालाब किसी मर्मान्तक चीख से गूंज उठा, पानी में भीषण हलचल होने लगी थी लेकिन कोहरे के कारण कुछ भी स्पष्ट दिखाई नहीं दे रहा था । मानो कोई तालाब में डूब रहा हो और अपने आप को बचाने के लिए पुरजोर हाथ पैर चला रहा हो । उस सन्नाटे में पानी के छपाकों का स्वर गूंज रहा था । तालाब के प्रत्येक कोने से छपाकों की आवाजें आ रही थी । मुझे एक कोने में पानी में छटपटाते दो हाथ स्पष्ट दिखाई दिए ।

“वो उस कोने में मैंने बबलू को डूबते हुए देखा ।” मैं लगभग चीखते हुए बोला, मेरी धड़कनों ने धड़कना ही बंद कर दिया था ।

“मैंने इस कोने में किसी को डूबते हुए देखा ।” केशव के चेहरे पर हवाइयां उड़ रही थी, वह विपरीत दिशा की और देख रहा था ।

“और मैंने इस और किसी का सिर पानी में डूबते हुए देखा ।” हर्ष घबराकर पीछे हटते हुए बोला ।

“बुडुआ अपने उफान पर आ चुका है, वह हम तीनों को दिखाई दे रहा है । हम उससे घबरा रहे है, हमें उससे घबराना नहीं है ।” मैं लगभग चीखते हुए बोला, केशव और हर्ष पर भय का दौरा-सा पड़ गया था । वो दोनों तालाब के किनारों से पीछे हट रहे थे ।

“ऐसा मत करो, पीछे मत हटो । हम भी वही गलती करने जा रहे है जो गाँव वालों ने की, हम वही गलती करने जा रहे है जो इस तालाब में डूबने वाले हर व्यक्ति ने की । हर कोई बबलू से डर कर दूर भागता रहा, जबकि बबलू सबसे मदद की गुहार लगाता रहा । अब भी गौर से सुनो उसके रोने की आवाजें आ रही है, वह चीख रहा है । माफ़ी मांग रहा है, बचाने के लिए छटपटा रहा है और हम उसकी मदद करने के बजाए डर कर पीछे हट रहे है ।” मैंने उन्हें समझाने की कोशिश की हालांकि मेरा डर भी मुझ पर हावी था । यह अवस्था बिल्कुल भी सामान्य नहीं थी, मुझ पर डर भी हावी था और मैं सोच समझ भी रहा था, सुनने में फ़िल्मी सा लगे लेकिन शायद सोनल के प्यार के कारण मुझे यही शक्ति मिल रही थी ।

“भाई बबलू मर चुका है, भूत है वह । उसकी मदद कैसे करोगे तुम ? कैसे बचाओगे उसे ?” हर्ष जल्द से जल्द तालाब से पीछे हटना चाहता था, उसे अब भी बबलू दिखाई दे रहा था । मुझे फौरन निर्णय लेना था, इससे पहले कि मुझ पर बबलू का खौफ हावी हो जाए मुझे कुछ करना था, मुझे उससे नहीं डरना था । मुझे उसकी मदद करनी थी, वह डूब रहा है, ना जाने कितने सालों से वह डूब रहा है, कितने वर्षों से वह मदद के लिए निरंतर चीख रहा है, चिल्ला रहा है, गिड़गिड़ा रहा है, किसी ने सच्चे मन से उसकी सहायता करने के बारे में कभी सोचा तक नहीं । उस पल मेरा मस्तिष्क एकदम से शून्य हो गया । मुझे कुछ नहीं सुझा और मैं तालाब की दिशा में मुड़ गया, मुझे बबलू दिखाई दे रहा था, कोहरे के बीच, वह तालाब में छटपटा रहा था । मैंने बिना कुछ सोचे समझे तालाब में छलांग लगा दी ।

मेरे छलांग लगाते ही हर्ष और केशव हक्के बक्के रह गए, वह मानो नींद से जागे । क्या हुआ यह समझने में उन्हें कुछ पल लगे । उसी पल कोहरा और घना हो गया और कुछ भी दिखाई देना बंद हो गया । मैं उस घने कोहरे के बीच तैर रहा था । अब मैं उस भुतहे अंधेरे तालाब के बीचों बीच तैर रहा था, पानी हद से ज्यादा ठंडा था । मेरा सारा शरीर मानो सुन्न

पड़ गया था । मैं हर्ष और केशव को देख नहीं पा रहा था । मेरे चारों ओर पानी में छटपटाने के स्वर निरंतर बढ़ते जा रहे थे, केशव और हर्ष शायद चीख चिल्ला रहे थे लेकिन उनकी चीखें मुझे सुनाई देना ही बंद हो गई थी ।

"मैं तुम्हारी मदद करने आया हूँ बबलू ।" मैंने हिम्मत जुटाते हुए कहा । मेरे मुंह नाक में पानी भर गया था, बोलते हुए मैं बुरी तरह खांस उठा । पानी में हलचल हुई और मेरे पैरों पर किसी के हाथ महसूस किया जिसने मुझे पानी में खिंच लिया । मैं पानी के भीतर जा कर पुन: बाहर आया, मुझे पानी के भीतर खींचा गया था । मैं तैरने में एक्सपर्ट था लेकिन इस पानी में तैर नहीं पा रहा था । ऐसा लग रहा था जैसे मैं किसी गाढ़ी दलदल में जा फंसा हूँ ।

"बबलू, मैं जानता हूँ तुम इतने सालों से किसी ऐसे की राह देख रहे हो जो तुमसे डरने के बजाये तुम्हें बचाने आये । आज मैं तुम्हें बचाने आया हूँ, तुमने जितना सहना था सह लिया, जितना तड़पना था तड़प लिया । तुमने अपने कर्मों की सजा भुगत ली, तुम्हें और नहीं छटपटाना है, मुक्ति तुम्हारा हक़ है बबलू, मेरा हाथ थाम लो, मैं तुम्हें किनारे ले चलूँगा । निकल चलो इस तालाब से, मेरे साथ चलो बबलू ।" मैंने अपना हाथ कोहरे की तरफ बढ़ा दिया, हालांकि मन में यही मना रहा था कि इस अँधेरे में कोई मेरे हाथ को थाम न ले । अचानक पानी में छपाकों के स्वर मद्धिम होने लगे, मैंने देखा एक हाथ ने कोहरे से निकल कर मेरे हाथ को थाम लिया । यह एक सिहरा देने वाला अनुभव था, एक मर चुके व्यक्ति ने मेरा हाथ थामा हुआ था, उसका बाकी शरीर अब भी कोहरे के कारण दिखाई नहीं दे रहा था । अब मेरे कानों में केशव और हर्ष के चीखने की आवाजें साफ़ सुनाई दे रही थी । मुझे किनारा दिखाई देने लगा था । उस हाथ की और नजरें उठा कर देख लेने की मेरी हिम्मत नहीं हो रही थी । मैं किनारे की और तैरता रहा, मैंने उस हाथ से अपनी पकड़ बिल्कुल भी ढीली नहीं की । केशव तालाब में छलांग लगाने के लिए तैयार दिखाई दे रहा था कि अचानक उसकी नजर मुझ पर पड़ी, हर्ष फौरन किनारे की तरफ बढ़ने लगा, वह पानी में कूद ही पड़ता ।

"मैं आ रहा हूँ, मत कूदो पानी में ।" मैंने चीखते हुए कहा तो दोनों अपने-अपने स्थान पर स्तब्ध से खड़े रह गए । शायद उन्हें भी मेरे हाथ में थमा हुआ बबलू का हाथ दिखाई दे रहा था । कोहरा अब भी इतना था कि हमें बबलू का शरीर दिखाई नहीं दे रहा था । मैं किनारे पर आ लगा, अब भी मेरे हाथ में उसका हाथ था, केशव और हर्ष ने फौरन मुझे ऊपर खिंचा, मेरे ऊपर खींचते ही वह हाथ अदृश्य हो गया । इसी के साथ तालाब में छाया हुआ कोहरा भी एकदम से कहीं गायब हो गया, कुछ देर पहले खदखदाता हुआ तालाब अब एकदम शांत पड़ा था, पानी में कहीं कोई भी हलचल नहीं थी, मानो यहाँ कुछ हुआ ही नहीं था । क्या बबलू मुक्त हो चुका था ? मैंने उससे मदद करने का वचन तो माँगा ही नहीं, मुझसे भारी गलती हो गई थी, शायद बबलू जा चुका था ।

"बबलू, मुझे तुम्हारी मदद की जरूरत है ।" मैं धीमे से बुदबुदाया । मेरी आँखों में पानी आ गया, बबलू ही मेरी आखिरी उम्मीद था ।

"मैं आऊंगा । तुम्हारी एक बार सहायता जरूर करूँगा ।" मेरे कानों में मानो कोई फुसफुसाया । मैंने चारों तरफ देखा लेकिन कोई नजर नहीं आया, क्या यह मेरा वहम था ? शायद मेरे कान बज रहे थे या शायद बबलू ने मुझसे बात की । यह खयाल आते ही अपने आप मेरे चेहरे पर मुस्कान दौड़ गई, मैं उठ कर खड़ा हो गया, अभी कुछ बोलता उससे पहले ही हर्ष मेरे गले लग गया । पता नहीं किस आवेग में आकर मैं भी उससे लिपटा रहा ।

वह भावुक हो गया था ।

"प्रीतम ! सोनल को तुझसे ज्यादा प्यार करने वाला और कोई नहीं मिल सकता । भाई तू ग्रेट है ।" उसने मेरी पीठ थपथपाई । उसकी आवाज में भर्राहट थी, उसने अपने आप को मेरा साला बनना कुबूल कर लिया था । मैंने उसे धीरे से अपने से अलग किया ही था कि चटाक से केशव के चांटे ने मेरी आँखों के आगे चाँद सितारे नचा दिए ।

"अबे ! अगली बार से ऐसी कोई हरकत की ना तो साले तेरे मरने के बाद तेरे भूत को पकड़ कर किसी बोतल में बंद करके ऐसी जगह फेंकूंगा कि दुनिया खत्म होने तक मुक्ति नहीं मिलेगी । ऐसा कौन करता है भाई, डरा दिया यार, एकदम से डरा दिया । उस चुड़ैल के मिलने से इतना नहीं डरा, उस बुढ़ऊ बीड़ी मास्टर से इतना नहीं डरा, इस बुडूये से भी इतना नहीं डरा जितना तेरे पानी में कूदने से डर गया था, अबे कलेजा मुंह को आ गया था यार," उसकी आँखों से आंसू छलक पड़े और उसने मुझे गले लगा लिया । मेरी आँखों से भी आंसू बह रहे थे, मेरे बोलने के लिए कुछ बाकी ही नहीं था ।

"हम कामयाब हो गए भाई ।" मैंने इतना ही कहा और हर्ष भी हमारे साथ आ लगा ।

□□□

मुझे अपने कपड़े तक बदलने का होश नहीं था, हम तीनों सारी रात के जागे हुए थे, कोहरे और कड़ाके की ठंड में तीनों ने पूरी रात गुजारी थी । मेरी हालत सबसे ज्यादा खराब थी । झुमरी द्वारा घसीटे जाने पर मुझे बहुत सी चोटें आई थी, काफी जगह सूजन भी हो चुकी थी । पेड़ से टकराए जाने के कारण कमर और गर्दन वाला हिस्सा अकड़ सा गया था । सारे शरीर पर खरोंचो और चोटों के लाल नीले निशान भरे पड़े थे, मेरी आँखें जल रही थी, मुझे अपना पूरा शरीर भारी महसूस हो रहा था । एक कदम भी बढ़ना मुश्किल लग रहा था । आते समय मैं हर्ष के साथ बाइक की पिछली सीट पर बैठा रहा क्योंकि मेरा सिर हल्का-हल्का चकराने लगा था । इस भयानक ठंड में तालाब में कूदने के कारण मुझे ठंड लग चुकी थी । मेरा सारा शरीर कांप रहा था । मोटरसाइकिल ने जैसे ही आंगन में प्रवेश किया वहां खड़े नौकर चाकर हमारी ओर दौड़े । रामजस ने फौरन मुझे सहारा देकर उतारा ।

“बाबू जी तो बुखार से तप रहे है छोटे साहब ।” रामजस ने मेरे माथे को छूकर हर्ष की तरफ देखते हुए कहा । केशव दौड़ा-दौड़ा मेरे पास आया, उसने मुझे थाम लिया ।

“मैं ठीक हूँ, बस थोड़ी सर्दी लग गई है ।” मैंने सफ़ेद झूठ कहा ।

“मैं डॉक्टर को लेकर आता हूँ ।” हर्ष बाइक से उतरा भी नहीं और फौरन बाइक आंगन के बाहर की दिशा में मोड़ ली ।

“रुक जा भाई ! मैं ठीक हूँ, हल्की सी हरारत है बस, एक कड़क चाय मिल जायेगी तो सब ठीक हो जायेगा, वैसे भी इतनी सुबह-सुबह कोई डॉक्टर मिलने से रहा ।” मैंने जबरदस्ती हंसते हुए कहा । मैं नहीं चाहता था कि इस समय कोई भी कहीं जाए, शादी परसों थी और यहाँ जैसे जैसे समय पास आ रहा था, मकान में अजीब सी मनहूसियत सी फैलने लगी थी । मैं और कुछ कहता तभी सोनल के माता पिता आते दिखाई दिए, वे मेरी हालत देख कर चौंक पड़े ।

“ये क्या हुआ बेटा ? इतनी चोट कैसे लगी ।” मेरी होने वाली सासू जी हड़बड़ा गई थीं, आह इतना प्यार । ऐसी सासू जिसे मिले उसका ससुराल स्वर्ग जैसा हो जाए । ससुर जी, मेरा मतलब हर्ष के पापा के रूखे और सख्त हाथों ने मेरे चेहरे को पकड़ कर अपनी तरफ घुमाया, इसमें दर्द भी काफी हुआ लेकिन मैं पी गया, उनके सामने भला कौन कमजोर दिखना चाहता था ।

“सब ठीक है, मुझे कुछ नहीं हुआ है । हल्की फुलकी चोट है भर जाएगी । फिक्र मत कीजिये ।” मेरी नजरें किसी को तलाश रही थी । जाहिर सी बात है मैं सोनल को देखने का इच्छुक था ।

“कल रात तुम लोगों के जाते ही सोनल की तबीयत खराब हो गई ।” माँ रूआँसी हो गई, अंकल ने उन्हें सम्भाला ।

“क्या हुआ पापा ?” हर्ष ने प्रश्न किया ।

“बेटा ! कल जैसे ही तुम तीनों यहाँ से निकले उसके बाद हमने शादी के लिए मंगवाए गए गहने और कपड़े सोनल को दिखाए, सोनल अपने मनपसन्द गहने देख रही थी कि अचानक उसकी आवाज बदल गई, वह उस पर हावी हो गई । सोनल तुम्हारे दादाजी के सामने जा खड़ी हुई और पागलों की तरह हंसने लगी । उसने पिताजी को धमकाया और कहा भी कि इस घर में कोई शादी नहीं होगी । मैं यहाँ कोई शादी नहीं होने दूंगी, प्रियंवदा इस बार अपने काबू से पूरी तरह बाहर आ चुकी थी, हमने कुछ प्रसिद्ध पंडितों को बुलावा भेजा किन्तु इस गाँव में आने के लिए कोई राजी नहीं हुआ । प्रियंवदा के साथ जो हुआ था उसके बाद से ही तांत्रिकों और पंडितों ने इस गाँव को एक हिसाब से बहिष्कृत कर दिया है । उनका मानना है कि यह सम्पूर्ण गाँव प्रियंवदा और उन पगली औरतों की सामूहिक

हत्या के पाप का दोषी है, यहाँ उनका शाप है और वे इस श्राप के मध्य पड़कर उन अतृप्त आत्माओं के नजर में दोषी नहीं बनना चाहते ।" अंकल जी का स्वर भर्रा गया ।

"दादा जी कहाँ है ? और सोनल ?" हर्ष बेचैन हुआ ।

"दादाजी कल से ही नहीं सोये है, वे रात भर रोते रहे । अपने कमरे में बंद रहे और बार-बार प्रियंवदा से माफ़ी मांगते रहे । और सोनल रात भर हंगामा मचाने के पश्चात अब बेसुध सी है ।" कहते हुए माँ फफक पड़ी । हर्ष ने उन्हें सम्भाला, माहौल अब काफी गंभीर सा हो गया था । जहाँ कुछ दिनों पहले शादी ब्याह का माहौल था अब वहाँ अजीब सी मनहूसियत फैली दिखाई दे रही थी । हर्ष के पिता मेरी तरफ बढ़े, उनकी नजरों में अपनापन साफ़ झलक रहा था ।

"आराम कर लो बेटा, काफी चोट लगी है । थोड़ी देर में डॉक्टर आ जायेंगे, लेकिन तब तक जाओ कमरे में लेट जाओ, शरीर को आराम मिलेगा ।" उनके स्वर कोई बनावटीपन या औपचारिकता नहीं थी । वे वाकई मेरी अवस्था से चिंतित थे । इस माहौल में क्या कहूँ क्या ना कहूँ कुछ समझ में नहीं आ रहा था । मेरा शरीर वाकई जवाब दे रहा था, फिलहाल मुझे आराम की सख्त जरूरत थी लेकिन सोनल बेहोश थी, यह बात मुझे बेचैन कर रही थी ।

"वो अपने कमरे में है, फिक्र मत करो । चिंता की कोई बात नहीं है, अभी सोकर उठेगी तो सब सामान्य हो जायेगा, हमारे लिए यह नया नहीं है ।" अंकल ने मेरे कंधे पर हाथ रखते हुए कहा, पता नहीं कैसे उन्होंने मेरी मन की बात जैसे पढ़ ली थी । मुझे समझ ही में नहीं आया क्या प्रतिक्रिया दूँ और मैं सिर हिलाकर रह गया । केशव और रामजस ने सहारा देकर मुझे अपने कमरे तक पहुँचाया ।

"आप लेटिये, मैं नहाने के लिए पानी गर्म कर देता हूँ और हल्दी वाला गर्म दूध भी भिजवा देता हूँ, इससे काफी आराम मिलेगा ।" रामजस ने अपनत्व भरे भाव से कहा और जवाब की प्रतीक्षा किये बगैर कमरे से बाहर निकल गया । मेरी आँखें शून्य में ताक रही थी । मेरी चेतना तब लौटी जब केशव ने मुझे झिंझोड़ा ।

"अबे अब इतना सोच मत, फिलहाल आराम दे खुद को । मैं भी बेहद थका हुआ हूँ तो फिलहाल सोना ही सबसे सही है । वो ठीक हो जाएगी, तू उसे ठीक कर देगा भाई । रात भर जंग लड़ी है, बेकार नहीं जाएगी हमारी मेहनत । अभी दिमाग काम नहीं करेगा तो आराम कर ले, उठ कर आगे की योजना सोचते है ।

मैं लेट गया, लेटते ही आँखें मूंद गई । आँखें बंद किया ही था कि मुझे ऐसा प्रतीत हुआ जैसे मेरा पूरा बिस्तर ही किसी अँधेरी खाई में जा गिरा, मैं बड़ी तेजी से घुप्प अँधेरे कुएं में मानो गिरते जा रहा था । मैं कसमसाया, मेरी धड़कनें तेज हो गई, मैंने पूरी ताकत से केशव को आवाज देनी चाही लेकिन मेरे गले से कोई स्वर नहीं निकल रहा था ।मैं तीव्र गति से

गिरते जा रहा था । अचानक से यह क्या हो गया और मैं कहाँ जा रहा हूँ इसका कोई भी होश नहीं था, लेकिन इतनी तेजी से यदि मैं धरातल से टकराया तो मेरे शरीर में कोई हड्डी साबुत नहीं बचने वाली थी । लेकिन मैं कुछ भी करने में असमर्थ था, मेरे हाथ पाँव मेरा आदेश नहीं मान रहे थे । और एक धमाके के साथ मेरा बिस्तर कठोर धरातल से टकराया और उसके टुकड़े-टुकड़े हो गए, बिस्तर के साथ मैं भी छितरा गया था । दो तीन टप्पे खाते हुए मैं सीधे किसी गड्ढे एक अँधेरे गड्ढे में जा गिरा । गड्ढे में नर्म घास जैसी कोई चीज थी जिस कारण मेरी हड्डियां नहीं टूटी । मैं काफी देर तक उस गड्ढे में पड़ा रहा, आँखें जब अँधेरे में थोड़ी देखने की अभ्यस्त हुई तो मैंने एक साये को गड्ढे के ऊपर खड़ा पाया । वह मेरी तरफ ही देख रहा था । वह कोई महिला थी, मैंने आँखों पर जोर दिया तो वह आकृति जानी पहचानी सी लगी ।

सोनल ! वह सोनल थी । अभी मैं उसे पहचान ही पाया था कि मुझे महसूस हुआ मैं जहाँ गिरा हूँ वहाँ घास जैसी कोई चीज नहीं है, वह कुछ और ही थी । कुछ ही पलों में मेरे सारे शरीर पर सैकड़ों जीव रेंग रहे थे । ओह नहीं ! यह वही अहसास था जो मुम्बई की उस बरसात में हुआ था, यह गड्ढा हजारों कनखजूरों से भरा हुआ था । मैं इस समय हजारों बड़े-बड़े कनखजूरों से घिरा हुआ था, दहशत से मेरी आँखें निकल आई, मैंने चीखना चाहा लेकिन चीख नहीं निकली, कनखजूरे मेरे सारे शरीर पर तेजी से रेंग रहे थे । मैंने सोनल की तरफ देखा, वह हंस रही थी, उसका रूप एकदम से बदल गया था ।

“तू इस लड़की को मुझसे बचाएगा लड़के ?” सोनल के मुंह से किसी और महिला का स्वर निकला, वह स्वर इतना भारी था कि एक क्षण के लिये सारे कनखजूरे तक मेरे शरीर से अलग हो गए ।

“मैं सालों से अपने प्रतिशोध के लिए भटक रही हूँ, इस लड़की के रूप में मेरे प्रतिशोध ने जन्म लिया है । तू क्या दुनिया कोई शक्ति इस लड़की और पूरे परिवार को मेरी प्रतिशोध की अग्नि में भस्म होने से नहीं बचा सकती ।” इतना कहकर वह गुर्राई, और पलक झपकते ही वह मेरे सीने पर आकर सवार हो गई । उसकी लम्बी-लम्बी नुकीली उंगलियाँ मेरी गर्दन पर कस चुकी थी । उसका चेहरा मेरे चेहरे के एकदम समीप था, उसने अपना मुंह खोला मैं भय से उसे देखते रहा और उसके बाद जो हुआ उसने मेरे छक्के छुड़ा दिए, उसके मुंह से एक विशालकाय अजगरनुमा कनखजूरा निकला, अपने सैकड़ों पैरों को लपलपाता हुआ वह विशालकाय कनखजूरा मेरे चेहरे के सामने आकर रुक गया, वह मात्र दो इंच की दूरी पर आकर रुका था, उसके पैरों के मध्य होती घिनौनी और डरावनी सरसराहट मेरे कानों में गूंज रही थी, मैंने आँखें बंद कर ली लेकिन कनखजूरे के पैरों को अपने चेहरे पर महसूस करते ही मेरी आँखें फट से खुली । और उसी के साथ वह कनखजूरा मेरे मुंह से आ चिपटा । अगर यह बुरा सपना था तो मैं चाहता था यह यही खत्म

हो जाए, खत्म क्यों नहीं होता यह सपना, मैं छटपटा उठा और पुन: सैकड़ों हजारों कनखजूरों के मध्य जा गिरा, वे सभी मुझ पर टूट पड़े । मैं भयंकर रूप से चीखा, गला फाड़कर चीखा ।

□□□

मुझे किसी का स्पर्श महसूस हुआ और मैं उससे दूर भागा । दूर भागते ही कठोर फर्श से गिरकर मेरी चीख निकल गई । मैंने अपने आसपास देखा, मैं कमरे में ही था । मेरे सामने हर्ष, अंकल, आंटी और केशव खड़े थे । मैं पागलों की तरह उन्हें देखे जा रहा था । मैं बदहवास सा था, दिमाग एकदम सुन्न सा हो गया था ।

केशव मेरे पास आया, मैंने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी, उसने मुझे उठाया और बिस्तर पर बिठा दिया । मैं अब डर के मारे अब तक कांप रहा था ।

"तुमने कोई बुरा सपना देखा है, अब सब ठीक है । तुम उठ चुके हो, सब ठीक है ।" केशव ने मुझे झिंझोड़ा । हे भगवान ! यह वाकई एक सपना ही था, सपना ही था । मैं बता नहीं सकता यह जानकर मुझे कितनी राहत मिली थी, मैंने एक गहरी सांस छोड़ी और लगभग रो ही पड़ता लेकिन अंकल आंटी को देखकर रुक गया ।

"बेटा ! अब तुम्हारे लिए यह जगह सही नहीं है, हम नहीं चाहते कि हमारी वजह से तुम लोगों का कोई नुकसान हो । इसलिए आप को कल सुबह ही यहाँ से वापस भेजने का इतंजाम कर दिया जायेगा, अब तक जो भी तकलीफ हुई उसके लिए हो सके तो हमें माफ़ कर देना ।" अंकल ने हाथ जोड़ लिए ।

"अरे यह आप क्या कर रहे है ? आप हमें शर्मिंदा कर रहे है । ऐसा मत कीजिये, हमें कोई तकलीफ नहीं है, बस माहौल थोड़ा सा बदल गया है उसी में तालमेल नहीं बिठा पाए है । आप बेफिक्र रहिये, कैसी बातें कर रहे हैं आप ?" केशव ने उनके जुड़े हुए हाथ को पकड़ कर कहा, अंकल कुछ न कह सके ।

"केशव सही कह रहा है, हम अपनी मर्जी से आये है । आप सभी हमारे परिवार की तरह है, और परिवार को मुसीबत के समय अकेला नहीं छोड़ा जाता ।" जाने कैसे मेरे मुंह से यह बात निकल गई, स्वाभाविक था कि अंकल आंटी को यह बात भीतर तक छू गई थी । इसी बीच मैंने अपने आप का मुआयना किया, मेरे कपड़े बदले हुए थे, शरीर की चोटों पर पट्टियां बंधी हुई थी ।

"यह सब कब हुआ ?" मैं हैरान हुआ ।

"आप काफी समय से बेहोश थे ।" यह आवाज सोनल की थी । उसने कमरे में प्रवेश किया, एकबारगी उसे देखकर मैं दहल ही गया था । लेकिन फिर खुद को सम्भाल लिया,

नहीं यह सपने वाली सोनल नहीं थी । उसके हाथ में एक लोटा था जिसे उसने एक कटोरी से ढंक रखा था ।

"तुम्हारी बेहोशी में ही डॉक्टर आये, दवाई-इंजेक्शन, मरहम पट्टी सब हुई । कपड़े वगैरह बदले गए । डॉक्टर ने कहा था चिंता की कोई बात नहीं बस तुम्हें आराम की जरूरत है, तो तभी से महाराज सारे कमरे में अकेले फैले हुए है ।" वह मुस्कुराई, हालांकि उसकी मुस्कुराहट फीकी थी ।

उसी पल रामजस ने प्रवेश किया ।

"साहब, बाहर टेंट, शामियाने और रजाई गद्दे वाली गाड़ियां आ पहुंची है ।" रामजस ने सूचित किया । अंकल आंटी और हर्ष ने उसकी तरफ देखा और आने का संकेत किया ।

"अच्छा ! हम चलते है, थोड़ा बाहर की व्यवस्था देखते है, तुम तब तक नहा धो कर फुर्सत हो जाओ ।" हर्ष ने मुझसे कहा और अपने माँ बाप के साथ चला गया, जाते-जाते उसने केशव को भी कुहनी से मार कर बाहर आने का संकेत किया, केशव हड़बड़ा और खिसियाते हुए बाहर निकल गया । अब कमरे में मेरे और सोनल के अलावा कोई नहीं था ।

"मैं हल्दी वाला दूध लाई हूँ ।" उसने मुस्कुराते हुए कहा ।

मैंने पूरा का पूरा लोटा खाली कर दिया । कुछ चीजें कभी आउट ऑफ़ डेट नहीं होती, यह हल्दी वाला दूध भी उन्हीं चीजों में से एक है जो इस संसार के अंत तक अपनी मौजूदगी बनाये रखेगी, अमर है यह ।

"क्या सोचकर गए थे ?" सहसा सोनल का स्वर एकदम गंभीर हो गया ।

"मैं समझा नहीं ?" उसके स्वर में आये बदलाव से मैं चौंक गया था ।

"क्या मैं नहीं जानती तुम क्या करने गए थे ?" उसके चेहरे पर अब नाराजगी के भाव दिखाई दे रहे थे । उसे कैसे पता चला ? सोनल को अपनी योजना बताने का सवाल ही नहीं उठता था, उसे बताने का अर्थ था प्रियंवदा को भी पता चल जाना । फिर वह कुछ न कुछ रुकावट अवश्य डालती, मैंने तो बताया नहीं, हर्ष और केशव के बताने का प्रश्न ही नहीं उठता, अंकल आंटी को हमारी योजना की भनक तक नहीं थी, तो किसने बताया ? रामजस ने तो नहीं ? हो सकता है उसके मुंह से निकल गया हो ।

"ओ हेल्लो ! कहाँ खो गए मिस्टर ? काफी गहरी सोच में डूबे हुए हो, यानी कोई चोरी पकड़ी गई है ? मुझे पता था तुम और केशव अपनी हरकतों से बाज नहीं आओगे, हमारा गाँव वैसे भी ऐसी अजीबोगरीब चीजों के लिए बदनाम है । तुम केशव के साथ आओगे और रिसर्च के नाम पर ऊलजलूल हरकतें नहीं करोगे ऐसा हो ही नहीं सकता । देख लिया उसका नतीजा, अब पड़े हो दो दिन से बिस्तर में ।" उसकी बात सुनकर मेरी जान में जान आई । एक पल को तो लगा मानो हमारी सारी योजना के बारे में उसे पता चल गया । उसके नर्म हाथ मेरी कलाई पर थे । वह हल्के-हल्के मेरी हथेली को सहलाने लगी, मैंने

उसकी तरफ देखा । रोशनदान से खिली हुई धूप की किरणों से उसका चेहरा दमक रहा था, ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो वह धूप उसके चेहरे की सुन्दरता से प्रस्फुटित हो रही हो । वह मेरी और देखकर मुस्कुराई, उसके होंठों पर कम्पन हुआ और मोतियों से सफ़ेद दांत चमक उठे । उसकी गोरी रंगत अब गुलाबी सी होती प्रतीत हो रही थी, वह एकटक मुझे निहार रही थी । मैंने आज तक सोनल को कभी इतने गौर से नहीं देखा था, अब जाकर मुझे अपनी किस्मत पर जलन होने लगी थी, मुझे विश्वास नहीं हो रहा था कि इतना अनुपम सौन्दर्य, अप्सराओं को भी इर्ष्या हो जाये ऐसी सुन्दरता की प्रतिमूर्ति मेरी प्रेयसी थी ।

"क्या सोच रहे हो प्रीतम ?" उसका मधुर स्वर सुनाई दिया । उस स्वर में आज सम्पूर्ण राग समाये हुए प्रतीत हो रहे थे ।

"यदि मैं कवि होता तो तुम्हारे चेहरे की कांती पर, तुम्हारे निरागस सौन्दर्य पर महाकाव्य रच देता ।" मैंने उसके सिर पर अपनत्व से हाथ फेरते हुए कहा तो वह लजा गई ।

"क्या कह रहे हो तुम ?" वह शरमाई ।

"यदि मैं लेखक होता तो तुम्हारे सौन्दर्य के लिए असंख्य अलंकार एवं उपमाओं का प्रयोग करके, श्रृंगार रस से परिपूर्ण उपन्यास रचता । यदि मैं शायर होता तो तुम्हारी प्रशंसा में शायरी लिखता, गायक होता तो तुम्हारे प्रेम आकंठ डूब कर मधुर गीत गाता, संगीतकार होता तो तुम्हारे प्रेम में मगन होकर वह संगीत बनाता जिसे सुनने मात्र से कठोर से कठोर हृदयी भी प्रेम रस से विभोर हो जाए, यदि मैं....."

"बस ! बस ! मेरे प्रीतम में कहीं महाकवि कालिदास जी तो प्रवेश नहीं कर गए ?" सोनल ने अपनी अंगुलियाँ मेरे होंठों पर रखते हुए कहा ।

"आज तुम्हारी भाषा को क्या हो गया है ? कहाँ से सीखा यह सब ?" वह मुस्कुराई ।

"तुम्हारे प्यार में सब सीख गया ।" मैंने मुस्कुराकर कहा तो उसने मेरी हथेली पर चपत लगा दी । मेरा मन इस समय बेचैन हो रहा था, पता नहीं क्यों लेकिन मैं बुरी तरह उद्वेलित था । सोनल को पता नहीं क्या हुआ, उसने यहाँ वहां देखा और जब किसी को कमरे के आसपास नहीं पाया तो मुझे गले लगा लिया । मेरे हाथ खुद ब खुद उसके सिर पर चले गए, मैंने उसके माथे को चूम लिया तो उसकी पलकें झुक गई । उसी पल हर्ष दरवाजे पर प्रकट हुआ वह कुछ कहता लेकिन फौरन वहाँ से इस प्रकार हट गया मानो कुछ देखा ही नहीं । मैं फौरन सोनल से अलग हुआ ।

"आता हूँ ।" मैंने कहा, सोनल के चेहरे से साफ़ पता चल रहा था कि इस तरह छोड़कर जाना उसे बिलकुल भी पसंद नहीं आया था ।

आखिर वह रात भी आ गई

शगुन के उपहार देखते-देखते अचानक सोनल के चेहरे के भाव ही बदल गए । वह अचानक से हंसने लगी, यह बेहद डरावनी हंसी थी, उसके चेहरे पर अजीब से भाव उभरे जिसने उसके सुंदर से चेहरे को एकदम से डरावना बना दिया । सभी उसे इस प्रकार देख कर खौफजदा हो गए थे, जबकि उनके बताये अनुसार सोनल की यह हालत कोई नयी नहीं थी । प्रियंवदा फिर उसपर हावी हो गई थी । उसने शगुन के उपहारों को फेंकना शुरू कर दिया, उसकी आँखों की पुतलिया आश्चर्यजनक रूप से फैलने लगी थी । अचानक उसकी आँखों का सफ़ेद हिस्सा पूर्णतया अदृश्य हो गया, उसकी आँखे पूरी तरह से स्याह काली थी, मेरी बोलती बंद हो चुकी थी । सोनल बेहद ही भयानक ढंग से हंस रही थी, दादाजी वहां पहुँच चुके थे, सोनल का पूरा परिवार वहां इकट्ठा हो चुका था ।

"भूषण ! मैंने कहा था ना, इस परिवार को बर्बाद कर दूंगी, तुझे खुशियों के लिए तरसना होगा, चिता की अग्नि कभी तुम्हारे परिवार का पीछा नहीं छोड़ेगी ।" सोनल का चेहरा एकदम बदल चुका था । उसके बाल बुरी तरह से खुल के लहरा रहे थे, चेहरा एकदम सफ़ेद पड़ गया था, मानो उसके शरीर से रक्त की एक-एक बूँद निचोड़ ली गई हो । उसकी आवाज बेहद अजीब हो चुकी थी । फिल्मों में जैसे दिखाते है भूत प्रेत से ग्रस्त व्यक्ति को भारी आवाज में चीखते चिल्लाते हुए, यह उससे भी नेक्स्ट लेवल का था, कुछ ऐसा जिसे शब्दों में नहीं लिखा जा सकता, बस यूँ समझ लो यदि किसी कमजोर दिलवाले के सामने ऐसा कुछ हो तो वह परलोक प्रस्थान कर जाए । सोनल और उसके परिवार को इन चीजों की आदत सी हो गई थी । इसलिए वे उतने आतंकित बिलकुल नहीं थे, हाँ वे घबराये और बदहवास से जरूर थे । आज शायद कुछ ऐसा हो रहा था जो इससे पहले कभी नहीं हुआ था ।

"यहाँ शादी की खुशियां नहीं मनाई जाएंगी, यहाँ मंगलगान नहीं मातम होना चाहिए, यहाँ शगुन नहीं मुर्दहिया फूल होने चाहिए, डोली नहीं अर्थी होनी चाहिए, बरात नहीं शोक होना चाहिए, तू और तेरा पूरा परिवार इसी के लायक है ।"

डोली, क्या उसने डोली कहा ? आजकल कौन डोली में जाता है ? प्रियंवदा को आजके हिसाब से अपडेट होने की जरूरत थी । मैं भी क्या बेवकूफी कर रहा था । यहां सबकी जान आफत में थी, प्रियंवदा अपनी पूरी क्षमता से सोनल पर हावी हो चुकी थी और मैं बेवकूफ उस चुड़ैल के अपडेट होने की बात सोच रहा हूँ, लानत है मुझपर ।

कोमल के भीतर से मानो एक साथ दस महिलाएं चीख रहीं थीं, केशव की सिट्टी-पिट्टी गुम थी, मुझे उस समय कुछ समझ ही नहीं आ रहा था, अभी हम तीन-तीन भूतों से लड़कर आ रहे थे, कायदे से हमारा डर कम होना चाहिए था, लेकिन ऐसा हो नहीं रहा था,

मेरे रोम-रोम से पसीना छूट रहा था, रोंगटे खड़े थे, खून का बहाव इतना तेज हो रहा था मानो मेरी नसों को फाड़कर बाहर उबल पड़ेगा । उसी समय तेज आंधी सी चली और मकान की खिड़कियाँ खड़खड़ा कर खुल गई, बस यही बाकी रह गया था । आंधी और तूफ़ान । हर हॉरर सीक्वेंस में मौसम पता नहीं कैसे बिगड़ जाता है, भूत प्रेत मौसम को कंट्रोल कर सकते है तो उससे बड़ी ताकत कोई और नहीं हो सकती, लेकिन यह शायद संयोग ही था । वैसे भी शाम से ही हल्की-हल्की हवा बाह रही थी और तूफ़ान के आसार बन रहे थे, गाँव देहातों में ऐसी आंधियां आम बात है ।

एक खिड़की का पल्ला तो इतनी जोर से खुला कि वह टूटकर सीधे मेरी ओर बढ़ा, केशव ने फुर्ती दिखाते हुए यदि मुझे नहीं खींचा होता तो उस दरवाजे से टकराकर मेरा सिर फूट चुका होता । मैंने केशव की ओर धन्यवाद वाली नजर से देखा ही था कि उसके सिर पर स्थित झूमर इतनी जोर से लहराया कि उसके कुछ हिस्से सीधे केशव के सिर पर गिरने लगे, मैंने आव देखा ना ताव और उसे भरपूर शक्ति से एक ठोकर मारी, अचानक हुए इस हमले से वह सम्भल नहीं पाया जिससे वह कई फ़ीट दूर जा गिरा ।

वह कुछ समझ पाता उससे पहले ही उस झूमर का आधा हिस्सा फर्श पर जा गिरा, उसके गिरते ही जोरदार आवाज हुई और कमरे के फर्श पर कांच के टुकड़े बिखर गए । सोनल गुर्राई और उठ खड़ी हुई, उसका चेहरा बालों से ढंका हुआ था । वह दादाजी की ओर बढ़ी, यह देखकर हर्ष फुर्ती से दादाजी और उसके बीच आ खड़ा हुआ, अभी हम कुछ कर पाते उससे पहले ही कमरे में रखा हुआ शगुन का संदूक तेजी से उछलते हुए आया और हर्ष से जा टकराया । उस भीषण चोट से हर्ष सीधे फर्श के उस हिस्से में जा गिरा जहां झूमर के टुकड़े बिखरे पड़े थे, उसका शरीर कांच के उन टुकड़ों से जख्मी हो गया, केशव ने उसे खींचकर उस स्थान से हटाया ।

“रुक जाओ बेटी, ऐसा मत करो ।” अंकल जी उर्फ़ सोनल के पापा चीखे, उनके साथ-साथ आंटी जी भी पूरी शक्ति से चीखी । दोनों थर-थर कांप रहे थे, उनकी आँखों से आंसू बह रहे थे । सोनल ठिठकी, उसने पीछे मुड़ कर देखा, मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि मैं करूँ तो क्या करूँ ? ऐसे समय में सारी बुद्धि मानो घास चरने चली गई थी । सोनल उनकी तरफ ही देख रही थी, अचानक उसका स्वर बदला ।

“मम्मी, पापा आई एम् सॉरी । मैं खुद को कंट्रोल नहीं कर पा रही हूँ, ये मुझपर पूरी तरह से हावी हो गई है, मुझे इससे बचाइए, पापा प्लीज ! माँ तुम कुछ करती क्यों नहीं ?” वह बिलख पड़ी, वह गिड़गिड़ा रही थी, रो रही थी । सोनल का यह हाल देखकर मेरा दिल रो दिया, मेरी आँखों से अपने आप आंसू बहने लगे, उफ्फ ! कितना बेबस और असहाय था मैं, उसी समय उसने मेरी तरफ देखा । उसकी नजरें मुझसे मिली, उसकी आँखे अब भी पूर्णरूप से काली थी लेकिन चेहरे पर बेबसी साफ़ दिखाई दे रही थी । उसका चेहरा बुरी

तरह से बन बिगड़ रहा था, साफ़ जाहिर था कि वह अपने भीतर ही भीतर एक सम्पूर्ण युद्ध लड़ रही थी ।

"मुझे बचा लो प्रीतम, मुझे रोक लो । मैं तुम्हारे साथ रहना चाहती हूँ, तुम्हारे साथ जीना चाहती हूँ । मुझे अपने पास बुला लो, मैं इन अंधेरों में नहीं रहना चाहती, मुझे यहाँ जले हुए मांस की गंध आती है, चिता के धुएं से मेरा दम घुटता है, इस घने अँधेरे से मुझे डर लगता है । कुछ करो, मुझे यहां से मुक्ति दिलाओ । बचा नहीं सकते तो मार ही दो, मुझे ऐसे नहीं जीना, हाँ मुझे मार दो ।" कहते हुए उसने अपने पैरों के पास पड़ा हुआ कांच का टुकड़ा उठाया और अपने गले पर वार कर दिया, लेकिन वह वार उसके गले पर नहीं पड़ा, उस प्रहार को मेरे हाथ ने रोक लिया । कांच के उस प्रहार मेरे हाथ पर लम्बा और गहरा जख्म हो गया, जिससे फौरन खून बहने लगा । सोनल की चीख निकल गई, उसी के साथ सब के सब चीख पड़े, हर किसी का दिल किसी अनहोनी की आशंका से थर्रा उठा था लेकिन सोनल पर वार हुआ ही नहीं था । उसकी नजरें मुझसे मिली, मुझे अपना दर्द महसूस तक नहीं हुआ, मैं अपने हाथ की चोट एकदम से भूल गया ।

"ऐसा क्यों किया तुमने ?" सोनल ने कांपते हाथों ने मेरे जख्म को छुआ और उसी पल उसका रोना एक विचित्र सी हंसी में तब्दील हो गया । उसने उस कांच के टुकड़े से मुझपर वार कर दिया, कांच मेरे कंधे को चीरती चली गई, लेकिन मैं उसे छोड़ नहीं सकता था । पता नहीं क्या जूनून था क्या दीवानापन था लेकिन मुझे दर्द महसूस ही नहीं हो रहा था । प्रियंवदा और सोनल में कश्मकश जारी थी, निस्संदेह प्रियंवदा ज्यादा शक्तिशाली थी, मैंने सबकुछ भूलकर सोनल को अपनी बाहों में कस लिया, सोनल का हाथ मेरी पीठ पर वार करने के लिए उठा लेकिन रुक गया । वह गुर्रा रही थी, उसकी साँसे मेरी साँसों से टकरा रही थी, वे साँसे भट्टी की मानिंद गर्म थी, उसकी आँखों का सुर्ख काला रंग मानो मुझे अँधेरे में खिंच रहा था ।

"मुझे छोड़ दो, यह तुम्हें चोट पहुंचा रही है ।" सोनल बिलख रही थी ।

"तुम पर पड़ी हर चोट मुझ पर ही तो पड़ रही है सोनल, मैं तुम्हें नहीं छोड़ सकता ।" मैंने उसे और जोर से कस लिया ।

"लड़के ! तू इस लड़की से प्यार करता है ना ? प्यार में तो लोग जान भी दे देते है, लेकिन तेरी जान सोनल लेगी, तुझे मैंने बहुत सहन कर लिया, कितनी बार तुझे चेतावनी देने का प्रयास किया लेकिन तू नहीं माना, और मरने यहां तक चला आया ।" सोनल के गले से प्रियंवदा ने कहा और एक झटके से उसने मेरी बाहों से सोनल को आजाद कर दिया । उसकी शक्ति मुझसे कई गुना ज्यादा थी, उस झटके से मैं दूर जा गिरा और एक मेज से टकराया । मेज मेरी कमर में बुरी तरह जा लगी और फिर मुझमे उठने की शक्ति ही नहीं बची, उधर हर्ष और केशव ने अपने आप को संभाल लिया था, केशव आगे बढ़ा, वह

मूर्खता कर रहा था, इस समय उसने अपनी सीखी हुई हर विद्या का प्रयोग करना चाहिए था लेकिन वह मानो लड़ने के लिए ही आगे बढ़ रहा था । वह ठिठका, सोनल ने उसकी तरफ देखा, वह फर्श लगभग दो फुट ऊँची उठी, वह दृश्य देखकर हमारे छक्के छूट गए, वह हवा में एकदम स्थिर खड़ी थी ।

"ग्रेविटी के नियम तुम पर लागू नहीं होते क्या ? गुरुत्वाकर्षण का सिद्धांत तुम्हें नहीं पता ? ओह,न्यूटन भी शायद तुम्हारे जमाने के ही थे, इसलिए तुम्हें उनके गुर्त्वाकर्षण के सिद्धांत के बारे में नहीं पता और तुम हवा में चल रही हो । अगर तुम्हें ग्रेविटी के सिद्धांत के बारे में पता होता तो तुम यह नहीं कर सकती थी ।" केशव सनक गया था क्या ? वह क्या लेक्चर दे रहा था ? चुड़ैल के सामने प्रोफेसरी झाड़ रहा था । सोनल गुर्राई, उसके गुर्राने से कमरे के सारे खिड़की दरवाजों के शीशे चटख गए और कमरे भर में कांच के टुकड़ें से उड़ने बिखरने लगे, सब अपने आप को उन टुकड़ों से बचाने में लगे थे । सोनल ने उन टुकड़ों को हवा में जहां का तहाँ स्थिर कर दिया, सारे टुकड़े अब जस के तस हवा में ही स्थिर थे, मुझे मैंट्रिक्स फिल्म के हीरो की याद आ गई जब वो ऐसे ही गोलियों की एक पूरी बौछार को रोक लेता है, लेकिन यहां हीरो नहीं बल्कि एक भूतनी खड़ी थी । केशव की बोलती बंद हो गई, वह अपने आसपास हवा में तैर रहे हजारों कांच के टुकड़ों को सांस रोके हुए देख रहा था ।

"सुनों, दीदी मेरी बात सुनो । हर किसी के भूत, प्रेत पिशाच बनने का कोई ना कोई कारण होता है । कोई ना कोई ऐसी इच्छा होती है जो अधूरी रह गई, आप डेढ़ दो सौ साल से भटक रही हैं, ऐसे अच्छा लगता है क्या बिन बुलाये मेहमान जैसे किसी के शरीर में जाकर रहना ? आप अपनी इच्छा बताइये, मैं पूरी करूंगा, आपको मुक्ति दिलाऊंगा ।" केशव अब पुराने फार्मूले पर काम कर रहा था, इच्छा पूर्ण करो और मुक्ति दिलाओ ।, वही फार्मूला जिसका उपयोग करके हमने झुमरी, बीड़ी चाचा और बुडुआ को मुक्त करके उन्हें एक वचन में बाँध लिया । वह दो कदम आगे बढ़ा और पचास कदम दूर जा गिरा, सोनल ने उसे हाथ लगाए बगैर ही कचरे की भांति फेंक दिया था, केशव की हड्डी पसली एक हो गई होगी । वह दुबारा उठा ही नहीं, पता नहीं डर की अधिकता थी या चोट ज्यादा लगी थी । सोनल ने हमारी तरफ एक नजर देखा, उसके भाव अत्यधिक भयानक थे, देखते ही देखते हवा में लहराते सैकड़ों कांच के टुकड़े हमारे इर्द गिर्द घूमने लगे, दादाजी की कुर्सी अपने आप हवा में उठने लगी थी । बाहर की आंधी खुली खिड़कियों एवं दरवाजो से घर के भीतर तक दाखिल हो गई थी, हवा का शोर, टूटे कांच के टुकड़ों से लगती चोटों और आंधी से भरी हुई धूल के कारण हमारी हालत खराब हो गई थी, केशव हार नहीं मान रहा था वह कुछ बुदबुदा रहा था, लेकिन उसी पल एक गमला उसकी खोपड़ी पर पड़ा और उसकी बोलती बंद हो गई । मेरी हालत खराब थी, मुझे लगा था बाकी भूतों की तरह मैं प्रियंवदा से भी निपट लूंगा । लेकिन प्रियंवदा सबसे शक्तिशाली थी, उसने किसी को सम्भलने का

अवसर ही नहीं दिया था । आंधी के साथ कांच के टुकड़े और भयानक रूप धरती जा रहे थे । कोई भी टुकड़ा किसी की भी जान ले सकता था । कुछ साफ़ दिखाई नहीं दे रहा था, कुछ छींटे से हवा में उड़ रहे थे जो त्वचा पर महसूस हो रहे थे, वो खून की बूंदें थीं । हर कोई घायल हो रहा था और उनका खून इस चक्रवात में उड़ रहा था । वह दृश्य एकदम अकल्पनीय सा था, यूँ लग रहा था मानो प्रलय हो रही हो । "रुक जाओ सोनल, प्रियंवदा को अपने ऊपर मत हावी होने दो । वह तुमसे ज्यादा शक्तिशाली नहीं है, कोशिश करो ।" मैं पूरी शक्ति से चीखा, और उसी पल एक तेज धमाका सा हुआ, आंगन में कहीं एक पेड़ पर भयानक आवाज करते हुए एक बिजली गिरी, उसका धमाका इतना तेज था कि कान सुन्न हो गए थे । एक भीषण चमक से सबकी आँखे चुंधिया गई थी । कुछ क्षण तक हमें दिखाई सुनाई देना ही बंद हो गया था, सन्नाटे की सीटियां सी कान में गूंज रही थी । और अचानक ही सब शांत हो गया, आंधी हल्की पड़ गई, कांच के टुकड़े और उड़ती वस्तुएं फर्श पर जा गिरी, मौसम एकदम शांत हो गया । धुल मिट्टी के कण भी साफ़ होने लगे, कोई आवाज यदि सुनाई दे रही थी तो वह उस पेड़ के जलने उतपन्न होने वाली लपटों एवं लकड़ियों के चिटकने का स्वर था । पेड़ सुलग रहा था, उसकी लपटें इतनी प्रचंड थी कि पूरा इलाका ही प्रकाशमान हो गया था, घर के नौकर चाकर बाल्टियां लेकर उस आग की दिशा में दौड़ लगा रहे थे ।

हमने एक दूसरे की तरफ देखा, केशव घुटनों के बल बैठा हुआ था, उसके शरीर पर जगह-जगह पर छिलने के निशाँन थे, जबड़ा भी सूज गया था । हर्ष दिवार के सहारे खड़ा होने का प्रयास कर रहा था, उसे भी काफी चोटें आई थी । अंकल आंटी जी को संभाल रहे थे, उनकी हालत भी खस्ताहाल थी लेकिन हमारे मुकाबले उन्हें कम चोटें आई थी, और मैं, मेरी हालत पहले से ही खराब थी ऊपर यह सब, इसके बावजूद मुझे दर्द का आभास नहीं हो रहा था, शायद सोनल को बचाने का जूनून.....सोनल ? सोनल कहाँ है ?

"सोनल कहाँ है ? मेरी बच्ची कहाँ गई ?" आंटी जी उसी पल चीखी, मैंने चारों और नजरें दौड़ाई मुझे सोनल कहीं दिखाई नहीं दी ।

"बाबूजी कहाँ हैं ? बाबूजी भी नहीं दिखाई दे रहे है ।" अब चीखने की बारी अंकल जी की थी, उनके पिताजी भी गायब थे, सोनल और उसके दादाजी, या यह कहें कि प्रियंवदा और उसका दुश्मन दोनों गायब थे ।

"कहा गए दोनों ?" हर्ष ने भी अपनी प्रतिक्रिया दी जो जरुरी भी थी, मेरा दिमाग घूम रहा था, जी कर रहा था कि गले की नस-नस को चीख चीख कर फाड़ दूँ " कहाँ है सोनल ? कहाँ गई ? चाहती क्या है चुड़ैल मेरी सोनल से ? बुढऊ से दुश्मनी है तो उसे अपने साथ ले जा लेकिन मेरी सोनल को छोड़ दो, उसने क्या बिगाड़ा है तेरा ? दादाजी की वैसे भी उम्र हो गई है, पाषाण काल का प्राणी और कितना जियेगा ?" लेकिन मैं चीख नहीं

सकता था, और यह सब तो हरगिज नहीं बोल सकता था। ओह मैं एक पल के लिए मुद्दे से भटक गया था, कहाँ था मैं ? सोनल के पास, नहीं ! सोनल तो यहाँ है ही नहीं, प्रियंवदा उसके दादा के साथ उसे भी कही ले कर चली गई।

इस समय घरवालों की हालत खराब थी, कुल जमा चार पांच जने थे, सबकी हालत बयान करने में पन्ने खराब नहीं कर सकता, वैसे भी काफी फ़ालतू की बातें मैं कर चुका हूँ।

"मुझे पता है वह कहा गई होगी।" मैंने दिमाग के घोड़े दौड़ाये और एक ही जगह का नाम उभरकर सामने आया।

"कहाँ ?" सबने एक साथ कोरस में कहा।

"खंडीपुर !"

"खंडीपुर ?"

"हाँ ! वही जहाँ प्रियंवदा के साथ साथ बेबस औरतों को जलाया गया था, वही जहां से इस श्राप ने जन्म लिया।" मैंने कहा।

"हमें चलना चाहिए।" हर्ष ने फौरन दिवार पर लगी दुनाली निकाल कर लहराई।

"वह किसी काम की नहीं है, उसे रख दो। सौ डेढ़ सौ साल पुरानी दुनाली है वह, एक तो गोली होगी नहीं और होगी भी तो जंग खाकर पड़ी होगी ट्रिगर तो किसी के बाप से न दबने वाला।" केशव को इस समय भी तर्क-कुतर्क सूझ रहे थे।

हर्ष ने ट्रिगर दबाकर देखा, भड़ाम से कानफोडू धमाका हुआ और गोली चल गई जो दिवार में टकराकर बिखर गई। उसने केशव की तरफ देखा, वह झेंप कर नजरें चुराने लगा।

"उसमें दो ही गोलियां होती है, एक तुमने बेकार कर दी, दूसरी गोली किसी काम की नहीं, क्योंकि प्रियंवदा सोनल के शरीर में है ओर हम सोनल पर गोली नहीं चला सकते।" मैंने एकदम ठंडे स्वर में कहा तो हर्ष दुनाली फेंक दी। उसकी आँखे आंसुओ से लबालब भरी हुई थी, वह अपनी विवशता पर खीज उठा था। "मैं वहां जाऊँगा।" मैंने कहा, मैंने निर्णय ले लिया था।

"हम भी आएंगे।" हर्ष ओर केशव ने एक स्वर में कहा।

"नहीं ! तुम दोनों मत आओ, खंडीपुर में उनका होना या होना निश्चित नहीं है। यह केवल मेरा अनुमान है, अगर वो दोनों यही कहीं आसपास होंगे तो तुम दोनों की जरूरत होगी यहाँ।" मैंने अपनी बात खत्म की।

"मेरी बात सुन, कोई आये या ना आये लेकिन मैं तेरे साथ चलूँगा, हर्ष यहाँ है, उसके आदमी बाहर आग बुझा रहे है। अगर कोई जरूरत पड़ी तो ये संभाल लेंगे, लेकिन हम

शुरू से लेकर अब तक साथ ही आये है, साथ लड़े है तो मुझे चलना ही होगा तेरे साथ ओर सुन, मना मत करना मैं मानूंगा नहीं ।" केशव की हिम्मत देखकर मेरा मन भर आया ।

"मेरा मन नहीं मान रहा, लेकिन सोनल को यहाँ भी खोजना है, इसलिए तुम दोनों जा सकते हो, हमारे कुछ आदमी भी तुम्हारे साथ आएंगे ।" हर्ष ने सुझाव दिया ।

"उन्हें हमारे साथ भेजने से अच्छा यहाँ के चप्पे चप्पे पर सोनल की खोज में लगाना ज्यादा सही होगा । उनके यही आसपास होने की संभावना ज्यादा है, हम केवल अपने एक अंदेशे पर खंडीपुर जा रहे है । बस कोई ऐसा आदमी हमारे साथ भेज दो जो वहाँ का रास्ता अच्छे से जानता हो ।" मैंने कहा तो हर्ष सोच में पड़ गया, कुछ देर सोचने के बात उसे भी मेरी बात जम गई ओर उसने अपना आदमी हमारे साथ भेजने का निर्णय लिया ।

अब रामजस हमारे साथ था, कहानी की शुरुआत भी उसी के साथ हुई थी ओर अंत भी । यह बात अलग थी कि हमारे साथ चलने के नाम से ही उसके छक्के छूट गए थे ।

□□□

खंडीपुर केवल नाम का गाँव था, यह ऐसी जगह थी जो गूगल पर भी उपलब्ध नहीं है, मैंने कई बार प्रयास किया है लेकिन ऐसा कोई स्थल दिखाई नहीं दिया जो इस क्षेत्र में स्थित हो । अब चेक करने का सवाल ही नहीं था क्योंकि हम खंडीपुर की सीमा में आ चुके थे, यहाँ बचा-खुचा नेटवर्क भी लुप्त हो गया ।

"समय क्या हो रहा है केशव ?" मैंने केशव की तरफ देखा जो उस कच्ची पगडंडी पर मेरे और रामजस के साथ चल रहा था । उसने मोबाइल निकाला लेकिन मोबाइल स्विच ऑफ़ था । मैंने अपना मोबाइल देखा तो वह भी बंद था, हमने रिस्टार्ट बटन दबाया किन्तु बेकार ।

"यह कैसे हो गया ? मोबाइल तो ऐसे बंद हो गए है जैसे उनकी बैटरी ही डेड हो गई हो ।" मुझे हैरानी हुई, कायदे से मुझे अब ऐसी चीजों से हैरान होना छोड़ देना चाहिए था । पिछले कुछ अरसे से जैसी चीजों से मेरा सामना हो रहा था उनके सामने यह सब कुछ भी नहीं था, लेकिन इंसानी फितरत मानती नहीं, हर फ़ालतू बात पर चौंक ही जाती है ।

"भाई, हम अब उन शापित आत्माओं के गाँव में है । यहाँ जो न हो वही कम है, अब हमें इन चीजों से ध्यान हटा कर आगे बढ़ना चाहिए, हम सोनल को तलाश कहाँ करेंगे ? और क्या प्रियंवदा ने दादाजी को अब तक छोड़ दिया होगा ? वह तो उन्हें मार चुकी होगी ।" केशव चिंतित था ।

मैंने पगडंडी पर स्थित घास पर अपने पैर रखते हुए अपनी नजरें उस उजाड़ गाँव की तरफ स्थित रखी, अन्धेरा पूरे चरम पर था इसके बावजूद वहाँ कुछ उजाड़ खंडहर नजर आ रहे थे, देखने से ही यह गाँव भूतों का डेरा प्रतीत हो रहा था । चारों और उगी हुई बेतरतीब

झाड़ियाँ, एक दूसरे में गुत्थमगुत्था हुए घने पेड़ों का जंगल, मिट्टी के बेहिसाब टीले जिसमें से कई बार किसी फुफकार तक की आवाजें सुनाई देती थी जो हमारी रूह कंपा देती थी ।

"यह बूढ़े नाग की आवाजें है ।" रामजस पहली बार कुछ बोला, उसकी आवाज बेहद क्षीण थी, मानो वह हमसे दो किलोमीटर दूर खड़ा हो । मैंने उसकी तरफ देखा । वह सूखे पत्ते की तरह कांप रहा था, हर्ष ने उसे हमारे साथ भेजा ही इसलिए था कि वह गाँव का एकमात्र बचा व्यक्ति था जिसने एक ही रात में उन भूतों का सामना किया और जीवित बच गया था जिनसे कोई नहीं बच पाया था । हाँ इस कड़ी में अब हमारा नाम भी शामिल था ।

"बूढ़ा सांप क्या होता है ?" केशव ने प्रश्न किया । उस भयानक माहौल में भला कौन सामान्य व्यक्ति ऐसी बातें पूछता है ।

"जो सांप दो सौ साल से ऊपर जीता है, उसके तन पर सफेद बाल आ जाते है, उसके जहर की मात्रा भी कई गुना बढ़ जाती है । वह हमेशा इन शापित जगहों में घूमता है क्योंकि इससे उसकी शक्तियां बढ़ती रहती है, धीरे-धीरे कुछ और वर्ष बिताने के पश्चात उसे और शक्तियां प्राप्त हो जाती है, जिससे वह इंसानी रूप भी धारण कर सकता है । वह आपके हमारे बीच भी घूम सकता है और हमें पता भी नहीं चलेगा, वह जिसके सानिध्य में रहेगा उसकी आयु कम होती रहती है, और वह आयु उस सांप की आयु में सम्मिलित हो जाती है, वही है बूढ़ा सांप ।" रामजस इतना कहकर चुप हो गया ।

"मुझे तो यह रामजस ही बूढ़ा सांप लगता है ।" केशव कान में फुसफुसाया तो मैं उसे घूरने लगा । अब ऐसी कहानियां कौन बनाता है, कहाँ से उठती है यह अफवाहें भगवान जाने । सांप तो खुद बताएगा नहीं यह सब, और इन गाँवों में डिस्कवरी या नैशनल ज्योग्राफिक वाले तो आते नहीं जो सांप की दिनचर्या पर नजर रख सके । मैं यहाँ से वापस गया तो उन्हें जरूर चिट्ठी लिखूंगा, उनके पास अच्छा अवसर है, आप अमेजॉन के जंगलों में कीड़े मकौड़ों को खोजते रहो और हमारे गाँव देहातों में ही सांपों के चमत्कारी रूप यूँ ही हर टीले पहाड़ी में सुस्ताते हुए मिल जाते है ।

"मैं उस रात ही मर जाता तो ठीक था ।" रामजस की आवाज कांप रही थी, हमने उसकी तरफ घूर कर देखा ।

"चाचा जब इतना ही डर लग रहा था तो आये ही क्यों हमारे साथ ?" मैं तुनक कर बोला ।

"बाबूजी का नमक खाया है, उन्हें ऐसे कैसे छोड़ सकता हूँ ? भले ही डर लग रहा है लेकिन इसका मतलब यह तो नहीं कि उम्र के इस पड़ाव में आकर अपने नमक से गद्दारी कर दूँ ? कोशिश तो करूँगा ही, वैसे भी अब कितनी उम्र बची है ?" रामजस ने गंभीर स्वर में कहा ।

"यह शायद दादाजी की उम्र कह रहे है ।" केशव फिर फुसफुसाया ।

"अबे तू यह फुसफुसाना बंद कर और अपना निम्बू लहसुन निकाल और पता कर कहाँ भूत प्रेत है, समय नहीं है हमारे पास ।" मैं झल्लाया तो वह पागल जैसी शक्ल बनाने लगा, भाई ने अपना सामान लाया ही नहीं था ।

"और ये घोस्टहंटर बनेंगे ? वाह ।" मैंने वाकई ताली बजाते हुए कहा । वह बस हंस कर रह गया । हम जिस गाड़ी में आये थे वह भी अब झाड़ियों के पीछे से दिखाई देना बंद हो चुकी थी । आगे गाड़ी जा ही नहीं सकती थी ।

"मुझे पता है वो कहाँ होंगे ?" मैंने कुछ याद करते हुए कहा ।

"उस जगह पर जहाँ प्रियंवदा को गड्ढे में फेंका गया था और जलाया गया था, दादाजी वही होंगे ।" उस गड्ढे का जिक्र करते ही मुझे कनखजूरों वाली बात भी याद आ गई, मैं भूतों से इतना खौफ नहीं खा रहा था जितना कनखजूरों से, मेरे शरीर में झुरझुरी सी दौड़ गई ।

"वह जगह गाँव के बाहर होने की बात कही गई थी, श्मशान के पास ही कहीं । हमें श्मशान खोजना होगा, गाँव के बाहर के एक हिस्से से तो हम ही आ रहे है और यहाँ कोई श्मशान है ही नहीं, तो वह गाँव के पिछले हिस्से में ही होगा, यानी हमें इन खंडहरों के मध्य से होते हुए जाना होगा, केशव ने खंडहरों की घनी बस्ती की तरफ उंगली दिखाते हुए कहा । कोई और रास्ता ही नहीं था, हम काफी देर तक खंडहरों में चलते रहे, हर बार लगता मानो इन खंडहरों से कुछ निकल कर हमारे शरीर पर झपट पड़ेगा लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ, कुछ उल्लुओं और चमगादड़ों की आवाजें बीच बीच में हमारी फाड़ देती थी । मन करता था यहीं से उलटे पाँव होकर निकल लें, लेकिन सोनल का ख्याल आते ही फिर हिम्मत मिल जाती और हम आगे बढ़ते चले जाते । उन गिरे पड़े और जले हुए अवशेषों के मध्य से गुजरते हुए हम आगे बढ़े तो श्मशान जैसा एक स्थान दिखाई दिया । वहाँ किसी के कराहने की आवाजें सुनाई दी, यह दादाजी की आवाज थी । सोनल भी वही होगी, यह सोचकर मैंने अंधाधुंध दौड़ लगा दी, झाड़ियों को चीरता हुआ मैं दौड़ता चला गया, अचानक मेरे पैर किसी चीज में फंस कर लड़खड़ाये और मैं गिर पड़ा, गिरते ही मैं बुरी तरह लुढ़कने लगा, मेरा शरीर कई स्थानों से घिसटता हुआ उछलता हुआ एक बीहड़ जैसी जगह में जा गिरा । जहां गिरा वहाँ काफी अन्धेरा था, दर्द के आगे मेरी आँखों के आगे बेहोशी सी छाने लगी थी, मैंने केशव और रामजस की आवाजें सुनी , वो भी दौड़ कर मेरी तरफ आ रहे थे, मैंने उन्हें चेतावनी देने का प्रयास किया लेकिन वो भी ठीक उसी प्रकार लड़खड़ाये और मेरे साथ वाले गड्ढे में आ गिरे ।

"भाई हम कहा हैं ?"

"यह गोजर वाली दलदली बीहड़ है ।" रामजस चीखा ।

"गोजर ?"

"कनखजूरे को गोजर बोलते है यहां ।" इतना कहना ही था कि मेरे शरीर पर सैकड़ों की संख्या में कीड़े से रेंगते महसूस होने लगे और इस बार यह स्वप्न नहीं था । वाकई में मैं इस बार कनखजूरों के मध्य फंस गया था, पचास नहीं, सौ नहीं, इस बार उनकी संख्या शायद हजारों में थी, इस दर्रे की दीवारें उन्हीं से भरी पड़ी थी । केशव और रामजस पागलों की तरह अपने ऊपर आते कनखजूरों को हटाने का प्रयास कर रहे थे । एकाध दो की संख्या हो तो हट भी सकते है लेकिन यहाँ चारों ओर हजारों की संख्या में कनखजूरे थे, उनके रेंगने की, उनके सैकड़ों पैरों की सरसराहटें कानों में गूंज रही थी, कई बार मेरे कानों में जाते कनखजूरों को मैंने तोड़ कर खींचा था, अब परिस्थिति बद से बदतर होती जा रही थी, डर के मारे हमारा दिमाग काम करना बंद कर चुका था ।

"प्रीतम कुछ करो, इन्हें हटाओ ।" केशव पागलों की तरह चीखे जा रहा था । हम सभी उन कीड़ों से भरे तालाब में मानो फंस से गए थे, जहां जाने की कोशिश करते वे हमारे ऊपर झपट पड़ते थे । मैं जानता था हमारा सामना शायद ऐसी चीजों से होगा इसलिए मैंने गाड़ी से पेट्रोल निकाल कर एक बोतल में भर लिया था, मैंने अपनी जेब से वह बोतल निकाली और तेजी उसका ढक्कन खोल दिया, ढक्कन खुलते-खुलते दो कीड़े मेरी उंगलियों पर जा लिपटे, अब उनके डंक हमारे शरीरों में पैवस्त होने लगे थे । शरीर के हर हिस्से में हजारों सुइयां सी चुभ रही थी, कीड़े एकदम से मानो पागल हो गए थे ओर हमें हर हाल में खत्म करने पर उतारू हो गए थे । मैंने पेट्रोल का एक घूंट पिया ओर दूसरे हाथ से लाइटर निकाल कर जला लिया, केशव ओर रामजस ने उस जलती लौ की ओर देखा ओर उसी पल मैंने अपने मुंह में भरा हुआ पेट्रोल पूरी ताकत से लौ पर फुहार के रूप में फेंकना आरम्भ कर दिया, वह फुहार अब भड़कती अग्नि के रूप में फ़ैल रही थी । कीड़ों में हलचल मचने लगी, आग को देखकर वह अपने स्थान से हटने लगे । मैंने फिर एक घूंट पिया और कीड़ों के ढेर पर फिर से बौछार की, आग की लपटें तेजी से उनकी और बढ़ी और वे साबुन के झाग की तरह हटने लगे । जहां जहाँ फुहार पड़ती कीड़े अपना स्थान छोड़ने लगे, हमें जमीन दिखाई देने लगी थी, हम उस खुले हिस्से में आग की बौछार करते हुए आगे बढ़ने लगे । अचानक उस टीले के ऊपरी हिस्से में दादाजी को पड़े हुए देखा, मेरी बौछार एक पल को रुक सी गई, और उसी पल कीड़ों के शोर से फिर वह गड्ढा गूंज उठा ।

"अबे फूंक साले, नशा कर रहा है क्या ?" मेरे पीछे खड़ा केशव आतंक से चीखा तो मैं होश में आया । मैंने फिर फुहारें फेंकनी आरम्भ कर दी और कीड़े तिड़-तिड़ की आवाज के साथ जलने सुलगने लगे । रास्ता साफ़ होने लगा, हम दौड़ते भागते उस गड्ढे से बाहर निकल गए । अब हम गड्ढे के ऊपर थे, ऊपर आकर हमने चैन की सांस ली, हे भगवान क्या था यह सब ।

“शाब्बाश मेरे भाई । शाब्बाश क्या करतब दिखाया तूने, यह कब सीखा ?” केशव ख़ुशी से चीखते हुए गले लग गया ।

“इसका समय नहीं है हमारे पास ।” मैंने दादाजी की तरफ देखा, मैं हैरान था कि वे इस गड्ढे के इतने पास पड़े थे लेकिन इन कीड़ों ने ऊपर आकर इनपर हमला नहीं किया । हम उनकी तरफ बढ़े उन्होंने हमें पहचान लिया ।

“तुम्हें यहाँ नहीं आना चाहिए था ।” वो चीखे, उनका चीखना था कि मेरे पीछे सोनल आ खड़ी हुई ।

“कैसे हो मेरे प्रीतम ।” आवाज प्रियंवदा की थी मैं पीछे मुड़ा ही था कि एक ताकतवर प्रहार मुझपर हुआ और उस गड्ढे के मुंहाने पर जा गिरा । केशव को पता नहीं कहाँ से एक टहनी मिल गई थी जिसे लहराते हुए वह आगे बढ़ा, उसके आगे बढ़ते ही वह हवा में लहरा उठा, सोनल उसे घूर रही थी ।

“मैंने इस बुड्ढे को इसलिए नहीं मारा क्योंकि मुझे पता था तुम यहां जरूर आओगे । इसे मारना ही होता तो कब का मार देती, लेकिन इससे मेरा प्रतिशोध पूरा नहीं होता, मैं इसे और इसके परिवार से हर ख़ुशी छीन लेना चाहती हु । सोनल इसकी अगली पीढ़ी है और यह बुड्ढा उसे तड़पते देखेगा, उसके सामने उसके प्यार को उसी प्रकार मरते देखेगा जिस प्रकार मुझे मारा गया था । मुझे तड़पाया गया था । मेरी तड़प मेरी तकलीफ यह सब तुम्हें भी भुगतनी होगी । सोनल के शरीर में प्रियंवदा हुंकार रही थी । केशव अब कीड़ों से भरे उस गड्ढे के ऊपर लहरा रहा था, किसी भी समय वह उसमें गिर सकता था वह आतंक से चीखने लगा था ।

“प्रियवंदा दीदी ! दीदी मुझे छोड़ दो, मैं तो इस बेवकूफ दोस्त के चक्कर में यहाँ आ गया था । मैंने समझाया था इस वाहियात लड़की के पीछे मत पड़ लेकिन वह मुझे जबरदस्ती यहाँ लेता आया । मैं तुम्हारी इच्छा पूरी करने में मदद करूँगा, मुझे छोड़ दो मैं खुद इस बुढ़ऊ की टाँगे तोडूंगा । यह और इसके पनौती परिवार के कारण आज मेरी यह हालत है, बहन ऐसा मत करो । मैं विनती कर रहा हूँ, मुझे भी अपनी बहन की मौत का बदला लेना है इसके खानदान से ।” केशव बड़बड़ा रहा था, कैसा बदला ? अब यह क्या ट्विस्ट लाया था केशव ।

प्रियंवदा चौंक गई, मेरी तरफ आते आते वह ठिठक गई और केशव को देखने लगी । केशव अब भी लहरा रहा था, उसके कुछ ही फ़ीट नीचे हजारों कनखजूरे किटकिटा रहे थे मानो वे उसके गिरने की प्रतीक्षा कर रहे थे, उनका रेंगना और अजीब सी किटकिटाहट मेरे भीतर तक सुनाई दे रही थी ।

“इसका पोता हर्ष, उसने मेरी बहन की जिंदगी बर्बाद कर दी । उसकी वजह से मेरी बहन ने खुद को ज़िंदा जला लिया, उसने उसे प्यार के सपने दिखाए और शादी किसी और

से तय करवा ली, उसे हर सपना दिखाया उसका फायदा उठाया,भावना के साथ-साथ शरीर से भी खिलवाड़ किया। लेकिन जब इसकी शादी की बात सुनी तो वह टूट गई, मेरी बहन ने हर्ष को अपने गर्भवती होने के बारे में बताया तो उसने उसपर लांछन लगाकर उसे किसी और का बच्चा कहकर अपमानित करके भगा दिया। उसमें साथ दिया उसके पिता और सोनल ने, आखिरकार मेरी बहन ने अपने तीन माह के गर्भ के साथ ही खुद को आग लगा ली और जिंदगी खत्म कर ली।" कहते कहते केशव फफक कर रोने लगा। मैं स्तब्ध रह गया यह सुनकर, तो क्या केशव मेरे साथ केवल इसीलिए आया था? अपना बदला लेने के लिए?

प्रियंवदा स्तब्ध सी खड़ी थी, उसके देखते ही केशव गड्ढे के किनारे आ गया उसने उसे गिराने का कोई प्रयास नहीं किया।

"दीदी मेरा बदला लेने में मेरी मदद करो दीदी।" केशव रोते हुए सोनल के सामने आ खड़ा हो गया। सोनल किंकर्तव्यविमूढ़ सी खड़ी थी, और इस शब्द का क्या मतलब होता है यह मुझे नहीं पता, बस काफी जगह पढ़ा था तो यहाँ भी बोल दिया।

केशव आंसू बहाते हुए उसके सामने आया और उसी पल उसकी जेब से उसने एक बोतल निकाली जिसमें मौजूद द्रव्य फुर्ती से सोनल के ऊपर फेंक दिया। सोनल के शरीर में स्थित प्रियंवदा चीख पड़ी और तड़पने लगी। उसके चीखते ही गड्ढे में हलचल होने लगी और कीड़ों का झुण्ड बाहर दौड़ने लगा, हजारों कीड़े गड्ढे से निकल कर हमारी और बढ़ रहे थे। केशव ने उस बोतल के द्रव्य को फुर्ती से तड़पती हुई सोनल पर छिड़कना जारी रखा, सोनल इस प्रकार चीख रही थी मानो उस बोतल में तेज़ाब हो।

"प्रीतम देख क्या रहा है? यह गंगाजल प्रियंवदा को ज्यादा देर तक कमजोर नहीं रख पायेगा, जल्दी कर, वह समय आ गया है।" वह चीखा, उसी समय अब तक सन्न खींचे बैठा रामजस मेरी तरफ बढ़ा और मेरी पेट्रोल वाली बोतल पर कब्जा कर लिया। उसने मेरे हाथ से लाइटर भी ले लिया ओर पेट्रोल पीकर उसकी बौछार लौ पर फूंक कर अग्नि वर्षा करने लगा, कीड़े तितर-बितर होने लगे थे, रामजस ने केवल कीड़ों को ही निशाना नहीं बनाया बल्कि वह आसपास उगे हुए सूखे झुरमुटों एवं पेड़ों पर भी अग्निवर्षा करने लगा। धीरे-धीरे उन घनी झाड़ियों में आग फ़ैल गई, कीड़े आग में जलने भुनने लगे रामजस ने जोश-जोश में पूरी बोतल ही खाली करके एक जबरदस्त फुहार मारी और उस गड्ढे में आग का दावानल नाच उठा, हजारों कीड़ों के जलने-सुलगने की दुर्गंध वातावरण में फ़ैल गई।

प्रियंवदा यह देखकर चीख उठी, वह पूरी शक्ति समेत कर हवा में उठी, उसका संकेत पाते ही एक भयंकर दृश्य उपस्थित हो गया, ऐसा दृश्य जिसकी मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी। जलते सुलगते कनखजूरे एक दूसरे में लिपट कर विशालकाय आकृति के रूप में संगठित हो रहे थे, सारे कीड़े भयंकर रूप ले रहे थे, वह रूप एक महिला का था। कीड़ों से

बना शरीर जिसका हर भाग रेंग रहा था, रामजस यह देखकर अपने होश कायम न रख सका ओर जमीन पर जा गिरा । केशव ने बचा हुआ पूरा गंगाजल सोनल के शरीर पर फेंक दिया, वह गला फाड़कर चीखी । उसके शरीर के भीतर की प्रियंवदा गंगाजल के प्रभाव से कमजोर हो रही थी बहुत कमजोर । उसने मात्र कुछ क्षणों के लिए शरीर छोड़ा ।

“मुझे आप लोगों की सहायता चाहिए, झुमरी दीदी, बीड़ी काका, चोर भाई यही समय है मेरी सहायता का वचन पूरा करो और इस प्रियंवदा को सोनल के शरीर में प्रवेश करने से पहले ही रोक लो । मैं अपने वचन से तुम्हें मुक्त कर दूंगा । तुम्हें मुक्ति मिलेगी ।” मैं पूरी शक्ति से चीखा ओर उसी पल उस पूरे गांव में अग्नि की एक भयंकर लपट सी उठी और तीन आकृतियाँ उन अग्नि की लपटों से प्रकट हुई, वे तीनों आ गए थे और मेरे बिना कुछ कहे, कुछ ही क्षणों के लिए सोनल का शरीर छोड़ी हुई प्रियंवदा की आत्मा पर जा झपटे । प्रियंवदा शक्तिशाली जरूर थी लेकिन इन तीनों के मुकाबले वह अकेली थी, उनकी पकड़ से वह छूट नहीं सकती थी । सोनल अर्धबेहोशी की हालत में यह देख रही थी । प्रियंवदा छटपटा रही थी, कीड़ों से बनी वह आकृति चीखी और फौरन टूट गई । आग ने उस आकृति को चारों ओर से घेर लिया था । कीड़े हजारों की संख्या में राख हो रहे थे ।

प्रियंवदा का भयंकर रूप अब शीतल हो गया था वह तीनों की पकड़ में जकड़ी हुई थी ।

“मेरा प्रतिशोध पूरा नहीं हुआ है, उसे पूरा होने दो । मुझे छोड़ दो । मैं सबको मार दूंगी, सबको मार दूंगी ।” वह फुफकारी ।

“इसे अपने साथ ले जाओ दीदी ।” मैंने झुमरी की तरफ देखा, झुमरी मुस्कुराई, उसका हाथ मेरे सर पर मैंने महसूस किया, वह आशीर्वाद वाला हाथ था । मैं स्वयं झुक गया ।

प्रियंवदा एक बार पूरी शक्ति समेत कर चीखी लेकिन बीड़ी चचा और चोर की आत्मा में अनेकों आत्माओं की सम्मिलित शक्ति थी जो उनके कारण मरी थी, उन सभी ने मिलकर प्रियंवदा को दबोच रखा था, तीनों की इस रस्सा-कस्सी में एक भयंकर धमाका सा हुआ ओर तेज प्रकाश हुआ । एक झटके के साथ मैं ओर केशव उड़कर जमीन पर जा गिरे और सब कुछ थम गया । वातावरण पूर्णतया शांत हो गया, झुमरी दीदी, बीड़ी चाचा ओर बुड्आ गायब हो चुके थे, उनके साथ ही प्रियंवदा भी अदृश्य हो चुकी थी । मुझे सहसा सोनल का ख्याल आया मैं उसकी तरफ दौड़ा, वह मुझे देख कर मेरी ओर लपकी ओर मेरे सीने से लगकर फूट पड़ी, बेतहाशा रो पड़ी । मैं खुद को नहीं संभाल पाया ओर मैं भी बच्चों की तरह रो पड़ा । यह ख़ुशी के आंसू थे, सोनल को अपने जीवन भर के शाप से मुक्ति मिल गई थी ।

“बेटा तुमने हमें जन्म जन्मान्तर का कर्जदार बना दिया ।” दादाजी ने हाथ जोड़ लिए, केशव ने उन्हें सहारा देकर उठा रखा था । रामजस को भी होश आ गया था, वह भौंचक्का

होकर यहां वहां देख रहा था । अब वहां कुछ भी नहीं बचा था, सूखा जंगल जल रहा था और साथ ही साथ वे सारे कीड़े भी जल रहे थे ।

मैंने केशव की तरफ देखा ।

“हर्ष और तेरी बहन वाली बात सुनकर अफ़सोस हुआ भाई, लेकिन अपनी बहन के बारे तूने मुझे कभी बताया ही नहीं ।”

“अबे ! जब कोई बहन होती तब ना बताता, मैं तो यूँ ही फेंक रहा था भाई, जब जान के डर से फ़टी पड़ी थी तो कुछ न कुछ तो करना था ही, और देख इस झूठी कहानी ने अपना काम भी कर दिया ।

“गंगाजल कहाँ से लाया ?”

“यहाँ हर घर में मिलता है भाई ।” वह हंस पड़ा ।

“गंगाजल से ही नहला देते फिर सोनल को, इतना प्रपंच करने की जरूरत ही नहीं पड़ती ।” मैंने कहा ।

“कितना भी नहला ले प्रियंवदा साथ नहीं छोड़ती, वह गंगाजल के प्रभाव में कमजोर ओर निष्क्रिय भले हो जाती है लेकिन इस शरीर के साथ उसका जन्म से साथ है तो इसे छोड़ नहीं सकती । एकाध दो पल के लिए भले तड़प कर अलग हो जाए या शरीर के भीतर ही सुप्तवस्था में चली जाए, लेकिन यह शरीर हमेशा के लिए छोड़कर नहीं जा सकती, या फिर सोनल को चौबीसों घंटे गंगाजल से ही नहलाते रहना पड़ सकता था जो कि सम्भव नहीं है ।” केशव मुस्कुराते हुए बोला ।

“तू बन सकता है घोस्टहन्टर ।” मैं हंसा ।

“अबे ! बन सकता हूँ नहीं, बल्कि हम इस दुनिया के बेस्ट घोस्ट हंटर बन चुके है । यह सब जो रायता हमने साफ़ किया है ना उसे आज तक किसी घोस्ट हंटर ने नहीं साफ़ किया होगा ।”

उसके इतना कहते ही हमारी हंसी छूट पड़ी, सोनल ने मुझे और कस लिया ।

पक्षियों के स्वर गूंजने लगे थे, आकाश में हल्की लाली फैलने लगी थी, सवेरा हो रहा था । यह नया सवेरा था, हम सबके लिए ।

□□□

फिर क्या ? हैप्पी एंडिंग ।

अब सोनल को शाप से मुक्ति मिल गई थी, हमारी टूटी-फूटी हड्डियों को जुड़ने में थोड़ा समय लगने वाला था । फिल्म तो है नहीं कि एक पट्टी बाँध ली और काम हो गया, सोनोग्राफी, एक्स रे, एमआरआई और जो भी मेडीकल टेस्ट्स थे वो सब करने थे तभी असल टूट-फूट का हिसाब-किताब मिलना था । अब चूँकि सोनल अपनी जिन्दगी जी रही

थी और मुझे उसे किसी भूतनी से छुटकारा दिलाना नहीं था तो अब मुझे दर्द महसूस होने लगा था, यूं कहो कि अगले कुछ दिन चीखते कराहते ही गुजरे । अंकल आंटी हमें शहर के बढ़िया अस्पताल में भर्ती करवाने की जिद कर रहे थे लेकिन हमें हर्ष की शादी में रुकना ही था तो लोकल डॉक्टर से ही कुछ छोटा मोटा इलाज करवाकर हम डटे रहे । दादाजी तो अन्तर्यामी थे ही, उन्हें हमारे प्यार की जानकारी थी ही । हर्ष भी मुझे अपना जीजा मान ही चुका था, अंकल आंटी तो पहले भी मुझसे प्रभावित थे अब तो मैं उनके जिगर का छल्ला बन गया था, होने वाली ससुराल में मैं सबका दुलारा बन चुका था । अब शादी की तैयारी में दुगुनी खुशियाँ थी, बारात आई और हर्ष दुल्हे राजा बनकर इतराने लगा । उसे देखकर मैं भी घोड़ी पर बैठने के सपने देखने लगा, हाँ सोनल की गुलाबी मुस्कान इस बात की चुगली कर रही थी कि उसकी हालत भी मुझसे जुदा नहीं है । अब मुझे उसकी तारीफों की आदत डालनी थी तो मैंने ऑनलाइन कुछ बढ़िया सा भारी भरकम हिंदी वाला साहित्य भी ऑर्डर कर दिया जो मेरे मुंबई वाले पते पर पहुँच जाता, जाने के बाद उन प्रेम भरे साहित्य के संसार में डुबकियां लगाऊंगा और लफ्फाजी में उस्ताद बनकर सोनल के सामने प्रभाव जमाऊंगा ।

सब खुश थे, परिवार पर जमाने से छाई मनहूसियत खत्म होने से दादाजी खुश थे, वैसे भी उनकी जिन्दगी के कुछ ही दिन तो बचे थे, बाकी बची जिन्दगी खुशियों से जीने का उनका हक बनता था । अंकल आंटी की तिगुनी ख़ुशी थी, सोनल वापस आ गई थी, बहु रानी आ गई और लगे हाथों सोने जैसा दामाद भी मिल गया था, जी ! मैं अपनी ही बात कर रहा हूँ । मैं तो खुश था ही, मेरे तो पाँव ही जमीन पर नहीं पड़ रहे थे, नहीं ! ख़ुशी के कारण नहीं, मेरी हालत ऐसी थी कि दो तीन दिन ठीक से खड़े होना भी मुश्किल था, व्हीलचेयर पर था तो जाहिर है पांवों का जमीन से कोई सम्बन्ध ही नहीं था ।

एक मिनट ! कोई रह गया, आप सोच रहे होंगे कौन ? सही समझे, मैं केशव की बात कर रहा हूँ । उसने अपनी जिन्दगी का पहला घोस्टहंटिंग केस गिरते पड़ते हल कर लिया था, और हाँ उसकी रूखी-सूखी जिन्दगी में भी बहार आई, आखिर कब तक वह दूसरों को जोड़ियों में देख देख कर अपनी जान जलाता रहता ? उम्र भी तो हो गई थी, हारमोंस बगावत पर उतारू थे । तो हर्ष की खूबसूरत साली साहिबा पहली नजर में ही उस पर फ़िदा हो गई थी ।

अगर अंत ऐसा होता तो कितना अच्छा होता ना ? लेकिन नहीं ! ऐसा नहीं हुआ, काश कि केशव के साथ ऐसा होता, हर्ष की कोई साली थी ही नहीं, दूर दूर तक नहीं । फिलहाल तो सभी खुश थे । केशव कुछ ज्यादा ही, मैंने उसे इशारे से पूछा तो वह मेरे पास आकर खड़ा हो गया ।

“क्या हुआ ? क्या बात है इतना खुश दिखाई दे रहा है ।” मैंने पूछा ।

“अपनी चर्चा चारों और है भाई, पूरी बारात में खबर फ़ैल चुकी है । हम दोनों हीरो है यहाँ के ।” वह खिलखिलाया ।

“हाँ वह तो पता है, लेकिन तुझे नहीं लगता कि तीन दिन काफी हो गए इस तरह खुशियाँ मनाने के लिए ?”

“भाई, मेरी ख़ुशी अलग है ।” केशव चहका ।

“अब बता भी दे ।” वह अपनी आदत से बाज नहीं आने वाला था ।

“हर्ष के साले ने मुझसे बात की, और उसके पास हमारे लिए एक और केस है ।”

तभी मंगलाष्टक आरम्भ हो गए, और सभी घराती-बारातियों ने अक्षत डालने आरम्भ कर दिए । मैंने भी अनुसरण किया, सोनल की नजरें मुझसे मिली और मेरी उससे, मैंने उसपर अक्षत के चावल फेंके और उसने मुझ पर ।

सेहरा हटाये हर्ष यह देखकर मुस्कुरा दिया तो मैं सकपका गया ।

“ऐसे मंगल समय पर अमंगल केस की बात नहीं करते मेरे लल्ला ।” मैंने केशव को कुहनी मारी । वह दांत निकाल कर रह गया ।

समाप्त